Hindi

2002

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता



VOL.-6 JANUARY 2002 NO.1

SHREE SHREE ANANDAMAYEE SANGHA

❄ Branch Ashrams ❄

1. AGARPARA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P. O. Kamarhati, Calcutta-700058 (Tel : 033-5531208)
2. AGARTALA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Palace Compound, P.O. Agartala-799001. West Tripura (Tel : 0381-208618)
3. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Patal Devi, P.O. Almora-263602, (Tel : 05962-33120)
4. ALMORA : Shree Shree Ma Anaudamayee Ashram, P.O. Dhaul-China, Almora-263881, (Tel : 05962-62013)
5. BHIMPURA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhimpura, P.O. Chandod, Baroda-391105, (Tel : 02663-833208
6. BHOPAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P. O. Bairagarh, Bhopal-462030, M.P. (Tel : 0755-521227)
7. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kishenpur, P.O. Rajpur, Dehradun-248009 (Phone : 0135-734271)
8. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalyanvan, 176, Rajpur Road, P.O. Rajpur, Dehradun-248009, (Phone : 0135-734471)
9. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram. P.O. Raipur Ordnance Factory, Dehradun-248010
10. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, 47/A Jakhan, P.O. Rajpur, Dehradun,
11. JAMSHEDPUR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Bhatia Park, Kadma, Jamshedpur-831005, Bihar
12. KANKHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Kankhal, Hardwar-249408, (Tel : 0133-416575)
13. KEDARNATH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Himlok, P.O. Kedarnath, Chamoli-246445,
14. NAIMISHARANYA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Puran Mandir, P.O. Naimisharanya, Sitapur-261402, U.P.

माँ आनन्दमयी

अमृतवार्ता

श्रीश्री माँ आनन्दमयी के दिव्यजीवन
तथा
दिव्यवाणी की वाहिका त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष–६ **जनवरी, २००२** **सं.–१**





वार्षिक चंदा (डाकव्यय सहित)

भारत में – ६० रुपये
विदेशों में – १२ डॉलर/या ४५० रुपये
एक प्रति – २०/- रुपये

साधारण नियम

यह त्रैमासिक पत्रिका चार पृथक भाषा–हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी में जनवरी अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित् होती है । वर्ष का प्रारम्भ जनवरी से होता है ।

पत्रिका में मुख्यतया श्री श्री माँ पर आधारित लेखों को ही प्रधानता दी जाती है । इनके अतिरिक्त आध्यात्म पर आधारित हृदयस्पर्शी लेख; किसी भी देश तथा किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के महापुरुषों की उपदेशात्मक शिक्षावलियों का भी पत्रिका में स्वागत है ।

जो भक्तगण माँ के सम्पर्क में आये हैं वे एकान्त व्यक्तिगत अनुभवों को छोड़कर ऐसे अनुभवों को आकलित कर सकते है जो कि श्री श्री माँ के लौकिक व्यवहार के प्रति आलोकपात करने वाले हों ।

सभी लेख फुलस्केप कागज के एक पृष्ठ पर टंकित या स्पष्ट लिखित् होने चाहिये । लेखों की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें । मनोनीत न होने पर लेखों को वापस भेजना कार्यालय के लिए असुविधाजनक है । सभी लेख सम्पादक के नाम भेजें ।

अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम के "Shree Shree Anandamayee Sangha—Publication A/C".नाम पर भेजें ।

पत्रिका सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्रादि व्यवहार तथा वार्षिक चंदा भेजने का पता :

कार्यकारी सम्पादक, "माँ आनन्दमयी - अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी -२२१००१

पत्रिका में विज्ञापन देने का नियम :–

सम्पूर्ण पृष्ठ – २०००/- पूरे वर्ष के लिये
आधा पृष्ठ – १०००/- पूरे वर्ष के लिये

अग्रिम शुल्क के साथ विज्ञापन का विषय (Matter) उपर लिखित पते पर भेजें ।

स्वामी श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री पानु ब्रह्मचारी द्वारा श्री श्री आनन्दमयी संघ, भदैनी, वाराणसी–२२१००१ (उ. प्र.) से प्रकाशित तथा रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी. २१/४२ कमच्छा, वाराणसी-१० (उ. प्र.) से मुद्रित । सम्पादक–श्री पानु ब्रह्मचारी ।

विषय-सूची

प्रकाशन-सूची

श्री श्री आनन्दमयी संघ द्वारा प्रकाशित श्री श्री माँ से सम्बन्धित हिन्दी भाषा में कुछ अमूल्य प्रकाशन संघ के प्रायः सभी शाखा आश्रमों में उपलब्ध हैं ।

१. आनन्दज्योति (शताब्दी स्मारिका)– यह एक उच्च कोटि का संस्करण है, जिसमें विभिन्न भाषाओं – संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में श्री श्री माँ की पवित्र जीवनानुक्रमणिका (१८९६ से १९८२), १०० अमूल्य वाणियों एवं श्री श्री माँ के विभिन्न आश्रम एवं संस्थाओं का इतिहास, साथ ही स्वनामधन्य विद्वानों के लेख, श्रद्धांजलि सहित श्री श्री माँ के कतिपय मूल्यवान चित्रों का संकलन है । अति उत्तम कागज पर छपा है । मूल्य रु. १००/- केवल हिन्दी खंड – मूल्य रु. ३०/-

२. श्री श्री माँ आनन्दमयी– परम श्रद्धेया दीदी गुरुप्रिया द्वारा लिखित श्री श्री माँ की अपूर्व लीला कहानी । २० भागों में सम्पूर्ण । प्रथम भाग पुनर्मुद्रित । पेपर बैक, मूल्य रु. ४०/-

३. मातृ दर्शन– श्रद्धेय ज्योतिष चन्द्र राय (भाईजी) द्वारा मूल बंगला में लिखित श्री श्री माँ के ऊपर अतुलनीय पुस्तक । हिन्दी संस्करण, पेपर बैक, मूल्य रु. २५/-

४. माँ आनन्दमयी– डॉ. पन्नालाल, आई. सी.एस. (रिटायर्ड) द्वारा लिखित श्री श्री माँ का अपूर्व जीवन चरित । पेपर बैक, मूल्य रु. ३०/-

५. सद्वाणी– हिन्दी में अनूदित श्री श्री माँ की मूल्यवान वाणियों का संग्रह । श्री ज्योतिषचन्द्र राय द्वारा संकलित । पेपर बैक, मूल्य रु. १५ ।

६. माँ आनन्दमयी दिव्यालोक वार्ता– ब्र. गुणीता द्वारा लिखित श्री श्री माँ की जीवन-कथा का संक्षिप्त चित्रण तथा शतवाणी । पेपर बैक, मूल्य १०/-





मातृ-वाणी

नया साल–भगवान् का विश्वरूप–उनका नित्य नवीन नवीन रूप-अरूप भी, वही दर्शन की निरन्तर चेष्टा ।

* * *

परम पुरुष – ठीक ठीक पुरुष यदि हो तो परम पुरुष को प्रकट होना ही पड़ेगा । स्वयं जो पुरुष स्वरूप उनकी क्रिया । वह क्रिया जो प्रकट हो जाये । वही परम पुरुष ।

* * *

पत्नी है भगवान स्वरूप, बालगोपाल उन्हीं का स्वरूप वही तुम्हारा गृहस्थाश्रम ।

* * *

२४ घन्टे में १५ मिनट । एक आत्मा, द्वेष नहीं, सारा अपना ही है । इस दृष्टि से पिता को कहा । अगर माता पिता है । शरीर को (माँ को) अपना समझते हो तो करना पड़ेगा । यदि शरीर (माँ) को दूसरा समझते हो तो भिक्षा दो । १५ मिनट तुमको देना ही पड़ेगा । जैसे बच्चा कहता है – हमको देना ही पड़ेगा ।

* * *

माँ– एक के अभाव से सारा अभाव ।

प्र.– सृष्टि किसने की ।

माँ– तुमने की ।

प्र.– जब सृष्टि की तब ज्ञान नहीं था ।

माँ– ज्ञान का अभाव कभी होता नहीं । स्वयं का प्रकाश हो जाय तो ज्ञान, ज्ञान - स्वयं प्रकाश । कभी अभाव होता नहीं । जहाँ अभाव का राज्य वहाँ अभाव । मनोराज्य जब तक रहेगा तब तक अभाव । जब तक मानामानी रहेगा – मन कौन है ? यह कौन है ? कौन कौन ? तुम है और कोई नहीं । तुम जब पढ़ लिख गये तब सब बात का पता लग गया । जब तक परदा है तब तक आवरण । एक होता है समझ कर रहना, एक होता है बात को बात से टाल देना । समझ जिसको है वही पूछता है । दिया जला दो अन्धेरा मिट जाता है । अहंकार (तोड़ने वाला) टूटने वाला है । दफ्तर में जाते हो । पूरा महीना काम न करो तो (वेतन) कटेगा । पूरा महीना काम करो तो पूरा मिलेगा । दुनिया में जब देते हैं । जिससे दुनिया वह (भगवान) नहीं देंगे ? जरूर देंगे पूरा देंगे । पूरा का पूरा अच्छा काम करो बढ़ जायेगा ।

* * *

देने वाला मैं कौन हूँ ? सब तो भगवान् का दिया हुआ है । धन रखनेवाला कौन है ? कोई मालिक है ? उसका रुपया तुम्हारे पास है । तुम्हारे देने का अधिकार है ? मालिक का रुपया किसी के पास रखने के लिये रखा है । देने के लिये नहीं कहा - दान के लिए नहीं कहा - वह तुम कैसे खाली कर सकते हो । देखो, जो पैसा तुम खून देकर कमाते हो । खून पसीना करके लाते हो, तुम बरबाद नहीं कर सकते । तुम भगवान् के हो जैसे यन्त्र । वह जैसे चला रहे हैं, वैसे चल रहे हो । बरबाद करने का हक नहीं भिक्षुक कौन है ?

* * *

जन माने जनार्दन । जनार्दन माने स्वयं भगवान् दे सकते हो कैसे – भगवद्बुद्धि से । मैं देने बैठा – तुम दानी कौन हो ? हे भगवान् तुम ही तुम्हारा है – हम देने वाले कौन हैं ? सेवा के दान का अधिकारी है ।

* * *

भगवद्बुद्धि से सारा कार्य कर सकते हो । नौकरी में भी क्या है - किसके लिये नौकरी कर रहे हो ? किसका नौकर किसका घर बाल-गोपाल (बच्चे) तुम ही हो इस रूप में । तुम्हारे भगवान् ही हैं । पत्नी रूप में लक्ष्मी तुम ही हो । भगवद्भाव बिना नहीं रहना ।

* * *

चोर कौन है ? बच्चों में ही तो – उनमें से ही है – चोर की क्रिया इसी रूप में –कैसे दंड मिलता है । जेल मिलता है । चोर मत बनो । वही वही रूप में सब है । श्रेय ग्रहण-प्रेय त्याग - श्रेय (अर्थात्) सेवा बुद्धि । प्रिय अर्थात् जो अच्छा लगता है ।

* * *

दुनिया में सेवा क्या है – यत्र जीव तत्र शिव यत्र नारी तत्र गौरी । कौन है – वही है – सेवा करने का अधिकारी है और कुछ नहीं – क्यों सेवक है ना !

* * *

बालक का बहस करने का अधिकार नहीं है । कहते हैं बाग का (भगवान् का) माली बनो मालिक नहीं ।

* * *

विश्वरूप में गत रूप में जगत अतीत रूप में नास्तिक रूप वह भी भगवान का रूप परमार्थ ही एक करम है और सब वृथा ।

* * *

लय होगा कहाँ, जल की तरंग कहाँ है - तरंग में जल के सिवाय और क्या है । फिर लय होता है । होना-लेना पाना वहीं - है - नहीं है ।



नव युग में चिर नवीन पाथेय

कर्तव्य कर्म में, जड़ता असावधानता आने पर उसका प्रतिरोध करने का अभ्यास ही एक मात्र उपाय है। क्योंकि मनुष्य अभ्यास का दास है। यह जो वृहत् संसार धर्म में सभी व्यस्त हैं। यह भी अभ्यास और पूर्व जन्मों की संस्कारगत आसक्ति है। अभ्यास करने में समय लगने पर भी हताश न होकर दृढ़ता और उत्साह के साथ अपने को जमाये रखना ही कर्तव्य है। यह सत्य है कि दैनिक कुछ न कुछ धर्म-चिन्ता द्वारा समय आने पर ईश्वर का प्रबल आग्रह हृदय में उदित होता है। सरल और शुद्ध भाव का अभ्यास आत्म-ज्ञान की प्रथम सीढ़ी है।

—श्री श्री माँ आनन्दमयी

"अमरत्व का पथ"

बनत बनत बन जायेगा

उनकी मौज मस्ती में तू रंग जायगा।

कहती है यह वाणी माँ की,

"बनत बनत बन जायगा।"

छोड़ो न स्मरण उनका करो निरन्तर ध्यान,

देखो उनकी ही महिमा जग के रूप रंग में,

सुनो उनका ही गुण गान।

कहती है यह वाणी माँ की,

एक के सिवाय दो नहीं एक मात्र वही-वही-वही।

रहो नित्य "स" में संयम, स्मरण और शरण।

परम करुणा का स्वाद जन पायेगा

उनकी मौज मस्ती में तू रंग जायेगा।

माँ की अमृतवाणी अमृत बरसाती है

अमृत के पुत्र अमर पन्थियों को अमरत्व का

पथ दर्शाती है।

जय माँ जय माँ जय जय माँ।

श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग

–स्व. अमूल्य कुमार दत्त गुप्त

योगक्रिया के फलस्वरूप श्री श्री माँ के शरीर में विभिन्न परिवर्तन :–

एकदिन की घटना डॉ. पन्नालाल ने माताजी को पढ़कर सुनायी, एक रात माताजी एवं बाबाभोलानाथ लेटे हैं, अचानक माताजी का हाथ बाबा भोलानाथ के शरीर पर रखा गया। उस स्पर्श से भोलानाथ जी झटके से उठ बैठे। कारण वह हाथ इतना मोटा और कठिन था। उन्हें विश्वास न हुआ कि यह माताजी का ही हाथ हो सकता है। उन्होंने सोचा कोई चोर उनके घर में घुस गया होगा तथा यह उसी का हाथ है। इतना पढ़कर डॉ. पन्नालाल ने पूछा, "माताजी कोमल शरीर क्या इस प्रकार स्थूल एवं कठोर हो सकता है ?"

माताजी–"हाँ, हो सकता है, केवल कठोर ही क्यों ? कभी-कभी इस शरीर के अवयव हाथ-पैर की सभी गाँठें पृथक हो जाती थीं। यहाँ तक होता था जैसे अंगुलियों की गाँठें भी पृथक् होने के कारण लटकती हुई नज़र आती थीं। यह देख भोलानाथ जी भय से आतंकित हो जाते थे। वे सोचते थे, जब शरीर के अवयवों की गाँठें (जोड़) इस प्रकार पृथक् होने लगी हैं तो अब मृत्यु होने में विलम्ब नहीं है। साधना के फलस्वरूप ऐसा हो सकता है यह उन्होंने न तो कभी पोथियों में पढ़ा था और न ही किसी से सुना था। कभी-कभी भोलानाथ जी देखते थे कि यह शरीर लाल होता जा रहा है। यह लाल रंग साधारण लाल नहीं था। बिल्कुल लाल। प्रतीत होता था मानो शरीर के सभी रोमकूपों से शरीर का सारा खून तुरन्त ही फूट पड़ेगा। यह सब देखकर डर जाना उनके लिये स्वाभाविक ही था।"

कभी-कभी शरीर की रोमावलि रोमाञ्चित हो सीधी हो जाती थी। केवल बदन की रोमावलि ही नहीं अपितु सिर के बाल तक सीधे हो जाते थे। तुम लोगों की नानीजी हाथों से दबाकर इनको बराबर करना चाहती थीं, पर कर नहीं सकती थीं। इस प्रकार बालों के सीधे होने पर मृत्यु की सम्भावना रहती है, इन सब बातों को सोचकर तुम्हारी नानीजी भय से व्याकुल हो जाती थीं।

जब यह चर्चा हो रही थी नानीजी भी उपस्थित थीं। उनसे इस सम्बन्ध में पूछने पर उन्होंने सभी बातों की सत्यता को स्वीकार किया।

माताजी पुनः डॉ. पन्नालाल से कहने लगीं, "तुमने शरीर के कठोर होने की बात कही थी न ? गोपीबाबा ने दो महापुरुषों की बात कही थी। उनमें से एक पर तलवार की चोट करने पर देखा गया उनके बदन पर चोट का कोई प्रभाव ही न हुआ। दूसरे पर इसी प्रकार करने पर देखा गया कि तलवार उनके शरीर को पार कर गयी। शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इस अवस्था में आप किसको बड़ा कहोगे ? दूसरे व्यक्ति से दो महापुरुषों की कथा सुनी थी। उनमें से एक शेर पर सवार होकर हाथों में विषधर सर्प को चाबुक जैसे उपयोग करते हुए दूसरे महापुरुष के पास

पहुँचे । उक्त महात्मा दीवाल पर बैठे थे उन्होंने दीवाल को चलने का आदेश दिया । उनके आदेश से दीवाल भी चलने लगी । यहाँ भी शक्ति का खेल देख रहे हो । इस शक्ति का प्रकाश किसी भी उपलक्ष्य से हो सकता है । बिना किसी उपलक्ष्य के भी हो सकता है ।

काशी आश्रम, श्रीमद्‌भागवत जयन्ती :–

२० भाद्र शुक्रवार (५.९.१९५२) भाद्रपद की १२ तारीख से भागवत् जयन्ती प्रारम्भ होकर कल सम्पन्न हुई । इस बार कलकत्ते के चित्तबाबू ने मूलपाठ एवं बाटु दादा ने व्याख्या की । भागवत् जयन्ती के बीच में गोपाल दादा के आह्वान पर माताजी तीन रात इलाहाबाद रह आयीं । भाद्र की १६ तारीख को माताजी इलाहाबाद से मोटर द्वारा रवाना होकर कल प्रातः आठ बजे काशी लौट आयीं ।

इस देश के लोग भागवत् पाठ एवं उसकी व्याख्या खूब श्रद्धा सहित सुनते हैं एवं पाठ की समाप्ति पर श्रोतागण अपने सामर्थ्यानुसार फल, मिठाई, माला-फूल, वस्त्रादि, अर्थ (धन) भेंट चढ़ाते हैं । स्थानीय भाषा में इसे "चढ़ावा" कहा जाता है । कल भी श्रीमद्‌भागवत् कथा की समाप्ति पर नेपाली एवं स्थानीय महिलाओं ने परातों में फल-मिठाई सजाकर श्रीमद्भागवत् पर भेंट चढ़ायी । अधिकतर बंगाल की महिलाओं ने पैसा चढ़ा कर प्रणाम किया । माताजी हॉल में ही थीं । कुछ देर तक इस दृश्य को देखकर माताजी श्रीमद्भागवत मंच के पास गयीं एवं अपने मस्तक द्वारा महापुराण का स्पर्श किया एवं आकर हमलोगों से कहने लगीं –"सभी श्रीमद्भागवत पर फल मिठाई चढ़ा रहे थे । मैं क्या चढ़ाऊँ ? मैं अपना मस्तक ही चढ़ा आयी ।" इस समय माताजी के हाथों में तुलसीदल थे । माताजी ने सबको एक-एक तुलसी दल दिया ।

कुछ दिन पूर्व अभय के एक भाई ने आत्महत्या द्वारा अपना जीवन समाप्त किया था । माताजी के निर्देशानुसार उनके माता-पिता ने भी श्रीमद्भागवत् जयन्ती के उत्सव में अंश ग्रहण किया था एवं अत्यन्त श्रद्धा से उन्होंने श्रीमद्भागवत की कथा सुनी । आज श्रीमद्भागवत पूजन एवं यज्ञ की पूर्णाहुति हुई । इस उपलक्ष में कुछ साधु एवं ब्राह्मणों को भोजन कराया गया ।

रात में मौन के उपरान्त डॉ. पन्नालाल जी ने स्वामी योगानन्द द्वारा लिखी गई अंग्रेजी पुस्तक से श्री श्री माँ के सम्बन्ध में लिखा गया अंश पढ़ कर सुनाया । स्वामी योगानन्द जी पाश्चात्य देश में परिचित हैं । यहाँ भी उनका आश्रम है । राँची में मुख्य आश्रम है । वे माताजी को राँची के आश्रम में ले गये थे । उक्त समय माताजी के साथ उनका जो कथोपकथन हुआ था वह उन्होंने अपनी पुस्तक में लिपिबद्ध किया था । सारी बातें केवल उनकी अपनी व्यक्तिगत अभिज्ञता पर ही आधारित नहीं हैं अपितु दूसरों से भी सुनकर लिखा गया है । माताजी का भी इसी प्रकार का ख्याल था ।

निशिकान्त मित्र के पौत्र का कर्णमूल आरोग्य :–

उक्त अंग्रेज़ी पुस्तक का पाठ समाप्त होने पर डॉ. पन्नालाल अपनी लिखी हुई पुस्तक के कुछ अंश पढ़कर सुनाने लगे । निशिबाबू के पौत्र के कर्णमूल को आरोग्य करने का प्रसंग आया ।

माताजी कहने लगीं "निशिबाबू जब अपने पौत्र को दिखाने के लिये अपने घर ले गये तब देखा गया कि बच्चे के कान में काफी सूजन आ गयी है । मैंने बच्चे की माता को अकेले में ले जाकर कहा था कि सन्ध्या के बाद अंधेरे में बगीचे में जाकर जमीन से घास, पत्ता या मिट्टी जो भी हाथों के पास मिले उसे ले आये एवं पीस कर बच्चे के कान में लेप लगा दे, उसने वैसा ही किया था । ऐसा करने पर बच्चे के कानों में जो दर्द था वह चला गया । परन्तु फोड़ा वैसा ही रह गया । बच्चे के स्वजन अस्त्रोपचार (ऑपरेशन) पर बार-बार जोर दे रहे थे । उनका कहना था कि यदि शीघ्र इसका अंस्त्रोपचार न हो तो भयंकर हो सकता है । अभी से ही कानों से सड़ने की दुर्गन्ध आ रही थी । निशिबाबू सभी की बातों की अनसुनी करते हुए इस शरीर पर ही निर्भर रहे । उनके विश्वास की बलिहारी है । इस तरह दो दिन व्यतीत होने पर यह शरीर शाहबाग में सैर के लिये गया । टहलते-टहलते ग्रामोफोन का एक पिन सामने पड़ा हुआ मिला एवं उससे हथेलियों के पीछे का थोड़ा अंश चीर डाला । जिस दिन ऐसा किया गया उसीदिन ही बच्चे का कर्णमूल ठीक हो गया । अस्त्रोपचार की आवश्यकता न पड़ी । पिन द्वारा माताजी ने हथेली की जिस जगह पर चीरा लगाया था वह स्थान दिखाया । प्यारीबानू के मुकद्दमे के जय के लिये माताजी ने अपने हाथों का जो भाग जला दिया था वह भी दिखाया । यह सब दिखाते हुए माताजी बोलीं – "किसी का कुछ करने के लिये सर्वदा ही इस शरीर पर आघात देना पड़ेगा ऐसी बात नहीं है, ख्याल से भी उनके अभीष्ट को सिद्ध कर दिया जा सकता है ।"

साधनावस्था में माताजी के ध्यान का विषय क्या था :–

इसके बाद डॉ. पन्नालाल माताजी की समाधि की विभिन्न अवस्थाओं का प्रसंग पढ़ने लगे । प्रसंगवश आपने चर्चा छेड़ी, "माताजी, साधन करते समय कुछ तो धनुषधारी श्री रामचन्द्र की मूर्ति का ध्यान करते हैं, तो कुछ 'अहं ब्रह्मास्मि" ऐसा भी ध्यान करते हैं । आप में जब साधना की क्रियाएं होती थीं आप क्या ध्यान करती थीं ?

माताजी – (हँसकर) "पिताजी, इतने दिनों तक शरीर का संग करके आखिर यही प्रश्न पूछा ?
यदि तत् ज्ञान में रहा जाय तो दूसरा कुछ सोचने का अवसर ही कहाँ ?

माताजी की बात सुनकर डॉ, पन्नालाल थोड़ा असमंजस में पड़ गये ।

माताजी – (डॉ. पन्नालाल से) मैं क्या ध्यान करती थी ?
डॉ. पन्नालाल ने अपनी पुस्तक से माताजी का एक ध्यानस्थ मुद्रा का चित्र दिखाते हुए कहा, "इस चित्र से पता लगता है कि आप ध्यान करती थीं ।"

माताजी – (हँसकर) "अच्छा, तब सुनो । उसदिन जो यहाँ रासलीला हुई थी उसमें भी ध्यान देने का एक मुख्य विषय था । तुमलोगों ने देखा होगा कि श्रीकृष्ण को नाचना सिखाने पर वे ठीक से नाच नहीं सक रहे हैं अतः उन्हें डाँट फटकार दी जा रही है और वे रोने लगते हैं । भगवान् श्री कृष्ण का यह सब क्या है ?

डॉ. पन्नालाल – यह सब भगवान् श्री कृष्ण की लीलाएँ हैं ।

माताजी – "और भी देखो, गोपियों का माखन, चोरी से खाने पर गोपियाँ जब श्री कृष्ण को चोर कहकर डाँटती हैं तब वे जवाब देते हैं, "मैंने चोरी कैसे की ? मैंने तो अपने घर में ही माखन खाया है ।" देखा तो, श्री कृष्ण के लिए द्वितीय (अर्थात् दो) नहीं है अतः अपने (माखन चोरी रूप) कार्य को वह दोष (गलत) के अन्तर्गत नहीं मानते हैं ।

"समुद्र में कितनी लहरें उठती हैं, तब लगता है कि लहरें जल से पृथक् हैं; पर जिनके लिये यह लहरें जल के सिवाय और कुछ नहीं हैं उनकी दृष्टि में जल एवं लहरों में भेद कहाँ ? दुनिया में तुमलोग विविध प्रकार के लोग देख रहे हो, कुछ या तो दुनिया को लेकर मस्त हैं, तो कुछ भगवान् की ओर जाने का प्रयास कर रहे हैं । यह सब कौन हैं ? यह भी वही । अतः कहा जाता है कि यह सृष्टि भी उनकी ही लीला है । वे ही अपने को लेकर खेल रहे हैं । सम्पूर्ण सृष्टि ही परमात्मा की मुस्कराहट है । सृष्टि के सम्बन्ध में जो कहा गया है इस शरीर की साधना को भी इसी प्रकार ले सकते हो । इस शरीर ने जो साधना की है वह और कुछ नहीं – इस शरीर ने केवल इस शरीर को लेकर ही खेल किया है । रात के ११ बज चुके हैं आज और अधिक विस्तार से कहने का समय नहीं है ।

डॉ. पन्नालाल – (खुकुनी दीदी से) दीदी, मेरे प्रश्न का जवाब तो मुझे मिल ही गया ।

खुकुनी दीदी – हाँ ।

(क्रमशः)

श्री श्री माँ के साथ नीलाचल में श्री जगन्नाथ दर्शन

—स्वामी नारायणानन्द तीर्थ

सन् 1946 में परमाराध्या श्री श्री माँ का शुभ जन्मोत्सव दो स्थानों पर अनुष्ठित हुआ था। नवद्वीप के श्री गोविन्द मन्दिर में 19 वैशाख से आरम्भ होकर मां के रमना आश्रम में तिथि पूजा के अनन्तर समाप्त हुआ। इस बार माँ की तिथि पूजा में एक नवीनता दृष्टिगोचर हुई। साधारणतः श्री श्री माँ को कई विशिष्ट भक्तगण रात के तीन बजे पूजा स्थान पर आह्वान करके ले आते हैं। माँ वहाँ आकर ही उनके द्वारा निर्दिष्ट शय्या पर लेट जाती हैं। उसी शायित मुद्रा में ही माँ की राजोचित उपचार से पूजा होती है। पूजा समाप्ति के अनन्तर सब लोग माँ को प्रणाम एवं पुष्पांजलि अर्पण करते हैं। इसके बाद माँ को वहाँ से ले आया जाता है। उसके बाद भी वे एकान्त में काफी देर भाव में रहती हैं। परन्तु इस बार ऐसा नहीं देखा गया। इस बार माता जी रात्रि तीन बजे के बाद जब रमना आश्रम के पंचवटी के नीचे बैठकर वीरेनदादा (श्री वीरेन्द्र चन्द्र मुखोपाध्याय एम. ए.) और अमूल्य बाबा (श्री अमूल्य कुमार दत्त गुप्त एम. ए., बी. एल.) के साथ तत्वालोचना कर रही थीं, उस समय बैठे-बैठे ही उनकी तिथि पूजा हुई। इस वर्ष श्री श्री माँ की जन्म-जयन्ती के उपलक्ष में इलाहाबाद से श्री सत्यगोपाल-गीताश्रम के आचार्य श्री गोपाल चन्द्र चट्टोपाध्याय महाशय सपरिवार ढाका गये थे। उनके भी इस आध्यात्मिक वार्तालाप में योगदान करने पर आलोचना की सभा काफी जम गयी थी। श्री गोपाल ठाकुर एवं वीरेनदा, पाठ्यावस्था में किसी समय कलकत्ते के प्रेसीडेन्सी कालेज में एक साथ दोनों ने दर्शनशास्त्र से एम. ए. किया था। बहुत दिनों के बाद दोनों मित्रों का साक्षात्कार होने पर श्री श्री माँ के साथ तत्वालोचना भली भाँति जम उठी थी। प्रकृत जिज्ञासु पाने पर माँ अपना तत्व-भण्डार खोलने में थोड़ी भी कमी नहीं रखतीं। माँ तो हर समय ही कहा करती हैं कि जैसे बजाओगे वैसे ही सुनोगे। इस बार माँ की तिथि पूजा का अधिकार पाकर श्री श्री माँ की यह अयोग्य सन्तान अपने को धन्य व कृतार्थ समझने लगी।

बात हुई थी कि उत्सव के बाद ही माँ ढाका चली आयेंगी। ढाका में ज्यादा दिन रहना नहीं होगा। अकस्मात् सुना गया कि बहरमपुर के श्री रामरञ्जन बाबू ने माँ को पुरी जाने के लिए आमन्त्रित किया है! उनके आमन्त्रण को श्री श्री माँ ने स्वीकार किया है। श्री श्री माँ के साथ पुरी कौन-कौन जायेगा इसकी तालिका बन रही है। परीक्षाफल निकलने के पहले परीक्षार्थियों को जिस उत्कण्ठा से समय व्यतीत करना पड़ता है, उसी प्रकार श्री श्री माँ के साथ श्री जगन्नाथ जी के दर्शनों के लिए कौन कौन नीलाचल जायेगा उसके सुनने के लिए हम सब भी उद्ग्रीव हो गये। कानों में आया कि मेरा नाम भी पुरी यात्रियों के नाम में सम्मिलित हुआ है। मैंने कभी भी आशा नहीं की थी कि श्री श्री माँ के साथ श्री क्षेत्र में जगन्नाथ दर्शन का सौभाग्य मुझे मिलेगा। इस शुभ संवाद से मन में कितना आनन्द मिला वह मैं लिखकर प्रकाश नहीं कर सकता। यथा समय

ढाकावासी भक्तों को रुलाकर माँ कलकत्ते रवाना हो गयीं । बहुत से मातृभक्त सजल नयनों से माँ को विदा करने स्टेशन पर उपस्थित थे । इसके बाद माँ ढाका नहीं गईं ।

कलकत्ते में रात के आठ बजे पुरी एक्सप्रेस में श्री श्री माँ के साथ हम लोग बहुत दिनों से प्रतीक्षित श्री जगन्नाथ देव के पुरी धाम आ पहुँचे । इस महापुण्य क्षेत्र को श्री क्षेत्र, श्री विमला क्षेत्र. नीलाचल और पुरुषोत्तम क्षेत्र भी कहा जाता है । किसी समय वह पवित्र तीर्थस्थान तन्त्र साधकों का अतिशय प्रशस्त साधनक्षेत्र था । गोवर्धन मठ के मठाम्नाय में उल्लेख पाया जाता है कि इस क्षेत्र की अधिष्ठात्री देवी श्री विमला एवं भैरव स्वयं ही जगन्नाथ देव हैं । अभी भी प्रवाद है कि श्री विमला देवी के भोग निवेदन न होने तक श्री जगन्नाथ का भोग निवेदन नहीं किया जाता है । जगन्नाथ के प्रसाद के साथ विमला देवी का प्रसाद मिलता है तब दोनों मिलकर 'महाप्रसाद' होता है । श्री विमला क्षेत्र में या श्री क्षेत्र में 'महाप्रसाद' की महिमा अधिक है । श्री जगन्नाथ के भोग निवेदन पर वह केवल प्रसाद ही होता है । महाप्रसाद नहीं होता । महाप्रसाद न होने तक वह स्पर्शादि दोष रहित नहीं होता । किंवंदती है कि अभी भी विमला देवी के पास विशेष विशेष दिनों में गुप्त भाव से बलिदान होता है । श्रीमन् महाप्रभु श्री कृष्ण चैतन्य पुरी कें आगमन के बाद से ही यह स्थान वैष्णव-भावापन्न हुआ । श्रीमन् महाप्रभु ने पुरी के गम्भीरा नामक स्थान पर जो जीवन के अठारह वर्ष व्यतीत किये थे, उसका प्रमाण अभी भी वहाँ पाया जाता है । उन्होंने किस प्रकार शरीर त्याग किया था, इस संबंध में अनेक मतभेद पाये जाते हैं । श्रीमन् महाप्रभु के समकालीन कवियों ने उनकी अन्तिम लीला का एक एक स्थान पर एक-एक प्रकार से वर्णन किया है । इससे यह अनुमान किया जाता है कि वे सभी उनके यथातथ्य संवाद से अनभिज्ञ थे । इसीलिए उन्होंने अपने अपने भावानुसार वर्णन किया है अथवा यह भी हो सकता है कि वे ठीक-ठीक संवाद जानते थे पर विशेष किसी कारण से उसका उल्लेख करने का साहस उनमें नहीं था । आशा की जाती है कि भविष्य में विदग्ध ऐतिहासिकगण गवेषणा द्वारा इसके यथार्थ रहस्योद्घाटन में सफल होंगे । श्री शंकरावतार पूज्यपाद श्रीमत् शंकराचार्य के चार प्रधान मठों में श्रेष्ठ 'गोवर्धन मठ' यहीं प्रतिष्ठित है । इस मठ के आचार्य थे श्री पद्मपाद । अपने जीवन में मैं पहली बार पुरी आया । पुरी स्टेशन पर गाड़ी पहुँचने के पहले श्री जगन्नाथ देव के विशाल मन्दिर के स्वर्ण शिखर को देखकर गाड़ी से ही हाथ जोड़े ।

यथा समय माँ के साथ आकर आश्रम पहुँचा । समुद्र की वेलांभूमि पर चित्र के समान सुन्दर आश्रम है । इसके ही पूर्व की ओर स्वर्गद्वार का प्रसिद्ध श्मशान है एवं सामने दिगन्त विस्तृत विशाल समुद्र । प्राचीन लोगों के श्रीमुख से सुना जाता है कि श्रीमन महाप्रभु समुद्र के नील जल को यमुना जल समझकर भावोन्मत्त होकर उसमें कूद पड़े थे । उनके पवित्र, दिव्य और चिन्मय देह का कुछ न कुछ स्पर्श अभी भी इस जलधि के विशाल वक्षस्थल में विद्यमान है । इसीलिए शीघ्रातिशीघ्र इस महान जल सागर में डुबकियाँ लगाने को मन ललचा रहा था । तभी देखा कि माँ भी सागर जल में नहाने के लिए जा रही हैं । हम सब माँ के साथ ही सागर की ओर चले । स्त्रियाँ माँ को बीच में रखकर चारों ओर गोल होकर बड़े आनन्द से नहा रही थीं । हम पुरुष लोग थोड़ी दूर पर

नहाने लगे । माँ हमारे पास आकर अपने कर कमलों से अम्बुनिधि की पवित्र अम्बुराशि को हमारे ऊपर छिड़कने लगीं । इस प्रकार श्री श्री माँ ने हम सब की इच्छा पूरी की । हम पुरुष होने के कारण माँ के साथ स्नान नहीं कर पा रहे हैं । इस प्रकार का कोई दुःख हमारे मन में नहीं रहा । इस प्रकार सबको लेकर स्नान करके माँ आश्रम लौटीं ।

समुद्र से स्नान करके लौटते समय देखा कि माँ के आश्रम के ठीक पश्चिम की ओर एक बड़ा सा फूस का घर है और उसका नाम रखा गया है 'सागरपर्णी' अर्थात् सागर के किनारे पर्ण कुटीर । सागरपर्णी की छोटी सी कुटिया के सामने देखा मेरे बहुत दिनों के पुराने मित्र श्री दिनेश चन्द्र भट्टाचार्य तर्क वेदान्त तीर्थ शास्त्री महाशय समुद्र को देखते हुए अकेले बैठे हुए हैं । वे बड़े सज्जन, साधु स्वभाव के एवं बाल ब्रह्मचारी हैं । वे परमहंस श्री राम कृष्ण देव के भक्त हैं एवं हमारी माँ के साथ भी उनका बहुत दिनों का परिचय है । वे माँ को भी काफी श्रद्धा भक्ति करते हैं एवं माँ भी उनको काफी स्नेह करती हैं । वर्तमान समय में वेदान्त के वे एक जाने माने पण्डित हैं एवं वेदान्त की कुछ पुस्तकें भी उन्होंने लिखी हैं । यही दिनेश बाबू हमारी गुरुप्रिया दीदी के आचार्य गुरु हैं । काफी दिनों पर उनको आकस्मिक रूप से देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ एवं वे भी मुझे देखकर हर्ष प्रकट करने लगे ।

माँ के छोटे से आश्रम में स्थानाभाव है । कारण माँ के साथ हम बहुत लोग आये हैं । इसीलिए सागरपर्णीं के बरामदे मैं बैठकर मैंने अपना सन्ध्यावन्दनादि समाप्त किया । जब की बात मैं कह रहा हूँ तब तक मैंने संन्यासी का वेश धारण नहीं किया था । तर्पण के समय तिल और जल हाथ में लेकर मन में आया कि यह लवणात्तजल से क्या पितरों का तर्पण होगा, क्या पितर तृप्ति लाभ करेंगे । फिर सोचा कि श्राद्ध और तर्पण के मूल में श्रद्धा और भक्ति भाव ही प्रधान है ।

किसी प्रकार नित्यकर्म-समाप्ति के बाद आश्रम में पैर रखते ही सुना कि माँ कह रही हैं 'चलो जगबन्धु के दर्शन करने सब चलो' श्री श्री माँ के साथ श्री जगन्नाथदेव के दर्शन और वह भी माँ के साथ । मैंने भी माँ के साथ जगन्नाथ दर्शन के लिए यात्रा की ।

रास्ते में जाते-जाते बहुत दिन पहले अपनी बुआ के पास सुनी हुई एक बात मुझे याद आयी । वे कहती थीं 'श्री क्षेत्र में जगद्बन्धु दर्शन करने जाना हो तो खूबशुद्ध और पवित्र भाव लेकर जाना पड़ता है । नहीं तो जो भाव लेकर जाओगे ठाकुर उसी भाव में उसे दर्शन देते हैं । 'मेरी बुआ जी बहुत समय पहले पुरी गयी थीं, तब भी पुरी तक रेल लाइन नहीं बनी थी । वे सब पैदल चलकर कटक से जगन्नाथ जी के दर्शनों को गई थीं । तब मेरी बुआ ने यह घटना सुनी थी कि एक आदमी को जगन्नाथ जी के दर्शनों को जाकर याद आया कि उसके घर के एक कोने में काशीफल के पेड़ पर कुछ कोहड़े लटक रहे हैं । मन में यह सोचते सोचते वह मन्दिर में घुसा और वहाँ जाकर उसे श्री भगवान की दारु ब्रह्म मूर्ति के बदले बाँस पर लटकते हुए कोहड़े ही कोहड़े दीखे । इसीलिए कहा जाता है कि 'यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी' अर्थात् जिसका जैसा भाव उसको वैसा ही लाभ । यह घटना बिल्कुल सच है, ऐसा मैं शपथ खाकर नहीं कह रहा हूँ फिर भी इस कहानी ने मेरे अचेतन मन पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ा है, ऐसा भी मैं नहीं कह सकता ।

मेरा मन तो वैसा विशुद्ध या निर्मल नहीं है इसीलिए मेरे पंकिल या अशुद्ध मन पर मानसिक दुर्बलता ने आकर आक्रमण किया । सीढ़ियों पर से ऊपर चढ़ते समय मेरा मन काँप उठा । मैं मन ही मन माँ से प्रार्थना करने लगा, माँ मैं मन्दिर में जाकर जो सो न देखूँ । साथ ही ठाकुर से भी विनती प्रार्थना करने लगा, हे प्रभो तुम्हारे प्रकृत रूप का ही आज दर्शन पाऊँ, तुम ऐसी कृपा करना । इस प्रकार डरते डरते दबे पाँव माँ के पीछे पीछे यंत्र चालित सा मन्दिर में घुस पड़ा ।

मन्दिर में जाकर देखा कि सामने सफेद पत्थर की एक सुन्दर वेदी है । उसके दोनों ओर अत्यन्त मनोरम कारुकार्य खचित दो खम्भे हैं । लगभग दो हाथ ऊंची वेदी होगी । उसके पीछे नक्काशीदार रौप्यपत्र लगे हुए हैं । हमारी परमाराध्या स्नेहमयी माँ इस वेदी के सामने जाकर खड़ी हो गईं । माँ की बाईं ओर मैं था एवं पीछे और दाहिनी ओर दूसरे मातृभक्तगण थे । भीतर दूसरे लोगों की भीड़ नहीं थी कमरे में माँ के साथ हम जो लोग गये थे, वही थे । दोपहर का समय था शायद इसीलिए मन्दिर में भीड़ कम थी । श्री श्री माँ ने मेरी ओर देखकर ठाकुर की ओर हाथ बढ़ाकर कहा 'जगद्बन्धु' का दर्शन करो । उनके श्रीमुख के ये तीन शब्द अब तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं । मैंने देखा कि संगमरमर की वेदी पर श्री जगन्नाथ देव जी, श्री बलराम एवं देवी श्री सुभद्रा जी विराजमान थीं । सफेद पीला लाल एवं हरा सभी रंगों के सम्मिश्रण से बना साटन का घाघरा और कुर्ता, जिसमें जरी लगी हुई थी, श्री भगवान का परिधान था । तीनों के ही मस्तक पर हीरे जड़े हुए सोने के मुकुट थे । गले में लड़ियों एवं मोतियों की माला, कानों में हीरे के बने मकराकार कुण्डल थे वेदी के नीचे एक लकड़ी के स्टूल पर एक सौम्याकृति ब्राह्मण पंडा बैठा हुआ था । मुण्डित मस्तक पर कच्चे पक्के बालों की लम्बी शिखा, कंधे पर यज्ञोपवीत, ललाट पर चन्दन इस प्रकार सम्पूर्ण ब्राह्मणत्व उसके चेहरे से झलक रहा था । वेदी पर विराजमान विग्रह इतने निकट थे कि हम चाहने पर उनका स्पर्श कर सकते थे पर हमारे में से कोई भी विग्रह का स्पर्श नहीं कर रहा है, अतः मैंने भी स्पर्श नहीं किया । संगमरमर की वेदी पर मस्तक रखकर मन ही मन मैंने प्रार्थना की 'ठाकुर आज आपने इस दीन दुखी पर कृपा कर दर्शन दिया । अतः मेरी अन्तरात्मा आपको अगणित प्रणामाञ्जलि अर्पित कर रही है' । हम सबने साथ-साथ ही श्री श्री माँ को भी भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया । उनके ही आशीर्वाद एवं असीम करुणा के फलस्वरूप श्री भगवान की दारु ब्रह्म मूर्ति के दर्शन मुझे हुए ।

भगवान के श्री विग्रहों का सुन्दर साज श्रृंगार देख मैं मुग्ध हो गया था । मैं सोच रहा था अवश्य ही ये जगत के नाथ हैं अन्यथा इतने रत्नालंकार तो अन्यत्र कहीं भी मैंने नहीं देखे । सुना है उदयपुर में श्री नाथ जी भी अतिशय ऐश्वर्यशाली हैं । वाराणसी में सोने की अन्नपूर्णाजी अतिशय ऐश्वर्यशालिनी हैं पर उनके दर्शन अन्नकूट के समय वर्ष भर में केवल तीन दिन के लिए होते हैं ।

मन्दिर के सभी दर्शनीय स्थानों को श्री श्री माँ ने घूम घूम कर हमें दिखाया । जैसे विमला देवी का मन्दिर जहाँ एकादशी तिथि को बाँधकर रखा गया था, वह स्थान, अमृतकुण्ड, पाकशाला, भण्डारघर, सब्जी काटने की जगह आदि । श्री श्री माँ के साथ ही जगन्नाथ जी का दर्शन करके हम लौट आये । मन्दिर में हम सुनकर आये थे कि आज ठाकुर के भोग में कुछ देर होगी, क्योंकि

मन्दिर सम्बन्धी किसी विषय पर पण्डों की एक बैठक का आयोजन किया गया है, जिसका समाधान न होने पर मन्दिर में भोग नहीं जायेगा । मन्दिर से महाप्रसाद आने पर हमने श्री श्री माँ के साथ ही प्रसाद पाया दूसरे दिन हम बचा हुआ महाप्रसाद ग्रहण करके माँ के साथ नीलाचल से कलकत्ता रवाना हुए ।

इन घटना के प्रायः पाँच वर्ष बाद अपने संन्यास आश्रम के गुरुदेव के साथ काशी में उनके कामरूप मठ में बैठकर बातचीत के सिलसिले में श्री जगन्नाथ जी के दर्शनों की बात उठी । उनकी अनुपम सुन्दर मूर्ति एवं मणि रत्नों के ऐश्वर्य की बात उठने पर उन्होंने आश्चर्य से मेरे मुख की ओर देखकर कहा आप कहाँ के जगन्नाथ देव की बात कर रहे हैं ? मैं तो संन्यास-ग्रहण से पहले काफी दिनों तक पुरी में ही था तथा मन्दिर के पास ही मेरा निवास था । मैं तो रोज जाकर जगन्नाथ जी का दर्शन करता था । मैंने तो जगन्नाथ जी की चमकीली पोशाक और अलंकारों को नहीं देखा । इसके अलावा ठाकुर जी के गर्भ-गृह में तो अंधेरा है । वेदी तो संगमरमर की नहीं काले पत्थर की है एवं वह इतनी ऊँची है कि लोगों का ठाकुर स्पर्श करना सम्भव नहीं है । ठाकुर के कपड़े भी साधारण ही थे ।

मेरे गुरुदेव परम पूज्यपाद श्रीमत् स्वामी भोलानन्द तीर्थमहाराज जी अपने संन्यासी शिष्यों को एवं औरों को भी 'आप' सम्बोधित करते थे । प्रसिद्ध महात्मा रामठाकुर को भी मैंने देखा था । वे भी सबको आप ही सम्बोधित किया करते थे । गुरुदेव से पुरी के दर्शन के बारे में बातचीत करके कोई रहस्योद्घाटन न हो सका । मैंने इसे माँ की ही अपार महिमा समझी कि माँ ने कृपा करके मुझे प्रभु के अपार ऐश्वर्य रूप का दर्शन कराया ।

नीलाचल श्री क्षेत्र में थोड़े समय की अवस्थिति में मैंने यह लक्ष्य किया था कि यहाँ श्री श्री माँ में एक अपूर्व आनन्दमय भाव की छटा हिलोरें ले रही थी जिसके पवित्र स्पर्श से माँ के साथ के सभी व्यक्ति आनन्दाभिभूत थे । नलिनी बाबू ने भी (अध्यापक नलिनीकान्त ब्रह्म) इसी समय माँ के आनन्दमय भाव का उल्लेख करते हुए कहा है कि पहले तारापीठ एवं काक्सबाजार में माँ को पाने से जैसा आनन्द हुआ अब पुरी में माँ को पाकर उससे भी अधिक आनन्द हो रहा है । माँ और श्री जगन्नाथ जी का विशेष सम्बन्ध है । इस सम्बन्ध की परिभाषा न कर सकने पर भी इतना तो कह ही सकते हैं कि यह सम्बन्ध संदिग्ध नहीं है । इस बार श्री श्री माँ के साथ नीलाचल श्री जगन्नाथ जी के क्षेत्र में जगन्नाथ देव का दर्शन मेरे जीवन की एक विशेष घटना है । जय जगन्नाथ । जय माँ ।

●

श्री श्री माँ आनन्दमयी के साथ

—श्री सुविमल दत्त, I.C.S. [भूतपूर्व विदेश सचिव]

वाराणसी में माँ के आश्रम में स्वामी श्री अखण्डानन्द सरस्वती जी ने पक्ष कालिक श्रीमद्भागवत की व्याख्या की २१ फरवरी से मार्च की ८ तारीख पर्यन्त । आप अत्यन्त विद्वान् एवं शास्त्रवेत्ताज्ञानी पुरुष हैं, साथ ही वक्ताओं में अतुलनीय हैं । माताजी जब दिसम्बर में दिल्ली आयी थीं.तब मुझे अवश्य ही यहाँ आने के लिये कहा था । मैं २० फरवरी को मद्रास गया था एवं २८ फरवरी को लौट आया । ३ मार्च को रेल द्वारा काशी रवाना होकर प्रातः ५ बजे पहुँचा एवं सात बजे आश्रम आया । माताजी अत्यन्त व्यस्त थीं । प्रतिदिन प्रातः ८.३० मिनट पर व्याख्या प्रारम्भ होती है । माताजी ७.४५ पर पाठ का स्थान देख आती हैं सब व्यवस्था यथोचित है या नहीं । प्रवचन का समय है प्रातः ८.३० से ११.०० बजे तक तथा अपरान्ह ३.३० से सायम् ६.०० बजे पर्यन्त । माताजी पूरे समय उपस्थित रहती हैं । बड़ी सुन्दर व्यवस्था है । केवल पण्डाल की सजावट में ही १०,०००/- व्यय हुआ है । कुल व्यय ३०,०००/ हुआ है । अखण्डानन्दजी के शिष्यगण भी हैं साथ ही उत्तरभारत के विविध स्थानों से करीब २०० से भी अधिक भक्त उपस्थित हुए हैं । विशाल आयोजन है ।

मैं पहुँचते ही गोपाल मन्दिर गया, जाकर देखा माताजी वहीं पर हैं साथ काफी भक्त गण हैं । मैंने कहा, मा, मैं आ गया । माताजी ने मुझे एक प्रसादी माला दी । जो चार दिन मैं आश्रम में था, मैंने माताजी को दूर से ही देखा पास जाने का अवसर प्राप्त न हुआ, प्रयास भी नहीं किया । माताजी विविध काम में व्यस्त थीं, शरीर भी स्वस्थ नहीं था । साधु महात्माओं की सेवा में कहीं कोई त्रुटि न हो जाय यह लेकर सब समय व्यस्त थीं, इस पर कुछ V. I. P. गण एवं अन्य भक्त गण जबरदस्ती माताजी के पास जाते थे । माताजी के साथ बातचीत करने का अवसर जो चाहते हैं अथवा चुपचाप बैठकर मातृदर्शन की आकाङ्क्षा रखते हैं या मातृवाणी सुनना चाहते हैं उनके लिये तो उत्सव के समय आश्रम में नहीं जाना ही अच्छा है । पर मुझे बहुत ही अच्छा लगा । असली बात तो यह थी कि मेरे साथ माताजी की बातचीत हो ना हो मैं तो विशेष रूप से अनुगृहीत था । मुझे अलग कमरा दिया गया था, माताजीं की रसोई से मेरे लिये जलपान एवं भोजन आता था ।

६ मार्च को शिवरात्रि थी । पूर्व दिन बाबा विश्वनाथ के दर्शनों को गया । दोपहर के भोग के समय गया था, अतः काफी भीड़ थी, पण्डे ने किसी तरह भीतर प्रवेश करा दिया था, बाबा को जल फूल व बिल्वपत्र चढ़ाया । बाबा को स्पर्श भी किया । बड़ा ही आनन्द आया शिवरात्रि को खूब भीड़ रहती है, किसी-किसी ने जाने को मना भी किया । मैं एवं तालुकदार जी दोपहर को गये । उस समय यात्रियों की भीड़ थी ऐसी बात नहीं थी पर भोग का समय होने के कारण काफी भीड़ एवं धक्कमधक्की हो रहीं थी, सोचा लौट जाऊँ, इतने में एक ब्राह्मण ने कहा, रुक जाइये भोग के

बाद पट खुलेंगे, दर्शन होंगे । किसी प्रकार भीतर प्रवेश किया गया पर बाबा को स्पर्श करना सम्भव न हुआ । इस भीड़ में जाना कहाँ तक उचित है यह तो बाबा ही जानते हैं । हम जैसे लोगों के लिये नहीं जाना ही उचित है । सन्ध्या के समय आश्रम में शिवरात्रि की पूजा हुई । प्रायः १३० जन व्रती थे । अतः सबके लिये एक स्थान पर व्यवस्था नहीं हो पायी थी । तीन जगहों पर पूजा की व्यवस्था हुई थी । मैं तथा तालुकदार गोपाल मन्दिर में बैठे थे । सात बजे बैठे थे पूजा प्रारम्भ हुई सात बजकर ४० मिनट पर । प्रथम प्रहर की पूजा समाप्त हुई ९.१५ पर । तालुकदार उठ आये । मैं चार प्रहर ही था एवं एकासन से ही प्रातः चार बजे तक बैठा रहा । पिछले वर्ष दिल्ली में माताजी पूजा के स्थान पर ही थीं, इस बार माताजी तीन जगह घूम रही थीं । हमलोगों के पूजा स्थान पर माताजी रात के १२ बजे आयीं एवं दोनों हाथों से करताल बजाते हुए प्रायः आधे घन्टे तक शिवजी का कीर्त्तन किया । हा नाथ विश्वनाथ, हे नाथ विश्वनाथ, "देव देव महादेव" जय शिव शङ्कर बम, बम, हर हर" "महादेव महादेव" "महादेव महादेव" । अपूर्व दृश्य था, पूजा समाप्ति पर सबने माताजी को प्रणाम किया । माताजी ने अपने हाथों से सबको प्रसाद दिया ।

दूसरे दिन (७-३-७०) श्रीमद्भागवत की पूर्णाहुति हुई । स्वामी अखण्डानन्दजी के पाठ की समाप्ति सायंकाल ६.३० पर हुई । पण्डाल में प्रायः दो हजार जनसंख्या थी ।

८ तारीख प्रातः काल मैं दुर्गा मन्दिर तथा संकटमोचन दर्शन कर आया । लौटने पर देखा माताजी अन्नपूर्णामन्दिर के सामने हैं । भक्तों की भीड़ है । आज नारायण की विशेष पूजा हुई है । चित्रा ने बाद में सुनाया प्रायः एक मन दूध से नारायण (शालग्राम शिला) का स्नान हुआ है ।

शाम के ५ बजे माताजी से विदा लेने गया । माताजी थकी सी दीख रही थीं । माताजी से विशेष बातचीत नहीं हुई । मैंने पूछा– "पूर्व दिन सन्ध्या वन्दन के समय किसी तरह श्रीकृष्ण की मूर्ति आँखों के सामने नहीं आयी, क्यों? मैं अवश्य ही थका हुआ था, ६ ता. रात को नींद नहीं हुई थी ७ तारीख को भी विशेष विश्राम नहीं हुआ था माताजी ने कहा–थकान के कारण ही ऐसा हुआ था । जिनकी साधना काफी आगे बढ़ गयी है उनकी बात अलग है । नहीं तो साधारणों के लिये जैसी तैसी अवस्था में इष्टमूर्ति की धारणा करना सम्भव नहीं है ।

माताजी ने प्रसाद दिया, माताजी से कहा, मुझे यदि और कुछ दिन काम करने कहा जाय तो मैं क्या करूँगा । माताजी ने कहा– उस समय जो मन में आयेगा वही करना ।

माताजी को प्रणाम करके स्टेशन रवाना हो गया

जय माँ

[नोट :– श्री सुविमल दत्त प्रधानमन्त्री पं. श्री जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में भारत के विदेश सचिव के पद पर कार्यरत थे । आप योग्य अधिकारी एवं तदुपयुक्त गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति थे । आप के सहज तथा गम्भीर व्यक्तित्व की छाप आपके द्वारा लिखी गयी पंक्तियों में मिलती है । आप अपनी दैनन्दिनी कुमारी चित्रा घोष को दे गये थे । श्री श्री माँ के भक्तों को श्री श्री माँ की दिव्यलीलाओं की अधिक से अधिक जानकारी मिले इसी आशय से कुमारी चित्राघोष ने यह अमूल्य सामग्री उपलब्ध करायी है । इस सहयोग के कारण कु. चित्राघोष अमृतवार्ता सम्पादकीय मण्डली की ओर से विशेष धन्यवादभाजन हैं ।]

●

जीवन जगत का मूलभूत सत्य – दुःख

–डा. प्रेम नारायण सोमानी

यह संसार अनादि है । **अविद्या से आवृत एवं तृष्णा से बंधे** हुये प्राणियों की इस योनि से उस योनि में भटकने का प्रारम्भ ही नहीं पता चलता है । हर एक ने दीर्घकाल तक दुःख का तीव्र से तीव्रतर रूप अनुभव किया है, नाना कष्ट सहे हैं, बार-बार जन्म और मृत्यु को प्राप्त होते ही रहे हैं, फिर भी मनुष्य सांसारिक विषय भोगों–मौज मस्तियों में ही सुख मानने वाले, रत रहने वाले और प्रसन्न रहने वाले हैं । ऐसे लोगों को अत्यन्त कठिनता से यह बात समझ में आती है कि यह **इन्द्रिय सुख भी दुख ही है** । सुख जब समाप्त होता है तो दुःख ही होता है इसीलिये सुख भी सूक्ष्मतर दुःख ही है । इससे निकला भी जा सकता है एवं **निर्वाण का परम सुख भी प्राप्त हो सकता है ।**

जन्म ही दुःख है । जो जन्मा है उसे कोई न कोई विपत्ति आने पर सोच, चिन्ता, शोक एवं मानसिक कष्ट पाना ही है । ऐसा प्राणी रोता है, कलपता है, छाती पीटता है, सिर धुनता है और चिल्लाता है । ऐसे प्राणी का हैरान होना, परेशान होना, थकना एवं थकान मानना लगा ही रहता है । रोग एवं व्याधियाँ बराबर लगी रहती हैं, जिससे शरीर पर पीड़ा, शारीरिक क्लेश एवं प्रतिकूल अनुभव होते ही रहते हैं ।

किसी अनिष्ट, अप्रिय, अरुचिकर, रूप, शब्द, गन्ध, रस एवं संस्पर्शव्य पदार्थों का अनुभव अप्रिय ही है । अनर्थ की कामना करने वाले, अहितेच्छु, ईर्ष्या करने वालों के साथ संगति, समागम या मिल जुल कर बैठना ही अप्रिय से संयोग है । यह सब दुःख ही है । इसी प्रकार प्रिय रूप, रस, गन्ध, शब्द एवं स्पर्शव्य का अनुभव होना और बिछुड़ जाना एवं हितेच्छु, मित्र, अमात्य, भाई-बहन, माता-पिता और अन्य रिश्तेदारों से दूर हो जाना, उनकी संगति न मिलने का दुःख ही प्रिय से वियोग का दुःख है । मनचाही न होने की या अनचाही होने की, इच्छा की पूर्ति न होने का दुःख तो होता ही है । जब यह सब होता है तो मन में इच्छा जागती है कि क्या ही अच्छा होता कि हम बार-बार जन्म न लेते और इन सब दुःखों का सामना न करना पड़ता । अतएव जीवन जगत का सत्य दुःख ही है ।

प्राणियों का विभिन्न योनियों में जन्म लेकर बुढ़ापे की ओर जाना भी दुःख है । जरा आने पर शरीर जर्जर होने लगता है । दाँत टूट जाते हैं । बाल सफेद होकर झड़ने लगते हैं । त्वचा पर झुर्रियाँ पड़ने लगती हैं । इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं और आयु घटती जाती है । हर एक ने वयोवृद्ध व्यक्ति को अवश्य देखा होगा, जिसकी कमर झुककर टेढ़ी हो गयी हो । जो लाठी के सहारे काँपते हुए चलता है, जिसे रोग घेरे रहते हैं, जिसका मुँह पोपला होने लगा है और खाल पर झुर्रियाँ एवं काले धब्बे पड़ गये हों । क्या उसे देखकर मन में कभी यह नहीं लगा कि मैं भी एक दिन ऐसा हो जाऊँगा । हर एक ने एक ऐसे स्त्री पुरुष को अवश्य देखा होगा जो बराबर रोगी,

दुःखी या पीड़ित रहता होगा । अपनी टट्टी पेशाब में लिपटा रहता है जिसे सहारा देकर उठाते बैठाते हैं ऐसा देखकर क्या यह नहीं लगता कि रोग का आक्रमण मुझ पर भी संभव है मैं भी इसी प्रकार रोगी हो सकता हूँ । हर एक ने किसी मृत स्त्री पुरुष को अवश्य देखा होगा । उसे देखकर ऐसा अवश्य लगा होगा कि एक दिन मैं भी मर जाऊँगा और मौत मुझसे भी दूर नहीं जायेगी अब तक के अनेक जन्मों में भाई बहन, रिश्तेदारों, मित्रों, माता-पिता आदि की हड्डियाँ एक जगह एकत्र कर दें **तो हिमालय से बड़ा पहाड़ बन जायेगा** । अनेक जन्मों में हुए माता पिता भाई बहन आदि के मरने पर सम्पत्ति नाश रोग प्रिय वियोग एवं अप्रिय संयोग का दुःख सहते हुये रोते कलपते जो आँसू बहे हैं, **वह एक महासागर के जल से भी अधिक होंगे** ।

प्राणियों का विभिन्न योनियों में पैदा होना, पंच स्कन्धों का प्रार्दुभाव और इन्द्रिय भोगों की इच्छा ही दुःख का कारण है । यही प्रत्यक्ष शारीरिक एवं मानसिक दुःख है । कर्म संस्कारों के फलस्वरूप प्रकट होने वाले दुःख तो हैं ही **यदि कर्म संस्कारों का संग्रह शेष है तो वही पुनर्जन्म का कारण बन जायेगा** । काया और चित्त का जो प्रतिक्षण विपरिणाम हो रहा है वही अंततः मृत्यु रूपी जीवन के विपरिणाम तक पहुँचता है । अतएव अब तो चेतो और अविद्या जनक संस्कारों को छोड़ दो ।

इन्हीं दैहिक, दैविक, भौतिक दुखों के कारण ही मोक्ष की अवधारणा हुई । भगवान् बुद्ध ने जाति पि दुक्खा (जाति ही दुख है) के अतिरिक्त तीन प्रकार के दुःखत्व बताये हैं–

१. दुक्ख दुक्खाता : जो प्रत्यक्ष शारीरिक एवं मानसिक दुःख है ।

२. सङ्खार दुक्खाता : कर्म संस्कारों के फलस्वरूप प्रकट होनेवाले दुख । प्रबल कर्म संस्कार पुनर्जन्म देने की क्षमता रखते हैं । जन्म चाहे, देवलोक या ब्रह्मलोक में ही क्यों न हो उसकी परिणति मृत्यु में ही होती है और यदि उस समय भीतर पूर्व कर्म-संस्कारों का संग्रह शेष है तो पुनर्जन्म होगा ही और भवचक्र चलायमान रहेगा ही । ३१ (इकतीस) लोकों में से किसी न किसी लोक में जन्म होगा और दुख चक्र चलता ही रहेगा ।

३. विपरिणाम दुक्खाता : काया और चित्त में जो प्रतिक्षण विपरिणाम यानी परिवर्तन हो रहा है, वह विभिन्न प्रकार के कायिक दुःखों में परिणत होता रहता है । काया और चित्त का जो प्रतिक्षण विपरिणाम हो रहा है, वही संतप्त मृत्युरूपी जीवन के विपरिणाम तक पहुँचाता है ।

अविद्या जनित संस्कारों को छोड़ने का सहज उपाय "विपश्यना" साधना है । इस साधना से नये संस्कार नहीं बनते हैं और उसके पश्चात पूर्व जन्मों के संचित संस्कारों की उदीर्णा एवं निर्झरा होती है । जब सारे पूर्व संस्कार निकल जाते हैं तो इसी जीवन में दुःखों से विमुक्त हो निर्वाण का सुख प्राप्त हो सकता है ।

उठो, जागो और सतत प्रयत्नरत रहो । मंगल होगा ही ।

●

आनन्दमयी स्मृति

—कु. चित्रा घोष

१९५६, श्री श्री माँ के साथ श्री वृन्दावन धाम में पहली बार होली के उत्सव में मुझे उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

होली के पहले दिन श्री हरिबाबा का जन्म दिन है । श्री श्री माँ की उपस्थिति रहने से बाबा का जन्मोत्सव होली की पूर्व सन्ध्या को धूमधाम से मनाया जाता था ।

शाम के साढ़े पाँच बजे हरिबाबा को उनके वृन्दावन के आश्रम से बैन्ड बजाकर तथा कीर्तन करते हुए माँ के आश्रम में लाया गया । कहना न होगा बाबा पदव्रज से ही माँ के आश्रम तक आये । कीर्तन मण्डली के मुख्य थे हीरुदा (तन्मयानन्दजी) । आश्रम के मुख्य द्वार से मन्दिर तक के मार्ग के दोनों ओर श्री श्री माँ के निर्देश से हम सब बड़ी लड़कियों ने विभिन्न रंगों से रंगोली बनायी थी । मुख्य द्वार के पास बैन्ड की आवाज सुनते ही माँ हमलोगों का हाथ पकड़कर द्वार तक गयीं एवं बाबा को मन्दिर की सीढ़ियों तक ले आयीं । इसके बाद परस्पर अभिनन्दन का अभिनव दृश्य उपस्थित हुआ । बाबा के द्वारा माँ को साष्टांग प्रणाम करते ही माँ के तदनुकरण में झुकने से पूर्व ही बाबा ने बाधा दे दी ।

सत्संग हॉल में बाबा एवं माँ के आसन पर विराजते ही दीदी गुरुप्रिया ने माँ के निर्देशानुसार बाबा की आरती उतारी एवं उन्हें जन्मदिन के उपलक्ष में वस्त्रादि तथा अन्यान्य सामग्री भेंट चढ़ायी । इसके बाद दीदी बाबा को एक तरफ ले गयीं । वहाँ उनके लिये जलपान की व्यवस्था थी । माँ ने बाबा के लिये विविध प्रकार के पकवान खाजा, नमकीन, समोसे आदि बुनिदी से बनवा कर रखे थे । यह सब देख हरिबाबा बालकवत् उत्फुल्ल हो गये । सब कुछ थोड़ा थोड़ा स्वीकार किया । इसके बाद हॉल में ७. से ९ दो घन्टे तक हरिबाबा का कीर्तन हुआ । माँ बैठी थीं । हरिबाबा ने कीर्तनोपरान्त मण्डली सहित विदा ली ।

श्री श्री माँ की कर्तव्यप्रणाली अतुलनीय है । बाबा आयेंगे हॉल में सत्संग की जगह लगाना है अतः उनके आने से पहले ही माँ ने दरी बिछाने से लेकर कहाँ कैसे सजाया जायगा सब हम लोगों को बता दिया । माँ खुद झुककर दरी के मुड़े हुए कोनों को ठीक कर रही थीं । माँ का कर्मनैपुण्य मानो निपुणता का साक्षात् स्वरूप है । बीच बीच में माँ के श्रीमुख से सुनने में आ रहा है– "शरीर को खींच खींच कर यह सब काम कराया जा रहा है । यह सब काम शरीर ले नहीं पा रहा है । अच्छा नहीं लग रहा है अथवा अब और करा नहीं जायगा इन सबका प्रश्न ही नहीं है । और यह सब करने का ख्याल ही नहीं आ रहा है । पहले जैसे गृहस्थी आदि का काम किया जाता था अचानक सब छूट गया । अब ठाकुर ही ठाकुर का काम करने नहीं देंगे, शरीर ले नहीं पा रहा है ।"

आज होली है मैं प्रातः काल उठते ही माँ के कमरे के पास जाकर बैठ गयी । माँ के उठते ही चरणों में अबीर लगाऊँगी । पूर्व रात्रि को माँ ने, निताई गौर एवं शिवमन्दिर के सामने जो नया 'भागवत् भवन' बना है वहीं पर विश्राम किया । ब्राह्ममुहूर्त के चार बजे से महाप्रभु के जन्मसमय में मंगल आरती एवं पूजन हो रहा था, माँ के निमित्त निर्मित भवन के नीचे की मञ्जिल के विश्रामकक्ष में माँ आकर लेटी थीं । प्रातः काल साढ़े छः बजे माँ जब बाथरुम में जा रही थीं तब माँ ने मेरे से कहा, "चित्रा बन्धु, सात से साढ़े सात का समय अत्यन्त शुभ मुहूर्त है, उस समय अपने ठाकुर जी को अबीर देना । माँ का आदेश पालन करने के उपरान्त आने पर देखा कि सवा सात बजे हैं । मैंने माँ से कहा, आपने कहा था साढ़े सात बजे तक का समय अत्यन्त शुभ है अतः आप चलिये मैं आपके चरणों में अबीर लगाऊँगी । माँ ने मेरे दुलार को स्वीकार किया, स्थिर होकर बैठी रहीं । मैंने माँ के दाहिने चरण की वृद्धाङ्गुष्ठ एवं चरणों के तलुओं पर अबीर लगा दिया । थाली का अवशिष्ट अबीर मैंने अपने आँचल में बाँध लिया । उस दिन प्रातःकाल कृपामयी माँ ने अपने चरणों में अबीर लगाने के लिये किसी को मना नहीं किया । सभी ने माँ के चरणों में अबीर लगाया । मैं बार-बार माँ के अबीर गुलाल में रँगे चरणों को अपने आँचल से पोंछ रही थी । माँ के ही ख्याल से आज होली के दिन मुझे बार-बार माँ के श्रीचरणों को स्पर्श करने का अवसर प्राप्त हुआ । यह मेरा धन्य भाग्य है ।

उक्त नवनिर्मित भागवतभवन एवं गीताभवन राजघराने की ओर से बनाया गया था । अचानक पति के देहावसान से शोकातुर रानी के संतप्त प्राणों में शान्तिसञ्चार का यह अभिनव उपाय था । जिन दो स्टेट की रानियों द्वारा भागवतभवन एवं गीताभवन का निर्माण कार्य किया गया था, माँ ने उनको अपने साथ शोभायात्रा में, अपने अपने पतिदेव के चित्र के साथ श्रीमद्भगवद्गीता तथा श्रीमद्भावत की पोथी लेकर चलने को कहा । यह शोभायात्रा इन दो नये भवनों के उद्घाटन हेतु श्री श्री माँ के साथ माँ की कुटिया से निकलने वाली थी । जिनके द्वारा गीताभवन बनाया गया था उनके पति का चित्र एवं श्रीमद्भगवद्गीता गीताभवन की अलमारी में रखा गया एवं जिनके द्वारा भागवतभवन बनाया गया था उनके पति का चित्र एवं श्रीमद्भागवत भागवत भवन की अलमारी में रखा गया । गीताभवन में सामूहिक रूप से १०८ व्यक्तियों ने श्रीमद्भगवद्गीता का सम्पूर्ण पाठ किया । प्रातः सात से नौ बजे तक ।

दो घन्टे तक के गीता पाठ में भाग न लेते हुए मैं माँ के साथ ही रही । गीताभवन में जाकर माँ ने गीता पाठ में भाग लेनेवालों को एक एक संतरा दिया । इसके उपरान्त माँ हरिबाबा के आश्रम में पधारीं, वहाँ श्रीमन् महाप्रभु की लीला चल रही थी । लीला के प्रसंग थे अद्वैत प्रभु की प्रार्थना, भगवान् विष्णु का अवतार ग्रहण का प्रसंग । माँ ने कृपा करके मुझे भी अपने साथ लिया था । मैं मोटर में माँ के चरणों के पास बैठी थी । हरिबाबा के आश्रम से लौटकर माँ ने भागवत् भवन में प्रवेश किया । रीवा की रानी साहिबा ने दो बाल्टियों में रंग घोलकर रख दिया था । चाँदी की बाल्टी एवं चाँदी की पिचकारी माँ के सामने रखी गयी थी । माँ भागवत् भवन की सीढ़ी के सामने खुली जगह पर बैठीं । दर्शनार्थीगण भी आसमान के नीचे खुली जगह पर ही खड़े थे । माँ

के हाथों में प्रायः २५-३० बार पिचकारी में रंग भर-भर कर दिया गया । माँ ने सभी को लक्ष्य करके रंग डाला । कभी तो आसमान की ओर देखकर रंग डाल रही थीं, कभी फव्वारे की तरह बौछार से सब भींग रहे थे । मैंने माँ से कहा, माँ मेरे मस्तक पर रंग डालो, मैं माँ की दाहिनी ओर बैठकर पिचकारी में रंग भर रही थी । मेरी तरफ रंग डालने पर मेरे दाहिने कान में पानी घुस गया । कान बन्द न हो जाय इसीलिये माँ ने अपनी छोटी उँगली को कानों में घुसाकर पानी निकाला । माँ की कृपा अपरम्पार है । थोड़ी देर बाद माँ से मैंने दुलार भरे स्वर में कहा, "माँ अभी गुलाल छोड़िये ।" माँ चादर से अपने कान और मुँह को ढककर गुलाल डालने लगीं । मैं जाकर अमेरिका से लाया हुआ नया कैमेरा ले आयी । माँ का चित्र लेने लगी । माँ कैमेरा की ओर ही रंग डालने लगीं । भागवत् भवन में नामयज्ञ हो रहा था । माँ नाम कीर्तन में जाकर घूम-घूम कर कीर्तन करने लगीं । ओढ़ने की चादर को माँ ने एक विशेष ढंग से पहन रखा था । दोनों हाथों को उठाते हुए कीर्तन में घूमते हुए माँ की अपूर्व शोभा हो रही थी । कीर्तन मण्डल से बाहर आकर माँ महाप्रभु के मन्दिर में भोग के समय उपस्थित थीं ।

सन्ध्या के समय भागवत् हाल में महारास हुई । माँ की उपस्थिति में बहुत ही सुन्दर रासलीला हुई । बालकों की नृत्यकुशलता एवं भाव भंगिमा प्रशंसनीय थी । माँ ने प्रधान ठाकुर एवं अन्य सभी को वस्त्रादि एवं फल आदि चढ़वाये ।

होली के दूसरे दिन माँ से पुनः पुनः प्रार्थना करने पर माँ के चरण चिन्ह लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । बुनीदी एवं दीदी की सहायता तथा माँ के ख्याल से मेरी यह इच्छा पूरी हुई । माँ अपने कमरे में विश्राम में थीं । भोग के समय माँ के उठने पर दीदी ने माँ से कहा, "चित्रा आपके चरणचिन्ह लेने के लिये उपवासी बैठी हैं ।" माँ निरुत्तर चुपचाप बैठी रहीं । इसी समय दीदी और बुनीदी ने मिलकर माँ के श्री चरणों को घिसे हुए लाल चन्दन की थाली में रखा । उसके बाद एक नये सफेद वस्त्र पर माँ को विराजने के लिये निवेदन किया गया । माँ के ऐसा करने पर मैंने और बुनीदी ने माँ के चरणों को भलीभाँति दबाया ताकि चरणों के चिह्न स्पष्टरूप से वस्त्र पर अंकित हो जायें । माँ के ख्याल से चरणों के सुन्दर चिह्न बने थे । दीदी ने भी अवशिष्ट रक्तचन्दन से वस्त्रखण्ड पर चरणचिह्न लिये । यह मेरे लिये अमूल्य सम्पत्ति है । मैंने माँ के चरणों को जल से धुलाकर तौलिये से पोंछ लिया । तदनन्तर सभी को चरणामृत का प्रसाद दिया ।

जय माँ !



वाङ्माधुरी

—संकलन 'कृपाल'

30 जुलाई, 1959 कालकाजी, नई दिल्ली

एक बालक जा रहा था और अपने माता पिता से निरन्तर पूछ रहा था यह क्या है वह क्या है ? यह सुनकर माँ ने कहा—"जीव का स्वभाव है, जिज्ञासा करना । तृप्ति के लिये नहीं—स्वभाव से ही ।"

माँ भरतभाई से बात कर रही थीं विचारशून्य होकर बात मानना इत्यादि प्रसंग में । एक बालिका खेलती हुई आयी वह एक घन्टी से खेल रही थी । माँ ने उसे छुपा दिया, फिर उसे बजाया, फिर वह बच्ची उसे ले गयी ।

31 जुलाई,

राष्ट्रपति (बाबू राजेन्द्र प्रसाद) की बहन माँ के दर्शनों के लिये आयी हैं । माँ अपने तम्बू में से बाहर आयीं । किसी ने कहा, इस वृद्ध महिला को यहाँ तक आने में अत्यन्त तकलीफ हुई है, हवा भी चल रही है अतः माँ भी अपने तम्बू से बाहर निकल आयी हैं । उक्त वृद्धा कानों से सम्पूर्ण बहरी थीं । साथ में आये ए. डी. सी. उनके कानों में माँ की बातों को जोर जोर से कह रहा था । पहले तो उन्होंने माँ को पहचाना नहीं । माँ बार-बार उनको कह रही थीं यह बच्ची उनकी ही है । जब वे माँ को छोड़कर जा रही थीं तब माँ ने धीरे से अपने हाथ उनके माथे पर रखा तथा मुँह पर फेरा और पूछा, "बाबू जी कैसे हैं ? साथ ही बाबूजी के लिये भी प्रसाद भेज दिया ।

फिनलैण्ड से एक महिला माँ के दर्शनों के लिये आयी थी । वह उसी दिन पहली बार ही आयी थी । माँ ने उनसे पूछा वह कहाँ ठहरी है ? तथा उसे यह देश कैसा लग रहा है ?

उसका जवाब था—मैं इस स्थान पर (आश्रम में) होने के कारण अत्यन्त प्रसन्न हूँ ।

माँ—यहाँ आने में तुमको कितने दिन लगे ?

महिला—पूरा एक महीना । इजराईल, जरडन आदि स्थानों पर भी गयी थी ।

बाद में माँ ने उसको नित्यानन्द यह नाम दिया था ।

ननीबाला नाम की भक्त महिला जिन्हें सम्प्रति ही पति वियोग हुआ है । माँ उनसे पूछती हैं—"तुमको कौन सी चीज सुख शान्ति देगी ? सद् ग्रन्थ पाठ ।

माँ—सुनने से, करने से अच्छा होगा । लड़के अच्छे हैं ?

वीर (सक्सेना) ने योगवाशिष्ठ पढ़ा था । शाम को माँ ने वीर की योगवाशिष्ठ का वही अंश पुनः पाठ करने को कहा । माँ ने उसका पृष्ठ नम्बर पूछा—१२० किसी विशेष जगहों पर माँ उसी अंश को पुनः पुनः पढ़ने को कहती थीं । क्योंकि अभ्यास द्वारा ही ध्यानाकर्षण होता है ।

31 जुलाई, कालकाजी, नई दिल्ली

कालकाजी आश्रम में नया हाल बना है । उसके सम्बन्ध में माँ कह रही थीं कि यहाँ पर कुछ चित्र होने चाहिये । १. चैतन्य महाप्रभु, नित्यानन्द, २. राधाकृष्ण ३. सीताराम । हॉल ब्रह्म मन्दिर है और यहाँ पर सभी चित्र होने चाहिये । बहुत अधिक नहीं । क्योंकि जो काम वाले होते हैं उसको खींच कर काम में ले लेते हैं ।

माँ ने वर्मा और वढेरा को इन चित्रों को देखने भेजा । उक्त फिनिक्स महिला को भी माँ ने भेजा जो कि एक चित्रकार है ।

श्रीमती वढेरा अपने पति के बारे में कुछ कह रही थीं । आपके पति का नाम हरिभजन है । माँ ने कहा–हरि ब्रह्म । हरि नाम ब्रह्म मन्दिर । हरि ब्रह्म एक है । समाधि हो सकता है । ज्ञानरूपी बीज । निवृत्ति नहीं हो सकती ।

समाधि एक स्थिति है, एक स्थिति में रहना । समाधि भी तो एक स्थिति है । फिर उतरने से वैसा का वैसा । समाधि में रहता नहीं । वासंना समाधि से खींच लेती है । समाधि जब तक । तब तक ।

जो है वही । कारण शरीर अलग रहता है । मन नाम ही नाम है । सुशीला मोड्वेल कुछ तुलसी के पत्ते लायी थी जिन पर ब्रह्ममंयी माँ चन्दन से लिखा गया था । माँ ने उपस्थित जनों में उन पत्तों को बाँट दिया । मोड्वेल दम्पत्ति मुखशुद्धि से भरा एक प्लास्टिक का डिब्बा माँ के लिये लाये थे । माँ उनकी हथेलियों पर ही उस डिब्बे से खेलती रहीं । फिर दीदी से कहा–दीदी यह लोग मेरे लिये खिलौने लाते हैं । मैं तो अकेली बच्ची हूँ ना ! कहना न होगा मोड्वेल दम्पत्ति सन्तानरहित थे ।

कमला जायसवाल ने अपने पुत्र के नाम के लिये फोन किया था । उपस्थित जनों से माँ ने नाम पूछा । किसी ने कहा रामगोपाल, किसी ने मदन गोपाल तो किसी ने शिवचरण इत्यादि । जब पानु ने उनको यह सूचित किया तो उन्होंने कहा, माँ ने तो अपने मुख से कुछ नहीं कहा । यह सुनकर माँ ने कहा–'यह शरीर अपने मुख से कुछ नहीं कहता ।

श्री श्री माँ के साथ पूज्य हरिबाबाजी के कुछ क्षण

—पं. ललिता प्रसाद

सहजावस्था में विचरने वाले महापुरुषों के द्वारा जीवोद्धार का कार्य भी स्वाभाविक ही होता है, उसके लिये उन्हें कोई अलग संकल्प नहीं करना पड़ता । इसी प्रकार हरिबाबा के द्वारा जीवों में स्वभावतः भगवत्प्रेम का प्रसार हुआ । बाबा सड़क पर चल रहे हैं सामने कोई सीधा सादा ग्रामीण व्यक्ति आ गया । मानो उसके जन्म-जन्म के पुण्यों ने ही ऐसा संयोग उपस्थित कर दिया । आप उसके पाँव पकड़कर अनुनय-विनय करने लगते—"भाई ! क्या तुमने प्यारे श्यामसुन्दर देखे हैं ? यदि देखे हैं तो मुझे बता दो । हाय ! मेरे प्राण निकल रहे हैं । कोई मुझे मेरे प्राणधन के दर्शन करा दो । अरे ! जो मुझे मेरे प्यारे से मिलावेगा उसका आभार मैं कभी नहीं भूलूँगा ।" ऐसा कहकर आप फूट फूट कर रोने लगते । वह बेचारा चक्कर में पड़ जाता और इन्हें समझाने का प्रयत्न करता तो आप कहते, "अच्छा, तुम मुझे मेरे प्यारे का नाम सुनाओ । मैंने सुना है कि नाम से नामी भिन्न नहीं होता और जहाँ श्रीकृष्ण प्यारे के नाम या गुणों का गान होता है वहाँ वे अवश्य पधारते हैं ।"

इस पर वह कहता, "बाबा ! मैं किस तरह नाम गान करूँ ?" तो आप खड़े होकर केवल 'हरि हरि हरि हरि' शब्दों का उच्चारण करते और हाथों से ताली बजाते । इसी तरह वह भी करने लगता । हरिनाम की ध्वनि सुनकर और भी दो-चार ग्वालिये इकट्ठे हो जाते । अब तो खूब रंग जमता । श्री हरिनाम उनके मुख से चिपट जाता । उसके प्रभाव से वे विवश होकर नाचने लगते, एक नवीन तरंग में बह जाते और वहाँ आनन्द की लूट सी होने लगती । इस तरह उन्हें पागल बनाकर आप वहाँ से चल देते और किसी दूसरे स्थान पर इसी प्रकार का जादू करने लगते । इस हरिनाम ने ही आपको "स्वामी स्वतः प्रकाश' से श्री हरिबाबा अथवा ग्रामीण लोगों की दृष्टि में "श्री हरि भगवान्" बना दिया ।

एक बार कोई घसेरा घास खोद रहा था । बाबा उसके पास जा पहुँचे उसे साष्टांग प्रणाम किया । वह बेचारा हक्का बक्का रह गया और घबड़ाकर बोला, "बाबा ! दण्डौत ! अरे बाबा ! मैं तो बहुत गरीब आदमी हूँ । तुम मुझे क्यों अपराधी बनाते हो ? मेरे पास तो एक पैसा भी नहीं है, जो तुम्हारी कुछ सेवा करूँ । मैं तो रोज दो-चार आने की घास बेचकर पेट पालता हूँ ।" तब आप बोले, "भाई ! तुम मुझे हरिनाम सुना दो ।" उसने कहा, "बाबा ! मैं घास खोदूँ या हरिनाम सुनाऊँ ।" यह सुनकर बाबा ने उसके हाथ से खुरपी ले ली और कहा, "तू मुझे हरिनाम सुना, मैं तेरी घास खोदता हूँ ।" बेचारा गरीब बहुत गिड़गिड़ाया, परन्तु उसकी एक न चली । अन्त में विवश होकर हरि हरि करने लगा और आपने बड़े मनोयोग से घास खोद डाली जो उससे दोपहर तक भी बड़ी कठिनता से खुदती । फिर गठरी बाँधकर उसके सिर पर रख दी और कहा,

"जाओ, हरिनाम को मत भूलना । मैं रोज ठीक समय पर आकर तुम्हारी घास खोद दिया करूँगा ।"

पूज्य हरिबाबाजी की श्री श्री माँ के प्रति अपार श्रद्धा थी । बाबा के जीवनचरित के लेखक पंडित श्री ललिता प्रसाद जी लिखते हैं–"इधर कुछ वर्षों से हमारे श्री महाराज जी का माताजी के प्रति अधिकाधिक श्रद्धाभाव होता जा रहा है । आप सत्संग और कथाओं के समय अन्य ग्रन्थों की तरह कई बार श्री माताजी के जीवन चरित्र या उपदेशों की कथा भी कहा करते हैं ।"

श्री श्री माँ के साथ एक बार हरिबाबाजी बहरमपुर गये थे । वहाँ का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है–"हम रेलवे द्वारा कलकत्ते से दक्षिण की ओर बहरमपुर गये । यहाँ तो स्वागत का बड़ा ही अपूर्व समारोह था । उसे देखकर तो हम एकदम दङ्ग रह गये । यहाँ कई बैंड बांजों के साथ अनेक कीर्तन मण्डलियाँ माताजी के स्वागत के लिये आयी थीं । उस समय वहाँ के भक्त नर-नारी एवं बालकों का उत्साह अत्यन्त सराहनीय था । वे सभी भाव-विभोर हो रहे थे । उस समय वे माँ शब्द का ही कीर्तन कर रहे थे । माताजी का ऐसा अचिन्त्य प्रभाव देखकर हमारे सरकार तो मानो सहज समाधि में मग्न थे यह तथा हमलोग चकित से होकर यह अलौकिक दृश्य देख रहे थे ।

पूजनीया माँ को 'श्री कृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द । हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द" यह ध्वनि बहुत पसन्द है । आज आपने इसी का कीर्तन आरम्भ किया । पहले दो-चार बार प्रणव और राम नाम का दीर्घ स्वर में उच्चारण करके आपने शनैः शनैः कीर्तन को ऊँचा उठाया और फिर सिंहनाद करते हुए अत्यन्त गद्गद् कण्ठ से स्थायी अन्तर के क्रम से दो बार नीचा और दो बार ऊँचा उच्चारण करके जब मण्डल के बीच में घण्टा बजाते हुए आरम्भ किया तब उस समय की छटा तो अलौकिक हो उठी । आज मनोहर भी खोल बजाते हुए उन्मत्त हो रहा था, राधेश्याम तबला पर और किशोरीनन्दन हारमोनियम पर बिखरे पड़ते थे तथा हमलोग बड़ी तन्मयता से झाँझ बजा रहे थे । पूजनीया माँ भी ऊर्ध्वबाहु होकर अपने प्रफुल्लित नेत्रों से आनन्दामृत की वर्षा करती हमारे साथ मण्डल में घूमने लगीं । अब तो महाराज जी का आनन्द और भी सौ गुना बढ़ गया । वे समस्त भक्त परिकर के साथ उन्मत्त से होकर नृत्य करने लगे । बस, सारी जनता मुग्ध हो गयी ।

इस प्रकार यह कीर्तन प्रायः दो घण्टे तक होता रहा । किन्तु हमें तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो दो क्षण भी नहीं बीते । हम सभी के चित्त उत्साह से उछल रहे थे, किन्तु हमारे मर्यादा पुरुषोत्तम सरकार तो सबको पागल बनाकर भी स्वयं सहजावस्था में ही स्थित थे । यहाँ दो दिन से महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन चल रहा था । अतः आपने भी कीर्त्तन ध्वनि को महामन्त्र में बदलकर प्रणाम किया और वहाँ से चल दिये । इस बंग-यात्रा में आपने कीर्तन में विशेष शक्ति सञ्चार कर दिया । बरेली से चलने पर बनारस और कलकत्ते में भी ऐसे कई दिव्य कीर्तन हुए थे । श्री श्री माँ की दिव्य महिमा से ऐसा ही कोई विरला व्यक्ति होगा जो अभिभूत न हुआ होगा । पूज्य बाबा एवं पूजनीया माताजी के दिव्य सत्संग का जिसने एक बार भी रसास्वाद किया वह उनके लिए एक अमूल्य सम्पद् है केवल इस लोक में ही नहीं अपितु परलोक में भी वह उसका पाथेय है ।



विज्ञानों का विज्ञान

(प्रश्नोपनिषद्)

व्याख्याकार–हरिकृष्णदास गोयंका,
गीताप्रेस से साभार

"उपनिषद" उस परम आनन्दमय के पास जो उपस्थित करा देता है वही है उपनिषद् ।

ऋषियों का धर्म था–इस चराचर के कण-कण में जो चैतन्य का आभास मिलता है वह परम चैतन्य परम सुन्दर परम शक्ति के अधिकारी उस परम पुरुष का अनुसन्धान करना । वह कौन है कहाँ रहता है क्या करता है कैसे उसे जाना जा सकता है । इस जिज्ञासा में वे आप्तकाम अर्थात् जिन्हें इन प्रश्नों का समाधान प्राप्त हो चुका है ऐसे महान् ज्ञानी पुरुषों के सान्निध्य में समित्पाणि हाथ में समिधा लेकर शिष्यत्व स्वीकार कर वे उपस्थित होते थे ।

इसी प्रकार एक बार पिप्पलाद ऋषि के पास भारद्वाज गोत्र के सुकेशा, शिबिकुमार सत्यकाम, गर्गगोत्र में उत्पन्न गार्ग्य सौर्यायणी, कोसलदेशीय आश्वलायन, विदर्भनिवासी भार्गव एवं कत्य ऋषि का प्रपौत्र कबन्धी ये छः वेदपरायण एवं ब्रह्मनिष्ठ ऋषिगण परब्रह्म की खोज करते हुए हाथ में समिधा लिये हुए पहुँचे । इन छहो ऋषियों को परब्रह्म की जिज्ञासा से अपने पास आया देखकर महर्षि पिप्पलाद ने उनसे कहा–"तुमलोग तपस्वी हो, तुमने ब्रह्मचर्य के पालनपूर्वक साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़े हैं, तथापि मेरे आश्रम में रहकर पुनः एक वर्ष तक श्रद्धापूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए तपश्चर्या करो । उसके बाद तुमलोग जो चाहो, मुझसे प्रश्न करना । यदि तुम्हारे पूछे हुए विषय का मुझे ज्ञान होगा तो निस्सन्देह तुम्हें सब बातें भली भाँति समझाकर बताऊँगा । ऋषि के आज्ञानुसार सबने श्रद्धा, ब्रह्मचर्य और तपस्या के साथ विधिपूर्वक एक वर्ष तक वहाँ निवास स्वीकार किया । महर्षि की देख-रेख में संयमपूर्वक रहकर एक वर्ष तक उन्होंने त्यागमय जीवन बिताया । उसके बाद वे सब पुनः पिप्पलाद ऋषि के पास गये तथा उनमें से सर्वप्रथम कत्य ऋषि के प्रपौत्र कबन्धी ने श्रद्धा और विनयपूर्वक पूछा–"भगवन् ! जिससे ये सम्पूर्ण चराचर जीव नाना रूपों में उत्पन्न होते हैं, जो इनका सुनिश्चित परम कारण है, वह कौन है ?

कबन्धी ऋषि का यह प्रश्न सुनकर महर्षि पिप्पलाद बोले–"हे कात्यायन ! यह बात वेदों में प्रसिद्ध है कि सम्पूर्ण जीवों के स्वामी परमेश्वर को सृष्टि के आदि में जब प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा हुई, तब उन्होंने संकल्परूप तप किया । श्री श्री माँ की वाणी में–["संकल्प मात्र जगत् सृष्टि"]

तप से उन्होंने सर्वप्रथम रयि और प्राण–इन दोनों का एक जोड़ा उत्पन्न किया । उसे उत्पन्न करने का उद्देश्य यह था कि ये दोनों मिलकर मेरे लिये नाना प्रकार की सृष्टि उत्पन्न करेंगे ।

"तस्मै स होवाच प्रजाकामो वै प्रजापतिः स तपोऽतप्यत स तपस्तप्त्वा स मिथुनमुत्पादयते । रयिं च प्राणं चेत्येतौ मे बहुधा प्रजाः करिष्यत इति ॥ 8 ॥

इस मन्त्र में सबको जीवन प्रदान करने वाली जो समष्टि जीवनी शक्ति है, उसे ही प्राण कहा गया है । इस जीवनी शक्ति से ही प्रकृति के स्थूल स्वरूप में–समस्त पदार्थों में जीवन, स्थिति और यथायोग्य सामञ्जस्य आता है एवं स्थूल भूत-समुदाय का नाम 'रयि' रखा गया है, जो प्राणरूप जीवनी शक्ति से अनुप्राणित होकर कार्यक्षम होता है । प्राण चेतना है, रयि शक्ति और आकृति है । पिप्पलाद कहते हैं–यह दीखनेवाला सम्पूर्ण जगत् प्राण और रयि इन दोनों तत्त्वों के संयोग या सम्मिश्रण से बना है; यद्यपि इन्हें पृथक् पृथक् करके नहीं बताया जा सकता तथापि तुम इस प्रकार समझो–यह सूर्य, जो हमें प्रत्यक्ष दिखलायी देता है, यही प्राण है; क्योंकि इसी में सबको जीवन प्रदान करने वाली चेतना शक्ति की प्रधानता और अधिकता है । यह सूर्य उस सूक्ष्म जीवनी शक्ति का घनीभूत स्वरूप है । उसी प्रकार यह चन्द्रमा ही 'रयि' है; क्योंकि इसमें स्थूल तत्त्वों को पुष्ट करनेवाली भूत-तन्मात्राओं की अधिकता है । समस्त प्राणियों के स्थूल शरीरों का पोषण इस चन्द्रमा की शक्ति को पाकर ही होता है । हमारे शरीरों में ये दोनों शक्तियाँ प्रत्येक अङ्ग-प्रत्यङ्ग में व्याप्त हैं । उनमें जीवन शक्ति का सम्बन्ध सूर्य से है और मांस, मेद आदि स्थूल तत्वों का सम्बन्ध चन्द्रमा से है । रात्रि के बाद जब सूर्य उदय होकर पूर्व दिशा में अपना प्रकाश फैलाता है, उस समय वहाँ के प्राणियों के प्राणों को अपनी किरणों में धारण करता है अर्थात् उनकी जीवनी-शक्ति का सूर्य की किरणों से सम्बन्ध होकर उसमें नवीन स्फूर्ति आ जाती है । उसी प्रकार जिस समय जिस दिशा में ज़हाँ-जहाँ सूर्य अपना प्रकाश फैलाता है, वहाँ वहाँ के प्राणियों को स्फूर्ति देता रहता है; अतः सूर्य ही समस्त प्राणियों का प्राण है ।

प्राणियों के शरीर में जो वैश्वानर नाम से कही जानेवाली जठराग्नि है, जिससे अन्न का पाचन होता है, वही सूर्य का अंश है; अतः सूर्य ही है । तथा जो प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान–इन पाँच रूपों में विभक्तप्राण है, वह भी इस उदय होनेवाले सूर्य का ही अंश है; अतः सूर्य ही है ।

इस सूर्य के तत्व को जाननेवालों का कहना है कि यह किरण जाल से मण्डित एवं प्रकाशमय, तपता हुआ सूर्य विश्व के समस्त रूपों का केन्द्र है । सभी रूप (रंग और आकृतियाँ) सूर्य से उत्पन्न और प्रकाशित होते हैं । यह सविता ही सबका उत्पत्तिस्थान है और यही सबकी जीवन-ज्योति का मूल स्रोत है । यह सर्वज्ञ और सर्वाधार है, वैश्वानर अग्नि और प्राण शक्ति के रूप में सर्वत्र व्याप्त है और सबको धारण किये हुए है । समस्त जगत् का प्राणरूप सूर्य एक ही है–इसके समान इस जगत् में दूसरी कोई भी जीवनी शक्ति नहीं है । यह सहस्रों किरणोंवाला सूर्य हमारे सैकड़ों प्रकार के व्यवहार सिद्ध करता हुआ उदित होता है । जगत् में उष्णता और प्रकाश फैलाना, सबको जीवन प्रदान करना, ऋतुओं का परिवर्तन करना आदि हमारी सैकड़ों प्रकार की आवश्यकताओं को पूर्ण करता हुआ सृष्टि का जीवनदाता प्राण ही सूर्य रूप में उदित होता है ।

(क्रमशः)

शिव शक्ति माँ

—दमयन्ती तिवारी

अखण्ड भावघन माता आनन्दमयी के चरित्र को समझना, उनके अलौकिक व्यक्तित्व को जान पाने की सामर्थ्य किसमें हैं । अपने-अपने भावों अनुभूतियों के सहारे उनके भक्तों ने उन्हें देखा । भाँति-भाँति की बातें सुनकर प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है । उनके दर्शन की । एक बार दर्शन करते ही प्यास बढ़ती ही जाती है । ऐसा सम्मोहन है उनमें, आकर्षण है उनके व्यक्तित्व में, स्नेहभरी दृष्टि में ।

इसीलिये अपने निजी अनुभव से पूज्य माँ को मैंने किस रूप में देखा लिखने का किंचित प्रयास कर रही हूँ । मुझमें क्षमता भी नहीं है न ही शब्द ही हैं अपने भावों को पूर्ण रूप से व्यक्त कर सकूं । मां के श्री चरणों में प्रार्थना करती हूँ, मेरी त्रुटियों को क्षमा कर मुझे शक्ति दें । अस्तु अपने पूर्व जीवन के विषय में कुछ बताना अनुचित न होगा– मैंने नियमानुसार जप, तप ध्यानादि नहीं किये थे । गृहस्थ धर्म के पालन में ही लगी रही कुलीन माता पिता के संस्कार तो मन में थे भगवद्भाव के । बालकों के समान खेल-खेल में ही जैसे भगवान शिव को अपना मात तात बन्धु सखा मान बैठी थी और गुप्त रूप से हृदय में छिपा लिया था । कर्मकाण्ड में मन नहीं लगता है विशेष पूजा अर्चना की ओर ध्यान नहीं लगता था । उनसे ही अपनत्व होता गया तत् पश्चात् मेरे प्रभु की कृपा से गृहस्थाश्रम से मुक्ति मिल गई । समय-विषम परिस्थियों में वे ही मेरे आश्रय रहे और करुणा निधान कृपा कर मुझे उबारते रहे । अतः पूर्ण विश्वास, श्रद्धा, सहित अनन्य भक्ति का उदय होना स्वाभाविक हो गया । वे ही गुरु के आसन पर मन ही मन विराजमान हो गये ।

नहिं सतसंग जोग नहिं जापा नहिं दृढ़ चरण कमल अनुरागा ।
एक बान करुणा निधान की सो प्रिय जाके गति न आन की ।।

और इस प्रकार अनचाहे, अज्ञात रूप से ज्योतिमठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज से मुझे शिवभक्ति बीज मंत्र की प्राप्ति हुई । मेरे अनन्य भाव की एकनिष्ठ गुरु-भाव की पूर्ण सन्तुष्टि हो गयी और इसी मंत्र के आश्रय में दिन व्यतीत होते गये । इस प्रकार ५ वर्ष व्यतीत हो गये । १९९०-९१ में श्री महावीर प्रसाद त्रिवेदी हमारे पड़ोस में ही रहते थे, माँ के परम भक्त थे माँ की अनेक लीला कथाएँ सुनाया करते थे । ऐसी महान विभूति के दर्शन की उत्कण्ठा होने लगी । मेरी अभिलाषा पूर्ण करने के लिये पूज्य पिताजी (त्रिवेदी) पत्नी सहित दया करके मुझे शुकताल संयम सप्ताह समारोह के अवसर पर ले चले । मैं उनकी सदा ही अभारी रही हूं । पुत्री समान उनका मुझ पर स्नेह था आज वे नहीं हैं मैं पिछली स्मृतियाँ भूल नहीं पाती ।

आश्रम पहुंच कर माताजी के कक्ष में अपने साथ लेते गये प्रणाम के बाद मेरा परिचय कराया– ये लखनऊ से, माँ आपके दर्शन करने आई हैं । अलौकिक मोहिनी मूर्ति, परम तेजस्विनी, श्वेत परिधानावृता सम्मुख विराजमान माँ आनन्दमयी के दर्शन पाकर–

तुम्हारी साधना तुम्हारी वन्दना
होवे मेरा जीवन सम्बल ।
तुम्हारी स्तुति भाव अनुभव में ।
होवे मेरा हृदय उज्ज्वल ।
तुम्हारी खोज में आकाश की ओर ।
अनिमेष दृष्टि से मैं देखूं ।
मांगूगा नहीं कुछ कहूंगा भी कुछ नहीं ।
चरणों में गिराऊँगा केवल अश्रु जल ।
तुम्हारे असीमत्व में घूमूंगा फिरूंगा
गाने को केवल तुम्हारी महिमा ।
तुम्हारे आनन्द में रहूंगा सदानन्द ।
लेकर तुम्हारे आनन्द की तरंग ।
मेरे सब कर्म सब धर्म ।
तुम्हारी अर्चना ही के लिये ।
ओ मां शुद्ध भक्ति विश्वास दो ।
सुन्दर चरणों को करूँ सम्बल ।

–भाई जी (मातृ दर्शन से)

मैं ठगी सी खड़ी रह गई । उनके कमल नयनों से मातृ प्रेम की परम आल्हादिनी आनन्द धारा प्रवाहित हो रही थी । पूर्ण चन्द्र की ज्योत्स्ना सी सुखद, शान्तिप्रद सरिता में अवगाहन कर मैं अपना व्यक्तित्व खो बैठी । शरीर रोमांचित हो उठा, कण्ठ अवरुद्ध हो गया, नेत्रों से अश्रुपात होने लगा । वाणी मूक होने के कारण उनके प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ रही । उनके प्रश्न थे गुरु किया है? कुछ पूछना है? हां, ना मैं नहीं ही बता सकी । बिना कुछ कहे बिना कुछ पूछे ही सर्वज्ञ माँ ने मेरे अन्तर की गुप्त बात जान ली थी । मुझ दीन हीन सन्तान को देखने को ही करुणामयी माँ जैसे बांह पसारे बैठी थीं । वे कभी किसी के भाव को नहीं तोड़तीं मेरे अनन्य भाव को आंच भी न आने दीं । अनेक प्रकार से विश्वास, अपना परिचय देकर करा दिया सोई जाने जेहि देहु जनाई मन का भ्रम, आन्दोलन शान्त हो गया । पूर्ण विश्वास हो गया कि मेरे आराध्य भगवान शिव शंकर ही स्वयं साकार रूप में अवतरित होकर मुझे दर्शन दे रहे हैं । आद्य शंकराचार्य जी के वचन हैं –

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं ।
न च देवंदेवो न च कुशलः स्पन्दितुमपि ॥

अर्थात् शक्ति के साथ जुड़ जाने से ही शिव कृतित्व है । मुझे अब पूर्ण विश्वास हो गया है शिव की अभिन्न शक्ति माँ आनन्दमयी सच्चिदानन्द स्वरूपा जगद्‌का कल्याण करने संसार में भूली भटकी सन्तानों को मार्ग दर्शन करा के जीवन के लक्ष्य पर पहुंचाने के लिये ही अवतरित हुई हैं । इसी विश्वास के साथ मैं वन्दना करती हूँ–

गुरुर्मध्ये स्थिता माता मातृ मध्ये स्थितो गुरुः ।
गुरुर्माता नमस्तेस्तु मातृ गुरुं नमाम्यहम् ॥

●

नये वर्ष की उत्सव तालिका

सन् २००२

१. वसन्त पञ्चमी	...	१७ फरवरी
२. शिवरात्रि	...	१२ मार्च
३. होली	...	२८ मार्च
४. मुक्तानन्द गिरिजी सन्यासोत्सव	...	१४ अप्रैल
५. वासन्ती पूजा	...	१९ से २२ अप्रैल
६. श्री श्री माँ का जन्मदिन	...	३ मई
७. श्री श्री माँ की तिथि पूजा	...	२९ मई (रात्रि)

महाराष्ट्र के संत श्री चोकोबा महार

– श्री अशोक भाई कुलकर्णी

महाराष्ट्र की सन्तमंडली की खासियत है कि उसमें अठारह पगड़ (विभिन्न) जातियों के संतरत्न समाविष्ट हैं। श्री चोखबा महार उनमें से हैं। महार (एक शूद्र) जाति में जन्मे इस महापुरुष ने अपनी वाणी से और विठ्ठलभक्ति से जन सामान्यों के अंतःकरण को तो जीत ही लिया, अनेक समकालीन और उत्तरकालीन सन्त महात्माओं को भी मोहित कर लिया था।

अन्य अनेक महात्माओं की तरह चोखोबा के पूर्व वृत्तांत से इतिहास अनभिज्ञ है। उनके माता पिता का नाम भी मालूम नहीं। गाँव के बाहर चन्द्रमौली झोंपड़ी में जीवनयापन करनेवालों की कौन खबर रखेगा? इसलिए इनके पूर्वजीवन सम्बन्धी अनेक तर्क-वितर्क तथा कहानियाँ प्रस्तुत हैं। एक कथा इस प्रकार कही जाती है–

महाराष्ट्र के सतारा जिले में एक ग्राम है 'कोरेगांव' वहाँ विठ्ठलभक्त सुदास महार अपनी पत्नी के साथ रहता था। घर में पंढरपुर की वारी की (आषाढ़ शु. एकादशी– कार्तिक शु. एकादशी के दिन पंढरपुर में श्री विठ्ठलभगवान के दर्शन के लिये पैदल जाना) प्रथा थी। हर घरी हर पल दारिद्र अवमान का सामना, किन्तु रोम-रोम में विठ्ठलभक्ति समाई थी, कोरेगाँव का एक जमींदार पाटिल नाम का था। वह भी परम विठ्ठल भक्त था। एक साल खेत के आम्र वृक्ष फलों से लद गये आनंन्दित होकर सोचा 'पहले आम पंढरपुर श्री विठ्ठलभगवान की सेवा में भेज देंगे।' "विठ्ठल विठ्ठल" नाम गाते गाते हर्ष के साथ गिनकर टोकरी में भरे, तत्कालीन रीति के अनुसार गाँव के महार सुदास के हाथों पंढरपुर भेजे। सुदास और पत्नी सावित्री आनन्दित हो गये। आम की टोकरी भक्तिभाव से माथे पर धारण कर पंढरपुर चल पड़े। भगवान का भोग मेरे माथे पर यह विचार ही उन्हें रोमांचित करता था। पंढरीनाथ के मन्दिर दर्शन की तीव्र अभिलाषा से बिना रोके 'विठ्ठल विठ्ठल' जपते जपते पंढरपुर के निकट पहुँचे। इतने में कानों में आवाज आई "ओ बाबा ओ माई" चौंक कर इधर उधर देखा– रास्ते के किनारे एक वृद्ध ब्राह्मण कहर रहा था। अत्यन्त कृश और अपने हाथ पाँव खुद हिलाने में भी असमर्थ। निकट जाकर पूछा "बाबा हम क्या सेवा कर सकते हैं आप की? 'भूख से मेरे प्राण निकल जा रहे हैं। कुछ खिलाओ पिलाओ माई।" चौंककर सुदास कहता है "बाबा एक तो हम शूद्र हैं, और भगवान के भोग के लिए आम ले जा रहे हैं। इसलिए साथ में खाना भी कुछ रखा नहीं। ब्राह्मण उतावली से कहता है– आम का नाम सुनते ही मुँह में पानी भर गया। एकाध खिलाओ ना। ब्राह्मण के प्राण बचाने का पुण्य तुझे मिलेगा। लेकिन गिने हुए आमों से कैसे दे सकते हैं। इस विचार से दुखित होकर ब्राह्मण से "हम मजबूर हैं" कहकर चल पड़े। कुछ दूर आगे बढ़कर सावित्री कहती है "सत्संग में बार-बार महात्माओं के श्रीमुख से सुना है कि किसी की जान बचाना सबसे श्रेष्ठ धर्म है। क्या धर्मकृत्य

भगवान सहायता नहीं करेगा? संतवाणी की सत्यता आजमाने का अच्छा अवसर आज प्राप्त हो गया है" ऐसा कहकर टोकरी से एक आम निकाल कर पलट कर जाकर ब्राह्मण देवता को दिया। वह कहता है "मैया देखती हो मेरी हालत। अपने हाथ से खिलाओ मुझे' विवश होकर सावित्री ने ब्राह्मण के मुँह से आम लगाया। वह चूसने लगा। थोड़ा सा चूसने के बाद एकदम चिल्लाया कितना खट्टा है माई! हाय रे नसीब रहने दो तुम्हारे पास ही" खिन्न होकर सावित्री ने वह चूसा हुआ आम अपनी "ओटी" में रखा। (पारंपारिक महाराष्ट्रीय साड़ी पहनने के बाद एक छोटी थैली जैसा स्थान बनता हैं, उसे ओटी कहते हैं) पंढरपुर में आकर पुजारी जी को पाटिल की चिट्ठी और आम की टोकरी दी। उसने आम गिना, और एकदम गरज उठा "एक आम खा लिया क्या?" सुदास ने पूरी कहानी उसे सुनायी। सावित्री चूसा हुआ आम ओटी से निकालने लगी तो "अहो आश्चर्यम्" वहाँ आम के बदले एक नवजात अर्भक था। प्रशान्त! सोया हुआ। सावित्री की आँखें भर आयीं। वात्सल्य उमड़ पड़ा। बार-बार बालक को चूम कर हृदय से लगा रही कहने लगी "विठ्ठल भगवान" आम चूसने के बहाने कैसा अद्भुत प्रसाद दिया। मराठी में 'चूसा हुआ' इस अर्थ में 'चोखा' शब्द उपयोग में लाते हैं। इसलिए इस बालक का नाम 'चोखा' रखा गया।

यह वृत्तान्त इतिहास प्रमाणित नहीं लेकिन चोखोबाकी रोम रोम में विठ्ठलमय अवस्था देखकर प्रतीत होता है कि जरूर भगवान ने इनके 'जीवत्वावशिष्ट' अंश चूस कर इन्हें भगवती अंश रूपी अधरामृत से सरोबार किया होगा।

चोखोबा के बचपन का वृत्तान्त भी अज्ञात है। मंगलवेढा ग्राम में ये कब और क्यों रहने आए इसका भी पता नहीं है। लेकिन शूद्र होने से तत्कालीन कठोर समाज व्यवस्था की वजह से भूख प्यास का सामना करते करते किन्तु 'विठ्ठलभक्त' माँ बाप की वजह से दूर से ही क्यों न हो भगवती कथा कीर्तन का आस्वाद लेते लेते व्यतीत हुआ होगा। यथाकाल उनका विवाह हो गया। पत्नी का नाम था सोयराबाई। उदर निर्वाह के साधन रूप में न खेती न मजदूरी न कुछ व्यवसाय। तत्कालीन सामाजिक प्रथा के अनुसार ग्रामस्थों के यहाँ और सार्वजनिक स्थानों की सफाई का काम अन्य ग्रामों में जाकर संदेश पहुँचाना, पशुओं के मुर्दे घसीट कर ले जाकर ग्राम से वाहर फेंकना यही काम और बदले में जो जूठन मिल जाय उसी से निर्वाह। वेतन-मजदूरी कुछ भी नहीं ऊपर से किसी से गालियाँ सुननी पड़ती थीं। इस वीरान जीवन पथ में भी उनके लिए एकमात्र शान्तिस्थान था, पंढरपुर जाने वाले साधु-सन्तों का सत्संग उनके श्रीमुख से नित्य कथा कीर्तन सुनते सुनते चोखोबाजी के अन्तरंग में उनके मा बाप द्वारा बोया हुआ भक्तिबीज अंकुरित होने लगा। देखते देखते बीज का सदा बहार वृक्ष बन गया। इससे एक तरफ अपनी हीन जाति से उद्भूत हीन भावना और दूसरी तरफ असीम भगवत्प्रेम। इनमें अन्तःसघर्ष की परमावधि हो रही थी। मन में सोचते थे– "क्या कभी भगवान हम जैसे अज्ञानी अभागे पर कृपा करते हैं? महात्माओं के कथनानुसार अगर पांडुरंग भगवान भक्तवत्सल कृपानिधान, करुणासागर हैं, सव ग्रामस्थों के रूप में भी वही विराजमान हैं तो ये सभी ग्रामस्थ इनकी इतनी सेवा करके भी मेरे प्रति क्रूरता क्यों अपनाते हैं? मुझे प्रतिक्षण मूक वृत्ति से अन्याय क्यों झेलना पड़ता है? वहुधा ऐसे संघर्ष की

परिणति नास्तिकता में ही होती है । किन्तु चोखोबा जन्म से ही विठ्ठल स्पर्श पा चुके थे । अपार दारिद्रय, अवमान, अन्याय सहते हुए भी भक्त भागवत भगवान इस नयी त्रयी को नहीं भूलते थे । महात्माओं को अपना सर्वस्व-माता पिता सगे सम्बन्धी मान कर उन्हीं के चरणों में स्वयं को न्योछावर कर दिया था । इससे उनका भाव बढ़ता ही गया । दिन रात पांडुरंग भगवान की मंदिरस्थित मूर्त्ति जी भर कर देखने के लिए अकुलाने लगे । भक्त दर्शन भक्त मेलन आदि अपने काज के हेतु वैकुंठ छोड़कर आए और ईट पर अठ्ठाइस युग प्रतीक्षा करते खड़े रहे उस 'साँवरे' का दर्शन करने के लिए लालायित होकर कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन चोखोबा पंढरपुर आये । मन्दिर के महाद्वार के सामने खड़े हो गये । वहीं से आर्तभाव से पुकारने लगे । साथ में पत्नी सोयराबाई और पुत्र कर्ममेला था । चोखोबा के करुण स्वरों से पत्थर भी पिघल जाता किन्तु पाषाणहृदय पुजारी तनिक भी द्रवित नहीं हुए । छुआछूत के डर से चोखोबा को भगा दिया । वे निराश होकर सामने चन्द्रभागा नदी की तरफ चले । वहाँ पुलिंद में भीड़ देखी । नजदीक गये तो मालूम हुआ सन्त श्री नामदेव महाराज कीर्त्तन कर रहे हैं । भावतन्मय होकर गा रहे हैं–

"दुरुनी आलो तुझे भेटी । सांगावया जीवीची गोष्ठी ।।
बोलगा बोल मजासे कांही । दृष्टी वकवुनि भजकेवादी ।।
प्राण होती माझे कासावीस । नामामृणे कं धरिले दास ।

नामदेव जी पांडुरंग से कहते हैं– 'मेरे अन्तरंग में छिपी बात तुझे बताने में बड़ी दूर से आया हूँ । भगवन् एक बार सिर्फ नजर फेरकर मेरी तरफ देखो । मेरे प्राण तड़प रहे हैं और आप ऐसे उदास भाव धारण किये हुए हैं ?

जीवन दर्शन

घृणित वह नहीं है जिससे घृणा की जाती है, अपितु वह है जो घृणा करता है

–भगवान् महावीर

मंच पर बैठे एक महिमा मंडित उपदेशक । विशाल भव्य मंडप खचाखच भरा था । सारा उपस्थित जन समुदाय विद्वान को सुनने में तल्लीन था । विद्वान कह रहे थे– सत्कर्म शुभ है । सत्य शुभंकर है । संतसंग से मानव पापमुक्त होता है । सत्संग में अधिक से अधिक समय देना चाहिए । भक्तों ने पुलकित होकर प्रवचनकर्ता की जय-जयकार की । अचानक एक ओर से कुछ हो हल्ला हुआ । एक भक्त की जेब कट गयी थी । एक महिला का हार किसी ने चुरा लिया और एक युवती का पर्स ही गायब हो गया । यह क्या हुआ ? किसने किया ? अरे, कोई तो चोर को पकड़ो । सत्संग में आए हुए दुष्ट को मारो । शोर में उपदेशक का कल्याणकारी स्वर दब गया । अकस्मात एक मायूस सा आदमी मंच पर चढ़ गया । वह हाथ के इशारे से भीड़ को शान्त रहने को कह रहा था । उसने कहा– भाइयों, एक बात मेरी भी सुनो । सतसंग के नाम पर हम सबको धोखा हुआ । आप भक्ति छोड़कर हिंसा के दोष में फंसने वाले हैं । मैं अवसर देखकर चोरी के कुकर्म में फंस गया था । अब मैं चोरी की ये सब चीजें और अपने आपको विद्वानों के चरणों में अर्पित करता हूँ । अज्ञानी होकर भी कहता हूँ कि सत्कर्म अपनाइए, ये ही शुभंकर हैं । मंडप में एक बार स्तब्धता छा गई । मंचासीन विभूति की गम्भीर वाणी अब कह रही थी– भूल का सच्चा प्रायश्चित्त शुभतम है ।

●

चरित्रवान् बनो जगत् अपने आप तुम पर मुग्ध हो जायगा ।

–रामकृष्ण परमहंस

एक परिवार में दो ही प्राणी थे । माँ और उसका एक पुत्र । दोनों ही एक दूसरे के लिए समर्पित थे । निश्छल भाव से माँ की सेवा करना ही पुत्र का लक्ष्य था । माँ भी अपने पुत्र पर जान निछावर करने को हरदम तैयार रहती । दोनों बड़े ही आराम से जिन्दगी काट रहे थे । एक बार पुत्र जीविका अर्जन के लिए परदेश गया । गाँव में अकेली माँ रह गई । एक-दूसरे की भलाई के लिए दोनों ने कष्ट सहा । पुत्र ने परदेश जाकर अपार कठिनाइयाँ सहीं, आधे पेट भोजन किया, मेहनत से जी नहीं चुराया और उधर, घर में माँ रात-रातभर उसकी याद में जागती रहती । पुत्र ने पैसा बचा बचाकर माँ के लिए एक सुन्दर सी साड़ी खरीदी । माँ को भेजी और दाम बताए सिर्फ सौ रुपए, ताकि माँ उस पर नाराज न हो । साड़ी पाकर माँ अपने पुत्र की समझदारी पर गौरवान्वित होकर साड़ी को पड़ोसन को दिखाने गई । पड़ोसन चतुर थी, उसने उसे दो सौ पचास रुपए देकर कहा तुम और मँगा लेना । सरलमना माँ तो और खुश कि अब वह अपने लिये वैसी ही दूसरी साड़ी मंगवा लेगी और अपने लाड़ले के लिए बहुत सुन्दर कपड़े खरीद लेगी ।

कुछ समय बाद पुत्र घर आया । माँ ने बहुत संतोष के साथ उसे सारी बात बताई । पुत्र की आँखों से सहज ही आंसुओं की धारा बह निकली । निश्छल झूठ भी इतना गंम्भीर दु:ख पहुँचा सकता है, इस बात का उसने स्वप्न में भी अंदाजा नहीं लगाया था । उसकी माँ ने उसे झट अपने सीने से लगा लिया, वात्सल्य के कारण उसके मुँह से बोल नहीं फूट रहे थे ।

(दैनिक भास्कर से साभार)

●

पशुपतिनाथ दर्शन

—ब्रह्मचारिणी जया भट्टाचार्य

तीर्थस्वरूप भगवान । भगवान की लीलाभूमि ही तीर्थ है । "तारयति शोकात् इति तीर्थः ।" अनगिनत तीर्थों की अनन्त महिमा है । मुझे तीर्थदर्शन से जिस अपार आनन्द की अनुभूति होती है वह शायद ही किसी अन्य कार्य से प्राप्त होती हो । मेरे लिए तीर्थदर्शन बहुत ही आनन्ददायक है ।

पर्यटकों के लिए नेपाल स्वप्न का देश है । हिमालय के अंक में स्थित यह देश सुन्दर चित्र के समान प्रतीत होता है । यहाँ अनेक पर्यटन केन्द्र स्थित हैं हिमालय की गहराई में अनेक जाने अनजाने मार्ग हैं । प्रकृति की इन नैसर्गिक सुषमाओं के बीच कहीं कहीं प्राचीन सभ्यता की झलक दिखाई देती है ।

सौराष्ट्र के सोमनाथ, उज्जैन के महाकाल, ओंकारेश्वर एवं ममलेश्वर तथा डाकिनी के भीमाशंकर, सेतुबन्ध में रामेश्वर, द्वारका के नागेश्वर, वाराणसी में भगवान विश्वनाथ, हिमालय में ज्योतिर्लिङ्ग केदारनाथ के दर्शन प्रभु कृपा से हो चुके थे । लेकिन पशुपतिनाथ का दर्शन नहीं हुआ था । बहुत दिनों से पशुपतिनाथ दर्शन की चाह थी । माँ की कृपा से यथासमय टिकट प्राप्त हो गया । मैं अपने भाई के साथ पशुपतिनाथ दर्शन के लिए रवाना हुई ।

कन्यापीठ की प्राक्तन छात्रा उमा एवं अरुणा तथा श्री श्री माँ की अनन्य भक्त इन्दिरा मल्लजी हवाई अड्डे पर उपस्थित थीं । उनके आग्रह से हम चल पड़े । उमा के घर में ही ठहरने का विचार किया । घर में स्थानाभाव था, फिर भी एक छोटे से कमरे में जहाँ नारायण शालिग्राम शिला की पूजा, वेदपाठ, भागवत पाठ इत्यादि होते थे उसी कमरे में रहने लगी । उमा के ९३ वर्ष के वृद्ध श्वसुर प्रतिदिन शालिग्राम शिला की पूजा करते थे तथा छोटी कुमारियों का चरण प्रक्षालन कर उनके चरणोदक का पान करते थे । छोटे छोटे बालकों की गोपाल रूप में पूजा करते थे । श्री श्री माँ की वाणी—"गृहस्थाश्रम में कुमारी रूप में कन्याओं की पूजा करना एवं बालकों को गोपाल रूप में" । यह पहली बार प्रत्यक्ष देखा । घर में सामान रखकर रास्ते में गुह्येश्वरी देवी का दर्शन करके हम पशुपतिनाथ मंदिर में गये । काशी से लाये गये बेला फूल के हार तथा बेलपत्र से शिवजी की पूजा संपन्न की, किन्तु स्पर्श नहीं कर सकी, इसका ही मुझे खेद था । ऐसा सुना था कि स्पर्श करने का नियम नहीं है । चतुरानन शिवमूर्त्ति है । चारों दरवाजों से शिवजी का दर्शन होता है । शिवजी के वाहन नन्दी की ऐसी विशाल मूर्त्ति देखी जो कि जीवन में कभी नहीं देखी थी । नन्दीश्वर का सम्पूर्ण रूप से एक साथ दर्शन करना संभव न था । वहीं पर रुद्राक्ष का वृक्ष एवं छोटे हनुमान जी का मन्दिर भी था । अनेक बंदर भी मौजूद थे । दूसरे दिन प्रातःकाल पुनः शिवजी की पूजा की ।

तीसरे दिन बूढ़े नीलकंठेश्वर जी के दर्शन के लिए गई । मंदिर देखने से पहले सोचा कि (नीलकंण्ठेश्वर) शिवजी का मंदिर है लेकिन जब मंदिर में प्रवेश किया तो देखा कि अनन्तशय्या में

पर जल के भीतर स्वयं भगवान नारायण विराजमान थे । जल फूल पत्तियों से परिपूर्ण है उसमें नारायण की पूजा हो रही है । श्री नारायण की विशाल मूर्त्ति थी । इस मूर्त्ति को देखकर त्रिवेन्द्रम के शेषशायी श्री पद्मनाभ की याद आ रही थी । ऐसा प्रवाद है कि नीलकंठ नाम का एक किसान खेती कर रहा था । खेती करते समय उसे एक सोने की अंगूठी मिली । स्वप्न में श्री नारायण बोले "मैं यहाँ हूँ मुझे उठा लो" । उसके नाम पर ही भगवान नारायण का नाम नीलकंठ पड़ा । भगवान के गले में तथा मस्तक पर असंख्य शालिग्राम की शिलाएं थीं । सभी भक्तगण भक्तिपूर्वक भगवन्नाम का जप कर रहे थे । कहीं पर मधुर स्वर से कीर्तन हो रहा था इस प्रकार शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी ठाकुर जी के दर्शन से अपार आनन्द की प्राप्ति हुई ।

ललितपुर नामक एक स्थान में श्रीकृष्ण जी का मंदिर देखा । मंदिर की नक्काशी वर्णनातीत है । ऐसा सुना कि श्रीकृष्ण की मूर्त्ति शालिग्राम शिला द्वारा निर्मित है और आँखें चाँदी की हैं । ठाकुर जी का सौंदर्य बहुत ही आकर्षक है । इसके उपरान्त भक्तपुर में दत्तात्रेय जी के मंदिर का दर्शन किया । दत्तात्रेय जी ब्रह्मा, विष्णु, शिव इन त्रिदेवों का समन्वित रूप हैं । यह मंदिर अत्यन्त प्राचीन है विद्युत का प्रकाश नहीं है ।

ताँबे से युक्त एक दरवाजे के सामने प्रायः सात कुंतल चावलों का अन्नभोग पर्वत के समान सजाया गया । सर्व प्रथम गोबर से लीप कर उस पर फूल, बेलपत्र तथा दूर्वा से पूजा करके स्वर्ण रखा गया । अन्न के ऊपर उरद की दाल से आँखें-नाक बनायी गयी मिठाई की थाली में आँख, मुँह और नाक की सजावट की गई । उसी थाली को अन्न के ऊपर रख दिया गया । बहुत बड़ी मिठाई से उस अन्न के ऊपर चन्द्रमा बनाया गया । मस्तक पर गंगा भी मिठाई से बनाई गई । इस प्रकार शिवजी का अपूर्व श्रृंगार हुआ । ऐसा लग रहा था मानो बर्फ के ऊपर स्वयं महादेव विराजमान हैं । अन्न के चारों ओर मिट्टी के पात्रों में नाना प्रकार के व्यञ्जन सजाये गये । इस प्रकार वहां एक सौ छप्पन प्रकार के भोग लगाये गये । दही एवं मिठाई मंदिर के अंदर ही रखी गई । अन्न के चारों ओर एक हजार आठ प्रदीप प्रज्ज्वलित हुए । उन प्रदीपों के आलोक से चारों दिशाएँ आलोकित हो उठीं । उस समय सायंकाल की शहनाई के मधुर स्वर भी गूँज रहे थे । यह एक अपूर्व दृश्य है । एक विलग ही अनुभूति है जिसे बिना देखे विश्वास नहीं कर सकते । शंकराचार्य मठ के पुजारी ने आकर भोग निवेदन किया । सब पुजारीगण रक्तवस्त्र धारण किये हुए थे । भोग निवेदन की रीति भी अलग ही थी । एक लम्बा सूत्र अन्न के साथ लगाकर वह सूत्र खींचकर मंदिर तक ले जाकर शिवजी के मुँह में स्पर्श कराते हैं । इसका आशय यह है कि इस प्रकार शिवजी भोग ग्रहण करते हैं । मंदिर में रक्त वस्त्र धारण किये हुए, दीर्घ देही, भस्मचन्दन लिप्त पुजारी महाराजगण शोभित हो रहे थे । भोग के पश्चात् आरती हुई । आरती के पश्चात् प्रसाद वितरण होने लगा । इस प्रकार हम लोग आरती दर्शन करके रात के साढ़े नौ बजे घर लौट आये ।

दूसरे दिन काष्ठ मण्डप में गये । यह मंडप काष्ठ निर्मित है तथा इसमें अद्भुत शिल्पकला की गई है । यह शिल्प सौन्दर्य अन्यत्र नहीं दिखाई देता है । इस काष्ठ मंडप के कारण ही इस स्थान का नाम काठमांडू पड़ा । वहाँ हनुमान जी का भी सुंदर मंदिर है जहाँ प्रतिदिन सत्संग होता रहता

है । नेपाल में कुमारी पूजा का बहुत महत्व है । काष्ठमंडप में कुमारियों को बहुत यत्नपूर्वक रखा जाता है । राजा स्वयं दुर्गा पूजा के समय कुमारी पूजा करते हैं । सभी लोग कुमारी दर्शन करके भेंट चढ़ाते हैं ।

अगले दिन दक्षिणाकाली मंदिर दर्शन के लिए गये । मंदिर पर्वत के ऊपर स्थित है अतः इसका मार्ग घुमावदार है । हम लोग पर्वत का चक्कंर लगाते हुए ऊपर चढ़ते गये । यह दृश्य हमें तिरुपति बालाजी, देहरादून तथा मसूरी की याद दिलाते हैं । एक बार हमारी गाड़ी ऊपर चढ़ रही है तो एकबार नीचे की ओर आ रही है । प्रकृति के अपार सौन्दर्य का अवलोकन करते हुए हम लोग जा रहे हैं । चारों ओर पर्वतों की हरियाली निराली छवि । कहीं दूर पहाड़ों के कोने में छोटे-छोटे घर एवं पुष्पोद्यान नज़र आ रहे हैं । कहीं गृहों की टीन की छतें सूर्य की चमक से चमचमाती हुई दिखाई पड़ रही हैं । पर्वत के ऊपर धूप छाया का अपूर्व सम्मिश्रण हो रहा है । सीढ़ीनुमा ढंग से धान की खेती हो रही है । इतने में अचानक वर्षा होने लगी । दोनों तरफ पर्वतों के बीच से हमारी गाड़ी ज़ा रही है । वृक्ष, लता पर्वत सब मौन होकर मानो उन महान के ध्यान में लीन हों । हिमालय की यह उपत्यका मानों सौन्दर्य एवं शान्ति, का साम्राज्य हो । पर्वतों की शोभा का अवलोकन करते-करते मंदिर के सामने उपस्थित हो गये । सीढ़ी से उतर कर नीचे दक्षिणाकाली मूर्त्ति का दर्शन किया । छोटी प्रतिमा है । चाँदी का मुकुट मस्तक पर विराजमान है । मंदिर के सामने भक्तगण पूजा सामग्री लेकर प्रतीक्षारत हैं तथा सब लोग स्तवगान कर रहे हैं । भक्तिभाव से पूजा कर रहे हैं । हम लोग भी पूजा समापन कर घर लौट आये ।

अगले दिन श्री श्री माँ की अनन्य भक्त इन्दिरा मल्लजी के घर में सत्संग हुआ । उसमें मैने श्री श्री माँ के चरणों में वाक् पुष्पांजलि समर्पित की । भक्तों की संख्या अधिक न थी । सभी को इन्दिरा मल्लजी ने प्रसाद वितरण किया । अन्तिम दिन सबसे विदा लेकर अपने गन्तव्य पथ की ओर रवाना हुई ।



आश्रम संवाद

कनखलः—

२२ अक्टूबर से २६ अक्टूबर २००१ शारदीय दुर्गापूजा प्रतिवर्ष की भाँति सम्पन्न हुई। आयोजक थे हरिद्वार के प्रख्यात व्यवसायी मातृभक्त श्री रामपञ्जवानी जी । ३१ अक्टूबर को शरद्पूर्णिमा पर लक्ष्मी पूजन सम्पन्न हुआ । १४ नवम्बर को दीपावली पर माँ काली की पूजा एवं १५ नवम्बर को अन्नकूट का उत्सव धूम-धाम से मनाया गया । इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से भक्तों का समागम हुआ था ।

२२ नवम्बर से २९ नवम्बर पर्यन्त संयम महाव्रत अनुष्ठित हुआ । इस वर्ष व्रतियों की संख्या अधिक थी । कनखल आश्रम में इसी वर्ष एक नये ५ मंजिला आवासीय भवन का निर्माण कार्य पूरा हुआ है । अनेक भक्तों ने अपने निवास के लिये अर्थराशि प्रदान कर एक-एक फ्लैट लिये हैं । अतः रहने की सुविधा के कारण भक्त संख्या में वृद्धि हुई है ।

संयम महाव्रत की पूर्व संध्या को इस वर्ष उद्घाटन समारोह में सूरतगिरि आश्रम के महामण्डलेश्वर स्वामी श्री १००८ ब्रह्मानन्दजी महाराज, भोलागिरि आश्रम के म.म. स्वामी श्री १००८ देवानन्दजी महाराज, गरीबदासी अखाड़े के महामण्डलेश्वर की १००८ श्यामसुन्दर दास जी तथा निर्वाणी अखाड़े के महन्त गिरधर नारायण पुरी जी उपस्थित थे ।

श्री श्री माँ के श्रीमुख निःसृत संयम पर आधारित विशेष पदों के गायन द्वारा कुमारी गीत श्री छबि वन्धोपाध्याय ने उद्बोधन कार्यक्रम का प्रारम्भ किया । तदुपरान्त महात्माओं ने संयममहाव्रत की सफलता एवं इस साधन सप्ताह में योगदान के लिये उपस्थित व्रतियों को प्रोत्साहित करते हुए आशीर्वचन प्रदान किये ।

वर्षों से संयम महाव्रत के मंच के कार्यक्रमों का सञ्चालन करने वाले आदरणीय स्वरूप महाराजजी अपनी शारीरिक अस्वस्थता के कारण वृन्दावन से आने में असमर्थ थे अतः श्री जगदीश भट्टाचार्य [मामाजी के सुपुत्र] ने मञ्च का सञ्चालन का काम संभाला । संन्यासिनी भजना नन्दजी के भजन के द्वारा पूर्व सन्ध्या का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

२३ नवम्बर प्रातः ५ बजे उषाकालीन कीर्तन से सप्ताहव्यापी महाव्रत का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ । प्रतिवर्ष उपस्थित होने के कारण इस वर्ष दिव्यजीवनसंघ के परमाध्यक्ष स्वामी श्री १००८ चिदानन्दजी की अनुपस्थिति एक अभाव बोध अवश्य ही करा रही थी । पूज्य स्वामीजी भुवनेश्वर में विशेष कार्यक्रम हेतु तीन महीने के लिये पुरी गये थे । अवस्था के कारण स्वामीजी का शरीर आने जाने का अधिक परिश्रम नहीं ले पाता है अतः उनकी अनुपस्थिति हमें स्वीकार करनी पड़ी ।

कैलास पीठाधीश्वर श्री विद्यानन्द गिरिजी की अनुपस्थिति में सप्ताह के पूर्वार्द्ध में साधना सदन आश्रम के वरिष्ठ महात्मा स्वामी परमेश्वरानन्दजी ने माण्डूक्य उपनिषद् पर रसमयी व्याख्या की। सायंकाल पुराणपर प्रवचन भी आप ही करते थे। आपका सरस व्याख्यान सभी व्रतियों के हृदय में आनन्द का सञ्चार करता था। चतुर्थ दिवस श्री १००८ विद्यानन्दजी महाराज के आने पर उपनिषद् की ज्ञानमयी व्याख्या आपके द्वारा ही होती थी।

सायंकालीन प्रवचन के समय श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, श्री देवानन्दजी महाराज श्री श्यामसुन्दर महाराज एवं अन्यान्य महापुरुषों के प्रवचन होते थे। मातृ सत्संग का समय ९ से १०:०० बजे तक आश्रम की ब्रह्मचारिणियाँ एवं अन्यान्य भक्तगण माँ की उपस्थिति में माँ के साथ के अनुभवों को सुनाते थे।

२६ नवम्बर को "मातृ स्मृति मन्दिर" का उद्घाटन था जिसका विस्तृत विवरण पृथक् से दिया गया है।

सन्ध्या के समय मुख्यमंत्री के आने पर कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। नये भवन के सामने भक्त महिलायें बंगाली वेशभूषा में शंख लेकर खड़ी थीं। समय पर स्वस्तिवाचन शंखधविन एवं ऊलूध्वनि के बीच म.म. स्वामी विद्यानन्दजी महाराज ने नये भवन का उद्घाटन किया, उतराञ्चल के मुख्यमन्त्री श्री भगतसिंह कोश्यारी ने दीप प्रज्वलन किया। स्मृतिमन्दिर के दर्शन से आप अत्यन्त प्रभावित हुये तथा उत्तराञ्चल के हरिद्वार क्षेत्र में इसके होने के कारण कुछ गर्व का भी अनुभव किया। इस मौके पर इस भवन के मुख्य स्वप्नकार संघ के महासचिव स्वामी स्वरूपानन्दजी शारीरिक अस्वस्थता के कारण उपस्थित न रह सके थे।

२९ नवम्बर को संयम महाव्रत की समाप्ति हुई। ३० नवम्बर को कार्तिक पूर्णिमा के दिन महाव्रत की पूर्णाहुति पर सभी भक्तों ने आनन्द ज्योति पीठ के गर्भगृह में प्रवेश कर माँ के चरणों में प्रणाम निवेदन किया। तदुपरान्त सांयकाल नामयज्ञ का अधिवास प्रारम्भ हुआ १ दिसम्बर सायंकाल नामयज्ञ की पूर्णाहुति नगर कीर्तन द्वारा सम्पन्न हुई इसके साथ ही ५२ वाँ संयम महाव्रत सम्पूर्ण हुआ।

कनखल श्री माँ की अखण्ड स्मृतियों से भरपूर है। नित्य ही नये-नये सत्संग होते रहते हैं। इसी परम्परा के अनुसार २ दिसम्बर से १९ दिसम्बर पर्यन्त अष्टादशाह (१८ का दिन) श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या का आयोजन किया गया, व्याख्याता थे भागवत्सम्राट् स्वामी १००८ अखण्डानन्द सरस्वती जी के शिष्य स्वामी प्रणवानन्द जी। यद्यपि आप की युवावस्था ही है परन्तु त्याग वैराग्य की भावना चेहरे पर स्पष्ट प्रतीत हो रही थी। तितिक्षु मुमुक्षु यति के लिये परमपद प्राप्ति का मुख्य सोपान श्रीमद्भगवद्गीता ही है अतः श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता को अनुभव करने वाले संन्यासी के मुख से श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या सुनने में कुछ और ही आनन्द है।

संयम के उपरान्त अधिकतर भक्तगण अपने-अपने निवास स्थान को चले गये थे, तथापि प्रवचन सुनने वालों की संख्या कम नहीं थी। स्वामी श्री भास्करानन्द जी प्रतिदिन दोनों समय प्रवचन में

उपस्थित रहते थे । १९ दिसम्बर को यह सत्संग सम्पूर्ण हुआ । कथा की आयोजक थीं आश्रम संन्यासिनी पूर्णानन्दजी ।

वाराणसीः–

प्रतिवर्ष की भाँति शारदीय नवरात्र से संयम सप्ताह पर्यन्त सभी उत्सव विधिवत् सम्पन्न हुए । २३ दिसम्बर २६ दिसम्बर पर्यन्त गीता जयन्ती का उत्सव सुसम्पन्न हुआ ।

१ जनवरी २००२ को माँ आनन्दमयी करुणा में राज्य के वित्त-मंत्री श्री हरीशचन्द्र श्रीवास्तव ने १०० बच्चों को गर्म कपड़े वितरित किया, यह आयोजन रोटरी क्लब की ओर से इस बार किया गया था ।

वृन्दावनः–

वृन्दावन में ५ जुलाई को गुरूपूर्णिमा का उत्सव सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर आगरा के सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री श्री माँ की रामायण पार्टी के प्रधान भक्त गायक श्री प्रकाश नारायण पाठक (दादा) एवं मण्डली द्वारा सुन्दर काण्ड का सुललित पाठ किया गया ।

३१ जुलाई को भाई जी (श्री ज्योतिषचन्द्र राय) का तिरोधान उत्सव प्रतिपालित हुआ । साधु भण्डारा भी आयोजित किया गया था ।

३ अगस्त से झूलनोत्सव प्रारम्भ हुआ । इस उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष की भाँति शुक्ल तृतीया तिथि से पूर्णिमा पर्यन्त रासलीला का आयोजन किया गयी था । पूर्णिमा को साधु भण्डारा भी आयोजित हुआ था । इस दिन दिल्ली की कीर्तन मण्डली द्वारा अहोरात्र नामयज्ञ किया गया । ११ अगस्त जन्माष्टमी को श्री कृष्ण छलिया मन्दिर में प्रातः काल पाटोत्सव प्रतिपालित हुआ । आज के ही दिन सन् १९६८ को मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई थी । रात्रि में मन्दिर को विद्युत मालाओं से सजाया गया । झलमलाते विद्युत पुञ्जों से मन्दिर की मनोहारी शोभा हो रही थी जिसका अवलोकन करने रात भर दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रही । २६ अगस्त को राधाष्टमी का उत्सव अनुष्ठित हुआ ।

कलकत्ताः–

आगरपाड़ा आश्रम में ३० जुलाई से ३ अगस्त एकादशी से पूर्णिमा पर्यन्त झूलनोत्सव तथा ११ अगस्त को जन्माष्टमी मनायी गयी ।

२६ अगस्त से सितम्बर की २ तारीख तक श्रीमद्भागवत सप्ताह आयोजित किया गया । स्वामी निर्मलानन्दजी प्रतिदिन सायंकाल श्रीमद्भागवत की व्याख्या करते थे । इस अवसर पर प्रतिदिन प्रायः ३०० व्यक्तियों का समावेश होता था ।

प्रतिवर्ष की भाँति शारदीया दुर्गापूजा, लक्ष्मीपूजा, काली पूजा एवं अन्नकूट का उत्सव यथारीति सुसम्पन्न हुआ ।

एक विशिष्ट मातृ भक्त द्वारा गंगातट पर बने हुए 'जप कक्ष' का जीर्णोद्धार किया गया । श्री श्री माँ ने सूक्ष्म में देखा था कि यह स्थान महाप्रभु व नित्यानन्द जी का पानिहाटी से कामारहाटी जाने के मार्ग में विश्राम स्थल था ।

भक्तों की सहयोगिता से आश्रम का होम्योपैथि विभाग तथा दातव्य चिकित्सालय भली भाँति चल रहा है । वर्ष भर में प्रायः चार हजार रोगियों की चिकित्सा हुई ।

आश्रम संलग्न गंगा घाट का भी संस्कार किया गया पड़ोसियों के अनुरोध से बिजली की व्यवस्था वहाँ कर दी गयी है । इससे स्थानीय परिवेश में परिवर्तन आया है ।

२३ नवम्बर से २९ नवम्बर तक नवनिर्मित ध्यानपीठ में संयम व्रत अनुष्ठित हुआ । नामयज्ञ भी अनुष्ठित हुआ । प्रति अंग्रेजी महीने की दूसरे इतवार को "आनन्द ध्यानपीठ" में ध्यान तथा विद्वान् महात्माओं का प्रवचन होता है । प्रति पूर्णिमा में प्रदोषकाल में सत्यनारायण की कथा होती है । प्रति अमावस्या को माँ काली एवं श्री श्री माँ की विशेष पूजा होती है ।

पूनाः–

पूना में २१ सितम्बर से २९ सितम्बर पर्यन्त श्रीमद्भागवत सप्ताह अनुष्ठित हुआ । श्री श्री माँ के विशेष कृपापात्र श्री अशोक भाई कुलकर्णी ने श्रीमद्भागवत की सुललित व्याख्या की ।

उत्तरकाशीः–

उत्तरकाशी में श्री श्री माँ के आश्रम के प्राचीन काली मन्दिर में माँ काली की वार्षिक पूजा १४ नवम्बर दीपावली के दिन धूम-धाम से सम्पन्न हुई दूसरे दिन अन्नकूट तथा साधु भण्डारा हुआ ।

राँचीः–

राँची में श्री श्री माँ के आश्रम में स्थित काली मन्दिर में १४ नवम्बर को कालीपूजा के दिन माँ काली की विशेष पूजा सम्पन्न हुई । इस उपलक्ष्य में भजन कीर्तन तथा होम इत्यादि हुए । अनेक भक्तों में प्रसाद ग्रहण किया । दूसरे दिन अन्नकूट भी यथारीति अनुष्ठित हुआ ।

जमशेदपुरः–

श्री श्री माँ के जमशेदपुर स्थित आश्रम में भी १४ नवम्बर को श्री श्री काली पूजा दीपावली उत्सव महासमारोह से अनुष्ठित हुआ ।

आश्रम में यथारीति संयमव्रत भी प्रतिपालित हुआ ।

दिल्लीः–

दिल्ली में श्री श्री माँ के आश्रम में प्रतिष्ठित काली मन्दिर में विशेष रूप से कालीपूजा सम्पन्न हुई । आश्रम के नवनिर्मित अतिथि भवन में अब भक्तों के रहने का सुप्रबन्ध हो गया है । रहने के लिये आश्रम सचिव के नाम पूर्व पत्र देना आवश्यक है ।



मातृ स्मृति मन्दिर

संग्रहालय
तथा
शोध-संस्थान

श्री श्री आनन्दमयी संघ के मुख्यालय कनखल में गंगा के तट पर "मातृस्मृति मन्दिर" का निर्माण हुआ है जो कि संघ के इतिहास का एक नया अध्याय है । संघ के वर्तमान महासचिव स्वामी स्वरूपानन्दजी महाराज की कल्पना का यह साकार स्वरूप है ।

इसका इतिहास कुछ इस प्रकार का है । कलकत्ता के पुरातन भक्त श्रीमती रानू घोष एवं श्री शैलेन घोष ने गंगा तट पर श्री श्री माँ के विश्राम हेतु काफी बड़े परिसर में एक नये भवन का निर्माण अस्सी के दशक के प्रारम्भ में किया था । श्री श्री माँ की शारीरिक उपस्थिति में १९८२ का अन्तिम जन्मोत्सव इसी भवन में आयोजित किया गया था । उक्त भवन को समुचित स्वरूप प्रदान करने हेतु स्वामी स्वरूपानन्द जी ने श्री श्री माँ के श्री शरीर द्वारा व्यवहृत वस्तुएँ, श्री श्री माँ के विविध चित्र एवं प्रकाशित पुस्तकों आदि का संग्रह कर इसे मातृ स्मृति संग्रहालय का स्वरूप देने की परिकल्पना की । कुछ भक्तों की भावनानुसार संग्रहालय के स्थान पर मन्दिर शब्द का प्रयोग किया गया है ।

श्री श्री माँ की कृपा से ही सभी कार्य सम्पन्न होते हैं । अतः यहाँ भी यही हुआ । भारत सरकार के पुरातत्वविभाग के अवकाश प्राप्त प्रधान निर्देशक श्री जगत्पतिजोशीजी अपने सहयोगी पुरातत्त्व विभाग के अवकाश प्राप्त अध्यक्ष श्री ए. के. शर्मा जी के साथ इस कार्य को अपनी देख-रेख में करने के लिये कृत संकल्प हुये । श्री जोशी जी अलमोड़ा के निवासी है, अतः बाल्यावस्था से श्री माँ से परिचित भी हैं । प्रायः ३ वर्षों से वे इस काम में संलग्न हुये ।

श्री श्री माँ की दिव्यजीवन की दिव्यलीलाओं में व्यवहृत् मूल्यवान् वस्तुओं का संग्रह कोई सामान्य बात नहीं है । इसका मुख्य श्रेय परमादरणीया श्री गुरुप्रिया दीदी को है जिन्होंने माँ की व्यवहृत सामान्य से सामान्य वस्तु को भी बड़े यत्न से उसका इतिहास लिखकर एक विशेष रूप से तैयार काँच की अलमारी में रखा था, जो कि उनका संग्रहालय था, यह उनकी ही कर्मभूमि वाराणसी में श्री श्री माँ के आश्रम में उनके ही कमरे में संरक्षित था । अतः संग्रहालय के कार्यकर्ता अधिकारियों को सर्वप्रथम वाराणसी आश्रम माँ आन्दमयी कन्यापीठ में आना पड़ा, जहाँ उन्होंने आदरणीया गुरुप्रिया दीदी द्वारा वर्षो से संगृहीत यह संग्रहालय देखा, और आवश्यक सामग्री संग्रहालय के लिये ले गये ।

हाल ही में २६ नवम्बर २००१ को इस नवनिर्मित भव्य समृतिमन्दिर का उद्घाटन कैलास पीठाधीश्वर म.म. श्री स्वामी विद्यानन्द गिरिजी द्वारा उत्तराञ्चल के मुख्य मन्त्री श्री भगत सिंह कोश्यारी की उपस्थिति में किया गया ।

प्रवेश द्वार से प्रवेश करते ही एक बड़ा सा हॉल है जहां पर संग्रहालयों के सदृश काँच की पेटिकाओं में श्री माँ के विविध समयों पर व्यवहृत सामग्री रखी हुई है, जिनमें १९३७ में कैलास यात्रा के समय व्यवहृत श्री श्री माँ के वस्त्र, माँ के श्री हस्त निर्मित पंखा, करताल, रुद्राक्ष माला, माँ की हस्तलिपि, आदि विविध महत्त्वपूर्ण सामग्रियों का संग्रह रखा गया है । यद्यपि अभी प्रारम्भ मात्र है ।

आधुनिक आकर्षण का केन्द्र है श्री श्री माँ का रसोईघर, अत्यन्त सजी व ढंग से उसे सजाया गया है । हॉल के बाहर वीथी (गैलेरी) में भी वस्तुओं का संग्रह रखा गया है । दो मंजिल पर भी एक हाल है जहाँ खुली छत है जहाँ से पर्वत श्रृंखला एवं गंगा की धारा का विहङ्गम दृश्य का अवलोकन होता है । यहाँ श्री श्री माँ के दिव्यजीवन पर शोधकार्य को सुविधा भी उपलब्ध कराये जाने की योजना है ।

इस भवन परिसर का उपवन अत्यन्त रमणीय है प्रवेश मार्ग की दाहिनी ओर एक कृत्रिम सरोवर है जहाँ कमल खिले हैं । उपवन परिदर्शन के लिए अलग से मार्ग बना है जो दर्शनार्थियों को "आनन्दतीर्थ" घाट पर ले जाती है जहाँ भागीरथी की निर्मल धारा प्रवाहित हो रही है । घाट से ऊपर बायीं ओर गंगाजी का छोटा सा मन्दिर है जहाँ मकरवाहिनी गंगा मैया की प्रस्तर मूर्ति स्थापित है । उपवन में बड़े-बड़े छायादार वृक्ष भी हैं, विविध फूलों के पौधों का संग्रह भी है । डालियों पर विचित्र वर्णों के दुर्लभ फूल खिले हुए हैं ।

सब ओर से यह "मातृ स्मृति मन्दिर व शोध संस्थान" दर्शनार्थियों एवं जिज्ञासुओं के आकर्षण का केन्द्र है । तथा भविष्य में भी रहेगा । आनन्द ज्योतिपीठम् का भव्य मन्दिर तथा "मातृ स्मृति मन्दिर" का आधुनिक संग्रहालय केवल कनखल हरिद्वार का ही नहीं अपितु विश्व का दर्शनीय स्थान है यह निःसन्देह है ।

श्री श्री माँ की महिमा सबको अपनी ओर निरन्तर आकर्षित करती है एवं करती रहेगी । श्री श्री माँ के दिव्य जीवन के अध्ययन से आगामी पीढ़ी को सदा दिग्दर्शन प्राप्त होता रहेगा । हम ऐसी आशा रखते हैं । इस महत् कार्य के लिए निज महानुभावों ने सश्रद्ध सहयोग प्रदान किया है, तथा करेंगे वे सभी श्री श्री आनन्दमयी संघ के विशेष धन्यवाद के पात्र है । श्री श्री माँ की कृपा सभी श्रद्धालुओं पर निरन्तर बरसती रहे माँ के चरणों में यही प्रार्थना है ।

●

श्रद्धाञ्जलि

श्रीमन्त माधवराव सिंधियाः–

३० सितम्बर २००१, ग्वालियर के महाराज श्रीमन्त माधवराव सिंधिया के आकस्मिक निधन की वार्ता ने देश भर को झकझोर दिया । सर्वदा कार्यरत, हँसमुख, ग्वालियर महाराज का अकस्मात् काल के ग्रास में समा जाना एक अनहोनी घटना थी पर विधि का विधान अलंघनीय है । श्री श्री माँ के साथ सिंधिया राज परिवार का पुराना सम्बन्ध रह चुका है । श्री जीवाजी राव सिंधिया के आमन्त्रण पर श्री श्री माँ ग्वालियर में गयी थीं । उस समय माधवराव नितान्त ही बालक थे । अपने माता-पिता के साथ आप अनेकों बार श्री श्री माँ के सान्निध्य में आये हैं । आपके विवाहोपरान्त पुत्र व नववधु को साथ लेकर राजमाता सिंधिया श्री श्री माँ का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु पूना स्थित माँ के आश्रम में आयी थीं ।

दिल्ली में भी अनेकों बार आप माँ के दर्शनों के लिये आये । श्री श्री माँ के साथ इस परिवार का घनिष्ठ सम्बन्ध होने के नाते आज आपके आकस्मिक निधन पर श्री श्री माँ के त्रिताप हारी चरणों में आपकी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये पुनः पुनः प्रार्थना करते हैं । तथा शोक सन्तप्त परिवार को इस कठिन आघात को सहन करने की असीम शक्ति श्री श्री माँ के इन शब्दों में प्राप्त हो । "कर्त्तव्य पालन करते जाओ धीर वीर होकर, वे ही सब करा रहे हैं, इसे याद रखो ।"

दयानन्द गिरिजी–

श्री श्री १०८ मुक्तानन्द गिरिजी के चरणों में अपना जीवन सर्वस्व समर्पण करने वाली संन्यासिनी दयानन्द गिरिजी २० अक्टूबर नवरात्र की पञ्चमी तिथि को पुण्यतीर्थ कनखल में मुक्ति धाम श्री श्री माँ के आश्रम में अशीति पर की सुपरिपक्वावस्था में श्री गुरुचरणों में सदा के लिए समाहित हो गयीं ।

आज से प्रायः पचास वर्ष पहले चालीस के दशक के अन्त में वाराणसी आश्रम में सावित्री महायज्ञ की पूर्णाहुति की तैयारी थी चारों ओर श्री श्री माँ के पुण्यनाम का जयघोष था । दूर-दूर से लोग माँ के श्री चरणों के दशनों के लिये आ रहे थे । इन्हीं दिनों श्रीमती विमला देवी श्री श्री माँ के सानिध्य में आयी थीं । अल्पवयस्का बालविधवा विमला देवी उच्चकुल की ब्राह्मण परिवार की कन्या एवं वधु थीं । आपको इसी प्रकार का आध्यात्म परिवेश पूर्ण आश्रय चाहिये था । सांसारिक परिवेश में वे रहना नहीं चाहती थीं । श्री श्री माँ के दिव्य स्वरूप का दर्शन पाकर अब उनका मन अन्यत्र जाने को तैयार नहीं हुआ । आपने माँ के श्री चरणों में सदा के लिए अपने को समर्पण कर दिया ।

सेवा ही आपकी पूजा थी, शायद ही कभी किसी ने विमला दीदी को विश्राम करते देखा होगा, आश्रमवास स्वीकार करने के अनन्तर आपने श्री मुक्तनन्दगिरिजी से दीक्षा ली और साथ ही अपने को गुरुचरणों में समर्पण करते हुए गिरिजी की सेवा का सम्पूर्ण भार अपने ऊपर ले लिया। गिरिजी की सेवा एवं माँ के लिये भोग तैयार करना आपका मुख्य कार्य था।

आप अत्यन्त सहज सरल भाव से यह कार्य करती थीं। गिरिजी की सेवा के सभी कार्य आप अपने हाथों से करना पसन्द करती थीं। गिरिजी के साथ आपका आत्मिक सम्बन्ध बड़ा ही मधुर था। कितनी भी कार्य व्यस्तता क्यों न हो विमला दीदी अपने कर्तव्य में अडिग थीं। माँ का भोग तैयार करके, माँ के द्वारा भोग ग्रहण करने के उपरान्त अपने हाथों से सबको प्रसाद देने में आप तनिक भी अप्रसन्न नहीं होती थी।

१९७० में गिरिजी के महाप्रयाण के अनन्तर आप को एक विराट् शून्यता का अनुभव हुआ, वर्षों से गिरिजी का अविच्छन्न साथ रहने के कारण ऐसा होना स्वाभाविक ही था। श्री श्री माँ ने आपको सान्त्वना दी : गिरिजी तुम्हारे मन प्राण में सदा सर्वदा हैं। "करुणामयी माँ ने आपको संन्यास दीक्षा लेने के लिये कहा - एवं गिरिजी की परम्परा में ही निर्वाणी अखाड़े के महन्त श्री १०८ गिरिधर नारायण पुरीजी से संन्यास दीक्षा दिलवाई। आपका नया नाम हुआ दयानर्न्दगिरि।

कनखल में गिरिजी की मूर्ति स्थापना हुई मन्दिर निर्माण हुआ। श्री श्री माँ की कार्य प्रणाली अनोखी है। दयानन्दजी पुनः गिरिजी की सेवा में तत्पर हुईं। तथा जीवन के अन्त तक आपने अपना कर्तव्य निभाया।

आपके काम-काज में निरभिमान व्यक्तित्व की झलक मिलती थी। श्री श्री माँ की उपस्थिति में तथा तदुपरान्त भी कनखल में जितने भी बड़े से बड़े उत्सव क्यों न हो दयानन्द जी गिरिजी की मन्दिर की देखभाल लेकर ही रहती थी।

इधर एक वर्ष से आप अधिक अवस्था के कारण प्रायः शय्या शायित थीं। नवरात्र के पुण्य समय में आपने परमपथ की ओर उन्मुक्त यात्रा की। आपके पार्थिव शरीर को संन्यासियों की विधि विधान से गंगा की नीलधारा में प्रवाहित किया गया। विधि अनुसार आपका षोडशी भण्डारा भी कराया गया।

आपके इस सेवापरायण त्यागमय जीवन के प्रति हम पुनः पुनः श्रद्धा सुमन अर्पण करते है।

आचार्य डा. मण्डन मिश्र–

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्व निर्देशक व लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रिय विद्यापीठ के संस्थापक तथा प्रथम कुलपति आचार्य डा. मण्डन मिश्र यद्यपि आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु आपकी कीर्ति संस्कृत सेवा के लिये सदा अमर रहेगी। गत १६ नवम्बर, गुरुवार, २००१ को जयपुर में आपके निधन का दुःखद समाचार पाने के उपरान्त संस्कृत की राजधानी वाराणसी में अनेकों स्थानों पर शोक सभायें आयोजित की गयी थी। काशी हिन्दू विश्व विद्यालय तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की शोकसभाओं में वक्ताओं के उद्‌गार के माध्यम आपके व्यक्तित्व की झलक इस

प्रकार मिलती है । उनका कहना था, "केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान एवं केन्द्रिय संस्कृत विद्यापीठों की स्थापना कर भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत के अध्ययन अध्यापन, शोधकार्य तथा ग्रन्थ प्रकाशन के लिये आचार्य मण्डन मिश्र की सेवा संस्कृत जगत् में अविस्मरणीय रहेगी ।

महामहोपाध्याय पद्मश्री आचार्य मण्डन मिश्रजी श्री श्री माँ की आश्रम परम्परा के साथ वर्षो से जुड़े थे । इस परम्परा को आपने अपने जीवन के अन्तिम कार्य काल तक निभाया । श्री श्री माँ के नैमिषारण्य स्थिति पौराणिक अनुसंन्धान संस्थान को एक सुनियोजित रूपरेखा प्रदान करने में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान था । श्री श्री माँ आनन्दमयी कन्यापीठ को नियमित केन्द्रिय अनुदान प्रदान करने का श्रेय भी आपको ही है ।

सन् १९८६ में महामहोपाध्याय पं. श्री गोपीनाथ कविराज की जन्मशती समायोजना समिति के आप ही मुख्य संयोजक थे । इस अवसर पर "अर्चा-समृति" नामक स्मारक ग्रन्थ तथा नवोन्मेश स्मृति ग्रन्थों के प्रकाशन में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान था । आप सच्चे अर्थो में संस्कृत के पुजारी थे ।

३ मई १९९५ श्री फोर्ट में आयोजित श्री श्री माँ के जन्मशताब्दी समारोह के उद्धाघाटन कार्यक्रम में भी आपका विशेष योगदान रहा । ऊँचे से ऊँचे पद पर कार्यरत रहते हुये भी श्री श्री माँ के आश्रम के किसी भी कार्य में आपकी यदि आवश्यकता होती तो आप तुरन्त माँ की सेवा में उपस्थित हो जाते थे । श्री माँ के प्रति आपकी अपार श्रद्धा थी । माँ की शारीरिक उपस्थिति में दिल्ली, लखनऊ आदि स्थानों में जहाँ भी माँ रहती आप अवश्य ही दर्शनों के लिये जाते थे ।

आपने वाराणसी में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में ६ वर्षो से अधिक समय तक कुलपति के पद को सम्भाला, विश्वविद्यालय के सर्वाङ्गीण विकास के लिये आपने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये । इस समय श्री श्री माँ के आश्रम में आयोजित विशेष कार्यक्रमों में आप अवश्य ही भाग लेते थे ।

देश की विभिन्न प्रादेशिक संस्कृत अकादिमियों से आपको अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुये थे । इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत व मीमांसा की सेवा के लिये आपको अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किये गये थे । विदेशों में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलनों में आपने अनेकों बार अध्यक्षता की थी । प्रशासनिक के रूप में आपने सामाजिक जीवन व राष्ट्र के आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में विभिन्न संस्थाओं की स्थापना की थी ।

संस्कृत के प्रति अगाध प्रेम आपके इन शब्दों में प्रकट होता है । "संस्कृत की रक्षा का कार्य संस्कृत के विद्वानों एवं छात्रछात्रों की एक जुटता से संभव हो सकता है, पहली शक्ति काशी में है, दूसरी माँ गंगा में तथा तीसरी शक्ति संस्कृत विश्वविद्यालय में है, इन सभी शक्तियों से ऊर्जा प्राप्त करके हम संस्कृत जगत की सेवा कर सकते हैं ।"

संस्कृत के इन महान् पुजारी के प्रति हम पुनः पुनः सश्रद्ध श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हुए श्री श्री माँ के श्री चरणों में आपके दिवंगत आत्मा की चिरशान्ति के लिये प्रार्थना करते हैं ।

परमपूज्य स्वामी श्री कृष्णानन्द जी महाराजः—

२३ नवम्बर, शुक्रवार, गोपाष्टमी तिथि २००१ को दिव्यजीवन संघ के मुख्यालय शिवानन्द नगर ऋषिकेश में एक महान् दिव्य आत्मा दिव्य स्वरूप में विलीन हो गयी । परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज सन् १९५८ से दिव्य जीवन संघ के महासचिव पद पर आसीन थे । एक तत्त्ववेता दार्शनिकों में आपकी गणना की जा सकती । पूर्व एवं पाश्चात्य उभय दर्शन के आप मर्मज्ञ थे । दार्शनिक होने के साथ ही आप परम भक्त भी थे ।

श्री श्री माँ के साथ आपका घनिष्ठ आत्मिक सम्बन्ध था । तभी तो २६ अगस्त राधाष्टमी को १९८२ को पूज्य स्वामी जी महाराज बिना किसी पूर्व सूचना के देहरादून में आयें एवं श्री श्री माँ को श्री राधा के स्वरूप में स्वयं पूजन अर्पण किया । श्री माँ के श्री शरीर पर यही अन्तिम पूजा थी ।

यह घटना एक महत्त्वपूर्ण अध्याय की ओर संकेत करती है । देहरादून के किशनपुर आश्रम में श्री श्री माँ हैं । २५ अगस्त को रात्रि में अचानक माँ ने पूछा- राधाष्टमी कब है । माँ से कहा गया "कल" । माँ ने सुना कुछ कहा नहीं । इधर २६ अगस्त प्रातः पू. स्वामीजी फल की टोकरी बड़ी सी माला, राधारानी का परिधेय नीलबनारसी वस्त्र लेकर शिष्य द्वय के साथ देहरादून में उपस्थित हुये । माँ को स्वामीजी के आगमन की सूचना भेजी गयी । माँ ने उन्हें भीतर ले आने को कहा । स्वामी जी भीतर गये उन्होंने श्री श्री माँ के श्री शरीर पर अपने हाथों से वस्त्र चढ़ाया माला पहनायी तथा फल भेंट किया । थोड़े समय तक माँ के सामने आप शान्त भाव से बैठे रहे । पूज्य स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज जैसे गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति द्वारा इस प्रकार की पूजा कोई साधारण बात नहीं थी । इसका रहस्य किसी को पता न चला । स्वामीजी थोड़ी देर बाद चले गये । दूसरे ही दिन २७ अगस्त १९८२ को श्री श्री माँ ने अव्यक्त लीला धाम में प्रवेश किया । स्वामी जी से इस सम्बन्ध में बाद में चर्चा करने पर यह पता चला कि २५ अगस्त को रात्रि में उनके मन में अकस्मात् यह भाव आया कि श्री राधा स्वरूप में श्री श्री माँ का राधाष्टमी के दिन दर्शन करें और इसी दिन रात्रि में माँ ने भी पूछा था— राधाष्टमी कब है ? उक्त घटना श्री श्री माँ के प्रति पू. स्वामी जी की प्रगाढ़ श्रद्धा का परिचय देती है ।

श्री श्री माँ की उपस्थिति में पूज्य स्वामी जी जन्मोत्सव, संयम सप्ताह आदि समय अवश्य ही पधारते थे । आपके प्रवचन अक्सर वेदान्त पर आधारित हुआ करते थे । आप साक्षात् त्याग वैराग्य एवं निरभिमानिता की प्रतिमूर्ति थे ।

"दिव्यजीवन" पत्रिका में प्रकाशित कुछ अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा । "श्री स्वामी जी महाराज का अवसान न केवल दिव्य जीवन संघ की ही, बल्कि अखिल आध्यात्मिक जगत् की अपूरणीय क्षति है । इस रिक्तता को भरना नितान्त असम्भव है ।

श्री स्वामी जी का जीवन अपने-आपमें ही वस्तुतः उनका दिव्य संदेश है । यह आत्मा का ब्रह्माण्डीय पूर्णता की ओर जटिल आरोहण-प्रक्रिया का स्वरूप था । आपका जन्म २५ अप्रैल १९२२ को दक्षिण भारत के कनारा जनपद के अन्तर्गत पुत्तूर में कोम्ब्रेंजे शंकर नारायण पुत्तुराय

एवं कावेरी अम्मा के यहाँ हुआ था । सुब्बराय (श्री स्वामी जी का पूर्वाश्रम नाम) अपने परिवार का परित्याग कर युवावस्था में ही उत्तर भारत की यात्रा के लिए चल पड़े । सन् १९४४ में गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज से उनकी भेंट हुई । शुभ पर्व मकर संक्रन्ति १४ जनवरी १९४६ को गुरुदेव से पवित्र संन्यास आश्रम में दीक्षित हुए और तब से वे स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती नाम से विख्यात हुए । श्री स्वामी जी के ही शब्दों में– "जब गुरुदेव ने उनके कर्णरन्ध्रों में महिमापूर्ण महावाक्यों का उच्चारण किया, तो उनको अपने अन्तस् में एक अद्भुत रहस्यमय परिवर्तन अनुभूत हुआ ।" सन् १९४८ का वह एक गौरवशाली दिवस था जब उन्हें "परम सत्य की एक ज्योतिर्मय झलक' प्राप्त हुई थी । वे सदा-सर्वदा परमानन्दमयी शान्ति में संस्थित रहे । श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की जीवन-गाथा समाधि अवस्था में नित्य निरन्तर आनन्दित एक जीवन्मुक्त की गाथा है ।"

पूज्य स्वामी जी एक कुशल प्रशासक भी थे । दिव्य जीवन संघ को वर्तमान एक सुगठित स्वरूप प्रदान करने में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा ।

दिव्य जीवन पत्रिका- "वे वेदान्त के उत्कृष्ट प्रख्याता, केवल मात्र अपनी विद्वत्ता-पाण्डित्य के कारण नहीं, बल्कि वास्तविक स्वानुभूति के कारण ही सुविख्यात थे । इन्द्रयातीत सत्य के एक प्रमुख प्रतिपादक के रूप में उन्होंने जीवन-यापन किया और अब भी वे इस धारा के परिश्रान्त-क्लान्त पथिकों को पर मलक्ष्य प्राप्त्यर्थ दिशा-निर्देश कर दिव्य पथ की ओर अग्रसर कर रहे हैं ।"

इन महान् तपस्वी मनीषी यति श्रेष्ठ के प्रति हम अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं ।

●

शोक संवाद

श्रीमती वासन्ती गुह एवं श्री अनिल कुमार गुह–

दिल्ली आश्रम के पुराने भक्त श्रीमती वासन्ती गुह एवं उनके पति श्री अनिल कुमार गुह तीन महीने के अन्तराल में परलोकवासी हुये । १0 जुलाई २00१ को श्रीमती गुह का निधन हुआ । आप ढाका के सुप्रसिद्ध मित्रवंश की कन्या थीं । १९६0 में यह परिवार श्री श्री माँ की सन्निधि में आया । १९६५ में आपने दीक्षा ग्रहण की । आपके पति श्री अनिल कुमार गुह दिल्ली आश्रम के कार्य कारिणी समिति के अध्यक्ष थे । पत्नी की मृत्यु के उपरान्त ३ अक्तूबर को आपने भी परलोक गमन किया । आपकी चारित्रिक दृढ़ता एवं सत्यनिष्ठा के लिये आप सर्वजन प्रिय थे । पति पत्नी दोनों ही सच्चरित्र एवं सात्त्विक व्यवहार के लिये भक्तजन में सुपरिचित थे ।

आप दोनों को श्री श्री माँ के अभयदायक मंगलमय श्री चरणों में चिरशान्ति प्राप्त हो श्री श्री माँ से यही प्रार्थना है ।

श्री माणिक वन्द्योपाध्याय–

राँची निवासी मातृ साधक एक निष्ठ सेवक श्री माणिक वन्द्योपाध्याय १४ नवम्बर को निज आवासीय भवन राँची में माँ का स्मरण करते हुये सदा के लिये मातृचरणों में विलीन हो गये ।

बाल्यावस्था से ही वे माँ काली के भक्त थे । माँ काली का मन्दिर निर्माण करके मूर्ति प्रतिष्ठा करना उनका संकल्प था । एक दिन उन्होंने स्वप्न देखा कि माँ काली उनको स्वप्न में निर्देश दे रही हैं कि मैं तो आनन्दमयी आश्रम में ही हूँ नया मन्दिर बनाकर क्या करोगे ?

इस घटना के बाद जब श्री श्री माँ राँची में आयी तब आपने माँ से भेंट की तथा काली मन्दिर बनाने की इच्छा प्रकट की । राँची आश्रम में मां काली का स्वतन्त्र मन्दिर नहीं था । श्री माँ के ख्याल से तथा माणिकदादा के सहयोग से आश्रम में एक नये मन्दिर का निर्माण हुआ । मन्दिर निर्माण के समय भी आपको विविध अलौकिक अनुभूतियाँ हुई थीं ।

माणिक वन्धोपाध्याय के प्रयाण से राँची आश्रम की अपूरणीय क्षति हुई है यह निः सन्देह है । माँ काली के प्रति इस प्रकार एक निष्ठ भक्ति अन्यत्र दुर्लभ है । मन्दिर की सेवा पूजा की सुव्यवस्था के लिये वे सदा सचेष्ट रहते थे । राँची आश्रम के "श्री श्री काली माता ट्रस्ट" के आप दीर्घ समय तक सचिव भी थे ।

श्री श्री माँ के चरणों में आपको अनन्त काल तक आनन्दमय आश्रय प्राप्त हो यही प्रार्थना है ।

श्रीमती कृष्णा गुर्टू--

देहरादून के कश्मीरी तन्खा परिवार में जन्मी श्रीमती कृष्णा गुर्टू २८ दिसम्बर २००१ अपने पतिदेव के सामने माँ के पुण्यनाम का स्मरण करती हुयी माँ के आनन्द धाम में सदा के लिये चल बसीं । आपके पिता श्री मन मोहन नारायण तन्खा एवं काशी नारायण तन्खा सहोदर भाई थे । श्रीमती गुर्टू ने श्री माँ का दर्शन उस समय किया था जब श्री श्री माँ पहली बार देहरादून गयी तथा आनन्दचौक के मन्दिरमें ठहरी थी । श्रीमती गुर्टू के पितामह श्री आनन्द नारायण तन्खा की धर्मपत्नी ने श्री श्री माँ को आनन्द चौक के मन्दिर में ठहराया था । अतः बाल्यावस्था से ही आप पर श्री श्री माँ की कृपा दृष्टि पड़ी थी ।

आपका विवाह जोधपुर के श्री रूपनारायण गुर्टू से हुआ था, आपका यह परिवार भी भक्ति भावापन्न था । आपने सम्पूर्ण जीवन बड़े संयम से व्यतीत किया आप के सभी कार्य नियमित थे । आपने अपने सम्पूर्ण जीवन में एक आदर्श गृहिणी का दृष्टान्त स्थापित किया । जीवन भर संयम एवं निष्ठा का परिणाम यह हुआ कि ८९ की दीर्घ अवस्था में भी आपने अपनी अन्तिम यात्रा अनायास पूरी की ।

श्री श्री माँ के चरणों में आपकी दिवंगत आत्मा की चिर शान्ति के लिये पुनः पुनः प्रार्थना करते हैं ।



आवश्यक सूचना

जिन ग्राहकों ने अभी तक सन् २००२ का चन्दा नहीं भेजा है उनसे अनुरोध है कि वे अविलम्ब मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर चन्दा भेजने का कष्ट करें। नहीं तो अगला अंक हम भेजने में असमर्थ होंगे।

—Shree Shree Anandamayee Sangha
Publication A/c
Bhadaini, Varanasi-221001

"हरि कथा ही कथा, और सब वृथा व्यथा"

—श्री श्री माँ आनन्दमयी

अमेरिका के पेन्सीलवेनिया राज्य में स्थायी रूप से पंजीकृत संस्था **माँ आनन्दमयी सेवा समिति** (Mass, INC) के स्वयं सेवकों की ओर से परमाराध्या श्री श्री माँ के सभी भक्तजनों को सप्रेम **"जय माँ"** ।

इस संस्था का उद्देश्य श्री श्री माँ की जीवन लीला रहस्य की सेवा, धार्मिक कार्य. सत्संग एवं जनसेवा सहित सनातन धर्म तथा श्रीमद् भागवत् धर्म युक्त प्रक्रिया है ।

अमेरिका सरकार द्वारा इस समिति के लिये सम्पूर्ण कर मुक्ति (Tax - exemption) प्राप्त है । जिसका नम्बर है 23-2967597 जो IRS Code 501 (C) (3) के अनुसार कार्यों के लिये है ।

अमेरिका एवं आस-पास के देशों में स्थायी रूप से निवास करने वाले मातृभक्तों से विनती है कि **"माँ आनन्दमयी अमृतवार्ता"** (त्रैमासिक पत्रिका) जो चार भाषाओं (हिन्दी. बगंला, गुजराती एवं अंग्रेजी) में श्री श्री माँ की दिव्य जीवन लीला सम्बन्धी गाथा एवं अमूल्य वाणी के संकलन के रूप में प्रकाशित होती है MASS, INC से प्राप्त कर सकते हैं । पत्रिका का वार्षिक चन्दा 12/- बाहर डॉलर मात्र है ।

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये निंम्नलिखित पते पर कृपया सम्पर्क कीजिये :–

Mahadev R. Patel
President, Ma Anandamayee Seva Samiti, INC
212, Moore Road
Wallingford, PA 19086-6843
Tel : 610-876-6862 Fax : 610-876-1351
email : maha devpatel @ netscape. net.

जय माँ

❄ Branch Ashrams ❄

15. NEW DELHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kalkaji, New Delhi-110019 (Tel : 011-6826813)

16. PUNE : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Ganesh Khind Road, Pune-411007, (Tel : 020-5537835)

17. PURI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Swargadwar, Puri-752001, Orissa.

18. RAJGIR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Rajgir, Nalanda-803116, Bihar (Tel : 06112-55362)

19. RANCHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Main Road,
P.O. Ranchi-834001, Bihar (Tel : 0651-312082)

20. TARAPEETH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Chandipur-Tarapeeth, Birbhum-731233, W.B.

21. UTTARKASHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kali Mandir, P.O. Uttarkashi-249193,

22. VARANASI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Bhadaini, Varanasi-221001, U.P.
(Tel : 0542-310054+311794)

23. VINDHYACHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ashtabhuja Hill,
P.O. Vindhyachal, Mirzapur-231307, (Tel : 05442-42343)

24. VRINDAVAN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Vrindavan, Mathura-281121 U.P. (Tel: 0565-442024)

IN BANGLADESH :

1. DHAKA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
14, Siddheshwari Lane, Dhaka-17 (Tel : 405266)

2. KHEORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Kheora, Via-Kasba, Brahmanbaria.



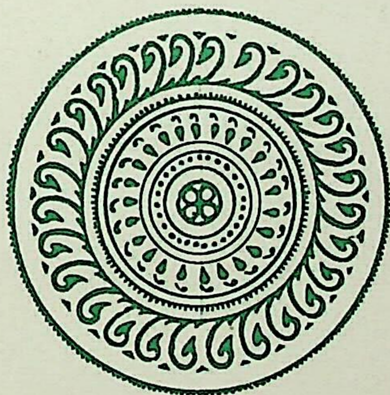
REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97



रत्ना ऑफसेट्स लिमिटेड कमच्छा, वाराणसी, फोन-३९२८२०

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता



VOL.-6 APRIL, 2002 NO. 2

SHREE SHREE ANANDAMAYEE SANGHA

❄ Branch Ashrams ❄

1. AGARPARA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P. O. Kamarhati, Calcutta-700058 (Tel : 033-5531208)
2. AGARTALA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Palace Compound, P.O. Agartala-799001. West Tripura (Tel : 0381-208618)
3. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Patal Devi, P.O. Almora-263602, (Tel : 05962-33120)
4. ALMORA : Shree Shree Ma Anaudamayee Ashram, P.O. Dhaul-China, Almora-263881, (Tel : 05962-62013)
5. BHIMPURA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhimpura, P.O. Chandod, Baroda-391105, (Tel : 02663-833208
6. BHOPAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P. O. Bairagarh, Bhopal-462030, M.P. (Tel : 0755-521227)
7. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kishenpur, P.O. Rajpur, Dehradun-248009 (Phone : 0135-734271)
8. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalyanvan, 176, Rajpur Road, P.O. Rajpur, Dehradun-248009, (Phone : 0135-734471)
9. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram. P.O. Raipur Ordnance Factory, Dehradun-248010
10. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, 47/A Jakhan, P.O. Rajpur, Dehradun,
11. JAMSHEDPUR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Bhatia Park, Kadma, Jamshedpur-831005, Bihar
12. KANKHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Kankhal, Hardwar-249408, (Tel : 0133-416575)
13. KEDARNATH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Himlok, P.O. Kedarnath, Chamoli-246445,
14. NAIMISHARANYA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Puran Mandir, P.O. Naimisharanya, Sitapur-261402, U.P.

माँ आनन्दमयी

अमृतवार्ता

श्रीश्री माँ आनन्दमयी के दिव्यजीवन
तथा
दिव्यवाणी की वाहिका त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष—६ अप्रैल, २००२ सं.—२





वार्षिक चंदा (डाकव्यय सहित)
भारत में – ६० रुपये
विदेशों में – १२ डॉलर/या ४५० रुपये
एक प्रति – २०/- रुपये

साधारण नियम

यह त्रैमासिक पत्रिका चार पृथक भाषा–हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी में जनवरी अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होती है । वर्ष का प्रारम्भ जनवरी से होता है ।

पत्रिका में मुख्यतया श्री श्री माँ पर आधारित लेखों को ही प्रधानता दी जाती है । इनके अतिरिक्त आध्यात्म पर आधारित हृदयस्पर्शी लेख; किसी भी देश तथा किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के महापुरुषों की उपदेशात्मक शिक्षावलियों का भी पत्रिका में स्वागत है ।

जो भक्तगण माँ के सम्पर्क में आये हैं वे एकान्त व्यक्तिगत अनुभवों को छोड़कर ऐसे अनुभवों को आर्कलित कर सकते है जो कि श्री श्री माँ के लौकिक व्यवहार के प्रति आलोकपात करने वाले हों ।

सभी लेख फुलस्केप कागज के एक पृष्ठ पर टंकित या स्पष्ट लिखित होने चाहिये । लेखों की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें । मनोनीत न होने पर लेखों को वापस भेजना कार्यालय के लिए असुविधाजनक है । सभी लेख सम्पादक के नाम भेजें ।

अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम के "Shree Shree Anandamayee Sangha—Publication A/C" नाम पर भेजें ।

पत्रिका सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्रादि व्यवहार तथा वार्षिक चंदा भेजने का पता :

कार्यकारी सम्पादक, "माँ आनन्दमयी - अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी -२२१००१

पत्रिका में विज्ञापन देने का नियम :–

सम्पूर्ण पृष्ठ – २०००/- पूरे वर्ष के लिये
आधा पृष्ठ – १०००/- पूरे वर्ष के लिये

अग्रिम शुल्क के साथ विज्ञापन का विषय (Matter) उपर लिखित पते पर भेजें ।

स्वामी श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री पानु ब्रह्मचारी द्वारा श्री श्री आनन्दमयी संघ, भदैनी, वाराणसी–२२१००१ (उ. प्र.) से प्रकाशित तथा रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी. २१/४२ कमच्छा, वाराणसी-१० (उ. प्र.) से मुद्रित । सम्पादक–श्री पानु ब्रह्मचारी ।

विषय-सूची



प्रकाशन-सूची

श्री श्री आनन्दमयी संघ द्वारा प्रकाशित श्री श्री माँ से सम्बन्धित हिन्दी भाषा में कुछ अमूल्य प्रकाशन संघ के प्रायः सभी शाखा आश्रमों में उपलब्ध हैं ।

१. आनन्दज्योति (शताब्दी स्मारिका)– यह एक उच्च कोटि का संस्करण है, जिसमें विभिन्न भाषाओं – संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में श्री श्री माँ की पवित्र जीवनानुक्रमणिका (१८९६ से १९८२), १00 अमूल्य वाणियों एवं श्री श्री माँ के विभिन्न आश्रम एवं संस्थाओं का इतिहास, साथ ही स्वनामधन्य विद्वानों के लेख, श्रद्धाञ्जलि सहित श्री श्री माँ के कतिपय मूल्यवान चित्रों का संकलन है । अति उत्तम कागज पर छपा है । मूल्य रु. १00/- केवल हिन्दी खंड – मूल्य रु. ३0/-

२. श्री श्री माँ आनन्दमयी– परम श्रद्धेया दीदी गुरुप्रिया द्वारा लिखित श्री श्री माँ की अपूर्व लीला कहानी । २0 भागों में सम्पूर्ण । प्रथम भाग पुनर्मुद्रित । पेपर बैक, मूल्य रु. ४0/-

३. मातृ दर्शन– श्रद्धेय ज्योतिष चन्द्र राय (भाईजी) द्वारा मूल बंगला में लिखित श्री श्री माँ के ऊपर अतुलनीय पुस्तक । हिन्दी संस्करण, पेपर बैक, मूल्य रु. २५/-

४. माँ आनन्दमयी– डॉ. पन्नालाल, आई. सी.एस. (रिटायर्ड) द्वारा लिखित श्री श्री माँ का अपूर्व जीवन चरित । पेपर बैंक, मूल्य रु. ३0/-

५. सद्वाणी– हिन्दी में अनूदित श्री श्री माँ की मूल्यवान वाणियों का संग्रह । श्री ज्योतिषचन्द्र राय द्वारा संकलित । पेपर बैक, मूल्य रु. १५ ।

६. माँ आनन्दमयी दिव्यालोक वार्ता– ब्र. गुणीता द्वारा लिखित श्री श्री माँ की जीवन-कथा का संक्षिप्त चित्रण तथा शतवाणी । पेपर बैक, मूल्य १0/-







मातृ-वाणी

मन ही मन में जप करो । ध्यान लगाओ । कौन खींचता है जो, खींचता है भगा दो । हटाकर भगवान् का ध्यान लगाओ । खाते पीते चलते-फिरते जहाँ रहो मन में स्मरण करते रहो । दिन जा रहे हैं । अभी लगाओ खूब जोर से, खूब जप ध्यान करो ।

* * *

वे ही सर्वत्र, विश्वरूप में जगतरूप में । जगत अतीत रूप में । नास्तिक में ना के रूप में, वह भी भगवान का रूप है । परमार्थ ही एक कर्म है और सब वृथा ।

* * *

जब तक तुम्हारे भीतर काम करने में और उसे पूरा करने में खुशी होगी और काम बुरा (बिगड़) हो जाय तो दुःख होगा तब तक भगवत् क्रिया छोड़ जो भी क्रिया होगी उससे शक्ति का क्षय ही होगा । (अर्थात् सभी काम भगवद्बुद्धि से किये जाने चाहिये)

* * *

जिसको जो बनाना है, बिना बनाकर रह नहीं सकता । तुम अपना करो । दुनिया की जिसने सृष्टि की है–वह अपना इन्तज़ाम में पक्का रहेगा–तुम अपना चलो । ईश्वर को मानो तो फल होगा । अगर ना मानो तो शक्ति क्षय होगी ।

* * *

भगवान नाम से मिलते हैं । दवाई पियो, औषधि पियो, रुचि ना हो–नहीं हो तो Hospital में बैठो इन्जेक्शन लगायेगा भगवान का नाम । भगवान का नाम और भगवान अभिन्न । नाम कर सकता है । मन्त्र है--सतसंग है–सतसंग करो । निर् आसरा का आसरा भगवान् [निराश्रय का आश्रय] । भगवान् के सिवाय और कोई नहीं ।

* * *

[मन्दिर में गहने चोरी के प्रसंग में]

भगवान् खुद ही चोरी कराते हैं, हर एक रूप में भगवान् ही हैं । और कोई नहीं । उनकी मौज किसी समय पकड़वा देते हैं । किसी समय पकड़वाते भी नहीं । उनकी जो मौज होती है वही करते हैं । अपने को लेकर आप खेलते हैं न । कभी चोरी भी पकड़वा देते हैं । दण्ड भी देते हैं । हर एक किस्म है उनके पास ।

* * *

भगवान् कहाँ नहीं हैं–पहचानने की कोशिश करो । भगवान् कहाँ हैं ?

विवेक वैराग्य त्याग । त्याग माने बदलना–वह क्रिया करो–(जिसके) करते-करते त्याग हो जायेगा जिससे जो नित्य स्वयं प्रकाश यह प्रकट हो जायेगा । जिससे आसक्ति–उसका त्याग होने से–तुम्हारे पास भगवान् ही हैं सर्वत्र–सर्वश्रेष्ठ ।

* * *

शरीर काम करता है दुनिया में । अहंकार, गुस्सा, अभिमान, खाना-पीना, उसके अतीत न जाने से तुम्हारे कर्म में है नहीं । सारी सफाई–जिस क्रिया से हो जाय । अक्रिया न होगी । अक्रिया अर्थात् सफल नहीं आना-जाना यही हुआ । भगवान् के लिये जो कर्म करते हैं सफल कर्म । भोग के लिये विफल कर्म होता है । परमार्थ जिनको अच्छा लगता है, आनन्द लगता है । फिर वह आनन्द फीका लगता है । वह नित्य आनन्द उसका थोड़ा स्पर्श हो जाय ।

* * *

वृक्ष तल में बैठो । कौन मुहूर्त में किसको आ जाय कोई कह नहीं सकता । इसलिये नित्य बैठो । वृक्ष के तले में बैठा करियो ।

* * *

प्र :– भगवान् क्यों सोना चाँदी माँगते हैं ?

माँ– भगवान् किसी तरह से माँगें । भगवान् की कृपा । भगवान् के शरीर पर थोड़े ही चोट लगती है । भगवान् का शरीर थोड़ा ही दुखता है । सोना चाँदी में क्या है । तुमने पहनाया । किसी बहाने से तुम पर कृपा करनी है । पशु-पक्षी जैसे ही जीव । सुधारने के लिये । मनुष्य अज्ञान का पर्दा हटा सकता है । ज्ञान का दरवाजा खोल सकता है । श्रेय ग्रहण-प्रेय त्याग ।

* * *

प्र :– आपके पास कैसे आये ? आने का क्या मतलब ?

माँ– जहाँ अनजान का प्रश्न नहीं । आने जाने का प्रश्न नहीं है–पास के पास माने (अर्थात्) भगवान् के पास । भगवान् के पास माने जो गुरु बताये वैसा चले तो पूरा आनन्द मिल जायेगा । यहाँ आने जाने का प्रश्न नहीं । रास्ता कह दिया–कोशिश करो । बनत बनत बन जायेगा ।

* *

बनत बनत बन जायेगा–सतसंग वही तो हो रहा । पहचान नहीं हुआ वही अगम्य । उनके पास जाना नहीं हुआ अगम्य । कभी प्रकाश नहीं हो सका यह तो नहीं । कभी न कभी सतसंग से गुरु उपदेश से प्रकाश होता है । अभी गमन आगमन जो नहीं हो सकता सत्संग करें ।

●

नव युग की नवकलिकाओं का पोषक तत्त्व

भगवान् का दर्शन कैसे होता है ? जैसे अपनी माँ को पुकारते हैं तो माँ आ जाती है। पिताजी को पुकारते हैं तो पिताजी आ जाते हैं। ऐसे ही भगवान् को पुकारो भगवान् आ जायेंगे।

दोस्त है तो दोस्त की बात माननी पड़ेगी।

१. सबेरे उठकर भगवान् से प्रार्थना करना "हे भगवान् हमको अच्छा लड़का बना दो। हम तुम्हारी सेवा कर सकें।
२. सच बोलने की सदा कोशिश करना।
३. माता-पिता, गुरुजनों, बड़ों की बात मानना।
४. अच्छी तरह पढ़ाई लिखाई करना।
५. इन चार बातों को पूरा करके खूब खेलकूद करना।

—श्री श्री माँ आनन्दमयी

अपना कौन

शुद्ध बुद्ध मुक्त तुम अपने को पाओगे।
जितना करोगे उतना पाओगे।
अपना है कौन, प्रेम भक्ति अपनी है।
बोध भी अपना है, अपना कौन !
जिस क्रिया से हट जाये पर्दा, छूट जाये आवरण
वह शुद्ध बुद्ध मुक्त अपने में आप।
वह शान्ति रूप ज्ञान रूप, सत्य स्वरूप अपना है।
वह काम में लगो, करो प्रयास, पाओ अपने को आप।
कहती है माँ की वाणी करो करो करते जाओ।
अपने को जानो अपने को पाओ।

—ब्र. गुणीता

श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग

—स्व. अमूल्य कुमार दत्त गुप्त

कुष्ठ रोगी की रोगमुक्ति :–

२१ भाद्र, शनिवार, ६-९-५९

९ बजे के बाद डॉ. पन्नालाल अपनी पुस्तक से माताजी को पढ़कर सुनाने लगे । जिस अंश का पाठ किया उसमें दरिद्र भोजन के उपलक्ष में माताजी को ढाका के नेशनल मेडिकल स्कूल में ले जाया गया था वह प्रसंग चल रहा था । दरिद्र भोजन के समय माताजी का एक कोढ़ी को भोजन कराने का ख्याल हुआ था । इस प्रसंग में माताजी ने कहा,"उक्त व्यक्ति को कोढ़ का काफी प्रकोप था । वह अपने हाथों से खा नहीं सकता है देख, उसे खिला देने का ख्याल हुआ । पर इन लोगों ने खिलाने नहीं दिया । मैं उस व्यक्ति के पास बैठी रही । उस व्यक्ति को एक चम्मच दिया गया उसी के द्वारा उसने प्रसाद ग्रहण किया था । कुछ दिन बाद पता लगाने पर सुनने में आया कि वह रोगी स्वस्थ हो गया है ।

लोगों को स्वस्थ करने के विभिन्न उपाय :–

इन सब बातों के उपरान्त डॉ. पन्नालाल ने कहा, "अभी तक माताजी से जो सुना उससे लगता है कि माताजी रोगियों को तीन प्रकार से ठीक करती हैं–स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा तथा ख्याल द्वारा ।"

माताजी–तीन प्रकार से ही क्यों, और भी अनेक प्रकार हो सकते हैं । अवश्य मैं इस शरीर की बात नहीं बोल रही हूँ । दृष्टि या स्पर्श से रोग आरोग्य किये जा सकते हैं यह ठीक है, पर इसके भी विविध प्रकार हैं । एक हुआ जैसे किसी को हाथों द्वारा स्पर्श किया गया, पुनः हाथों से स्पर्श न करके भी उसे कोई वस्तु दी गयी । एक बार एक लड़की को इस शरीर के पास लाया गया था । वह वातव्याधि से शय्यागत थी । जब उस लड़की को इस शरीर के पास लाया गया तब यह शरीर सुपारी काट रहा था । इस प्रकार सुपारी काटते काटते एक टुकड़ा जमीन पर डालकर उसे वह उठा लेने को कहा गया । वह लड़की बड़ी मुश्किल से घसीटती हुई आयी और वह टुकड़ा उठा लिया । इसके बाद उस लड़की को उसके माता-पिता घर ले गये । लड़की बिस्तर पर ही लेटी रहती थीं । एकदिन उनके घर के सामने से ही बारात जा रही थी । उसकी आवाज सुनते ही वह बिस्तर से उठकर दरवाजे के पास आ गयी । उसे कोई बीमारी है यह तो वह भूल ही गयी थी । यह जो खड़ी हुई उसके बाद उसे वात व्याधि से शय्यागत होना नहीं पड़ा । अभी भी वह ठीक ही है । कभी-कभी किसी किसी को सामने न देखकर किसी दूसरे के हाथों कुछ भिजवा दिया गया है । उससे भी काम बन गया । कभी ऐसा भी हुआ है कि रोगी के साथ भेंट नहीं हुई, रास्ते से जा रही

हूँ। किसी घर में लोगों की उत्कण्ठा को देखा गया, किसी ने कहा इस मकान में एक व्यक्ति रोग से पीड़ित है। यह रोग का संवाद पाते ही काम बन गया, इस तरह नाना प्रकार से रोग ठीक किया जा सकता है। यह केवल शरीर की व्याधि की बात ही नहीं कह रही हूँ। भव व्याधि में भी ऐसा हो सकता है। भव व्याधि भी एक रोग विशेष है। ऐसा भी हुआ है कि जिसको रोगमुक्त किया गया, तुमलोगों की दृष्टि में इस शरीर के साथ उसका कोई परिचय नहीं है। उसने भी इस शरीर को नहीं देखा इस शरीर ने भी उसे नहीं देखा, पर जब उसके बारे में ख्याल हुआ तब उसी से ही काम बन गया।

डा. पन्नालाल–यह तो बड़े ही आश्चर्य की बात है जिसने आपको नहीं देखा, आपने भी जिसको नहीं देखा उसके साथ आपका connection हुआ क्या ?

माताजी–सभी के साथ connection है, पर स्थूल दृष्टि के कारण तुमलोग उसे पकड़ नहीं पाते हो। इस शरीर का ख्याल ऐसा भी हुआ है जिसे सुनकर बाबा (अर्थात् डॉ. पन्नालाल) के प्राणों में कष्ट पहुँचेगा। किसी किसी की यदि ऐसी अवस्था देखी गयी है कि थोड़ा सा आघात (धक्का या चोट) लगते ही वह धर्म (आध्यात्म) की ओर मुड़ जायेगा। तब उसे भी आघात दिया गया है।

इतना कहकर माताजी हँसने लगीं तथा डॉ. पन्नालाल से पूछा, 'क्यों पिताजी यह सुनकर तुम्हें कष्ट नहीं होता।"

डॉ. पन्नालाल–आपने आघात (चोट) पहुँचाने का जो कारण बताया उसे सुनकर कष्ट क्यों होगा ?

इस वार्तालाप के अवसर पर नारायण स्वामी भी उपस्थित थे। उन्होंने कहा, "माताजी कब किसको क्या करती हैं यह समझना बड़ा ही कठिन है। मैं एक घटना जानता हूँ जिसे अब प्रकाश कर रहा हूँ। एकबार हमलोग विन्ध्याचल में थे। विन्ध्याचल में उस वर्ष दुर्गापूजा हो रही थी। दशमी के दिन माताजी ऊपर की मंजिल में बैठी थीं। मैं उनके पास था। इतने में ढाका की रहनेवाली एक महिला अपने बच्चे को लेकर माताजी के पास आयीं। महिला अच्छे घर की थीं। विन्ध्याचल में वह इस समय वायुपरिवर्तन के लिये आयी हुई थीं। जिस बच्चे को लेकर वह आयी थीं वह बच्चा तीन साल का था पर तीन मंहीने जैसा दीख रहा था। उक्त महिला के कोई भी सन्तान जीवित नहीं रहती। गोद में जो बच्चा था उसकी भी यही हालत थी। वह माताजी के पास बहुत रोने लगीं। पर माताजी तो पत्थर की मूर्ति जैसी बैठी रहीं। महिला की तरफ देखा तक नहीं। इसी समय खुकुनी दीदी की बड़ी बहन ने आकर सूचना दी कि आश्रम की प्रतिमा को निरञ्जन (जल में प्रवाहित) के लिये बाहर लाया जा रहा है। अतः नीचे माताजी की उपस्थिति प्रार्थनीय है। यह सुनकर हम सब नीचे आने लगे। सबसे पहले ढाका की उक्त महिला थीं। वह बच्चे को कंधे पर डालकर धीरे-धीरे सीढ़ियों की रेलिंग पकड़ती हुई नीचे उतर रही थीं। बीच में माताजी थीं तथा माताजी के पीछे मैं था। मैंने देखा इस तरह उतरते उतरते माताजी उस बच्चे के मस्तक पर हाथ फेरने लगीं। मैं सबसे पीछे था अतः मैं देख सका। बच्चा अवश्य ही स्वस्थ हो गया था, पर माताजी ने जो उस पर इस प्रकार कृपा की यह तो वह महिला जान भी न सकीं।

यह बात सुनकर माताजी ने कहा, "किसको जताऊँ ?"

स्वामीजी पुनः कहने लगे, "अतीत की घटनाओं का उल्लेख कर क्या लाभ ? मैं कल की बात कह रहा हूँ । कल मैं बुखार में पड़ा था । बदन में दर्द भी काफी था । दोपहर को माताजी मुझे देखने आयीं । मुझे देखकर बोलीं, "बाबा, बुखार हुआ है ? अभी तक बुखार है क्या ? इतना कहकर उँगली के अग्रभाग से मेरे वक्षस्थल का स्पर्श करती हुई बोलीं, "हाँ बुखार तो है ।" इतना कहकर कमरे से बाहर हो गयीं । ऐसा भाव था मुझे तब तक बुखार था कि नहीं यही देखने के लिये मानो मुझे स्पर्श किया । मैंने तभी परमानन्दस्वामी से कहा, कल मेरा बुखार उतर जायेगा । रात को डा. दासगुप्ता मुझे देखने आये । उन्होंने मुझे देखा कि काफी बुखार है। परन्तु रात को ही पसीना होकर बुखार उतर गया । आज सुबह मैं गंगा नहाया एवं ठीक ही हूँ । अतः माताजी जो कृपा करती हैं वह इस तरह करती हैं कि वह सबके लिये समझना बड़ा ही मुश्किल है ।"

इस तरह बात करते-करते रात के १०:३० बज गये । डॉ. भार्गव माताजी से एकान्तवार्ता करेंगे अतः माताजी उठकर कमरे में गयीं । हमलोग चले आये ।

(क्रमशः)

काशी आश्रम में तीन वर्षव्यापी सावित्री महायज्ञ

—स्वामी नारायणानन्द तीर्थ

मेरे आश्रमवासी होने के उपरान्त 14 जनवरी 1947 को काशी आश्रम में तीन वर्ष व्यापी सावित्री महायज्ञ आरम्भ हुआ। इस महायज्ञ में श्री श्री माँ के ख्याल से मुझे यजमान का पद दिया जायेगा, ऐसा सुनने में आया था। यह सुनकर श्री श्री माँ से मैंने बहुत आपत्ति की थी पर श्री श्री माँ ने एक न सुनी। श्री श्री माँ का अमोघ ख्याल कभी भी अपूर्ण नहीं रहता। अन्ततः इस अकिंचन के नाम ही एक करोड़ गायत्री मन्त्र की आहुति से समन्वित 3 वर्षव्यापी इस महायज्ञ का संकल्प किया गया।

आश्रम प्रांगण के मध्य स्थल में चार तोरण सहित सोलह हाथ चौड़ी एवं सोलह हाथ लम्बी एक इष्टक निर्मित यज्ञशाला बनायी गयी। उसके बीच में अन्तर मेखलायुक्त एक करोड़ आहुति के उपयुक्त एक यज्ञशाला निर्मित हुई। ढाका विश्वविद्यालय के स्टूयार्ड श्री मनमोहन घोष के तत्वावधान में यज्ञमण्डप एवं यज्ञ कुण्ड विधिवत निर्मित हुए थे। मण्डप के अग्निकोण की वेदी पर श्री गणेश और षोडश मातृक, नैर्ऋतकोण की वेदी पर वास्तु देवता, वायुकोण की वेदी पर चतुःषष्ठी योगिनी और क्षेत्रपाल, ईशानकोण की वेदी पर रुद्र और नवग्रह, ईशान और पूर्व दिशा के बीच में मूल वेदी पर घट के ऊपर स्वर्ण निर्मित श्री श्री गायत्री देवी स्थापित हुई थीं। मूल देवता की राजोपचार से पूजा होने के बाद श्री माँ के श्री हस्तों से स्पर्श की हुई अग्नि को वाद्य आदि के साथ यज्ञकुण्ड में स्थापित किया गया। यह अग्नि श्री श्री माँ के ढाका स्थित आश्रम में सुरक्षित थी। वहाँ ब्रह्मचारियों के द्वारा प्रतिदिन आहुति प्रदत्त होती थी। उसी अग्नि को इस महायज्ञ के लिए काशी लाया गया था। नाना रंगों की रेशमी ध्वजा पताकाओं से सुशोभित यज्ञशाला की विशेष शोभा थी। इस विराट् यज्ञ के आचार्य या पुरोहित थे वेदपण्डित व प्रसिद्ध कर्मकाण्डी श्री अग्निष्वात्त शास्त्री, जो काशी में बाटूदा के नाम से परिचित थे। ब्रह्मा का पद आश्रम के पुरातन ब्रह्मचारी श्री कमलाकान्त बन्दोपाध्याय को सौंपा गया था। श्री श्री माँ के पास ये ढाका में आये थे एवं तभी से माँ की सेवा में रहते हुए अपने साधन भजन में लगे हैं। इस यज्ञ में सदस्य के रूप में व्रती हुए थे श्री सदानन्द ब्रह्मचारी। प्रतिदिन प्रातः मण्डपस्थ सभी देवी देवताओं के पूजन के उपरान्त गायत्री मन्त्र सहित अग्नि में आहुति दी जाती थी। आहुति में दिये जाने वाले निम्नलिखित द्रव्य थे—तिल, यव, चावल, घृत, चीनी, और पंच मेवा अर्थात् बादाम पिस्ता, किशमिश, काजू, अखरोट और मखाना। सभी होतागण आश्रम के ब्राह्मण कुमार थे। श्री श्री माँ ने मुझे विशेषतः निर्देश दिया था कि मैं आहुति देते समय इस बात का ख्याल रखूँ कि मैं अपने को आहुति दे रहा हूँ। माँ के इस आदेश का मैं पूरी तरह पालन करने की चेष्टा करता था। प्रातः काल जब तक यज्ञकुण्ड में आहुति दी जाती थी, तब तक एक आश्रमवासी ब्राह्मण

बैठकर जप किया करता था । इसका यह कारण था कि यदि कहीं किसी की असावधानी से कोई त्रुटि हो जाय तो वह जप द्वारा पूर्ण हो जाती थी । ऐसा माँ के निर्देशानुसार ही किया जाता था । सन्ध्या के समय यथा विधि आरती होती थी तथा दिन भर में जितनी आहुति दी जाती थी, होतागण उतना ही जप फिर से करते थे । प्रत्येक अमावस्या तथा पूर्णिमा को श्री गायत्री देवी की विशेष पूजा होती थी और चरु द्वारा आहुति दी जाती थी । संक्रान्ति के दिन माँ के निर्देशानुसार गायत्री देवी को खिचड़ी, पाँच तरह की भाजी एवं चटनी, खीर आदि का भोग लगाया जाता था । माँ जब काशी में रहती थीं तो स्वयं सभी व्यवस्था करती थीं । माँ को कई बार कहते सुना कि यहाँ देवता जाग्रत हैं, तुम लोगों का कितना भाग्य है कि उनकी सेवा का अधिकार मिला है । कितनों के जीवन में ऐसा होता है । किसी किसी दिन प्रातःकाल आहुति के समय यज्ञशाला में आकर माँ सबका उत्साह वर्धन करती थीं तथा जो भी त्रुटि विच्युति होती थी उसे ठीक करवा देती थीं । यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हो इस ओर उनका पूरा ख़्याल था । व्रतियों की सुख-सुविधा के प्रति भी श्री श्री माँ का पूरा ख्याल था ।

महापवित्र वाराणसी क्षेत्र में उत्तरवाहिनी पतितपावनी गंगा के तट पर महाशक्तिस्वरूपिणी श्री श्री माँ की पवित्र उपस्थिति में समस्वर में वैदिक मंत्र उच्चारण करते हुए आहुति देने में एक अभूतपूर्व आनन्द का अनुभव होता था । पवित्र यज्ञधूम से एक भावोद्दीपक वातावरण निर्मित होता था । इस यज्ञ धूम की पवित्र गन्ध से आश्रम हर समय सुगंधित रहता था । तीन वर्ष व्यापी इस महायज्ञ की पूर्णाहुति का आयोजन विराट भाव से किया गया था । वाद्य आदि का आयोजन किया गया था । पूर्णाहुति देने के समय एक बनारसी साड़ी गायत्री माता के उद्देश्य से यज्ञकुण्ड में प्रज्ज्वलित अग्नि की लैलिहान शिखा को परिवेष्ठित करके प्रदान की गई । श्री श्री माँ के सभी कार्य अद्भुत एवं नैसर्गिक हैं ।

काली कराली च मानोजवा च सुलोहिता वा च सुधूम्रवर्णा ।
स्फुलिंगिनी विश्वरुची च देवी लैलायमाना च सप्तजिह्वा ।।

इस प्रकार सप्तजिह्वा रूपी देवी को साक्षात् वस्त्र प्रदान किया गया ।

यह यज्ञ प्रारम्भ में केवल तीन ब्राह्मणों को लेकर प्रारम्भ कराया गया था एवं प्रति दिन तीन हजार आहुतियाँ दी जाती थीं । क्रमशः होताओं की संख्या बढ़ते बढ़ते यज्ञ-समाप्ति पर सोलह पर आ गई थी एवं आहुति का परिमाण भी सोलह हजार हुआ था । जैसे जैसे यज्ञ के लिए धन आता गया वैसे वैसे ही होता और आहुति की संख्या भी बढ़ रही थी । होम सामग्री को भली भाँति झाड़-पोंछ कर गंगाजल से धोकर धूप में सुखाकर तब शाकल्य या हवनीय द्रव्य प्रस्तुत किया जाता था । अहमदाबाद से निजी गोशाला में निर्मित शुद्ध घी द्वारा इस यज्ञ की आहुति देने की व्यवस्था थी । बीच में जब रेल यातायात बन्द कर दिया गया था तब हवाई जहाज द्वारा घी मँगाया जाता था, परन्तु बाजार के घी का प्रयोग नहीं हुआ । इतनी निष्ठा एवं शुद्धता से यज्ञ आजकल कहीं सुना या देखा नहीं जाता है । इस यज्ञ की पूर्णाहुति के उपलक्ष में बहुत दूर से साधु, संन्यासी, ब्रह्मचारी पण्डित एवं मातृभक्तों ने उपस्थित होकर इस महदनुष्ठान को सब प्रकार से साफल्यमण्डित

किया था । यह पूर्णाहुति महोत्सव एक महीने तक चला था । जिन्होंने इस उत्सव का अवलोकन किया था उनमें से कई व्यक्तियों ने यह भी कहा था कि वर्तमान युग में ऐसा उत्सव नहीं हुआ तथा भविष्य में भी होगा कि नहीं कहा नहीं जा सकता । कई स्थानों से ब्राह्मण भोजन के निमित्त इतना अधिक धन आया था कि दस हजार की जगह तेरह हजार ब्राह्मणों को परितुष्ट कर भोजन कराकर दक्षिणा दी गई थी । बंगाली, मद्रासी, मराठी, गुजराती, नेपाली आदि नाना प्राकर के ब्राह्मणों ने इस उपलक्ष में कृपापूर्वक उपस्थित होकर भोजन द्वारा हम सबको कृतार्थ किया था, साथ ही वे अपना रुचिकर भोजन स्वयं बना लेते थे । काशी के संस्कृत पण्डित एवं अध्यापकगण इस उपलक्ष में निमन्त्रित हुए थे । उन्होंने अपने शुभागमन द्वारा हमें अनुगृहीत तथा उत्साहित किया था । माला, चन्दन तथा पीतल के बर्तन में फल, मिठाई व दक्षिणा द्वारा उनको सम्मानित किया गया था । इस अवसर पर संस्कृत भाषा में लिखित निबन्ध प्रतियोगिता में छात्रों को भी यथामान दो सौ, एक सौ तथा पचास रुपये की धनराशि पारितोषिक रूप में दी गई थी । विश्व जननी परम स्नेहमयी श्री श्री माँ आनन्दमयी की असीम अनुकम्पा से श्री सावित्री महायज्ञ निर्विघ्न रूप से सुसम्पन्न हो जाने पर सभी अत्यन्त आनन्दित हुए थे । परन्तु होताओं में किसी किसी को इस बात का अत्यन्त दुःख हुआ कि यज्ञ समाप्ति के साथ ही वे एक अपरिसीम आनन्द से वंचित हो गये, जिसका अनुभव प्रतिदिन यज्ञ करते समय उनकों होता था । कदाचित् ही किसी किसी के भाग्य में इस प्रकार का कर्म करने का सौभाग्य प्राप्त होता है । हमारे भाग्य में जो इस प्रकार का सुअसवसर आया था उसे श्री श्री माँ की अहैतुकी कृपा छोड़ और क्या कहूँ । श्री सावित्री महायज्ञ का संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत करने का एक कारण है–कारण बिना यह नहीं हुआ है । इस पवित्र अनुष्ठान के बीच एक विशेष शुभ दिन के शुभ मुहूर्त में परम स्नेहमयी श्री श्री माँ ने अपने इस अधम तथा अयोग्य सन्तान को जिस प्रकार अहैतुकी करुणा द्वारा उसका जीवन धन्य किया था उसको यहाँ पर लिपिबद्ध करने का प्रयास कर रहा हूँ । कारण कि इस छोटी सी घटना ने मेरे जीवन में काफी प्रभाव डाला है ।

इस विराट् सावित्री महायज्ञ के द्वितीय वर्ष की समाप्ति अर्थात् उत्तरायण मकर संक्रान्ति (14 फरवरी) के प्रातःकाल श्री श्री माँ ने कुमारी स्वर्ण जसपाल (बिल्लो जी) के द्वारा मेरे पास सूचना भेजी कि मैं यज्ञ करने जाने से पहले उनके शयन कक्ष में जाकर उनसे भेंट करूँ । प्रातःकाल सात बजे अपना नित्य कर्म सन्ध्या तर्पण एवं नारायण पूजा समाप्त करके श्री श्री माँ के प्रकोष्ठ में प्रवेश करते ही माँ ने स्मित मुख से मुझसे कहा 'थोड़ी देर पहले यह शरीर (अपने को दिखाकर) तुम्हारे कमरे में गया था । तुम नारायण पूजा कर रहे थे देखकर यह शरीर चला आया' । श्री श्री माँ के श्रीमुख से इस बात को सुनने के साथ साथ मैंने उनसे सविनय निवेदन किया कि माँ इस प्रकार भगवान शायद मुझ जैसे अभागों के प्रति कृपा करने के लिए शुभागमन करते हैं परन्तु हमें नाना विधि कार्यों में व्याप्त देख वे लौट जाते हैं । परम स्नेहमयी माँ ने दरवाजे में सिटकनी लगाकर मुझे अपने सामने बैठने को कहा । माँ के आदेशानुसार मैं कमरे के दोनों दरवाजों को बन्द करके

उत्तराभिमुखी होकर उनके चरणों में बैठा । वे अपनी चौकी पर दक्षिणास्य होकर विराजमान थीं । मेरे श्री श्री माँ के चरणों में बैठते ही उन्होंने मुझे देने के लिए अपने तकिए के नीचे से गेरुए रंग की चादर निकाली । यह देख मैंने विनीत भाव से माँ के चरणों में निवेदन किया, माँ यह क्या ?' उन्होंने कहा यज्ञ करते समय इसे माथे पर बाँधकर यज्ञ करना । मैं भली-भाँति जानता था कि गेरुआ वस्त्र धारण करने की योग्यता मुझमें नहीं है । योग्य न होने पर गैरिक वस्त्र धारण निषिद्ध है, यह मैं भलीभाँति जानता था । मुझे कभी गेरुआ वस्त्र धारण करना पड़ेगा यह मैं नहीं जानता था । इसीलिए मैंने माँ के श्री चरणों में निवेदन किया कि माँ मैं गैरिक वस्त्र धारण करने के अनुपयुक्त हूँ । आप दया करके मुझे क्षमा कर दीजिए । इसके जवाब में माँ ने कहा 'तुम उपयुक्त हो या नहीं इसका विचार तुमको नहीं करना पड़ेगा । तुम प्रतिदिन इसे मस्तक पर बाँधकर यज्ञ करना । यह थोड़े से शब्द कहकर माँ ने वह रंगा हुआ वस्त्र मेरे हाथ पर रख दिया । मैंने और कोई जवाब न देकर श्री श्री माँ के करकमलों से अतिशय आदर सहित गैरिक वस्त्र ग्रहण करके उसको मस्तक पर लेकर माँ के श्री चरणों में प्रणाम किया । मेरी प्रणामावस्था में करुणामयी माँ ने मेरे ब्रह्मताल से सारे मेरुदण्ड पर अपना श्री हस्त फेरते हुए कहा तुम माँ गंगा को साष्टांग प्रणाम करो । माँ तखत पर दक्षिण की ओर मुँह करके बैठी थीं । मैंने उनके आदेशानुसार माँ को बाएँ रखकर पूर्वाभिमुख होकर साष्टांग प्रणाम किया । प्रणाम करने के उपरान्त मस्तक पर गेरुआ वस्त्र धारण करके जब मैंने पुनः श्री श्री माँ को प्रणाम किया, तब श्री श्री माँ ने पुनः मेरे ब्रह्मतालु पर अपने दोनों हस्तों को स्थापित करके कहा 'मुक्त मुक्त' । इस अभावनीय कार्यकलाप को देखकर मैं अत्यन्त आश्चर्यचकित एवं विस्मयविमूढ़ हो गया । मैंने तो कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि स्वयं ब्रह्ममयी विश्वजननी श्री श्री माँ स्वयं उत्साहित होकर मेरी प्रार्थना की अपेक्षा किए बिना ही इस प्रकार अत्यन्त पवित्र गैरिक वस्त्र मुझे प्रदान करेंगी एवं मेरे ब्रह्म रन्ध्र पर अपना कल्याणप्रद कर कमल स्थापित कर 'मुक्त' 'मुक्त' कहकर आशीर्वाद देंगी । श्री श्री माँ से आशातीत रूप से इस प्रकार अचिन्तनीय अनुष्ठान के माध्यम से कषाय वस्त्र प्राप्त कर परम आनन्दित होकर मैंने माँ से प्रार्थना की 'माँ' 'आप आशीर्वाद दीजिए कि आपके दिये हुए इस काषाय वस्त्र की मर्यादा मैं यथार्थ रूप से रख सकूँ । माँ मेरी एक धारणा थी जो कि आज की इस अभूतपूर्व घटना से बिल्कुल बदल गई । करुणामयी श्री श्री माँ ने कृपा करके मुझसे पूछा 'तुम्हारी कौन सी धारणा आज बदल गई' ? मैंने कहा–माँ मेरी धारणा थी कि आप नाना कारणों से मेरे ऊपर असंतुष्ट हैं पर आज की इस अकल्पनीय एवं अविश्वसनीय घटना से मुझे यह विश्वास हो गया कि आप मेरे ऊपर सन्तुष्ट न होने पर भी असन्तुष्ट नहीं हैं । कारण आप यदि मेरे प्रति असन्तुष्ट होतीं तो आज कदापि ऐसा व्यवहार नहीं करतीं । 'मेरी कातरोक्ति सुनकर माँ ने कहा तुम्हारे ऊपर सन्तुष्ट, सन्तुष्ट, सन्तुष्ट, बोलो और कितनी बार कहूँ सन्तुष्ट ।

मुझ जैसा श्रद्धा भक्ति, साधन-भजन-रहित अति क्षुद्र जीव विश्वजननी, महामहिमामयी श्री श्री माँ से इससे अधिक और क्या आशा कर सकता है । इसीलिए बार बार केवल यही कहने की इच्छा हो रही है कि

माँ अनेक भक्त ऐसेछे तोमार चरणतले
अनेक अर्घ्य आनि
आमि अभागा एनेछि बहिया नयनजले
व्यर्थ साधन खानि ।"

(अर्थात–माँ तुम्हारे चरणों में अनेक भक्त आये हैं अनेक अर्घ्य लेकर, पर मैं आँखों में आँसुओं से भीगा व्यर्थ साधन लाया हूँ ।

करुणामयी मेरी माँ ने आज कषाय वस्त्र अपने इस तुच्छ सन्तान को प्रदान किया तथा इसके पहले देहरादून, रायपुर एवं डूँगा में यथा क्रम महावाक्य एवं संन्यास मन्त्र देकर अपने चरणों में स्वीकार किया है इसलिए मैं पुनः पुनः उनके श्री चरणों में हार्दिक कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम निवेदन करता हूँ ।

मैं तो माँ का आश्रय त्याग कर कई बार दूर चला ही गया था, बुलाने पर भी अभिमान से उनके पास नहीं गया । फिर भी उन्होंने मुझे ढीठ या अधम समझकर एक दिन के लिए भी मेरा त्याग नहीं किया । वरन् स्नेह आदर द्वारा अपने चरणों में खींचा ही है । इससे श्री श्री माँ के स्नेह, क्षमा और करुणा का परिचय पाया जाता है । नवद्वीप के अत्यन्त दुर्वृत्त जगाई मधाई के जीवन में जैसे श्रीमन् महाप्रभु कृष्ण चैतन्य का एक विशेष स्थान और अवदान है एवं उसके द्वारा उनका पतितपावन नाम सार्थक हुआ है, उसी प्रकार श्री श्रीं माँ ने दया करके अपने इस अबाध्य और अयोग्य सन्तान को आज जो दान दिया उसके द्वारा प्रसिद्ध देव्यापराध स्तोत्र में जो कहा गया है' 'कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति' इस वाक्य की यथार्थ महिमा जगत में प्रकाशित हुई । मार्मिक कान्त कवि की मर्मस्पर्शी भाषा में मैं निःसंकोच कह सकता हूँ :–

"आमि तो तोमरे चाहिनि जीवने
तुमि आभागारे चेयेछ ।
आमि ना डाकाते हृदय माझारे
निजे एसे देखा दियेछो ।।"

(अर्थात् मैंने तो तुमको जीवन में चाहा नहीं तुम्हीं ने अभागे को चाहा । मेरे न बुलाने पर भी हृदय में स्वयं आकर दर्शन दिया ।)

ओ पथे जेओ ना फिरे एसो बोले
काने काने कतो कयेछो
आमि तबू चले गेछि फिराये आनिते
पिछू पिछू छूटे गियेछो ।।

(अर्थ–उस रास्ते पर मत जाओ, लौट आओ, कानों में कितनी बार कहा मैं फिर भी चला गया तो लौटाने के लिये दौड़कर गये हो ।)

चिर आदरेर बिनिमये सखा
चिर अबहेला तुमि पेयेछो
आमि दूरे सरे जेते दुहात प्रसारि
बुके टेने मोरे लयेछो ।।

(अर्थ–प्यार के बदले सदा तुम्हें तिरस्कार ही मिला है । मेरे दूर हटने पर दोनों हाथ फैला कर मुझे अपने वक्षस्थल पर खींच लिया है ।)

आमार निज हाते गढ़ा बिपदेर माझे
कोले तुले तुमि निएछो
एइ चिर अपराधी पातकीर बोझा
हासिमुखे तुमि बयेछो ।।

(मेरे अपने हाथों से बनायी हुई विपदाओं के बीच से मुझे तुमने गोद में खींच लिया । इस चिर अपराधी पातकी का बोझ हँसते हँसते तुमने वहन किया ।)

अपनी शत चेष्टाओं से जो कदापि सम्भव नहीं होता वही स्नेहमयी क्षमामयी, करुणामयी श्री श्री माँ की अहैतुकी कृपा से आज कार्य रूप में परिणत हुआ । जिन्होंने इतनी कृपा की है उन वात्सल्यमयी माँ को पुनः पुनः अन्तर की कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा हूँ एवं उनके श्रीपाद-पद्मों में हाथ जोड़कर निवेदन कर रहा हूँ कि महाशक्ति स्वरूपिणी स्नेहमयी माँ तुमने अपनी इस अबोध सन्तान के अपराध को क्षमा करके उस पर अशेष करुणा की है । इसीलिए तुम्हारे चरणों में इस दीन का बार बार प्रणाम, प्रणाम, प्रणाम, प्रणाम ।

"या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।
या देवी सर्वभूतेषु दया रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी तत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ।।

हे महादेवि ! मेरे जैसा कोई पापी नहीं है एवं तुम्हारे जैसा कोई पापनाशिनी भी नहीं है । यह जानकर हे मातः जैसा उचित है वैसा करो । इसे छोड़ माँ तुम्हारे चरणों में इस अधम सन्तान की और क्या प्रार्थना हो सकती है ?



मेरी डायरी से

—श्री सुविमल दत्त, I.C.S. (रिटायर्ड)

२० फरवरी, १९७०

मैं आज मद्रास आया। मुख्य उद्देश्य है वेकटेश्वर भगवान् के दर्शन।

सन् १९६४ के जून-जुलाई में राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् तिरुपति गये थे। मैं उन दिनों अचानक बीमार पड़ गया, अतः साथ जा नहीं सका। वे स्वयं मेरे लिये प्रसाद ले आये थे। श्री सोमनादन (निजी सचिव) वेङ्कटेश्वर तथा पद्मावती देवी का चित्र ले आये थे। तब से प्रतिदिन मैं वेङ्कटेश्वर का स्मरण करता हूँ। १९६६ में जब निर्मल अस्वस्थ हुआ तब बाबा को खूब याद किया था। प्रतिदिन प्रातः सुप्रभात सुनता था। बाबा की कृपा से निर्मल स्वस्थ हो गया। बाबा को देखने का आग्रह और भी बढ़ गया। उनकी ही कृपा से इस बार अवसर मिला।

२१ फरवरी दोपहर के बाद मद्रास से मोटर द्वारा रवाना हुआ ३।३० मिनट पर। तिरुपति पहुँचा करीब ७ बजे। उसके बाद तिरामाल जाने के लिये मोटर पहाड़ी पर चढ़ने लगी। प्रायः ११ मील का मार्ग है एक घन्टा लगा। मार्ग अच्छा है पर कई खतरनाक मोड़ हैं। प्रायः ८।३० पर ऊपर पहुँचे। वहाँ पर प्रायः ६००० की आबादी है। तीर्थ यात्रियों की भीड़ है। मानो मेला लगा हो पर कोई विशेष पर्व नहीं था।

मेरे साथ कुप्पूस्वामी तथा सी. बी. आई. के एक डी. एस. पी. थे। हमलोग जिस कॉटेज में थे वहाँ पर गरम पानी का गीज़र भी था तथा आधुनिक व्यवस्था थी। जल्दी से नहाकर ९।१४ मिनट पर पहुँचा। हमारी गाड़ी गोपुरम के दरवाजे तक गयी। तब रात की आखिरी लाईन थी। हमलोगों ने कुछ देर तक प्रतीक्षा की। जब लाईन एकदम समाप्त हो रही थी तब हमने चलना प्रारम्भ किया। दो मिनटों में हम गर्भगृह के सामने थे। अपूर्व मूर्ति है। हीरा, माणिक्य, और मोतियों से झलमला रही थी। चार पाँच मिनटों तक मूर्ति के सामने खड़े रहकर जी भर कर दर्शन किया। सारा शरीर पुलकित हो गया। उसके बाद धीरे-धीरे हम मन्दिर से बाहर निकल आये। मन्दिर में प्रवेश हेतु विशेष परिधेय वस्त्रों की आवश्यकता नहीं है। दर्शकों में जो पंक्तिबद्ध भाव से आगे है उनमें से कोई धोती कोई पैन्ट पहने था। केरल के मन्दिरों में कुर्ता पहन कर जाना निषिद्ध है। पर यहाँ नियम में कड़ाई नहीं है। पंक्तिबद्ध भाव से जो आगे बढ़ते जा रहे हैं उनमें से कोई जोर जोर से गोविन्द, गोविन्द पुकार रहे हैं।

रात के २।३० मिनट पर उठकर गरम पानी से नहाकर भोर के ३।३० पर पुनः मन्दिर प्रांगण में उपस्थित हुआ। तब तक बाहर का दरवाजा नहीं खुला था। परन्तु पंक्ति में लोगों का खड़ा होना प्रारम्भ हो गया था। उनमें भी कोई कोई बच्चों को गोद में उठाये खड़े थे। करीब १० मिनट प्रतीक्षा करने के उपरान्त दरवाजा खुला तब भीतर जाकर खड़ा हुआ। तब भी सोने का

दरवाजा बन्द था । थोड़ी देर में कैनवास की एक सील की हुई थैली आयी जिसमें चाभियों का गुच्छा था । एक अधिकारी के सामने उस थैली को खोला गया । उसके बाद एक-एक कर बड़े-बड़े ताले खोले गये । दरवाजे का नीचे का हिस्सा खोलकर ठाकुरजी के रात का पलँग तथा अन्यान्य सामग्री निकाली गयी । तदुपरान्त प्रायः १० ब्राह्मणों ने श्री वेङ्कटेश्वर का सुप्रभात गाया ध्वनियन्त्र के सामने ३५/४५ मिनट तक यह कार्यक्रम चला । इसके बाद मन्दिर के पट खोले गये । हमलोगों को घुसने दिया गया । गर्भगृह के सामने खड़े होकर पुनः दर्शन हुआ । पुजारी ने कपूर की आरती उतारी । हमारे मस्तकों पर मुकुट का स्पर्श प्रदान किया । मैंने जंमीन पर मस्तक टिकाकर प्रणाम किया । उसके बाद बाहर के पंक्तिबद्ध दर्शनार्थी दर्शनों के लिये आने लगे । हमलोगों को पीछे जाकर खड़े होने की अनुमति दी गयी । मैं ज्यादा देर खड़ा नहीं रहा । सोचा, (सरकारी पदाधिकारी होने के नाते) हमारे लिये दर्शन की जो विशेष व्यवस्था की है अधिक रुककर उसकी सुविधा न लूँ । एक पत्तल पर ठाकुरजी के प्रसादी मक्खन का कण मिला । बाहर आने पर पैकेट में कपूर प्रसाद दिया गया । उसके बाद मन्दिर की परिक्रमा लगायी गयी । आंगन के एक विशेष स्थान से गुम्बज के ऊपर भगवान का स्वर्णिम विग्रह देखा । जो लोग भीड़ के कारण अथवा दूसरे किसी कारण से मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकते वे इसी विग्रह के दर्शन से सन्तुष्ट होते हैं । ५ वजे हम अपने कॉटेज में लौट आये ।

प्रातः आठ बजे मोटर से वापसी के लिये रवाना हुआ । चारों ओर मानो मेला लग गया था । हमलोग जब जा रहे थे तब कोई विशेष उत्सव नहीं था । तब भी भीड़थी । अतः विशेष पर्व के उपलक्ष में कितनी भीड़ अनुमेय है । अभी भी काफी लोग पदमार्ग से दर्शनों के लिये जाते हैं । प्रायः आठ मील का मार्ग है, ३ घन्टा लगता है । अब चौड़ा है । पत्थर लगा दिया गया है । रात को बिजली की बत्ती जलती है । पुराने दिनों का मार्ग वास्तव में दुर्गम था ।

तिरुपति लौटकर पहले हम कोदण्डरमण के मन्दिर में गये वहाँ इतनी भीड़ नहीं थी । थोड़ी ही देर में ठाकुरजी का भोग लगा । भोग प्रसाद उपस्थित लोगों में बाँट दिया गया । हमलोगों को भी एक मुट्ठी अन्न प्रसाद मिला । इसके बाद हम गोविन्दराज स्वामी के मन्दिर में गये । ठाकुरजी की अनन्तशायनी मूर्ति है जो श्रीरामानुज प्रतिष्ठित है । (त्रिवेन्द्रम के पद्मनाभ मूर्ति की भाँति) । वहाँ से ३ मील दूर तिराचानू गाँव में गये । वहाँ देवी पद्मावती का मन्दिर है । वहाँ भी काफी भीड़ है, पर श्री वेङ्कटेश्वर मन्दिर में जितनी भीड़ थी उससे कम ।

तिरुपति से मद्रास लौटते समय मार्ग में तिरुतानि गये । यह स्थान तिरुपति से ३० मील, मद्रास से ६० मील है । कुप्पुस्वामी वहाँ जाने के लिये अत्यन्त उत्सुक थे । वहाँ पहाड़ी पर स्थित सुब्रह्मण्यम्-मुरुगेश मन्दिर दक्षिण भारत के सुब्रह्मण्यम् मन्दिरों में अन्यतम है । कुप्पुस्वामी की बहन का विवाह इसी मन्दिर में हुआ था । दोपहर के १२ बज रहे थे । सौभाग्यवशतः हमारी मुलाकात तिरुतानि के पुलिस इन्सपेक्टर के साथ हो गयी । वे हमें अपने साथ मोटर द्वारा ऊपर ले गये । मात्र ३ वर्ष पूर्व मोटर का रास्ता बना है । सीढ़ी का मार्ग है । सीमेन्ट के तपने के कारण पैदल चढ़ना सम्भव नहीं था । वहाँ भी भगवान् के दर्शन हुए । वहाँ ध्यान देने का विषय यह था कि

१८।२० वर्ष के ब्राह्मण बाल यात्रियों को ले जा रहे हैं तथा ठाकुरजी की आरती उतार रहे हैं। लौटने पर प्रसाद व विभूति जिनके नाम पर पूजा है, उनको दे रहे हैं।

तिरुतानि डॉ. राधाकृष्णन् का जन्म स्थान है। उनके पिता अत्यन्त गरीब थे। राधाकृष्णन ने यह मकान मद्रास सरकार को दान किया है। वहाँ अभी पुस्तकालय तथा cultural centre हुआ है। दोपहर को दरवाजा बन्द हो गया था। अतः जिस स्थान पर राधाकृष्ण का जन्म हुआ था वह देख न सके।

२६-२-७०

आज मद्रास शहर से १२ मील दूर वैष्णवी देवी के मन्दिर में गये। वहाँ कुप्पास्वामी की श्वश्रुमाता रहती हैं। महिला साध्वी हैं, संन्यास दीक्षा ली है। वे ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं हैं। तमिल का साधारण ज्ञान है। परन्तु भावावस्था में संस्कृत सुललित स्तोत्रादि की रचना कर लेती हैं। उन्होंने हमें कामाक्षी देवी का स्तव सुनाया। उनका वर्तमान नाम Andavau Pichai [अन्दावउ पिकाई] अर्थात् भगवान् की भीख माँगने वाली है। देखने से पता लगता है कि ऊँचे स्तर की साधिका हैं। मैंने पूछा, "मन कैसे स्थिर करें? सन्ध्यावन्दन के समय उन्होंने कहा, वे निजी अनुभूति की बात बता सकती हैं, दूसरे को क्या करना चाहिए वे यह कह नहीं सकतीं। वे माला नहीं जप सकतीं, वे संख्या नहीं रख सकतीं। लगता है वे ध्यान में मग्न हो जाती हैं। वे श्री सुब्रह्मण्यम् एवं कामाक्षी देवी के दर्शन पाती हैं।

मुझसे कहने लगीं, "भगवान् एक हैं, विभिन्न रूप हैं माता के। भगवान् की मूर्ति का दर्शन पाना बड़ी बात नहीं है। वरना रूपों के दर्शन साधना में विघ्नरूप भी हो सकते हैं।

एकबार आप कामाक्षी देवी के दर्शनों के लिये काञ्चीपुरम् गयी थीं। अचानक पुजारीजी ने उन्हें स्तोत्र पाठ करने को कहा। वे डर गयीं। वे स्तोत्र तो जानती नहीं थीं। माता का स्मरण कर साहस बटोर कर उन्होंने स्तोत्र प्रारम्भ किया स्वतः ही मुँह से स्तोत्र निकलने लगा।

उनके साथ ही वैष्णवी देवी के दर्शनों को गया। नया आश्रम बना है। भक्तों ने निजी निवास के लिये छोटे छोटे पक्के कमरे बनाये हैं, ताकि बीच-बीच में आकर रह सकें।

२७ फरवरी को मद्रास का प्रसिद्ध कपालेश्वर शिव मन्दिर का दर्शन किया। यहाँ कपालेश्वर शिव के अतिरिक्त विनायक, अम्बा देवी तथा मुरुगेश्वर के विग्रह हैं। सायंकाल मुख्यमन्त्री करुणानिधि से मिलने गया। उनके घर के सामने ही विष्णुमन्दिर है।



बुद्ध वाणी में ध्यान सुख की अवधारणा

–डॉ. प्रेम नारायण सोमानी

बुद्ध काल में 'आनन्द' शब्द जो आज "सुख" का पर्यायवाची बन गया है विषय भोग के रसास्वादन के अर्थ में ही प्रयुक्त होता था। "ध्यान सुख" को प्रीति-सुख कहा जाता था। बुद्ध के पूर्व भी वेदों में आनन्द शब्द ऊँचे आध्यात्मिक अर्थ में प्रयोग नहीं होता था। वेदों में इस शब्द का प्रयोग गर्हित अर्थ में प्रयोग किया गया है–आनन्दाय स्त्रीषसूं (युजर्वेद ३०-६) यानी काम भोग के आनन्द के लिये स्त्री से मित्रता करे। परन्तु आगे जाकर पातंजलि तक पहुँचते पहुँचते "आनन्द" शब्द का उत्कर्ष हुआ और प्रीति सुख का अपकर्ष। पातंजलि ने बुद्ध द्वारा व्याखात प्रथम ध्यान में "वितर्क" और विचार के साथ "प्रीति सुख" का प्रयोग न कर "आनन्द" शब्द का प्रयोग किया है। यथा–

"वितर्क विचार आनन्द अस्मिता रूपा नुगमात् सम्प्रज्ञातः (योगसूत्र–१०)

आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा के संस्पर्श से होने वाले अनुभवों के पाँच काम सुख हैं। नासमझ लोग उन्हें ही परम सुख मानकर भ्रमित होते हैं परन्तु बुद्ध कहते हैं कि काम राग ऐन्द्रियजन्य सुखों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है प्रथम ध्यान का सुख जिसे "प्रीति सुख" कहा गया है। कुछ लोग प्रथम ध्यान के प्रीतिसुख को ही परम शान्ति सुख मान लेते हैं जो गलत है। इससे भी प्रणीततर सुख है–द्वितीय ध्यान का अवितर्क अविचार जन्य प्रीति सुख। कुछ लोग इसे ही परम शान्ति सुख मान लेते हैं परन्तु इससे भी श्रेष्ठ है तीसरे ध्यान का समता सुख। कुछ लोग इसे ही परम सुख-शान्ति मान लेते हैं जो सही नहीं है उससे भी ऊँचा है चौथे ध्यान का सुख–समता भाव सहित सजगता की परिशुद्धि के कारण प्राप्त हुई अदुखः असुखः की अनुभूति। कुछ लोग इसे ही परम शान्ति सुख मान लेते हैं जो गलत है। उससे भी प्रणीततर है पाँचवें ध्यान की अनन्त आकाश की अनुभूति। परन्तु छठे ध्यान की अनन्त विज्ञान की अनुभूति पाँचवें ध्यान की अनुभूति से श्रेष्ठतर है। कुछ लोग इसे ही परम शान्ति-सुख मान लेते हैं जो सही नहीं है क्योंकि इससे भी ऊँची है सातवें ध्यान की अकिंचन की अनुभूति। कुछ लोग इसे ही परम सुख की उपलब्धि मान लेते हैं परन्तु इससे प्रणीततर है आठवें ध्यान की न संज्ञा और न संज्ञा की अनुभूति। परन्तु इससे भी प्रणीततर है इसके परे की अनुभूति जहाँ वेदना और संज्ञा भी निरुद्ध हो जाते हैं–संज्ञा वेदयित निरोधं।

वस्तुतः यही शरीर और चित्त के परे, नाम रूपातीत, भवातीत, लोकातीत, इन्द्रियातीत, नित्य, शाश्वत, ध्रुव निर्वाणाक सुख है यह परम शान्ति सुख है। इसे ही बुद्ध ने "निब्बानं परमं सुखं" कहा है। निर्वाण का परम सुख तब प्राप्त होता है जब पूर्व संचित कर्म संस्कारों का उपशमन हो जाता है यानी उनका पूर्णतया निष्कासन हो जाता है।

भगवान बुद्ध द्वारा बतायी गयी विधि विपश्यना का अभ्यास करने पर आठो ध्यानों का करना आवश्यक नहीं है । केवल इसी के अभ्यास द्वारा सारे कर्म-संस्कारों के उपशमन की और तृष्णा के पूर्णतया क्षय होने की स्थिति प्राप्त होती है । तब चित्त के निरोध की अवस्था में परम सुख निर्वाण का साक्षात्कार होता है । यह सुख अतुलनीय है ।

भव मुक्ति के नित्य, शाश्वत, ध्रुव शान्ति सुख की जो परम चरम निर्वाणिक अवस्था बुद्ध ने स्वयं विपश्यना साधना द्वारा उपलब्ध की और जीवन भर करुण चित्त से मुमुक्षुओं को वही सिखाते रहे । स्वयं भी सुखी औरों के सुख में भी सहायक ।

क्यों न हम भी उस परम सुख प्राप्त करने के मार्ग पर चलें ।

हर व्यक्ति सुख चाहता है । बुद्ध ने "निव्वाणं परमं सुखं" को सबसे ऊँचा सुख माना है । फिर भी सामान्य गृहस्थों के लिये उन्होंने चार प्रकार के सांसारिक सुख गिनाये हैं–

१. **आनण्य सुख**–ऋण न होने का सुख । ऋण के बोझ से दबा रहनेवाला व्यक्ति कितना दुखी रहता है यह एक ईमानदार गृहस्थ खूब समझता है । ऐसा व्यक्ति जब ऋण से मुक्त हो जाता है तो अत्यंत सुखी होता है ।

२. **अत्थि सुख**–भले उसका उपयोग न करे, पर धन दौलत ऐश्वर्य वैभव हो तो मन में जो मोद होता है उसका भी सुख होता है । मेरा बैंक बैलेंस बढ़ रहा है, सालाना टर्न-ओवर बढ़ रहा है । मेरी प्रापर्टी की कीमत बढ़ रही है । मेरे शेयरों के दाम बढ़ रहे हैं । इस मोद में मुदित रहने का सुख अत्थि सुख कहा जाता है ।

३. **भोग सुख**–अत्थिसुख जब भोगसुख बनता है तो गृहस्थ उससे और अधिक सुखी होता है । धन-दौलत के बल पर विभिन्न ऐन्द्रिय सुखों का भोग करता है । आँख से सौंदर्य देखकर, कान से मधुर संगीत सुनकर, नाक से सुगंध सूंघ कर, जिह्वा से सुस्वादु रस चखकर और शरीर से स्पर्श सुख भोगकर सुखी होता है ।

४. **अनवज्जसुख**–सद्‌गृहस्थ के लिए उपरोक्त तीनों सुखों से बढ़कर एक सुख और होता है–वह हैं धर्म द्वारा वर्जित कर्मों को न करने का सुख । गृहस्थ आत्म निरीक्षण करके देखता है कि वह हत्या नहीं करता, पराया धन नहीं हथियाता, व्यभिचार नहीं करता, झूठ बोलकर किसी को नहीं ठगता । वह कड़वी, चुगली और निंदा की वाणी बोलकर किसी का मन नहीं दुखाता । वह नशेपत्ते का सेवन नहीं करता । अपनी आजीविका के लिए अस्त्र-शस्त्रों का, विष का, पशु-पक्षी आदि प्राणियों का, मांस का, मदिरा आदि नशीले पदार्थों का व्यवसाय नहीं करता । यह देखकर उसका मन प्रसन्नता से भर उठता है । ऐसे दुष्कर्म करने पर इस लोक में सामाजिक निंदा तथा राज्यदंड आदि के और मरने पर परलोक में अधोगति प्राप्त करने के भय से त्रस्त नहीं रहता । दूषित कर्म करने पर जो आत्मग्लानि होती है उस पीड़ा से भी मुक्त रहता है । इस प्रकार निर्दोषी व्यक्ति सदा प्रसन्न, अभीत और शांत चित्त रहते हुए जो सुख भोगता है वह अन्य सांसारिक सुखों से निस्सन्देह श्रेष्ठ सुख है ।

इसी प्रकार उन्होंने अनेक सुखों का तुलनात्मक वर्णन करते हुये बताया कि कौन सा हीन है, कौन सा प्रणीत है । जैसे कि–

१. गृहस्थ सुख तथा प्रव्रज्या सुख–इन दो में प्रवज्या सुख श्रेष्ठ है ।

२. काम भोगों का सुख तथा अभिनिष्क्रमण का सुख–इन दो में अभिनिष्क्रमण का सुख श्रेष्ठ है।
३. लौकिक सुख तथा लोकोत्तर सुख–इन दो में लोकोत्तर सुख श्रेष्ठ है।
४. सास्रव सुख तथा अनास्रव सुख–इन दो में अनास्रवसुख श्रेष्ठ है।
५. भौतिक सुख तथा अभौतिक सुख–इन दो में अभौतिक सुख श्रेष्ठ है।
६. आर्य सुख तथा अनार्य सुख–इन दो में अनार्य सुख श्रेष्ठ है।
७. शारीरिक सुख तथा चैतसिक सुख–इन दो में चैतसिक सुख श्रेष्ठ है।
८. प्रीति सहित सुख तथा प्रीति विरहित सुख–इन दो में प्रीति विरहित सुख श्रेष्ठ है।
९. आस्वाद सुख तथा उपेक्षा सुख–इन दो में उपेक्षा सुख श्रेष्ठ है।
१०. असमाधि सुख तथा समाधि सुख–इन दो में समाधि सुख श्रेष्ठ है।
११. प्रीति आलंबन सुख तथा अप्रीति-आलंबन सुख–इन दो में अप्रीति-आलंबन सुख श्रेष्ठ है।
१२. आस्वाद-आलंबन सुख तथा उपेक्षा आलंबन-सुख–इन दो में उपेक्षा आलंबन सुख श्रेष्ठ हैं।
१३. रूप आलंबन सुख तथा अरूप आलंबन सुख–इन दो में अरूप आलंबन सुख श्रेष्ठ है।

वैसे भी सुख शब्द प्रासंगिक ही है। अलग-अलग प्रसंग से संबंधित अलग अलग सुख जैसे–कायिक सुख, चेतसिक सुख, दिब्ब सुख, मानुसक सुख, लाभ सुख, सक्कार सुख, सयन सुख, ज्ञान सुख, विमुक्ति सुख, काय सुख, विवेक सुख, सम्बोध सुख आदि।

अतः हम देखते हैं कि इस महापुरुष ने इतने अधिक प्रकार के सुखों की केवल गिनती ही नहीं गिनायी, उनका केवल शाब्दिक विवेचन ही नहीं किया बल्कि उनमें जो श्रेष्ठ है उनका अनुभव करना सिखाया। सुख प्राप्त करने की अनेक विधियाँ बतायीं जैसे कि–

१. चित्त का दमन सुखदायी है।
२. चित्त की सुरक्षा सुखदायी है।
३. धर्म का आचरण सुखदायी है।

सुखी होने के अनेक उपाय बताये जैसे कि–

१. एकान्तवास में सुख है, संतुष्ट रहने में सुख है।
२. सुने हुए धर्म को विपश्यना द्वारा अनुभूति पर उतार लेने में सुख है।
३. संसार में द्वेषमुक्त हो जाने में सुख है।
४. सभी प्राणियों के प्रति संयम अर्थात् अहिंसाभाव रखने में सुख है।
५. संसार के प्रति वीतराग होने में सुख है।
६. कामुकता से मुक्त होने में सुख है।
७. अस्मिता भाव से मुक्त होने में ही निर्वाण का परम सुख है।

भगवान बुद्ध ने सारे दुख दूर कर सुख प्राप्त करने के लिये 'विपश्यना' के अभ्यास का आशु फलदायी उपाय बताया।

●

मातृ-स्मृति

—चित्रा घोष

१५ अप्रैल १९५३, कलकत्ता

प्रायः छः महीने के बाद "माताजी" आ रही हैं सुनकर मेरा मन माताजी के आगमन की प्रतीक्षा में छटपटा रहा था। गत वर्ष वैशाख की दूसरी तारीख को माताजी पधारी थीं। अभी भी दूसरी को ही काशी से आयीं।

हमलोग स्टेशन जाकर प्रतीक्षा कर रहे थे। गाड़ी के आने में विलम्ब हो रहा था। पञ्जाब मेल से आ रही थीं। माताजी के ठहरने की व्यवस्था दम-दम के आपताप मित्र के घर पर की गयी थी। गाड़ी आने में अधिक विलम्ब देखते हुए कुछ लोग अनुमान लगा रहे थे कि शायद माताजी रास्ते में बैन्डल स्टेशन पर उतर जायेंगी। इन अनुमान व संशयों के ताने बाने को झकझोरती हुई पंजाब मेल सीटी बजाती स्टेशन पर आयी। सबके उत्सुक नेत्र माताजी के डिब्बे की ओर गये। पर दूर से आने के कारण सारी खिड़कियाँ बन्द थीं, कुछ ही क्षण में दीदी गुरुप्रिया ने डिब्बे का दरवाजा खोला एवं माताजी मधुर मुसकान लिये सामने खड़ी दिखीं। सिर पर बालों का जूड़ा बँधा हुआ था। गाड़ी से उतर कर माताजी मोटर पर बैठीं, सबने वहीं प्रणाम किया। माताजी ने **मुझ** से कैसी हो ? पूछा।

मोटर दमदम की ओर रवाना हुई। हमलोग भी माताजी के पीछ-पीछे दमदम गये। हवाई अड्डे के शेड के पीछे की ओर आपताप मित्र का घर है। दूर से "मा" नाम लिखी हुई ध्वजा लहराती हुई नजर आयी। माताजी के लिये एक नया घर बनवाया गया। नीचे दो कमरे हैं ऊपर एक पूजा का कमरा और एक माताजी का कमरा है। माताजी का सिर पर जूड़ा बँधा हुआ चित्र बरामदे में टँगा हुआ है उस पर जरी की माला पहनायी गयी है। मैं ऊपर गयी। माताजी के कमरे के दरवाजे पर तार की जाली लगी हुई है। सामने एक गलीचा बिछा हुआ है। माताजी के पास एक विशेष परिचित महिला अपनी भान्जी के साथ बैठी हुई थीं। हम भी उनके साथ बैठ गये।

माता जी ने हमलोगों को देखकर कुछ कहा नहीं। हमलोग भी उनके पास जाकर बैठे। इतने में श्री आपताप मित्र की पत्नी ने चरण पूजा का आयोजन तथा अन्यान्य पूजन सामग्री लेकर कमरे में प्रवेश किया। इधर माताजी चरण नहीं देंगी बार-बार ढक ले रही हैं, उधर भक्तमहिला चरण पूजा करेंगी ही, महिला अत्यन्त सरलप्रखर हैं। आखिर उन्होंने यह कहते हुए "मेरी लड़की घर आयी है" माताजी के चरणों को लेकर छाती से लगा लिया तथा उन्हें धो पोंछ कर उन पर इत्र लगा दिया। चरण धुला कर उन्होंने माताजी के ललाट पर सिन्दूर की बिंदी लगायी। अब माताजी को खिलाने के लिए मनाने लगी। गाजर की मिठाई बनायी थी। माताजी उन दिनों गाजर नहीं लेती थीं। मालपुआ, सन्देश तथा थोड़ी सी खीर माताजी ने ली। माताजी हँसते हुए बातें करती

रहीं । मेरी माँ ने माताजी से कहा कि हमलोग मोहनानन्द महाराज जी के यज्ञ में गये थे । माताजी ने कहा, "जाने की तो बात हुई नहीं, वे तो यहाँ आये थे ।"माताजी महाराज को आप करके सम्बोधन कर रही हैं ।

और थोड़ी देर बैठ कर हमलोग चले आये । उस दिन शाम को दमदम जाने की व्यवस्था नहीं है । मेरा मन माताजी के दर्शनों के लिये मचल रहा था । आखिर मंजुमिलन की गाड़ी में माताजी के दर्शनों के लिये गये ।

सत्संग चल रहा था । हमलोग बैठकर सुनने लगे । आज पूरी बातें तो याद नहीं हैं पर कुछ बातें आज भी याद हैं ।

"रोज रात को सोते समय भगवान् से कहना भगवान् मेरे दिन भर का सारा काम आपके चरणों में अर्पण किया अपना कहने के लिये मैं को भी तुम्हारे चरणों में दिया । कौन जानता है किसदिन पूर्णाहुति हो जाय । "साधन अर्थात् स्वधन - ठाकुर आपको मैं मना रहा हूँ आप मुझको अपना बना लेना । कपबोर्ड में सामान रखने से जैसे चीज खराब नहीं होती उसी प्रकार भगवान प्रत्येक वस्तु की रक्षा करते हैं, जैसे संतरे की एक-एक फाँक भी छिलके के भीतर रहती हैं - किसने ऐसा बनाया है ?

थोड़ी देर में ८-४५ पर मौन का समय है । माताजी के सामने बैठ कर मौनावस्था में अपना-अपना मन्त्र जप करने का सौभाग्य कभी भी नहीं हुआ । माताजी तो अन्धेरे में स्थिर होकर योगासन में बैठी थीं । खुला मैदान था कोलाहल रहित माताजी को देखूँगी अतः मैं तो आँखें खोलकर ही बैठी थी । माताजी के सामने उन्मीलन ही मुक्ति है । अन्धेरे में सिर पर जूड़ा बाँधे माताजी की छवि महादेव शंकर के सदृश थी । बत्ती जलने पर जब माताजी ने आँखें खोलीं ऐसा लग रहा था मानो किस लोक से लौट आयी हैं । साढ़े नौ बजे के थोड़ी देर बाद पण्डाल से उठ गयीं ।

सर्वाधिकारी मौसाजी को लेकर थोड़ी देर तक एकान्त वार्ता हुई । उसके बाद माताजी अपने विश्राम कक्ष में गयीं ।

१६ अप्रैल, १९५३

प्रातःकाल उठते ही रेणू मौसीजी के साथ मैं दमदम की बस से माताजी के दर्शनों के लिये गयी । जाकर देखा कि माताजी तालाब की सीढ़ियों पर खम्भे पर बैठी हैं । हमलोगों ने जाकर प्रणाम किया । मैं उसदिन कैमेरा ले गयी थी । माताजी को बिना बताये मैंने कुछ चित्र लिये । माताजी की वह अपलक दृष्टि, खुली हँसी तथा बीच-बीच में बातें करना बहुत ही अच्छा लग रहा था । राहुल चटर्जी ने माताजी से पूछा, "माताजी आपकी तालाब में नहाने की इच्छा नहीं होती ।"

माताजी– इच्छा होने से ही करूँगी । इस बार काशी में संक्रान्ति के दिन स्नान किया था । सौ वर्षों में स्नान का ऐसा योग और नहीं होगा ।

थोड़ी देर बाद माताजी पण्डाल में आकर बैठीं । लड़कियों ने गीता पाठ किया । अभय ब्रह्मचारी ने भजन गाये । भजन के चलते माताजी "रामनारायण रामनारायण" गाने लगीं । माताजी का कण्ठस्वर इतना मधुर था मानो श्री कृष्ण की बाँसुरी । घुमाफिरा कर माताजी इन्हीं पदों को गा रही थीं । राम-राम राम-राम इत्यादि । काफी देर तक माताजी ने गाया । कलकत्ते में महाराज राम नारायण कर रहे थे माताजी दमदम में कीर्तन गा रही थीं - कैसा अपूर्व आत्मिक योगायोग ।

नलिनी ब्रह्म ने माताजी का रामनारायण सुनकर कहा–"माताजी आपने तो इतना राम नाम किया हमलोगों का भूत तो छुड़ा दो ।" पिताजी ख्याल होने पर सबको लेकर चली जाऊँगी ।

घर की गृहिणी पेड़ के केले ले आयीं, माताजी ने हर एक को अपने हाथों से केला दिया । ठीक साढ़े ग्यारह बजे माताजी कमरे में जाने के लिये उठीं । इतने में और भी भक्तों के आने पर माताजी ने कहा - शायद तुमलोगों के लिये ही कमरे में जाना नहीं हो रहा था ।

माताजी अब भोग पर बैठीं । मैंने भीतर झाँक कर देखा । माताजी के हाथों को बेला के फूलों के हारों से बाँध दिया है । माताजी भोजन करने में आपत्ति जता रही हैं इसलिए बुनिदी ने हाथ बाँध दिये । माताजी छोटी बच्ची की तरह कह रही हैं–"ठाकुर मेरे हाथ खोल दो, दयामय मुझे खोल दो ।"कहती हुई हँस रही हैं ।

बृहस्पति वार को चाचा चाची, आलो एवं पिता माता को माताजी के दर्शनों के लिये ले गयी । माताजी को प्रणाम करते ही माताजी ने हंसते हुए जूही के फूलों की माला मेरे पिताजी को पहना दी । उस दिन भीड़ इतनी अधिक थी कि मैं ठीक से सामने नहीं बैठकर माताजी के पास ही घुटने टेक कर माताजी को पंखा झल रही थी । टुलटुल वगैरह आये । उसने बहुत सुन्दर ढंग से माताजी के जूड़े में बेला की माला बाँध दी ।

अनिल गाँगुली द्वारा माताजी के भ्रमण का प्रसंग सुनाने पर माताजी दक्षिण भारत भ्रमण का प्रसंग सुनाने लगीं ।

सब पण्डिचेरी का वृत्तान्त सुनने के आग्रही थे । माताजी ने कहा, "हरिबाबा के साथ यह छोटी लड़की पाण्डिचेरी पहुँची । मदर के पास सूचना भेजने पर मदर ने कहा कि वे अलग से भेंट करेंगी । इस शरीर का तो कोई प्राईवेट नहीं है । अतः इस छोटी लड़की ने हरिबाबा को कहला भेजा बाबा जो कहेंगे वही होगा । मदर इस छोटी लड़की की ओर देखती रहीं । इस छोटी लड़की ने भी मदर को देखा । किसी ने पूछा कितनी देर तक आपलोग एक दूसरे को देखते रहे? अभय ब्रह्मचारी ने माताजी की ओर से जवाब दिया ४५ मिनट । इसके बाद माताजी ने कहा, "मदर ने इस शरीर को "चॉकलेट" क्या तुम कहते हो । वह दो दिया । इस छोटी बच्ची ने मदर को एक दिया । इसके बाद बाबा अरविन्द की समाधि पर कमल की पंखुड़ियाँ चढ़ायी गयीं । मदर ने इस शरीर को "Eternal youth" न ऐसा ही कुछ कहा ।

चिदम्बरम् के सूक्ष्मशरीर की आत्मा के साथ भेंट होने की बात कहते कहते मौन का समय हो गया ।



भक्त चोखोबा

(गतांक से आगे)

—श्री अशोक भाई कुलकर्णी

संत नामदेवजी मानो चोखोबा का भाव व्यक्त कर रहे थे। उसकी भावगंगा में निश्चल होकर चोखोबा डूब गये थे। कीर्तन समाप्त होते ही नामदेव जी के चरण स्पर्श के लिए लोग उमड़ पड़े। अस्पृश्य चोखा खिन्न मुद्रा से आँखें मूँदकर हाथ जोड़कर आंसू बहाता खड़ा था। एकाएक उनके कानों में मधुर शब्द गूँज उठे – 'अरे ऐसे खिन्न क्यों हो। सब तो चले गये। तू अभी तक यहीं खड़ा है" चोखोबा ने आँखें खोलकर देखा तो स्वयं श्री नामदेव महाराज सामने खड़े हैं। रोते-रोते प्रणाम मुद्रा में जमीन पर गिर कर बार बार माथा टेकर पूछते हैं "महाराज मैं अभागा अस्पृश्य चोखा! क्या मुझे पांडुरंग के दर्शन हो सकते हैं?' श्री नामदेव जी की अभयवाणी गूँज उठी–

"क्यों नहीं? वो तो विश्वब्रह्माड की माऊली है बच्चा भूख से क्रंदन करे और माँ उसे गोदी में लेकर दूध न पिलाये, ऐसा हो ही नहीं सकता।" सुनकर भाव विह्वल और हर्ष निर्भर होकर चोखोबा माथा टेक कर दूर से ही प्रणाम कर रहे थे। किन्तु श्री नामदेव महाराज स्वयं आगे बढ़े। झुक कर चोखोबा के माथे पर हाथ रखकर कहते हैं "बोलो विट्ठल विट्ठल विट्ठल ....नामदेव महाराज बोल रहे हैं और चोखोबा अनुसरण कर रहे हैं, "विट्ठल विट्ठल विट्ठल..........क्या यही 'दीक्षा' तो नहीं? अब चोखोबा आश्वस्त हो गये। अपनी हीन जातित्व के अज्ञान का (न्यूनगंड) हीनत्व बोध भाग गया। अन्तर्दृष्टि खुल गयी। मुख से अभंग गंगा उत्स्फूर्त प्रवाहित होने लगी। अंतरंग में विट्ठल भगवान की मूर्ति सदा के लिए स्थापित हो गयी। किन्तु फिर भी मंदिर में स्थित मूर्ति दर्शन के लिए तड़प रहे थे। उसी भाव में एक दिन मंदिर की तरफ गये। भाविकों की भीड़ दर्शन की अभिलाषा से प्रवेश कर रही थी और कृतार्थ होकर लौट रही थी। चोखोबा के मन में लहर उठी–"अंदर तो नहीं जा सकता हूँ किन्तु देहली पर चढ़कर उस मनोहर रूप को देखने में क्या हर्ज है? इस अभिलाषा का आवर्त कब बना और सोयरा-कर्ममेला मना करते हुए भी विभोर होकर स्वयं सीढ़ियां कब चढ़ने लगे इसका इन्हें खुद भी पता नहीं लगा। अब सिर्फ एक ही सीढ़ी बाकी थी कि चारों तरफ से चीत्कार उठी–चिल्लाहट शुरू हुई शोर मच गया– "अरे इस अस्पृश्य की धृष्टता तो देखो अपनी छाया से हमें दूषित किया। अब फिर नहाना पड़ेगा कोई गरज उठा– "अरे नहाना तो पड़ेगा ही, लेकिन पहले इसकी ऐसी मरम्मत करो कि इसकी फिर ऐसी हिम्मत न होगी। शब्दों की समाप्ति के साथ डंडों की, जूतों की, गालियों की, लातों की अनगिनत अविरल वर्षा होने लगी। सोयरा-कर्ममेला आक्रोश करने लगी "मत मारो मत मारो" किन्तु उनकी कौन सुनता? मारने वाले थक गये तब एक एक करके चले गये। चोखोबा नीचे गिरा हुआ था। वस्त्र

जगह जगह फट गया था । शरीर का प्रत्येक अंग प्रहार पीड़ा से टूट रहा था । होंठ फूले हुए थे । मुँह से खून निकलने लगा । ऐसी दशा में भी आँखें बंद करके अस्पष्ट शब्दों से बोल रहे थे "विट्ठल विट्ठल विट्ठल .... सोयरा जैसे तैसे उन्हें घर ले गयी । कुछ दिनों में शरीर के घाव भर गये किन्तु मन व्यथित ही रहा । कैसे उस साँवरे का दर्शन मिले? एक दिन यह व्याकुलता चरम सीमा तक पहुँची । एकाएक उठकर पंढरपुर चल पड़े । पत्नी और पुत्र पीछे से दौड़े । रात का समय था । महाद्वार बंद था । बंद किवाड़ों की तरफ टकटकी लगाये अपने ही भाव में खड़े रहे । धीरे-धीरे अन्तरंग का भाव नेत्रों से झरने लगा । हृदय का क्रन्दन वाणी द्वारा प्रकट होने लगा । मानों बंद किवाड़ों के पीछे छिपे विट्ठल भगवान का हृदय बींध ले ।

"का बा मोकालिले न ये सी गा देवा ।'
काय भी केशवा चुकसो से" ।

भगवन ऐसी मेरी कौन सी गलती है कि मुझे बार-बार मारपीट करवा कर भगा देता है । मैं भक्ति नहीं जानता, सेवा नहीं जानता, वेद पुराण आदि की बात दो दूर, योग याग व्रत दान तप कुछ भी मेरे बस की बात नहीं है । मैं अपने भाव से तेरा नाम गा रहा हूँ । लेकिन

"उस डोंगा परि रस नोहे डोंगा" ।

ईख (इक्षुदंड) बाका हो किन्तु उसका मधुर रस बाँका नहीं हो सकता । इस प्रकार मैं जातिहीन, अवगुणों की खान हूँ । फिर भी मेरा भाव सरल ही है भगवन् आओ प्यारे दर्शन दो, विट्ठल विट्ठल विट्ठल....पुकारते पुकारते देहभाव विस्मृत होकर अब गिरने वाले ही थे कि किसी ने अपने भावों के सहारे उन्हें संभाल लिया । वह चोखोबा के कानों में मधुर स्वर से पुकार रहा है– "आँखें खोल, चोखोबा आँखें खोल । मैं आ गया हूँ । चोखोबा ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं तो सामने संत मंहत वर्णित चिरवांछित चिन्मय श्रीविग्रह! श्रीवत्सलांछन-मुकुट-पीतांबर धारी! रोते-रोते चोखोबा भगवान विट्ठलनाथ के चरणों में गिरे । उन्हें उठाकर गले लगाकर विट्ठलनाथ कहते हैं– "तेरा स्थान चरणों में नहीं, मेरे हृदय में है चोखोबा' । अब भगवान ने अपने गले की कौस्तुभमाला उतार कर चोखोबा के गले में डाली संकोच से चोखोबा सिकुड़ गये । भगवान हंसकर कहते हैं–"यह सिर्फ पारितोषिक नहीं किन्तु तुम्हारी महिमा प्रस्थापित करेगी" । आँखें मूँदकर चोखोबा स्वयं को खोकर खड़े रहे । कंकड़ों की बौछार से उन्हें फिर देहभान आया । कंकड़ मार-मार कर सब गरज रहे थे । ढोगी! बकध्यानी! चोरी चुपके मंदिर में घुसकर, विट्ठल भगवान को छूकर हार चोरी की, और गले में पहन कर खड़ा है सबने मिलकर दूसरे पंडितों को बुलाया । इस घोर अपराध का दंड सुनाया गया–"इसे बाँधकर बैल के पैर से जकड़ दो । बैल को प्रहार करके भगाओ । जब घसीटता हुआ बैल दौड़ेगा–बाद में फिर से यह ऐसा दुःसाहस नहीं करेगा । चोखोबा को बैल के पैर के साथ बाँध दिया गया । सोयरा का आतंक मानो गगन चीर कर भगवान को विंध रहा था । चोखोबा शान्त थे । उनका विट्ठल विट्ठल........नामोच्चारण अविरल हो रहा था । अब सब बैल को दौड़ाने

की कोशिश कर रहे थे । कोई कंकड़ मारने लगे । तो कोई पूँछ हिलाते कोई प्रहारों पर प्रहार कर रहे थे । किन्तु आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा । बैल अनेक प्रयत्नों के बावजूद एक इंच भी हिलता नहीं था । अपनी जगह स्थिर था । शान्त था । पशु क्यों न हो उसे अप्राप्य संत संग जो मिला था । इस संग से मानों वह भगवद्भाव में मग्न चोखोबा की तरह स्थितप्रज्ञ वृत्ति से खड़ा था । सब हार गये । एक दूसरे का मुँह ताकने लगे । इतने में एक वारकरी दौड़कर आया । सबको फटकार कर कहता है "हाथ जोड़कर यह बेचारा तुमसे कहता था कि "माला स्वयं विट्ठलनाथ जी ने मेरे गले में डाली । मैंने अंदर मंदिर में घुस कर उन्हें स्पर्श तक नहीं किया । " किन्तु तुमने उसकी मानी नहीं । अब इससे बढ़कर कौन सा सबूत चाहिए सिर नीचे झुकाकर सब भूदेव चले गए । देखने वाले सब चोखोबा की जय जयकार करने लगे ।

चोखोबा अब एक प्रसिद्ध सत्पुरुष बन गये । सोयरा और कर्ममेला भी विट्ठलभक्ति के रंग में रंग गये । एक चोखोबा की अमृतवाणी अभंगों के रूप में साकार होकर विट्ठलभक्ति गुरुदेव नामदेव महाराज के प्रति कृतज्ञता आदि का दर्शन कराने लगी । नामदेव तो अपने इस शिष्य की कृतार्थता में धन्यता मानने लगे ।

कर्मवशात् एक दिन मंगल बेढ़े के मुस्लिम अमलदारने अपनी कोठी बँधवाने हेतु (बेठेबिगार) मजदूरों को पकड़कर लाने का हुक्म दिया । अमलदार के आदमी अन्य कई लोगों केसाथ चोखोबा को भी पकड़कर ले गये । (बेठ बिगार– बिना मजदूरी जिससे जबरन काम कराया जाता है ।) "विट्ठल विट्ठल जपते-जपते चोखोबा माथे पर मिट्टी पत्थर की टोकरी ढोने लगे । दिन व दिन कोठी की दीवारें उठने लगीं । अचानक एक दिन एक दीवार टूट पड़ी और मिट्टी पत्थर के नीचे अनेक मजदूर दब गये । उनमें चोखोबा भी थे । मानो नियति ने उन्हें अपने हाथों (संजीवन) जीवित समाधि दी ।

इधर पंढरपुर में श्री नामदेव महाराज अपने शिष्य की प्रतीक्षा कर रहे थे । कुछ दिन बीतने पर विट्ठलभगवान से पूछा । "मेरा चोखोबा कई दिनों से यहाँ नहीं आया । कहाँ गया होगा ? सब हाल बताकर विट्ठलभगवान ने नामदेव जी से कहा "मंगलबेढ़ा जाओ । वहाँ मिट्टी के ढेर के नीचे चोखोबा मिलेगा" । नामदेवजी तुरन्त दौड़े । मंगल बेढ़ा जाकर मिट्टी का ढेर हटाकर देखा तो सिर्फ अस्थि पंजर अवस्था में अनेक मजदूर हैं । उनमें चोखोबा की अस्थियों की पहचान मुश्किल ही थी । विवश होकर पंढरपुर आकर आवेग से मंदिर में विट्ठलभगवान के पास दौड़े । दुखित अंतःकरण से सब वृत्तान्त निवेदन किया । करुणार्द्र भगवान कहते हैं "तेरी बात सत्य है नामदेव । दृष्टि से सब अस्थियाँ एक समान ही दीख पड़ेंगी । लेकिन तुम्हारा कान उनमें से फर्क जान सकेगा" । नामदेव जी फिर से दौड़े । एक एक अस्थि उठाकर कानों से लगाने लगे । कई अस्थि पंजर ऐसे ही ढूँढे । कुछ फर्क महसूस नहीं हो रहा था । थोड़े निराश से हो गये कि अचानक एक अस्थि से "विट्ठल विट्ठल ..... नाम की धुन सुनाई पड़ी चौंककर बारबार कान लगाकर सुना – वही सुने

"विट्ठल विट्ठल ..... नाम की धुन सुनाई पड़ी चौंककर बारबार कान लगाकर सुना – वही सुने विट्ठल ...... अब नामदेव जी त्वरा से सब अस्थियाँ इसी तरह परख कर पंढरपुर आए। मंदिर के महाद्वार के सामने खड़े हो गए। चोखोबा का अहोभाग्य देखो स्वयं सदगुरु ने अपने कंधे पर ढोकर उन्हें उनके इष्टदेव विट्ठलनाथ के सामने महाद्वार में समाधि दी-ठीक उसी जगह-जहाँ खड़े होकर वे भगवान को आर्त भाव से पुकारते थे और जहाँ उनका भगवान से मिलन हुआ था।

आज भी चोखोबा की समाधि वहाँ है। चोखोबा अब भी अव्यक्त रूप से अपना प्रिय कार्य करते रहते हैं - पांडुरंग के दर्शनार्थियों के हृदय में भाव स्पंदित कराकर उन्हें विट्ठलमय बनाकर मंदिर में भेजते हैं। धन्य हैं ऐसे भक्त-भगवान-गुरुदेव।



वाङ्माधुरी

—संकलन "कृपाल"

पं. सुन्दर लाल जी (माँ से) तुम वैद्य हो, डॉक्टर हो, इन्जीनियर हो सब कुछ हो ।

माँ – इन्जीनियर, चारु बाबू से कहा यहाँ वेन्टिलेटर लगाना । तब उन्होंने लगाया । हम यह थोड़े ही कहते हैं यह करो । वह करो, हम तो कहते हैं ऐसा करने से कैसा होगा, फिर वह कहते हैं ऐसा तो बहुत अच्छा है । और कर देते हैं ।

पं. सुन्दरलाल जी – चतुर से चतुर हैं ।

माँ – चतुर को पहचानने वाला कोन है ?

पं. सुन्दर लाल जी – एक नम्बर का चालाक ।

माँ – नाम करते-करते ऐसी स्थिति आ जाय, जिसमें गुरु शक्ति प्रकाश होती है ।
१. गुरु का उपदेश २. सीधा सत्य का रास्ता है । ३. अगर नाम करें, इस ढंग से लें । एक होता है यात्री का संग ।

प्रश्न – यात्री का संग ?

माँ – सत्संग, सत्यव्रत, नाम करने से शक्ति बढ़ जाती है, इस ढंग से करे – हर वक्त नाम कहते चलो । नाम क्रिया लो । जैसे चुपचाप जप करें । शरणागति होना चाहिये । ऐसा पहले से भावना करो । ध्यान और तुम्हारा जप ।
१. अभ्यास – नाम करने का अभ्यास । इच्छा अनिच्छा से दो टाइम ध्यान करना । आगे बढ़ने की कोशिश करें । तुम जब तक जाग्रत रहो नाम के बिना ना रहो । इच्छा अनिच्छा से भगवान का नाम । यह लक्ष्य रखना । पहले अपने को पाने के लिये हर वक्त कोशिश करना ।

प्रश्न – कितना रोज़

माँ – जितना रोज तुम को प्रकाश न होय । प्रकाश जरूर हो जायगा । अपराध जो होता है । नाम करते-करते अपराध का पता लगता है । अपराध हटा लेंगे । इस तरह नाम करते करते तुम अपराध की तरफ नहीं जाओगे । जिनका आत्मा-चिन्तन के जैसे अद्वैत लाइन । जब तक उनसे अर्थात् अध्यात्म के साथ प्रतिष्ठित न हो तब तक उनको कोई लाइन लेना चाहिये । पर्दा हटाने के लिये अद्वैत के अनुकूल, चाहे जिस लाइन से करे नाम का लाइन (मार्ग) या अद्वैत लाइन । यह शरीर कहता है भगवान् का नाम करते-करते अपने को गला लो । और अद्वैत करते-करते मैं पना जल जाये । और "मैं" जलने वाला जल जाय । गलने वाला गल जाये । पक्की बात । कोई मदद नहीं देता । सत्संग करोगे उसी में प्रकाश होने के लिये । जब तक "मैं" पना है जरुर करना पड़ेगा । भगवान् प्रकाशित होंगे उनके चिन्तन से । कोई किसी का मदद नहीं करेगा ।

(हँसते हुये) क्या झूठ है । पक्का बिलकुल । मैं छिप जाता है । आदत से क्या करूँ । हम तो यही कहते हैं जो ध्यान स्मरण करें तो उनसे प्रकाश बिना रहा नहीं जायेगा । कौन बात कर दे । गुरु तो कोई नहीं है । तुम गुरु की बात ना लो । गुरु रूप में जो प्रकाश । यह मेरी पक्की बात । गुरु एक दफा हाथ पकड़ ले तो छोड़ कर नहीं जायगा । गुरु पकड़े तो – गुरु अगर न हो तो जो कोई हो । कुछ हो -दुःख दे । दुःख हरण कर रहा है । गुरु रहे और दुःख ना हो । कौन जन्म-जन्म का पाप । कौन सी आफत दे कर जला रहा है । गलने वाला गला रहा है । जलने वाला जला रहा है । कैसे मालुम हो । जो आफत आये । मैं कुछ नहीं जानता तुम, जो कुछ करों । जानने की जरुरत क्या है ? ऐसा कोई संयोग हो गया है । मेरा लक्ष्य लेकर पड़ा रहूँगा । जैसे ध्रुव, कैसे नाम करते-करते भगवान् प्रकाश बिना नहीं रहेंगे । तुम तो पुकारो ध्रुव की तरह । उनके बिना और कोई नहीं । गोविन्द् बोलो ।

पं. सुन्दरलाल जी – राधे बोलो ।

माँ – हमने सुना अखण्डानन्द की तबियत खराब है । हर वक्त रेल में रहते हैं ।
जब तक साक्षात्कार ना हो लक्ष्य् को लेकर पड़ा रहना है ।

जनवरी की इक्कीस तारीख शाम के सात बजे हैं । महारानी ग्वालियर श्रीमती विजयाराजे सिंधिया माँ से मिलने आयीं तो थोड़ी सी बातचीत के उपरान्त माँ श्री हरि बाबा को मिलने नर्सिंगहोम के लिये रवाना हुईं ।

माँ – कल से समय बदल देंगे । मेरा तो स्वाधीन है । अन्य समय चला जाऊँ । आज तक कहा है सो जाना है ।

माँ ने बाबा के लिये एक तकिये के लिये कहा - शाम से पहले ही कोई साटिन का तकिया ले आया महाराज टिहरी डनलॉप का तकिया ले आये । माँ ने कल बाबा के लिये सेव मँगवाये थे । तब से आज तक सेव आते ही जा रहे हैं ।

माँ ने कहा, एक दिन बाबा की खबर आयी । पूरा दिन बाबा का ही ख्याल आ रहा है । जरूरत न हो तो वापस कर दो । बाबा ने अपने मुख से कहा । [हरिबाबा को सलाइन दिया जा रहा था अतः एक तकिये की आवश्यकता उन्होंने जताई थी, माँ बाबा के वैराग्यपूर्ण स्वभाव के सम्बन्ध में कहती हैं] आदत पड़ जाती है । कहते हैं । साधु तो जंगल में रहने वाला है । बीमारी के लिये बाबा तकिया ना लेते तो मैं ले जाता । मेरे लिये जंगल में रहना, तकिया से सजाना एक ही है । अब मैं सजूँगा मुझे तकिया देना पड़ेगा । मुझे सजाने के लिये ।

[बाबा को देखने अस्पताल जाने के सम्बन्ध में दो टाइम जाऊँगा नहीं । बस यही टाइम रखूँगा । मैं जा कर झट करके आ गया, भीड़-भीड़] [श्री श्री माँ को स्त्री पुरुष किसी भी लिंग की सीमा में बाँधा नहीं जा सकता, अतः श्री श्री माँ के कथन में लिंग के अनुरूप भाषा

की त्रुटि-त्रुटि के अर्न्तगत नहीं आती। यहाँ श्री श्री माँ के श्री मुख निःसृत शब्दों को यथावत रखने का प्रयास है]

माँ से किसी ने पूछा कि माँ का आगे का कार्यक्रम क्या है, अर्थात् माँ कब तक यहाँ हैं ?

माँ – मेरा जब ख्याल होगा चला जाऊँगा। अभी ठीक नहीं है।

प्रश्न – खास जगह

माँ – जहाँ है वही खास जगह है। भगवान् की जगह ही मेरी खास जगह है। (लोगों को दिखाते हुये) यह भी सब भगवान् बैठे हैं।

●

उत्सव-तालिका

१. स्वामी मुक्तानन्द गिरीजी का सन्यास उत्सव	–	१४ अप्रैल
२. वासन्ती पूजा	–	१८ से २२ अप्रैल
३. श्री श्री माँ का शुभ जन्म दिवस	–	३ मई
४. अक्षय तृतीया	–	१५ मई
५. स्वामी तिब्बतानन्द तीर्थजी (बाबा भोलानाथ) की तिरोधान तिथि	–	२० मई
६. बुद्ध पूर्णिमा	–	२६ मई
७. श्री श्री माँ की शुभ जन्म तिथि	–	२९ मई (रात्रि)
८. गंगा दशहरा	–	२० जून

राजगीर-उत्सव की मधुमयी स्मृति

—कुमारी गीता बनर्जी

भगवान बुद्ध का तपःपूत स्थल यह राजगीर । उनके पावन चरण चिह्नों से अंकित यह राजगीर । धन्य है यह राजगीर की पवित्र भूमि, जहाँ भगवान बुद्ध ने कई वर्षों तक भक्त शिष्यों के साथ सत्संग में अपने जीवन के कुछ अमूल्य क्षण व्यतीत किये हैं । जैन तीर्थंकरों की यह निवास भूमि रही है । भगवान बुद्ध की करुणा ही मानो साकार मूर्ति धारण कर वर्तमान समय की महानतम विमूति श्री श्री माँ आनन्दमयी के रूप में इस धरती पर अवतीर्ण हुई थी । श्री श्री माँ ने अपने त्रिताप हरण अशरण शरण पावन चरणस्पर्श से इस पवित्र तपस्थली को धन्य किया है ।

१९५२ ई. में श्री श्री माँ का सर्वप्रथम राजगीर आगमन हुआ था । श्री श्री माँ उस समय पटना में थीं । श्रद्धेय मुक्तिबाबा के आग्रह पर माँ राजगीर पधारीं तथा उष्णकुण्ड में स्नान किया । सर्वप्रथम माँ उष्णकुण्ड के पास ही धर्मशाला में रहीं । बाद में श्रीमती रामेश्वरी देवी की प्रार्थना पर श्री श्री माँ ने महावीर धर्मशाला में कुछ दिनों तक निवास किया । यहाँ माँ के सान्निध्य में सत्संग प्राप्त कर लोग धन्य हुए । श्री श्री माँ के अपूर्व लावण्यमय मुखमण्डल पर भगवान बुद्ध की निश्छल करुणा की ज्योतिर्मयी छटा को देख कर सभी आनन्दित हुए ।

श्रद्धेय मुक्तिबाबा की प्रार्थना पर तथा भक्तों के सहयोग से इस राजगीर आश्रम का निर्माण हुआ । जनवरी १९५५ ई. में श्री श्री माँ की उपस्थिति में इस राजगीर आश्रम का उद्घाटन हुआ था ।

इसी राजगीर आश्रम के विशाल प्रांगण में १९९० ई. में महासमारोह के साथ श्री श्री शारदीया दुर्गापूजा हुई थी । तभी से भक्तों की इच्छा थी कि दुर्गापूजा के स्थल पर एक सत्संग भवन का निर्माण हो । श्री श्री माँ की असीम अनुकम्पा से भक्तों की इच्छा ने साकार रूप धारण किया हैं । उसी दुर्गापूजा के स्थल पर एक विशाल संगमरमर का बड़ा ही भव्य सत्संग भवन निर्मित हुआ है । इसी सत्संग भवन का उद्घाटन विगत २० मार्च को सम्पन्न हुआ । इस उपलक्ष पर २० मार्च से २२ मार्च, २००२ ई. तक एक महोत्सव का आयोजन किया गया । इस उत्सव में पटना, रांची, कलकत्ता तथा अन्य स्थलों से अनेक मातृ भक्तों का समागम हुआ । आश्रम के वरिष्ठ ब्रह्मचारी श्री निर्वाणानन्दजी, स्वामी निर्मलानन्दजी, स्वामी अच्युतानन्दजी तथा वाराणसी आश्रम के वरिष्ठ-ब्रह्मचारी श्रद्धेय पानुदा के साथ कन्यापीठ की कुछ ब्रह्मचारिणियों ने विशेष आमन्त्रित होकर इस 'श्री श्री माँ आनन्दमयी सत्संगभवन-उद्घाटन समारोह' में योगदान किया ।

१९. मार्च २००२ ई. को हम सब विक्रमशिला एकस्प्रेस से राजगीर रवाना हुए । प्रात-काल करीब ७ बजे गाड़ी मुगलसराय स्टेशन से चल पड़ी । करीब दोपहर १:३० बजे गाड़ी बख्तियारपुर स्टेशन पर पहुँची । हमलोग शीघ्रता से सामान के साथ स्टेशन पर उतर गये । स्टेशन पर हमें लेने

के लिए मातृ भक्त श्री जय नारायण सहायजी अपनी धर्मपत्नी तथा पुत्री सहित उपस्थित थे। राजगीर के माँ के पुराने भक्ति श्री भुवनेश्वर जी भी आये थे।

बख्तियारपुर होकर श्री श्री माँ भी कई बार राजगीर गई हैं। बख्तियारपुर से राजगीर करीब ४० किलोमीटर दूर है। हम सब मार्ग के दृश्यों का अवलोकन करते हुये आगे बढ़ते लगे। राजगीर एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। भगवान बुद्ध के समकालीन राजा बिम्बसार, अजातशत्रु आदि तथा उनसे पूर्व करीब पाँच हजार वर्ष पुराने जरासन्ध आदि का यह निवास स्थल था। अनेक राजाओं का घर होने के कारण यह 'राजगृह' कहलाता था। उसी का अपभ्रंश रूप है 'राजगीर' यह नाम। मार्ग में एक ओर हजारों हर्ष पुरानी चट्टानों से निर्मित्त पहाड़ी दिखाई दे रही थी। दूसरी ओर वृक्षों की हरियाली के बीच साफ सुथरे मकान, दूकान इत्यादि दिखाई दे रही थी। रास्ता भी साफ था। मानों प्राचीनता तथा नवीनता में अपने सह अस्तित्व की रक्षा के लिए होड़ लग गई हो। पर भगवान बुद्ध के तप का प्रभाव ही ऐसा विलक्षण है कि करीब ढाई हजार से अधिक वर्ष बाद भी उस युग की अनेक प्राचीन सम्पदाओं को अपने में संजोये यह राजगीर आज भी देशी विदेशी पर्यटकों का आकर्षक स्थल बना हुआ है। प्राचीनतम विशिष्ट शिक्षा केन्द्र नालन्दा भी यही बसा हुआ था, जिसका ध्वंसावशेष यहाँ मुख्य दर्शनीय स्थल बना हुआ है। पांस ही नवनिर्मित नालन्दा विश्वविद्यालय भी बना हुआ है। सम्पूर्ण राजगीर में एक तप का गम्भीर प्रभाव है। राजगीर के 'खाजा' (एक प्रकार की विशिष्ट मिठाई) प्रसिद्ध है। मार्ग में दोनों ओर 'खाजा' की दूकानें दिखाई दी। बाजार में आश्रम के निकट "श्री श्री माँ आनन्दमयी सत्संग भवन-उद्घाटन महोत्सव" लिखित एक तोरण द्वार दिखाई दिया। हमलोग करीब २:३० बजे राजगीर आश्रम पहुँचे।

राजगीर आश्रम का वातावरण बहुत ही सुन्दर है। माँ के आश्रमों में कहीं भी आप चले जाइए यही विशेषता दिखाई देती है कि माँ के पावन चरण चिह्नों से अंकित आश्रम की पवित्र भूमि स्वतः ही साधक को साधना की ओर प्रेरित करती है। यह राजगीर आश्रम भी बहुत ही सुन्दर है। फूलों के बगीचे के बीच श्वेतशुभ्र भव्य शिव मन्दिर देखते ही बनता है। मातृ भक्त श्रीमती रमा सक्सेना के मन में मातृ प्रेरणा से अपने दिवंगत पति की स्मृति में एक शिव मन्दिर की स्थापना की इच्छा हुई। स्वामी परमानन्दजी की देखरेख में यह मन्दिर बना। १९६५ ई. में शिवरात्रि के दिन इस नवनिर्मित मन्दिर में श्री श्री माँ की उपस्थिति में तीन शिवलिंगों की प्रतिष्ठा हुई थी। रमाजी के पति श्री रामबाबू सक्सेना के नाम से एक शिवलिंग जिनका नाम 'रामेश्वर' है, श्री सुविमल दत्त (भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति के निजी सचिव) ने अपने एकमात्र पुत्र जिनका कुछ दिन पहले रुस में निधन हुआ था उनकी स्मृति में 'सुजितेश्वर' नाम से शिवलिंग स्थापित करवाया तथा देहरादून की पुरानी मातृ भक्त श्रीमती हंसादेवी ने अपने पति की स्मृति में 'रूपेश्वर' नाम से शिवलिंग स्थापित करवाया इस प्रकार ये तीन शिवलिंग मन्दिर में स्थापित हैं।

इन तीन शिवलिंगों का भी अपना एक इतिहास है। श्री श्री माँ उन दिनों वृन्दावन में थीं। राजगीर आश्रम में स्थापना हेतु इस तीन नर्मदेश्वर शिवलिंगों को माँ के पास वृन्दावन ले जाया

गया । माँ ने इन शिवलिंगों को वृन्दावन के पंडितों को दिखाया । पंडितों ने देख कर कहा कि ये शिवलिंग प्रतिष्ठा के योग्य नहीं हैं । तो माँ ने उनसे विधान पूछा कि इन शिवलिंगों को तब क्या किया जाय ? उन पंडितों ने विधान दिया कि यहाँ गंगा है नहीं अतः यमुनाजी के जल में ही इन तीन शिव लिंगों को विसर्जित किया जाय । अतः उनके कहने से भक्तों ने शिवलिंगों को यमुनाजी में विसर्जित कर दिया । इधर माँ को इतनी सर्दी हुई कि शय्या से माँ उठ नहीं पा रही हैं । शिवजी जल में हैं अतः माँ को ठण्ड से सर्दी हो गई है । माँ को पुनः-पुनः शिवलिंगों का ख्याल होने लगा । तब माँ ने वृन्दावन के पंडितों को बुला कर कहा, "ये तीनों शिवलिंग जाग्रत चैतन्यमय हैं । इन्हें प्रतिष्ठा के लिये लाया गया था । इन्हें ही राजगीर आश्रम में प्रतिषिठत किया जायगा ।"

श्री श्री माँ के निर्देश से भक्तगण यमुनाजी में शिवलिंग लाने गये । आश्चर्य की बात है जहाँ यमुनाजी में उन लोगों ने शिवलिंगों को विसर्जित किया था, ठीक वहीं पर तीनों शिवलिंग मिल गये । शिवलिंगों को जल से उठाते ही माँ की सर्दी समाप्त । उन तीनों शिवलिंगों को पैक करके राजगीर भेजने के लिए वाराणसी आश्रम भेजा गया । वहाँ से राजगीर लाया गया । श्री श्री माँ ने कहा, "शिव जी के साथ गंगाजी का एक स्वाभाविक सम्बन्ध है, किन्तु ये तीनों शिवजी वृन्दावन में पधारे । यमुनाजी के जल में रहे । अतः इनके श्रीकृष्ण प्रेम का परिचय प्राप्त हुआ । शिवजी परम वैष्णव हैं । अतः शिवजी की यह लीला है ।" इसी शिव मन्दिर में माँ की उपस्थिति में झूलन, जन्माष्टमी में श्रीकृष्णजी की मूर्ति पर शोडशोपचार पूजा हुई थी । शायद शिवमन्दिर में कृष्ण पूजा इस राजगीर आश्रम में ही हुई है । यह परम वैष्णव शिवजी की ही एक अभिनव लीला है ।

इन शिवलिंगों के अतिरिक्त यहाँ पार्वती, गणेशजी एवं वृषमदेवी की मूर्ति है । श्री श्री माँ बाबा भोलानाथ जी तथा दीदी माँ (माँ की माँ) के चित्र स्थापित हैं । मन्दिरका भाव बहुत ही सुन्दर हैं । हमलोगों ने शिव मन्दिर में प्रणाम किया । शिव मन्दिर के ठीक पीछे ही नव निर्मित सत्संग भवन बड़ा ही भव्य है । जो अभी बन्द है । आगामी २१ मार्च को इसका उद्धाटन होने वाला है । इसी उत्सव में हम सब यहाँ सम्मिलित हुए हैं ।

आश्रम की दूसरी ओर स्थित भवन के दूसरे मंजिल में श्री श्री माँ का कमरा बहुत सुन्दर ढंग से सजा कर रखा गया है । इसका उद्‌घाटन श्री श्री माँ की उपस्थिति में २५ जनवरी १९६४ ई. में हुआ था ।

इस भवन के बाहर एक ओर एक कुआँ है । श्री श्री माँ के निर्देश से ही इस विशेष स्थल पर कूप के लिए खनन किया गया था । पहले अन्यत्र खनन हो रहा था जहाँ नीचे मौर्ययुग के कुछ प्राकार (दीवार) आदि के ध्वंसावशेष प्राप्त हुए । अतः पुरातत्त्व विभाग के निर्देश से वहाँ खनन कार्य बन्द करना पड़ा । बाद में माँ के द्वारा निर्दिष्ट स्थल पर कूप खनन करने पर नीचे एक अति प्राचीन कुआँ का आविष्कार हुआ । जहाँ पहले से ही निर्मल शीतल जल की आनन्दमन्दाकिनी धारा प्रवाहित हो रही थी । इस कूप के आविष्कार से भक्तगण आनन्द से नाच उठे । तब भक्तों को माँ के निर्देश के तात्पर्य का बोध हुआ । हमलोगों ने उस कूप को भी देखा तथा उत्सव के समय कूप के

जल से सारे कार्य सम्पन्न किए । कारण आश्रम में बिजली हमेशा नहीं रहने से सब समय नल में जल नहीं रहता था ।

आश्रम में फूलों के बगीचों के साथ-साथ कई केले के पेड़ थे जिसमें केले लदे हुए थे । कच्चे केले को व्यञ्जन के उपयोग में लाया गया । टमाटर तथा बैंगन के खेत को देखा । यह तो सर्वविदित है कि राजगीर आश्रम की जमीन के बैंगन के पेड़ों की माँ ने किस प्रकार रक्षा की थी । आश्रम का निर्माणकार्य चल रहा था । इसी समय मजदूरों की असावधानी से उन छोटे-छोटे बैंगन के पेड़ों के ऊपर मिट्टी के ढ़ेर लग गंए थे । इन छोटे-छोटे पेड़ों ने जा कर माँ से कहा "माँ, हमें बचाओ" । माँ ने तुरन्त जाकर मजदूरों से मिट्टी हटाने के लिए कहा । यद्यपि परमानन्द स्वामीजी ने कहा कि अब तक तो ये पेड़ मर चुके हैं, परन्तु माँ की कृपा से मिट्टी हटाकर देखा गया कि ये पेड़ अभी तक जीवित हैं । माँ के द्वारा पहले से ही गमले रखे गए थे । पेड़ों को उठाकर उन गमलों में रखा गया । माँ ने कहा–"साधु महात्माओं के द्वारा ये पेड़ इतने दिन सींचे गए हैं । (उन दिनों उपेन महाराज का दायित्व था ।) सब्जी दे न दें प्राणों से तो बचेंगे ?" ऐसी थी श्री श्री माँ की अद्भुत करुणा इन छोटे-छोटे पेड़ों के प्रति । इस बार भी बैगन के पेड़ों में अनेक बैगन लगे हुए थे । जिन्हें तोड़कर भोग में लगाया गया ।

मातृभवन तथा शिवमन्दिर के बीच अतिथिभवन स्थित है । इसका उद्घाटन भी श्री श्री माँ की उपस्थिति में हुआ था । इस उपलक्ष पर ६ जनवरी, १९६५ ई. में इस अतिथिभवन में सरस्वतीपूजा हुई थी । हमलोग इसी में ठहरे थे । श्री सहायजी, पटना की श्रीमती नीलिमा घोस आदि व्यवस्था में लगे हुए थे आश्रम के ब्रह्मचारी श्री गोलोकानन्द जी भी दिखाई दिए । हमलोगों के लिए श्रीसहाय जी अनेक फल ले आए थे । शाम को बगीचे में पेड़ के नीचे रसोई करने में बड़ा आनन्द आ रहा था । कल से अर्थात–२० मार्च से उत्सव प्रारम्भ है । प्रातः शिवजी की पूजा है, ब्रह्मचारी निर्वाणानन्दजी हमसे पहले ही राजगीर पहुँच गये थे । वे ही पूजा करेगे । अतः हम कल की पूजा की तैयारी करने लगे । सन्ध्या कीर्तन किया । माँ के कमरे से माइक में स्वामी भजनानन्दजी (पुष्पादी) की कैसेट में मधुर आवाज से स्तव, कीर्तन की ध्वनि चारों ओर गुञ्जायमान हो रही थी ।

दिनांक २० मार्च को ब्राह्ममुहूर्त्त की मंगलमयी वेला में उषा कीर्तन के साथ उत्सव का प्रारम्भ हुआ । प्रकृति देवी भी मानों अपनी सौन्दर्य छटा के साथ इस उत्सव में योगदान कर रही थीं । चारों ओर के सुहावने दृश्य मन को लुभा रहे थे । प्रातः ८ बजे शिव पूजन प्रारम्भ हुआ । पुजारी के आसन पर ब्रह्मचारी निर्वाणानन्दजी विराजमान थे । माइक पर कन्यापीठ की ब्रह्मचारिणियों के महिम्नस्तोत्र पाठ तथा स्तवगान, गीताचण्डी पाठ आदि सुनाई दे रहे थे । पटना के मातृ भक्त गण भी अपने मधुर कण्ठ से देवादिदेव महादेव को अपनी संगीताञ्जलि अर्पण कर रहे थे । आज कलकत्ता से स्वामी निर्मलानन्दजी, गीतश्री छवि वन्द्योपाध्याय, श्री प्रतिभाकुमार कुण्डु आदि अनेक भक्तगण पहुँचे । कन्यापीठ की कुछ ब्रह्मचारिणियाँ प्रथमवार राजगीर आई है । अतः शिव मन्दिर में पूजा समाप्त होने के उपरान्त भोग की रसोई कर भोग सजा कर रखने के बाद कन्यापीठ की कन्याओं को राजगीर के कुछ मुख्य मन्दिर दर्शन करने के लिए भेजा गया ।

हम लोग सबसे पहले रत्नगिरिपहाड़ पर 'ट्रॉलि' से चढ़े । जहाँ 'विश्वशान्तिस्तूप' नाम से भगवान बुद्ध का विशाल स्तूप निर्मित है । इस स्तूप के चारों ओर भगवान बुद्ध की विशाल चार स्वर्ण प्रतिभाएँ विभिन्न मुद्रा में विराजित हैं । यहाँ दर्शन कर हम बौद्ध मन्दिर में गये । मन्दिर की स्वच्छता को देख कर हम सब मुग्ध हुए । इतने विराट परिसर में यह मन्दिर स्थित है, परन्तु कहीं भी एक तिनका भी नजर में नहीं आया । उस मन्दिर में एक लामा बैठे हुए थे । मन्दिर में हमलोगों ने देखा सबसे ऊपर लिखा है–

"नाम म्यों हो रेंग गे क्यो"

(नमस्कार है सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र को)

एक स्थल पर लिखा था कि इस रत्नगिरि पर्वत पर जब शाक्य मुनि बुद्ध तप कर रहे थे, तब उनके सामने इस पर्वत पर सप्त रत्नों से निर्मित एक स्तूप आकाश में अचानक प्रकट हुआ । उसके अन्दर स्थित प्रभूत रत्न बुद्ध ने कहा, "हे भगवन हे शाक्यमुनि, आप धन्य हैं । इस सद्धर्मपुण्डरीक नामक धर्मपर्यायकी आप ने सुन्दर व्याख्या की है । हे भगवन् ! हे सुगत आपके यह वचन अखण्ड सत्य है ।" तब सप्तरत्न स्तूप में शाक्यमुनिबुद्ध ने भी आसन ग्रहण किया ।" आकाश में भगवान बुद्ध के सामने स्वयं स्तूप प्रकट हुआ था अतः सर्वत्र बौद्ध स्तूपों का निर्माण होता है । इस मन्दिर में भी हमने देखा कि वेदी में सबसे ऊपर एक स्तूप बना हुआ है । उसकी दायी ओर शाक्यमुनि बुद्ध तथा बायी ओर प्रभूतरत्न बुद्ध की स्वर्ण प्रतिमा विद्यमान थी । उसके नीचे भगवान बुद्ध के चार पार्षदों की मूर्तियाँ विराजमान थीं । नीचे मन्दिर के संस्थापक की मूर्ति थी । मन्दिर के बाहर परिक्रमा मार्ग से दूर नीचे का दृश्य अति मनोरम लग रहा था । चतुष्कोण आकार के खेत, मकान, रास्ता, पेड़ पौधे आदि चित्र की भाँति प्रतीत हो रहे थे । एक ओर रत्नगिरि पर्वत पर चढ़ने का पैदल मार्ग भी दिखाई दे रहा था । सुना कि उस ओर एक गुफा है, जहाँ भगवान बुद्ध ने तपस्या की थी । उस दिन श्री लंका से बहुत से यात्री आये हुए थे । हमलोग प्रसाद लेकर पुनः 'ट्रालि' से नीचे आये । सुना कि भारत का यह सबसे प्राचीन 'Rope way' है ।

इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण के रथ चक्र के चिह्न दर्शन करने गये । हजारों वर्ष पूर्व महाभारत काल में जब भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन तथा भीम के साथ जरासन्ध से युद्ध करने आये थे, उस समय के उनके रथचक्र के चिह्न अब भी विद्यमान है, उस स्थल को हमने प्रणाम किया ।

हम वहाँ से जरासन्ध के 'सोन भण्डार' देखने गये । यह प्राचीन चट्टानों से निर्मित एक विशाल गुफा है । उसके दीवार में एक ओर एक द्वार है, जो चट्टानों से ढका हुआ है । सुना कि इसी द्वार के भीतर गुफा में जरासन्ध ने २०८०० राजाओं को बन्द कर रखा था । यहाँ जरासन्ध का खजाना भी गुप्त रूप से रखा हुआ था । गाइड ने बताया कि समय-समय पर मुसलमान तथा अंग्रेजों ने डायनामाइट से इस द्वार को तोड़ने की कोशिश की पर सफल नहीं हुए । खरोष्ट्री या और भी कोई प्राचीन लिपि में द्वार को खोलने की प्रक्रिया लिखी हुई है, परन्तु आज तक उस लिपि को कोई पढ़ नहीं पाये । दीवार पर भगवान बुद्ध तथा जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ भी खोदित हैं ।

"सोन" अर्थात् सुरंग धरती के नीचे के गुप्त मार्ग (अनेक सुरंगे) यहाँ एक ही जगह विद्यमान हैं अतः इसका नाम 'सोनभण्डार' पड़ा है ।

सोन भण्डार से जैनों का दर्शनीय स्थल 'वीरायतन' देखने गये । जहाँ जैन तीर्थंकरों की सम्पूर्ण जीवन-वृत्तान्त की झाकियाँ मिट्टी की गुड़ियों से प्रदर्शित की गई है । शीशे के भीतर यह उत्कृष्ट कलाकृति दर्शकों को भावविभोर कर देती है । छोट-छोटे भवनों की सजावट, पर्वत, नदी आदि की झाकियाँ वास्तव में सौन्दर्य की सूक्ष्मता, निपुणता को उजागर करती हैं । इस संग्रहालय के बाहर भी सुरम्य उद्यान की कलात्मक सजावट बरबस दर्शकों के मन को आकर्षित करती है । अन्त में एक जापानी बौद्ध मन्दिर का दर्शन कर हम आश्रम पहुँचे ।

भक्तगण मध्याह्न भोजन कर रहे थे । चारों ओर आनन्दपूर्ण वातावरण था ।

सायं ठीक चार बजे से सत्संग प्रारम्भ हुआ । राजगीर की स्थानीय भक्त महिलाएँ काफी संख्या में सत्संग श्रवण करने के लिए आई हुई थी । मातृ भक्तगण भी उपस्थित थे । सर्वप्रथम कन्यापीठ की ब्रह्मचारिणी गीता ने श्रीमद्भागवदगीता पर प्रवचन किया । उन्होंने सत्संग भगवन के उद्घाटन के उपलक्ष पर सत्संग की महिमा, श्री श्री माँ का इस विषय में योगदान, श्री श्री माँ के सानिध्य में साधुसमाज का आगमन तथा उनके द्वारा अमृतवर्षण (प्रवचन), श्री श्री माँ के द्वारा संयमसप्ताह आदि के माध्यम से सत्संग की सुलभता प्रदान आदि पर प्रकाश डाल कर बाद में कर्मयोग के विषय में संक्षिप्त प्रवचन किया । आगे गीताजी ने कहा कि एक बार पूज्य हरिबाबा जी माँ के साथ इस राजगीर आश्रम पधारे थे । उन्होंने कहा था, "यह स्थान सत्संग के लिये अति उत्तम है ।" शायद उनकी यह वाणी ही इस सत्संग भवन के निर्माण में सक्रिय प्रेरणा दे रही है । बाद में स्वामी निर्मलानन्दजी ने श्रीमद्भागवत पर प्रवचन किया । उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण की ऊखल बन्धन लीला की भूमिका बाँधी । यशोदा मैया के भाग्य की प्रशंसा करते हुए स्वामी निर्मलानन्दजी ने कहा कि प्रेम ही एक ऐसी अनमोल वस्तु है जिससे भगवान कन्हैया भी बँध जाते हैं । स्वामी निर्मलानन्दजी के प्रवचन के बाद गीतश्री छवि वन्दोपाध्याय ने मधुर स्वरों में भजन गाया । आज सत्संग का आयोजन शिव मन्दिर के पीछे पण्डाल में किया गया था । सन्ध्याकालीन आरती शिव मन्दिर में होने के उपरान्त, स्तव, रामायण पाठ के पश्चात सन्ध्या कीर्तन किया गया ।

कल के विशेष उत्सव का आयोजन किया जा रहा था । माँ का विशाल चित्र सजा कर रखा गया । काष्ठ निर्मित सुन्दर कलापूर्ण सिंहासन को सजाया गया । ब्रह्मचारी पानूदा, स्वामी अच्युतानन्दजी आदि सब कार्यों का निरीक्षण कर रहे थे । मंगलकलश, केले के पेड़ आदि रखे गए । सत्संग-भवन को बाहर से वैद्युतिक आलोक से आलोकित किया गया । आम के पत्तों के बन्धनवार फूलों की मालाएँ तथा पताकाओं से सजाया गया । बाहर वितानों से मण्डप की रचना की गई । चारों ओर गोबरजल छिड़का गया । एक कलश को जल से भरकर सिन्दूर लगाकर आम्रपल्लव देकर रखा गया जिसे लेकर सत्संगभवन में प्रवेश किया जाएगा ।

ब्राह्मवेला के मधुमय क्षण में २१ मार्च को माइक में उषा-कीर्तन प्रारम्भ होते ही उत्सव का उद्घोष चारों ओर वायुमण्डल में आकाश तथा धरती के प्रतिकण में प्रतिध्वनित हुआ ।

प्रातः ठीक सात बजे अमृतक्षण में सत्संगभवन का उद्घाटन हुआ । सर्वप्रथम आम्रपल्लवयुक्त सिन्दूर से अंकित मंगलकलश को हाथ में लेकर कन्यापीठ की ब्रह्मचारिणी गीता, श्रीनारायण के विग्रह को लेकर ब्रह्मचारी निर्वाणानन्द जी, श्री श्री माँ के विशाल चित्र को लेकर ब्रह्मचारी अभिजित, कन्यापीठ की ब्रह्मचारिणियाँ चँवर डुलाती हुई, गंगाजल छिड़कती हुई, शंख, घड़ियाल, घंटा आदि ध्वनि के साथ वेदघोष करते हुए श्री श्री माँ की जयजयकार करती हुई छवि दी तथा मातृभक्तगण द्वारा मातृनाम का गान करते हुए सभी ने सत्संग भवन में प्रवेश किया । छवि दी के साथ समस्तमातृभक्तगण मातृनाम कीर्तन करने लगे । सत्संगभवन के गर्भगृह में वेदी पर मंगलकलश स्थापित किया गया । स्वामी अच्युतानन्दजी आदि के वेदी पर सिंहासन के रखने पर श्री श्री माँ को सिंहासन में विराजित किया गया । श्री नारायण को विराजित किया गया । श्री श्री माँ को साड़ी तथा स्वर्णालङ्कारों से सजाया गया । मन्दिर की शोभा को देखकर भक्तों के मन-मयूर नाच उठे । श्री श्री माँ के प्रत्यक्ष आविर्भाव की प्रतीति सबको हुई । सब बोल रहे थे कि "दुर्गापूजा हो रही है ऐसा ही अनुभव हो रहा है ।"मन्दिर के एक ओर भोगघर तथा दूसरी ओर नैवेद्यघर निर्मित है । वास्तव में संगमरमर से निर्मित यह विशाल सत्संगभवन बहुत ही भव्य हुआ है । नूतन भोगघर में भोग की रसोई प्रारम्भ हुई । नैवेद्यघर में नैवेद्य आदि पूजा के आयोजन शीघ्रता से किए गए । कुछ ही क्षण में ब्रह्मचारी निर्वाणानन्द जी पूजा के आसन पर विराजमान हुए । कीर्तन होने लगा । पूजा की समाप्ति पर भक्तों ने पुष्पाञ्जलि दी । गीताचंडी पाठ के बाद भोग तथा आरती के पश्चात् भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया ।

सायं ४ बजे सत्संग प्रारम्भ हुआ । आज इस नवनिर्मित्त सत्संगभवन में सर्वप्रथम सत्संग प्रारम्भ हुआ । सर्वप्रथम ब्रह्मचारिणी गीता ने मातृप्रसंग के साथ श्रीमद्भगवद्गीता का भक्तियोग की व्याख्या कर गीता का उपसंहार किया । बाद में स्वामी निर्मलानन्द जी ने श्री भगवान की मधुर ऊखलबन्धन लीला की बहुत ही सुन्दर व्याख्या की । छवि दी के भजन के बाद श्री श्री माँ की आरती स्तव, रामायण तथा सन्ध्याकालीन कीर्तन सम्पन्न हुआ ।

इधर हॉल के ठीक बीच में नाम यज्ञ के लिए मंच सजाया जा रहा था । कलकत्ता के मातृभक्त श्री प्रतिभाकुमार कुण्डु तथा उनके सहयोगी-गण इस कार्य में लगे हुए थे ।

करीब आठ बजे नाम यज्ञ का अधिवासगान प्रारम्भ हुआ । चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं से सम्बन्धित इस अधिवास कीर्तन को छवि दी के मधुर कण्ठ से श्रवण कर सब भाव-विभोर हो उठे । रात भर महिलाओं ने कीर्तन किया । प्रातःकाल पुरुष भक्तगण कीर्तन करने आए । महिलाएँ उषा-कीर्तन के बाद अपने कार्यों में जुट गई ।

हमलोग इस दिन अर्थात् २२ मार्च को प्रातः उष्णकुण्ड में स्नान कर भगवान् बुद्ध की तपस्थली वेणुवन का दर्शन कर आए ।

नामयज्ञ के दिन महाप्रभु को मालसा भोग दिया जाता है । सब फलों के साथ दही-चिउड़ा मेवा, खोया आदि मिलाकर मिट्टी के बर्तनों में दिया जाता है । हम सब इसकी तैयारी में लग गए विभिन्न पकवानों के साथ अन्नभोग की भी व्यवस्था होने लगी । रसोई प्रारम्भ हुई । प्रातः श्री श्री

माँ की पूजा हुई । मन्दिर में माँ, महाप्रभु तथा राधा गोविन्दजी को जमीन में आसन बिछाकर विराजित किया गया । सुन्दर साड़ियों से सजाया गया । मध्याह्न में कीर्तन के साथ सुन्दर ढ़ंग से मालसाभोग अन्नभोग सजाकर भोग दिया गया । निर्वाणानन्द जी ने भोग दिया, आरती की । साधु व ब्राह्मण भोजन के बाद भक्तों ने प्रसाद पाया ।

दिन भर मधुरहरिनाम संकीर्तन के श्रवण से सब आनन्दित हो उठे सायंकाल नगर-कीर्तन के बाद कीर्तन की समाप्ति के समय ब्रह्मचारी निर्वाणानन्दजी, स्वामी निर्मलानन्द जी, स्वामी अच्युतानन्द जी, राजगीर आश्रम के प्राक्तन वयोवृद्ध ब्रह्मचारी कुट्टि दा आदि सभी उपस्थित थे ।

एक बालक को नित्यानन्द प्रभु के स्वरूप में सजाकर दधि भाण्ड भञ्जन, महन्त विदाय तथा कीर्तन का समापन किया गया । छवि दीदी के मधुर कीर्तन से दिव्य लोक के दिव्य आनन्द का अनुभव किया गया । भक्तों को प्रसाद तथा माँ की पुस्तक वितरित की गई ।

इस प्रकार श्री श्री माँ की असीम अनुकम्पा से राजगीर-उत्सव सफलता पूर्वक संपन्न हुआ । अवश्य ही श्री श्री माँ के राजगीर तथा पटना निवासी भक्तगण अभिनन्दनीय हैं । श्री श्री माँ की कृपा उन पर निरन्तर बरसती रहे यही हम लोग श्री श्री माँ के चरणों में प्रार्थना करते हैं ।

दिनांक २२ मार्च को रात को करीब २०० मातृ भक्तों को राजगीर के प्राचीन मातृभक्त श्री बैद्यनाथ प्रसाद जी ने अपने घर आमन्त्रित किया था । वहीं सबने प्रसाद पाया ।

२३ मार्च को प्रातः काल हम राँची के लिए रवाना हुए । मार्ग में झाड़खंड की नैसर्गिक प्राकृतिक सुषमा को देखते हुए स्वास्थ्यप्रद 'कोडरमा' के सदाबहार वनाञ्चल तथा हरियाली से पूर्ण पहाड़ियों को पार करते हुए सुन्दर रास्ते से हम दोपहर को करीब एक बजे झाड़खंड की राजधानी राँची पहुँचे ।

राँची में श्री श्री माँ के आश्रम में भव्य काली मन्दिर है, जिमसें माँ काली की सुन्दर अष्टधातु की मूर्ति प्रतिष्ठित है । इस मन्दिर के पीछे तीन छोटे-छोटे मंदिरों में क्रमशः श्री गोपाल जी, श्री शंकर भगवान तथा श्री सीता राम, लक्ष्मण तथा हनुमान जी के श्री विग्रह स्थापित हैं । सायंकाल चार बजे मंदिर खुलने पर हमने माँ काली तथा अन्य मंदिरों का दर्शन किया । कीर्तन गाया, एक दिन राँची में निवास कर २५ मार्च को रंगभरी एकादशी के दिन प्रातः सब मंदिरों में अबीर चढ़ा कर पूजा के उपरान्त करीब दो बजे इस आनन्दमय उत्सव की आनन्दमयी स्मृति के साथ हम काशी के लिए रवाना हुए ।

●

आश्रम-संवाद

१. कनखल :–

१७ फरवरी, २००२ श्री श्री सरस्वती पूजा प्रतिवर्ष की भाँति सुसंपन्न हुई एवं विगत १२ मार्च को महाशिवरात्रि व्रत का रात्रि जागरण, उपवास एवं पूजन संपन्न हुआ ।

२. वाराणसी :–

१४ जनवरी को उदयास्त महानाम संकीर्तन, यज्ञमण्डप में श्री श्री गायत्री जी की पूजा हुई । १७ फरवरी को कन्यापीठ के हॉल में सरस्वती पूजा एवं १२ मार्च को चतु:प्रहर शिवरात्रि पूजा विधिवत् हुई ।

२७ मार्च को सायंकाल मंच पर श्री नारायण का अधिवास तथा होलिका दाह उत्सव संपन्न हुआ । अगले दिन मंच पर पहले श्री नारायण का अभिषेक, षोडशोपचार पूजन तदुपरान्त कन्यापीठ की बालिकाओं ने एवं आश्रमस्थ भक्तों ने श्री नारायण जी को अबीर चढ़ाया इसके पश्चात् गोपालमंदिर में श्री श्री माँ के सम्मुख बरामदे में शंख घंटा ध्वनि के साथ सिंहासन से गोपालजी को नीचे लाकर उनको सभी अबीर और गुलाल लगायी, उसके पश्चात् गोपालजी का एवं अन्य छोटे-छोटे कृष्ण गोपाल का पञ्चामृत तथा गञ्चगव्य से अभिषेक तत्पश्चात् श्रृंगार एवं विशेष पूजा आरती हुई । करीब दस बजे तक पूजा समाप्त हो चुकी थी किन्तु भोग पर्यन्त नाम कीर्तन होता रहा ।

आगामी चैत्र नवरात्र पर १९ अप्रैल से २२ अप्रैल तक श्री श्री वासन्तीपूजा होगी ।

माता आनन्दमयी चिकित्सालय :–

माता आनन्दमयी अस्पताल में रोटरी क्लब वाराणसी नार्थ की ओर से लखनऊ के 'मंगलम्' के सहयोग से 'नि:शुल्क विकलाङ्ग एवं बधिर शिविर' का आयोजन हुआ । इस अवसर पर अस्पताल में विकलाङ्गों को Wheel chair, आर्टीफिशियल लिम्ब (जयपुरी हाथ व पैर) तथा कैलिपर जूता एवं बधिरों को श्रवण-यन्त्र वितरित किया गया । 'मंगलम्' की सहायता से विकलांगों के हाथ पैर आदि के नाप के अनुसार जूते आदि बनवाने के कार्य का उद्योग अस्पताल में होने लगा । चिकित्सकों के निर्देशानुसार विकलांगो को कैलिपर जूते, श्रवण-यन्त्र आदि प्रदान किये गए ।

"माता आनन्दमयी गंगा एम्बुलेंस चिकित्सा सेवा" भी कुछ ही दिन पश्चात् प्रारंभ होगी ।

विगत १६ मार्च को 'नि:शुल्क चिकित्सा सेवा' प्रदान करने वाले चिकित्सकों को विशिष्ट उपहारों के द्वारा सम्मानित किया गया । अस्पताल के कर्मचारियों को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया ।

३. वृन्दावन :–

वृन्दावन में १२ मार्च को महाशिवरात्रि पर्व पर रात को श्री श्री सिद्धेश्वर महादेव की रुद्राभिषेक एवं विशेष पूजन हुआ । इसके अतिरिक्त मातृभक्तों ने भी समवेतरूप से शिवपूजन किया ।

फागुन पूर्णिमा में २७ मार्च से २८ मार्च पर्यन्त इस बार भी होली का त्योहार बड़े धूम-धाम से मनाया गया । इस अवसर पर २१ मार्च से २७ मार्च तक प्रतिदिन प्रातःकाल श्री रुद्रदेवानन्द सरस्वती जी का उपनिषद् पर ज्ञानमय प्रवचन होता था । २४ मार्च से २७ मार्च तक प्रसिद्ध रासमंडलियों द्वारा रासलीला आयोजित की गई । २८ मार्च को उदयास्त अखंड श्री हरिनाम संकीर्तन, श्रीमन्महाप्रभु के जन्माविर्भाव के उपलक्ष में उनका अभिषेक एवं विशेष पूजा तथा शिव एवं श्री कृष्ण छलिया की भी पूजा सुसंपन्न हुई । मध्याह्न में साधुसेवा भी यथारीति हुई ।

४. कलकत्ता :–

आगड़पाड़ा में गत २३ नवम्बर से ३0 नवम्बर तक आश्रम के दूसरे मंजिल के हॉल में संयम व्रत अनुष्ठित हुआ ।

२३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक गीता जयन्ती हुई ।

इस वार्षिक नामयज्ञ में गीतश्री छवि वन्द्योपाध्याय उपस्थित थीं । आपने निकुञ्ज भञ्जन का पदावली कीर्तन एवं नामयज्ञ का अधिवास गान किया । रात भर अन्य भक्त महिलाओं ने भी हरे कृष्ण नाम संकीर्तन किया दूसरे दिन नाम संकीर्तन में ब्रह्मचारी तन्मयानन्दजी तथा अन्य भक्तों ने योगदान दिया इसके अलावा नामयज्ञ में स्वामी भास्करानन्दजी, ब्रह्मचारी निर्वाणानन्दजी, स्वामी निर्मलानन्दजी, स्वामी निर्गुणानन्दजी, स्वामी भजनानन्दजी उपस्थित थे । मध्याह्न में प्रायः १५00 भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया ।

१३ जनवरी को नवनिर्मित ध्यानपीठ में एक दिन का मातृ-अनुष्ठान हुआ जिसका उद्बोधन स्वामी भास्करानन्दजी ने किया । काठिया बाबा आश्रम के १0८ श्री वृन्दावन बिहारीजी दासजी मातृ-प्रसंग सुनाते थे । सुबह शाम ध्यान एवं समयोपयोगी संकीर्तन हुआ । मातृ प्रसंग में आश्रम के वरिष्ठ साधु ब्रह्मचारिणियों ने श्री श्री माँ के साथ हुए अपने अनुभवों को सुनाकर भक्तों को आनन्दित किया । इस अनुष्ठान का संचालन श्री प्रतिभा कुमार कुंडु ने किया । मध्याह्न में सबने संयम-व्रत के अनुरूप आनन्दमयी ब्रह्मखिचड़ी प्रसाद लिया ।

१२ मार्च को महाशिवरात्रि तथा २८ मार्च को होली यथारीति सुसंपन्न हुई ।

भीमपुरा :–

श्री श्री माँ के भीमपुरा स्थित आश्रम में एक चिकित्सालय का उद्घाटन किया गया है । दरिद्रनारायण सेवार्थ फंड में से गाँव के बच्चों को प्रतिदिन हनुमान चालीसा पाठ के उपरांत दूध व बिस्कुट वितरण किया जाता है । एक पुस्तकालय का भी उद्‌घाटन हुआ है । वनानीकरण योजना में करीब पाँच एकड़ भूमि में फल, फूल आयुर्वेदिक औषधियाँ और अनेक वृक्ष लगाये गये हैं ।

पुरुषोत्तम मास में प्रति सोमवार को अभिषेकात्मक लघुरुद्र, नवरात्रि में जपात्मक चण्डीपाठ, लक्ष्मीपूजा, शारदा पूजा, अन्नपूर्णापूजा व अन्नकूट का आयोजन किया गया है ।

गुजरात में हुए विध्वंसात्मक भूकम्प से पीड़ित अनेक गांवों में से सुरेन्द्रनगर जिले के दो गावों को लेकर आश्रम की ओर से दो विद्यालयों का निर्माण किया गया, जिनके नाम रखे गए "श्री श्री माता आनन्दमयी प्राथमिक शाला" । स्वामी भास्करानन्दजी के करकमलों से लोकार्पणविधि एवं गुजरात के सामाजिक न्यायमन्त्री श्री वाधेला जी के द्वारा उद्घाटन किया गया । आश्रम की ओर से सभी बच्चों को यूनिफार्म तथा स्वामी भास्करानन्दजी के द्वारा आशीर्वचन, नित्य प्रार्थना-पुस्तक, नोट बुक्स, पेंसिलें आदि का वितरण हुआ ।

स्वामी भास्करानन्दजी के विदेश प्रवास में श्री श्री माँ के भारतीय भक्तों तथा अनेक विदेशी भक्तों ने सत्संग का लाभ किया । पेरिस के निकट एक धर्मशिविर का आयोजन किया गया, तथा स्विटजरलैण्ड में एक बौद्ध लामा ने शिविर का आयोजन किया, जिसका मुख्य उद्देश्य था श्री श्री माँ के विषय में जानना । स्वामी निर्गुणानन्दजी तथा मातृभक्त श्री राम अलेकजाण्डर ने श्री श्री माँ के विषय में सुन्दर प्रवचन किया ।



शोक-संवाद

श्रीमती सावित्री बनर्जी :–

श्री श्री माँ के अति पुरातन भक्त श्रीयुत हरीशचन्द्र बनर्जी की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री बनर्जी ९० वर्ष की उम्र में विगत २३ मार्च २००२ को ब्राह्ममुहुर्त्त की पवित्रवेला में श्री माँ के चरणों में सदा के लिए विलीन हुई हैं । सावित्री देवी अतिशय धार्मिक तथा सदाचार संपन्ना महिला थीं । आपका जीवन एक साधिका की तरह अति पवित्र था, सावित्री दी ने १९४८ ई. में अपने पति तथा पुत्रों सहित वाराणसी आश्रम में सर्वप्रथम श्री श्री माँ का दर्शन किया था । १९५८ ई. में लखनऊ में अपने सम्पूर्ण परिवार सहित श्री श्री माँ से दीक्षा प्राप्त की । श्री श्री माँ के निर्देश से सावित्री दी शुद्धाचारिणी जैसी रहती थीं । श्री श्री माँ ने एक बार उनसे भोग बनवा कर वृन्दावन आश्रम में प्रसाद ग्रहण किया था और कहा था, "तुम शुद्धभाव से रहती हो, इसलिए इस शरीर ने तुम्हारे हाथ से प्रसाद ग्रहण किया है । बहुत दिन बाद किसी गृहिणी के हाथ से प्रसाद ग्रहण किया गया"।

१९६९ ई. में वाराणसी में श्री हरीशबाबू ने नवनिर्मित्त मकान में श्री श्री माँ की उपस्थिति में दूर्गापूजा हुई थी । उस समय सारे परिवार को श्री श्री माँ की विशेष सेवा का अवसर प्राप्त हुआ था, माँ की मधुर लीलाओं का दर्शन कर सब आनन्दित हुए थे । उस मकान के दूसरे मंजिल में श्री श्री माँ के लिए निर्मित कमरे में श्री श्री माँ कई बार अज्ञातवास के लिए गई थीं ।

हम सावित्री दी की दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए पुनः पुनः प्रार्थना करते है ।



STATEMENT ABOUT OWNERSHIP & OTHER PARTICULARS ABOUT NEWSPAPER ENTITLED "MA ANANDAMAYEE AMRIT VARTA" AS REQUIRED TO BE PUBLISHED U/S 190 OF THE PRESS AND REGISTRATION ACT. FORM IV (RULE 8)

1.	Title of Newspaper	:	**Ma Anandamayee Amrit Varta**
2.	Place of publication	:	**Shree Shree Anandamayee Sangha, Bhadaini, Varanasi-1**
3.	Periodicity of publication	:	**Quarterly**
4.	Printer's Name	:	**Panu Brahmachari**
	Whether citizen of India	:	**Yes**
	Address		**Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhadaini, Varanasi-1**
5.	Publisher's Name	:	**Panu Brahmachari**
	Whether citizen of India	:	**Yes**
	Address	:	**Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhadaini, Varanasi-1**
6.	Editor	:	**Panu Brahmachari**
	Whether citizen of India	:	**Yes**
	Address	:	**Shree Shree Ma Anandamayee Ashram Bhadaini, Varanasi-1**
7:	Name & address of the owner, who owns the Newspaper	:	**Shree Shree Anandamayee Sangha (Regtd) H.O., Kankhal, Hardwar-249408**

I, Panu Brahmachari, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

March, 1,2002

(Sd) PANU BRAHMACHARI
Publisher.

"हरि कथा ही कथा, और सब वृथा व्यथा"

—श्री श्री माँ आनन्दमयी

अमेरिका के पेन्सीलवेनिया राज्य में स्थायी रूप से पंजीकृत संस्था **माँ आनन्दमयी सेवा समिति (Mass, INC)** के स्वयं सेवकों की ओर से परमाराध्या श्री श्री माँ के सभी भक्तजनों को सप्रेम **"जय माँ"** ।

इस संस्था का उद्देश्य श्री श्री माँ की जीवन लीला रहस्य की सेवा, धार्मिक कार्य, सत्संग एवं जनसेवा सहित सनातन धर्म तथा श्रीमद् भागवत् धर्म युक्त प्रक्रिया है ।

अमेरिका सरकार द्वारा इस समिति के लिये सम्पूर्ण कर मुक्ति (Tax - exemption) प्राप्त है । जिसका नम्बर है 23-2967597 जो IRS Code 501 (C) (3) के अनुसार कार्यों के लिये है ।

अमेरिका एवं आस-पास के देशों में स्थायी रूप से निवास करने वाले मातृभक्तों से विनती है कि **"माँ आनन्दमयी अमृतवार्ता"** (त्रैमासिक पत्रिका) जो चार भाषाओं (हिन्दी, बगंला, गुजराती एवं अंग्रेजी) में श्री श्री माँ की दिव्य जीवन लीला सम्बन्धी गाथा एवं अमूल्य वाणी के संकलन के रूप में प्रकाशित होती है MASS, INC से प्राप्त कर सकते हैं । पत्रिका का वार्षिक चन्दा 12/- बाहर डॉलर मात्र है ।

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये निंम्नलिखित पते पर कृपया सम्पर्क कीजिये :-

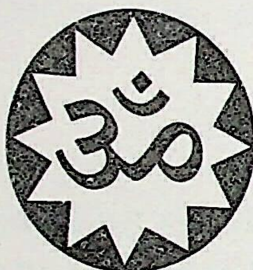
Mahadev R. Patel
President, Ma Anandamayee Seva Samiti, INC
212, Moore Road
Wallingford, PA 19086-6843
Tel : 610-876-6862 Fax : 610-876-1351
email : maha devpatel @ netscape. net.

जय माँ

जयजयमाँ ॐमाँ जयजयमाँ

"हरि कथा ही कथा और सब बृथा व्यथा ।"

—श्री श्री माँ



श्री श्री माँ के श्री चरणों में गुप्ता परिवार
की तरफ से शत शत नमन ।

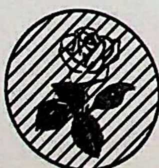
श्रीचन्दभान गुप्ता
श्रीमती शकुन्तला गुप्ता

श्री भारत भूषण गुप्ता
श्रीमती साधना गुप्ता
श्री चेतन गुप्ता
श्री हर्ष गुप्ता

श्री राजेश गुप्ता
श्रीमती अनिता गुप्ता
श्री नितिन गुप्ता
श्री कार्तिक गुप्ता

125 विवेकानन्दपुरी, सरायरोहिला, दिल्ली-110007

Res. 011-3623348, Res. 011-3541814
Off . 011-7281330, Off. 011-5631628



❄ Branch Ashrams ❄

15. NEW DELHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kalkaji, New Delhi-110019 (Tel : 011-6826813)

16. PUNE : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Ganesh Khind Road, Pune-411007, (Tel : 020-5537835)

17. PURI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Swargadwar, Puri-752001, Orissa.

18. RAJGIR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Rajgir, Nalanda-803116, Bihar (Tel : 06112-55362)

19. RANCHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Main Road,
P.O. Ranchi-834001, Bihar (Tel : 0651-312082)

20. TARAPEETH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Chandipur-Tarapeeth, Birbhum-731233, W.B.

21. UTTARKASHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kali Mandir, P.O. Uttarkashi-249193,

22. VARANASI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Bhadaini, Varanasi-221001, U.P.
(Tel : 0542-310054+311794)

23. VINDHYACHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ashtabhuja Hill,
P.O. Vindhyachal, Mirzapur-231307, (Tel : 05442-42343)

24. VRINDAVAN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Vrindavan, Mathura-281121 U.P. (Tel: 0565-442024)

IN BANGLADESH :

1. DHAKA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
14, Siddheshwari Lane, Dhaka-17 (Tel : 405266)

2. KHEORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Kheora, Via-Kasba, Brahmanbaria.

●

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97



... वाराणसी, फोन-३१२८२०

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता



VOL. 6 NO. 3

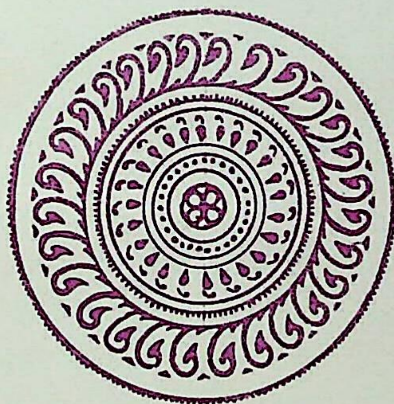
REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97



रत्ना ऑफसेट्स लिमिटेड कमच्छा, वाराणसी, फोन–३९२८२०

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता



VOL.-6 JULY, 2002 NO. 3

SHREE SHREE ANANDAMAYEE SANGHA

❄ Branch Ashrams ❄

1. AGARPARA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P. O. Kamarhaiti Calcutta-700058 (Tel : 5531208)
2. AGARTALA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Palace Compound P.O. Agartala-799001, West Tripura (Tel : 0381-208618)
3. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Patal Devi, P.O. Almora-263602, (Tel : 05962-33120)
4. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Dhaul-China, Almora-263881, (Tel : 05962-62013)
5. BHIMPURA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhimpura, P.O. Chandod, Baroda-391105, (Tel : 02663-33208)
6. BHOPAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Bairagarh, Bhopal-462030, M.P. (Tel : 0755-521227)
7. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kishenpur, P.O. Rajpur, Dehradun-248009 (Phone : 0135-734271) U.P. (Phone: 684271)
8. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalyanvan, 176, Rajpur Road, P.O. Rajpur, Dehradun-248009, (Phone : 0135-734471)
9. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Raipur Ordnance Factory, Dehradun-248010
10. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, 47/A Jakhan, P.O. Rajpur, Dehradun,
11. JAMSHEDPUR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Bhatia Park, Kadma, Jamshedpur-831005, Bihar
12. KANKHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O.Kankhal, Hardwar-249408, (Tel : 0133-426575)
13. KEDARNATH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Himlok, P.O. Kedarnath, Chamoli-246445,
14. NAIMISHARANYA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Puran Mandir, P.O. Naimisharanya, Sitapur-261402, U.P. (Tel : 05865-51369)

माँ आनन्दमयी

अमृतवार्ता

श्रीश्री माँ आनन्दमयी के दिव्यजीवन
तथा
दिव्यवाणी की वाहिका त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष–६ जुलाई, २००२ सं.–३



वार्षिक चंदा (डाकव्यय सहित)

भारत में – ६0 रुपये

विदेशों में – १२ डॉलर/या ४५0 रुपये

एक प्रति – २0/- रुपये

साधारण नियम

यह त्रैमासिक पत्रिका चार पृथक भाषा–हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी में जनवरी अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होती है। वर्ष का प्रारम्भ जनवरी से होता है।

पत्रिका में मुख्यतया श्री श्री माँ पर आधारित लेखों को ही प्रधानता दी जाती है। इनके अतिरिक्त आध्यात्म पर आधारित हृदयस्पर्शी लेख; किसी भी देश तथा किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के महापुरुषों की उपदेशात्मक शिक्षावलियों का भी पत्रिका में स्वागत है।

जो भक्तगण माँ के सम्पर्क में आये हैं वे एकान्त व्यक्तिगत अनुभवों को छोड़कर ऐसे अनुभवों को आकलित कर सकते है जो कि श्री श्री माँ के लौकिक व्यवहार के प्रति आलोकपात करने वाले हों।

सभी लेख फुलस्केप कागज के एक पृष्ठ पर टंकित या स्पष्ट लिखित होने चाहिये। लेखों की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। मनोनीत न होने पर लेखों को वापस भेजना कार्यालय के लिए असुविधाजनक है। सभी लेख सम्पादक के नाम भेजें।

अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम के "Shree Shree Anandamayee Sangha—Publication A/C".नाम पर भेजें।

पत्रिका सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्रादि व्यवहार तथा वार्षिक चंदा भेजने का पता :

कार्यकारी सम्पादक, "माँ आनन्दमयी - अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी -२२१००१

पत्रिका में विज्ञापन देने का नियम :–

सम्पूर्ण पृष्ठ – २०००/- पूरे वर्ष के लिये
आधा पृष्ठ – १०००/- पूरे वर्ष के लिये

अग्रिम शुल्क के साथ विज्ञापन का विषय (Matter) उपर लिखित पते पर भेजें।

स्वामी श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री पानु ब्रह्मचारी द्वारा श्री श्री आनन्दमयी संघ, भदैनी, वाराणसी–२२१००१ (उ. प्र.) से प्रकाशित तथा रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी. २१/४२ कमच्छा, वाराणसी-१० (उ. प्र.) से मुद्रित। सम्पादक–श्री पानु ब्रह्मचारी।

विषय-सूची



"हरि कथा ही कथा, और सब वृथा व्यथा"

–श्री श्री माँ आनन्दमयी

अमेरिका के पेन्सीलवेनिया राज्य में स्थायी रूप से पंजीकृत संस्था **माँ आनन्दमयी सेवा समिति (Mass, INC)** के स्वयं सेवकों की ओर से परमाराध्या श्री श्री माँ के सभी भक्तजनों को सप्रेम **"जय माँ"** ।

इस संस्था का उद्देश्य श्री श्री माँ की जीवन लीला रहस्य की सेवा, धार्मिक कार्य, सत्संग एवं जनसेवा सहित सनातन धर्म तथा श्रीमद् भागवत् धर्म युक्त प्रक्रिया है ।

अमेरिका सरकार द्वारा इस समिति के लिये सम्पूर्ण कर मुक्ति (Tax - exemption) प्राप्त है । जिसका नम्बर है 23-2967597 जो IRS Code 501 (C) (3) के अनुसार कार्यों के लिये है ।

अमेरिका एवं आस-पास के देशों में स्थायी रूप से निवास करने वाले मातृभक्तों से विनती है कि **"माँ आनन्दमयी अमृतवार्ता"** (त्रैमासिक पत्रिका) जो चार भाषाओं (हिन्दी, बगंला, गुजराती एवं अंग्रेजी) में श्री श्री माँ की दिव्य जीवन लीला सम्बन्धी गाथा एवं अमूल्य वाणी के संकलन के रूप में प्रकाशित होती है MASS, INC से प्राप्त कर सकते हैं । पत्रिका का वार्षिक चन्दा 12/- बाहर डॉलर मात्र है ।

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये निंम्नलिखित पते पर कृपया सम्पर्क कीजिये :–

Mahadev R. Patel
President, Ma Anandamayee Seva Samiti, INC
212, Moore Road
Wallingford, PA 19086-6843
Tel : 610-876-6862 Fax : 610-876-1351
email : maha devpatel @ netscape. net.

जय माँ



मातृ-वाणी

मन बच्चा है । मन रूपी बच्चे को शुद्ध भोजन माने सात्त्विक भाव अपना जो खद वही है । अपना जीवन शुद्ध करने में मदद देना ।

*　　　　*　　　　*

मन - जो भगवान् के चरण में लगायेगा । मन कहाँ, अ-मन नाशवान् - जो नष्ट होने वाला, जो इष्ट को पकड़े - जो नष्ट होता है अपने आप नष्ट हो जायेगा । मन धर्म और मन राज्य जव तक रहेगा बुद्धि के अनुसार मन को चलाना पड़ेगा । अपने में अपना जो है । वह प्रकट हो जाय । वही मनुष्य का कर्तव्य ।

*　　　　*　　　　*

जो पकड़ने से अपने आंप सब छूट जायेगा उसको पकड़ने की कोशिश करो । पकड़ने की शक्ति उसमें लगाओ । छोड़ने वाला छोड़ेगा । गिरने वाला गिर जायेगा । जो सच है प्रकट हो जायेगा । सर्वनाम भगवान का सर्वरूप भगवान् का । आकार रूप निराकार रूप उस लक्ष्य से चलने से उसी को पायेगा । सत्य स्वरूप भगवान् जो हैं उन को पकड़ो ।

*　　　　*　　　　*

गुरू आदेश पालन करना चाहिये । यह जो महात्माओं का सत्संग है । यह है वृक्ष, वृक्ष किसी को बुलाता भी नहीं भगाता भी नहीं । उसका स्वभाव है छाया देना अपने को दे देना । जिससे वृक्ष उत्पन्न होता है । वह फल वृक्ष दे देता है । जितनी देर बैठोगे अपना अपना समाधान हो जायगा । पूर्ण समाधान प्रकट हो जायगा ।

*　　　　*　　　　*

गुरु को ढूंढने की बात मन में आती है । गुरू को पाना । तुम को पास करना पड़ेगा जो पड़ेगा खुद ढूँढ लेता है । वह जो गुरु है असली गुरु तुम्हारे अन्दर में बैठा है । वह अन्तर गुरू प्रकट होने के लिये बाहर के गुरू को अन्दर से चाहते हैं ।

*　　　　*　　　　*

वासना को भोगने के लिये शरीर धारण करना पड़ता है । जहाँ वास करता है । जहाँ स्वयं नहीं वहाँ वास करता है । भगवान् से दूर-बुद्धि (दुर्बुद्धि) दूर-गति (दुर्गतिं) । उससे मुक्त होने के लिये शरीर धारण कर रहा वह । यह समझने के अतीत (पार) जाने के लिये समझना । कहाँ से प्रकाश होता है ? उसी स्पर्श को पाने के लिये क्रिया । जो गुरु जिससे - जो विश्व-व्यापक.

विश्वातीत, जिस स्पर्श से प्रकाश अप्रकाश का सवाल नहीं वह प्रकाश हो सकता है, इसी शरीर में-जहाँ बन्धन मुक्त - वहाँ मुक्ति का सवाल ही नहीं ।

* * *

भगवान् ने अलग अलग रूप बनाया, बने कहो, बनाया कहो - इसी रूप से यह खेल चल रहा –भगवान् खिलाड़ी है । अपने को लेकर - इसी रूप में प्रकाश हो सकता इसी में नहीं प्रकाश हो सकता । कोई क्रोधी है कोई लोभी है कोई मोह युक्त है । मोहयुक्त जो कहा - तो मोह मुक्त उसी में है । बाहर अन्दर का सवाल नहीं - वही है - वही है - वही है हर एक रूप में ।

* * *

अभ्यास के साथ नित्य योग - रास्ता खुल सकता है । अभ्यास योग के लिये रास्ता खुलेगा । एक रास्ता नहीं अनन्त रास्ता । मन तो सबेरे से लेकर रात तक जीव जगत् में बन्दी हो ही रहा है । कहते हैं जीव स्वभाव हर समय क्रियाशील । क्रिया शील गति है । जीव और जगत् । २४ घन्टा परिवर्तन हो रहा - इतना बच्चा जो रहा - बड़ा कैसे होता है - परिवर्तन - युवक बूढ़ा होता है । हर समय क्रिया परिवर्तन । इसलिये अनन्त रास्ता रख दिया । कौन गति से - एक एक में अनन्त गति, घिसते घिसते किस स्थिति में आकर आग जलेगी कह नहीं सकते ।

* * *

मन-त्राण होने के लिये मन्त्र रूपी भगवान् मिल गया । हर समय उनका संग करो । गुरू ने अक्षर रूपी भगवान् दे दिया । उनका संग करो ।



श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग

—स्व. अमूल्य कुमार दत्त गुप्त

साधना के खेल के समय श्री श्री माँ के श्री शरीर में विभिन्न अवस्था

२४ भाद्र मंगलवार, ९.९.५२

आज शाम को जब आश्रम के हॉल में गया उस समय कमलाकान्त ब्रह्मचारी नवद्वीप की सेवादासी की कथा सुना रहे थे। वह किस प्रकार बिना आहर के दीर्घ समय तक जीवित थी वह प्रसंग चल रहा था। इसी सन्दर्भ में गोस्वामी महाशय की शिष्या मनोरमा देवी की चर्चा भी चली। माताजी ने कहा, "मैंने सुना है कि शचीबाबू की बहन अपने पति की मृत्यु के बाद दीर्घ समय तक बिना कुछ खाये जीवित थीं।" सर्प भी बिना कुछ खाये छः महीने तक जीवित रहता है इस बात को भी किसी ने रखा।

डॉ. पन्नालाल ने माताजी से पूछा, "साँप कैसे बिना कुछ खाये छः महीने तक जीवित रहता है ?

माताजी– सुना है सर्प इस समय खेचरी मुद्रा में रहते हैं। यह मेरी सुनी हुई बात है।

इस प्रसंग के चलते माताजी के श्री शरीर में जो साधना के खेल की लीला हुई थी उसी संदर्भ में माताजी कहने लगीं। माताजी ने कहा, "यह जो खेचरी मुद्रा की बात कही गयी, इस शरीर में जब साधन का खेल चल रहा था तब देखा था कि यह शरीर बैठा हुआ है बाद में अपने आप आसन होता जा रहा है। जान बूझ के कुछ किया जा रहा है ऐसी बात नहीं है। इस प्रकार शरीर के आसन आदि हो गये ऐसा लग रहा था मानो स्क्रू (पेंचकस) से शरीर के विभिन्न अंगों को कस दिया गया हो तथा जिह्वा तालू पर जाकर जाकर टिक गयी। जिह्वा को उस तरह तालू से टिकती जा रही है और यह शरीर आश्चर्यान्वित होकर यह सब देख रहा है।

स्वामी शंकरानन्द– तब क्या आप साक्षी भाव से यह सब दर्शन करती थीं।

माताजी–साक्षी भाव कहने पर जो समझा जाता है ठीक वैसा नहीं, पर सज्ञान अवस्था में यह सब होने के कारण साक्षी भाव भी कह सकते हो। उस समय साधक का खेल चल रहा था न, इसीलिये शरीर पर जो भी होता जा रहा था उसकी नवीनता कों देखते हुए न जाने कैसा एक आश्चर्य का भाव होता था। इसके बाद देखती थी जिह्वा मानो किस प्रकार धीरे-धीरे उलटती जा रही है। ऐसा होने पर भी किसी प्रकार की व्याकुलता का भाव नहीं था। ऐसा भाव रहता था - ज़ो हो रहा है, हो रहा है, इसके बाद जो होने का है होगा।

स्वामी शंकरानन्द– इस समय प्राण अपान वायु की क्रिया किस प्रकार होती थी ?

माताजी– शरीर की गति जब उक्त प्रकार की होती थी तो उसके साथ ही साथ साँस की गति भी बदलती जाती थी। उस तरह जिह्वा के उलट जाने पर जो स्थिति रहती ती उसमें आहार निद्रा का कोई प्रश्न ही नहीं रहता था। आहार निद्रा के न होने के कारण किसी प्रकार ग्लानि का अनुभव भी नहीं था। सारी रात उसी तरह बैठी रहती थी। भोलानाथ जी रात्रि के प्रथम भाग में भोजन आदि करके सो जाते थे। इस शरीर का बँधा हुआ आसन भी खुल गया और जिह्वा भी स्वाभाविक हो गयी। इधर रात्रि भी प्रभात हो गयी। प्रातःकाल गृहस्थी के सभी काम स्वाभाविक रूप से होते थे। इस प्रकार रात पर रात व्यतीत हो जाते थे। कितने दिनों तक इस प्रकार की अवस्था चलेगी वह कभी कभी देववाणी से भी पता चल जाता था। (नारायण-स्वामी को) खेचरीमुद्रा के समय बूँद-बूँद (अमृत) क्षरण की बात का शास्त्र में उल्लेख है तुमने कहा न ! पर ऐसा हो सकता है। कारण इस शरीर के समय भी देखा है कि, शरीर की जिह्वा जब स्वाभाविक अवस्था में आती थी तब मुँह में जो स्वाद लगता था वह कुछ-कुछ शर्बत जैसा था। समझाने के लिये यद्यपि शर्बत की तरह भी नहीं था।

मुँह के इस मधुर स्वाद का, स्वाभाविक अवस्था में लौट आने से ही अनुभव होता था। पहले जिस स्थिति की बात कही गयी, जब तक उस स्थिति में रहा जाता था तब तक यह समझ में नहीं आता था। शरीर की इस अवस्था में मुँह में कुछ खाने के लिये देने पर वह ग्रहण भी नहीं होता था और 'ना' ही निकाल कर फेंका जा सकता था। यह दीदी ने (गुरुप्रिया) देखा है। जैसे दिन के १० बजे कुछ खाने के लिये मुँह में डाला, शाम के चार बजे तक देखा कि जो वस्तु मुँह में रखी गयी थी वह उसी प्रकार ही हैं। यह सब देखकर भोलानाथ जी बहुत डर जाते थे। सोचते थे नहीं खाते-खाते यह शरीर समाप्त न हो जाय। मुँह में जब इस प्रकार की मिठास का आस्वादन होता था तब देखा जाता था सैंकड़ों चींटियाँ पंक्तिबद्ध होकर शरीर पर चढ़ती चली आ रही हैं। पर इस शीरर को वे कभी काटतीं नहीं थी। यह शरीर ही मानो उनका घर है यह सोच कर वे निश्चिन्त रूप से शरीर पर घूमती फिरती थीं। यह सब देखकर भी भोलानाथ जी भयभीत होते थे क्योंकि यह सभी अस्वाभाविक क्रिया हैं।

शरीर की गति अव्याहत हो सकती है यह साधना के खेल के समय देखी गयी है। यह शाहबाग में रहते थे तब भोलानाथ जी इस शरीर को लेकर बहुत दुश्चिन्ता करते थे वह यह सोचते थे यह शरीर कब कहाँ चला जायगा उसका कोई ठिकाना नहीं है। शाहबाग में पानी की एक बड़ी टंकी थी। वह करीब ६-७ हाथ गहरी थी। एक दिन यह शरीर शाहबाग में टहलते-टहलते अचानक पानी की टंकी में गिर पड़ा। भोलानाथ जी ने दूर से देखा और चीखते चिल्लाते दौड़ कर आये। उन्होंने सोचा था इस टंकी में गिरकर न जाने शरीर के हाथ पैर टूट कर कैसी हालत हो गयी होगी।

डॉ. पन्नालाल– आप इतने नीचे गिर गयीं थीं आपको कोई चोट नहीं लगी ।

माताजी– (हँसकर) रूई जैसे उड़कर धरती पर गिरती है यह शरीर भी ठीक उसी प्रकार गिग था अतः चोट लगने का कोई प्रश्न हो नहीं सकता । मुझे निकालने का कोई उपाय ठीक न कर-पाने के कारण आखिर भोलानाथ जी ने अपना एक हाथ टंकी में मेरी ओर वढ़ा दिया, और लोगों को पुकारने लगे । इधर यह शरीर भी उनके हाथ को पकड़ बिना औंर किसी के सहारे झट् से ऊपर आ गया ।

डा. पन्नालाल– आप कैसे निकलीं ।

माताजी– क्यों ? टंकी की दीवाल के सहारे ऊपर आ गयी । दीवाल इत्यादि किसी भी खड़ी चीज पर मनुष्य चींटी की तरह चलकर ऊपर उठ सकता है । इसीलिये तो साधन अवस्था में शरीर की अव्याहात गति की बात कही गयी है । साधना के खेल के समय कितने प्रकार का सब होता था– एक एक समय बैठे बैठे ही पैर बैठने के समान हो जाते थे । बाद में (दोनों हाथों की कनिष्ठा उँगली दिखाकर) इन दोनों उँगलियों का सहारा लेकर शरीर शून्य में उठकर झूला लेने लगता था । बाद में उँगलियों का सहारा चला जाता था । शरीर शून्य में रहकर ही झूला लेता रहता था । यह देखकर भोलनाथ जी डर से चीख पड़ं थं कहीं शून्य में यह शरीर विलीन न हो जाय । तब इस शरीर को लक्ष्य करके न जाने कितनी बातें करते थे । पति जैसे स्त्री पर जोर दिखा कर कहता है यह उस प्रकार नहीं था । इस शरीर के प्रति उस समय उनका मनुष्य भाव नहीं रहता था एवं उसी भाव में वे विनती निवेदन करते थे ।

किस प्रकार भोलानाथ जी यह सब बाते कहते थे माताजी उसका अनुकरण करती हुईं दिखाने लगीं । हम भी हँसने लगे । इसी समय नारायण स्वामी जी ने कहा, "एक समय तो आप पलंग सहित शून्य में ऊपर उठ गयी थीं ।" यह सुनकर माताजी हँसने लगीं । यह बात हमारे लिये बिलकुल नयी थी अतः हमलोग भी इस घटना के बारे में माताजी से पूछने लगे । माताजी ने कहा, "अभी वह आ नहीं रहा है । यदि कभी आये तो कहा जायेगा ।" सन्ध्या के छः बज चुके है देखकर माताजी ऊपर चली आयीं ।

रात को माताजी कुछ देर के लिये आंगन में बैठी थीं । तब नाना प्रसंगों में माताजी ने कहा था, "जो एकबार कहा जाता है उसका ठीक (अनुकरण) नकल नहीं किया जाता । कारण प्रत्येक मुहूर्त में लोगों का परिवर्तन होता जा रहा है," पर यदि ठीक-ठीक स्थिति लाभ किया जाय तो ठीक-ठीक नकल भी उतारी जा सकती है ।

–क्रमशः

●

श्री श्री माँ के द्वारा दीन का अन्न ग्रहण

—स्वामी नारायणानन्द तीर्थ

परम करुणामयी श्री श्री माँ दरिद्र के सामान्य अन्न को भी आग्रह करके ग्रहण करती हैं । इस प्रसंग में एक क्षुद्र घटना का यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ । किसी-किसी को यह कहते सुना जाता है कि "आनन्दमयी माँ बड़े आदमियों की माँ हैं, वे साधारण गरीब लोगों के प्रति दृष्टिपात तक नहीं करती है । बड़े-बड़े आदमी एवं उच्च पदस्थ राजकर्मचारियों के आने पर वे कितना आदर करती हैं"। इस प्रकार की व्यंगोक्ति के पीछे रहता है प्रच्छन्न ईष्या तथा अतृप्त वासना का तीव्रदाह । जगन्माता की सन्तान सभी हैं । कोई नहीं छूटता । धनी दरिद्र, विद्वान, मूर्ख, त्यागी, भोगी, बड़ा, छोटा, साधु, असाधु, राजा, प्रजा, संन्यासी गृही, ज्ञानी, अज्ञानी सभी को लेकर श्री श्री माँ की विराट् लीला चल रही है । उदार दृष्टि लेकर विश्वमाता की लीला का अवलोकन न करने का उसका यथार्थ रसास्वादन नहीं किया जाता । जो इस रस-माधुर्य से वंचित हैं उनके पास से ही इस प्रकार के विद्रूप वाक्य एवं ऊष्मा आती है । मैं कौन सा धनी, विद्वान त्यागी या उच्च पदस्थ कर्मचारी हूँ । इन सब गुणों के न रहने पर भी मुझे कृपा दान करके उन्होंने तनिक भी कृपणता नहीं की एवं कुछ कम भी नहीं दिया । माँ हैं शुद्ध स्फटिक के समान स्वच्छ एवं अतिशय निर्मल । स्फटिक का अपना कोई रंग नहीं होता । जो भी रंग उसके सामने रखा जाता है स्फटिक उसी रंग का हो जाता है । उसी प्रकार माँ का कोई निजी संस्कार या भाव नहीं है । जिस भाव या संस्कार से जो उनके पास जाता हैं उसी भाव या संस्कार से हम उन्हें प्राप्त करते हैं । रघुनन्दन भगवान श्री रामचन्द्र गुरू विश्वामित्र के साथ मिथिला में धनुर्यज्ञ देखने गये हैं । जनकनन्दिनी श्री जानकी को प्राप्त करने के लिए अनेक राजा, गर्न्धव, राक्षस (मनुष्य शरीर धारण करके) वहाँ उपस्थित थे । उन्होंनें राघवेन्द्र को जैसा देखा था इसका वर्णन करते हुए तुलसीदास जी ने श्री रामचरित मानस में स्पष्ट भाषा में कहा है :-

"जिन्ह के रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैसी"

अपने-अपने भाव के अनुसार सभी ने श्री राम को देखा किसी ने वीर रूप में, किसी ने काल रूप में, किसी ने विराट् रूप में, तो किसी ने अपनी सन्तान के रूप में, किसी ने अपने इष्ट देवता के रूप में, किसी ने परम तत्व के रूप में देखा था । सीता ने प्रभु को किस रूप में देखा था उसका भाषा में वर्णन नहीं किया जा सकता है ।

घटना जहाँ तक याद आती है 1949 के भादों के महीने में हुई थी । उस समय पूरे जोर शोर से अखण्ड सावित्री महायज्ञ की पूर्णाहुति की तैयारी चल रही थी । जिस समय की यह कहानी है उस समय कन्ट्रोल से सामान मिलता था । मैंने तब श्री श्री माँ के काशी आश्रम में स्थायी रूप से रहना

शुरु किया था । आश्रम-व्यवस्था के साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था । प्रातःकाल मैं सावित्री यज्ञ में आहुति देता तथा शाम को यज्ञशाला में बैठकर गायत्री जप करता था । मैं स्वपाक-भोजी था । दूसरों का बनाया अन्न मैं ग्रहण नहीं करता था आश्रम में जब मैं आया, उस समय मेरे पूर्व पुरुषों की अति प्राचीन शालिग्राम शिला मेरे साथ थी । उनके आश्रम आने का इतिहास अत्यन्त सुन्दर है । वह यथास्थान प्रकाशित हो चुका है । श्री नारायण ने मुझको अधम एवं अपनी सेवा के अयोग्य जानकर भी उनकी पूजा और सेवा का थोड़ा अधिकार दिया था । उस घटना का यहाँ उल्लेख करना अप्रासंगिक होने पर भी पाठक पाठिकाओं के लिए रूचिकर हो सकता है, यह सोचकर ही यहां लिखने का साहस कर रहा हूँ ।

हमारे पारिवारिक विपर्यय के कारण कुछ दिनों के लिए श्री नारायण शिला को मेरे पास रखने में कुछ विघ्न-बाधा की सृष्टि हुई थी । पहला कारण यह था कि मैं अपने कर्मस्थल पर प्रातः छः बजे चला जाता था एवं वहाँ से लौटते-लौटते अपरान्ह के तीन बज जाते थे । मेरी वृद्धा बुआ जी थीं वे भी दृष्टिशक्ति-रहित हो गई थीं । इसीलिए उनके लिए एक ब्राह्मण कन्या विधवा एवं एक परिचारिका की नियुक्ती करनी पड़ी । बुआ जी ने अस्सी वर्ष की उम्र तक कभी किसी वेतनभोगी पाचिका या पाचक के हाथ की रसोई नहीं खाई थी और न कभी नारायण को ही भोग लगाया था । दूसरा कोई उपाय न देखकर बुआजी पाचिका के हाथ का खाने को राजी हो गयी थीं । नारायण की पूजा शीतकाल प्रातः छः बजे के अन्दर नहीं हो सकती तथा अपरान्ह तीन बजे तक उनको बिना खिलाये रखना किसी प्रकार उचित नहीं हैं । यह जानकर आखिर मेरे पूर्वाश्रम के भतीज़े के पास रखना पड़ा था । वहाँ नारायण पूजा करते थे वेतन भोगी ब्राह्मण । तब भी पूर्वान्ह को यथासमय पूजा नहीं हो पाती थी तथा भोग लगाने का निर्दिष्ट समय नहीं था । पुजारी की सुविधा के अनुसार ठाकुर की पूजा में और त्रुटि हो रही है तब मेरा मन खराब हो गया । एक दिन मैंन स्वप्न में देखा कि नारायण शिला से एक शिशु प्रकट हुआ । रंग काला, बड़ी-बड़ी आखें, घुँघराले बाल, मुँह उदास दोनों हाथों से मेरा गाल पकड़कर कह रहे हैं "मुझे अपने पास ले चल । मेंरी यहाँ ठीक से सेवा नहीं होती है । तू जब जो देगा उसी से मैं प्रसन्न रहूँगा" । इस स्वप्न को देखने के बाद कौन ऐसा निष्ठुर व्यक्ति होगा जो ऐसे ठाकुर को अपने पास नहीं लायेगा । दूसरे दिन ही मैं नारायण को अपने पास ले आया, जैसे-तैसे ठाकुर-सेवा चलने लगी । इसी बीच बुआ जी का स्वर्गवास हो गया । मेरा पहले से ही संकल्प था कि बुआ जी के देहावसान के बाद मैं और नौकरी नहीं करूँगा । मेरी छुट्टियाँ बाकी थीं । आठ महीने बाद मैंने इनवेलिड पेंशन ग्रहण किया । मन में सोचा था जो कुछ सामान्य पेंशन मिलेगा उसी के द्वारा नारायण को लेकर काशीवास करूँगा । किसी न किसी तरह दिन व्यतीत हो ही जायेंगे । उसी प्रिय नारायण शिला को साथ लेकर मैं स्थायीभाव से आश्रमवासी हुआ हूँ ।

एक दिन शाम को कन्ट्रोल की दुकान में चावल खरीदने गया तो देखा कि लाल-लाल मोटा चावल सस्ते दाम में बिक रहा था । गरीब आदमी वह चावल खरीद रहे थे । मेरे पास भी तो धन का अभाव था । माँ लक्ष्मी मेरे ऊपर कभी भी प्रसन्न नहीं थीं । उन्होंने गलती से भी कभी मेरी

ओर सुदृष्टि नहीं डाली । इसीलिए कन्ट्रोल की दुकान से दरिद्रों के खाने लायक लाल-लाल मोटा चावल एक रूपये में 14 छटांक खरीद कर लाया । इस चावल को पकाने के बाद ऐसा लगता था कि मानो रास्ते में डालने वाली लाल रंग की कंकरीट हो । यह दीन इस प्रकार का अन्न और भिन्डी की सब्जी बनाकर दोपहर को श्री नारायण को भोग लगा रहा था । सुना है कि नारायण के भोग में खीर, छाना, दही मक्खन आदि दिया जाता है । पर मेरे पास आने के बाद से नारायण ने इन सब वस्तुओं का दर्शन तक नहीं किया । उनका भोग हुआ है साग और भात से । परिस्थितिमें पड़कर मैंने थोड़ा बहुत रसोई बनानी सीखी थी । मुझे कभी रसोई बनानी पड़ेगी शायद इसीलिए माँ ने पचास वर्ष पूर्व प्रथम परिचय में मुझसे प्रश्न किया था । मैं रसोई बनाना जानता हूँ कि नहीं ? तब मैं माँ के इस प्रश्न का अर्थ नहीं समझ सका था । दीर्घ काल के बाद मुझे जीवन में कभी स्वंयपाकी होना पड़ेगा, वह माँ ने मुझे देखकर ही समझ लिया था । माँ हमारे भविष्य को जानती हैं वह इन सब छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से पता चलता है ।

जब मैं कमरे का दरवाजा बन्द करके भोग निवेदन कर रहा था । उस समय नारायण और मेरे सिवा दूसरा कोई नहीं था । भोग निवेदन के बाद जब मैं श्री शुकदेव विरचित द्वादशाक्षर स्तोत्र पाठ कर रहा था । उस समय श्री श्री माँ कब मेरे पीछे आकर खड़ी हुई थीं, यह मैं जान भी नहीं सका था । स्तवपाठ समाप्त करके प्रणाम कर जब मैं उठा, तब मैंने देखा कि मेरी माँ खड़े खड़े मेरा भोग निवेदन देख रही हैं एवं स्तवपाठ सुन रही हैं । स्तव अत्यन्त सुन्दर तथा चित्ताकर्षक है इसीलिए वह नीचे दिया जा रहा है–

"द्वादशाक्षर स्तोत्र"

(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)

ओम इति ज्ञानमात्रेण रागा जीर्यन्ति निर्जिताः ।
कालनिद्रां प्रपन्नोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन ॥ १ ॥
न गतिर्विद्येते नाथ त्वमेव शरणं मम ।
पापपंके निमग्नोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन ॥ २ ॥
मोहिता मोहजालेन पुत्रदारगृहादिषु ।
तृष्णया पीड्यमानोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन ॥ ३ ॥
भक्तिहीनं च दीनं च दुःखशोकातुरं प्रभो ।
अनाश्रयमनाथंच त्राहि मां मधुसूदन ॥ ४ ॥
गतागतेन श्रान्तोऽस्मि दीर्घ संसार वर्त्मसु ।
पुनर्नागन्तुमिच्छामि त्राहि मां मधुसूदनः ॥ ५ ॥
वसामि गर्भवासेषु विविधेषु पुनः पुनः ।
गर्भवास-महादुःखात् त्राहि मां मधुसूदन ॥ ६ ॥
तेन देव प्रपन्नोऽस्मि त्राणार्थं त्वत्परायणः ।

दुःखार्णव-निमग्नं त्वं त्राहि मां मधुसूदनः ॥ ७ ॥
वाचायच्च प्रतिज्ञातं कर्मणा नोपपादितम् ।
तत्पापाब्धि निमग्नोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदनः ॥ ८ ॥
सुकृतं न कृतं किंचिद् दुष्कृतं च कृतं मया ।
संसारार्णव मग्नोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन ॥ ९ ॥
देहान्तर सहस्रेषु प्रापितं भ्रमता मया ।
तिर्यक्तं मानुषत्वं च त्राहि मां मधुसूदन ॥ १० ॥
वाचयामि यथोन्मत्तः प्रलपामि तवाग्रतः ।
जरामरणभीतोऽस्मि त्राहि मां मधुसूदन ॥ ११ ॥
यत्र तत्र जातोऽस्मि स्त्रीषु वा पुरुषेषु वा ।
देहि तत्राचलां भक्तिं त्राहि मां मधुसूदन ॥ १२ ॥
गत्वा गत्वा निवर्तन्ते चन्द्रसूर्यादयो ग्रहः ।
अद्यापि न निवर्तन्ते द्वादशाक्षर चित्तकाः ॥ १३ ॥
द्वादशाक्षरं महास्तोत्रं सर्वकामफलप्रदम् ।
गर्भवास निवासाय शुकेन परिभाषितम् ॥ १४ ॥
द्वादशाक्षरं निराहारो यः पठेदधरिवासरे ।
स गच्छेद् वैष्णवं धाम यत्र योगेश्वरो हरिः ॥ १५ ॥

॥ इति श्री शुकविरचितं द्वादशाक्षरस्तोत्रं समाप्तम् ॥

यह स्तव मैं प्रातः पूजा के बाद दोपहर को भोग के बाद एवं सन्ध्या आरती के बाद नित्य तीन बार पाठ करता था । यह मेरा अत्यन्त प्रिय स्तव था । मैंने माँ को पीछे खड़ा देख आश्चर्यान्वित होकर जिज्ञासा की "माँ" आप कब यहाँ आयी हैं ? आप आयी हैं यह मैं जान ही न पाया । "माँ" ने कहा काफी देर हुए आयी हूँ । तुम्हारा भोग निवेदन देख रही थी । स्तोत्र पाठ भी सुना ।

श्री श्री माँ कमरे में ही रहीं । मैं दरवाजा बन्द करके बाहर आकर खड़ा हुआ । विधि है– देवता के भोग के बाद कुछ समय के लिए उनके भोजन के लिए देवता के कमरे को बन्द करके उनसे दया करके भोग ग्रहण करने की प्रार्थना करनी पड़ती है । थोड़ी देर बाद दरवाजा खोलकर नारायण को उनके निर्दिष्ट स्थान पर रख आया । उनको सिंहासन पर रखकर माँ को प्रणाम करते ही माँ ने कहा "यह शरीर आज तुम्हारे यहाँ नारायण का प्रसाद ग्रहण करेगा ।" जिन माता जी को कितनी आदर अभ्यर्थना के द्वारा भोग ग्रहण के निमित्त धनवान एवं बड़े-ब्रड़े लोग क्षण भर प्रसाद के लिए भी अपने यहाँ नहीं ले जा सकते हैं, वही माँ ने आज स्वयं नारायण के प्रसाद की याचना की, इससे आश्चर्य और क्या हो सकता है ? "किमाश्चर्यमतः परम्" महालक्ष्मीस्वरूपिणी श्रीमती रुक्मिणी देवी निर्मित नानाविधि पकवानों से भगवान को कहीं अधिक प्रिय लगते हैं, विदुर

पत्नी के केले के छिलके । "माँ" ने रूप ही बदला है, स्वभाव नहीं । अतः कभी कभार स्वरूप-प्रकाश हो जाता है ।

माँ के श्रीमुख से यह बात सुनकर मेरे सिर पर मानो आसमान ही टूट पड़ा । माँ को मैं किस चीज से खिलाऊँगा । यह तो लाल कंकड़ की तरह मोटे चावल का भात और भिण्डी का साग । इससे क्या श्री श्री माँ को खिलाया जा सकता है । यह प्रसाद मैं विश्वमाता के सामन किस प्रकार ले जाऊँगा । नारायण को तो सब प्रकार का भोग दिया जा सकता, क्योंकि वे तो मेरे जैसे पापी से कुछ मुँह खोलकर नहीं कहेंगे । मैं जानता हूँ और भलीभाँति जानता हूँ कि श्री श्री माँ भी कुछ नहीं कहेंगी । उनको भी पत्रं पुष्पं तोयं जो भी दिया जाय वही वे दया करके ग्रहण करेंगी । परन्तु मैं उनको यह किस प्रकार अर्पण करूँगा–यह प्रसाद मैं माँ के श्रीमुख में किस प्रकार रखूँगा और माँ के सामने एक पीतल की थाली में अन्न नाम का वह पदार्थ लाने में भी मुझे संकोच हो रहा था । श्री श्री माँ के निमित्त श्री गुरु प्रिया देवी देहरादून से उत्कृष्ट बासमती चावल का सुगंधित अन्न एवं नाना प्रकार के सुस्वाद व्यंजन आदि भोजन सामग्री अपने हाथ से बनाकर माँ को भोग देंगी, इसलिए प्रतीक्षा कर रही थीं ।



श्री श्री माँ की कृपा या संयोग

—श्री मोहन लाल आर्य

हर एक के जीवन में छोटी-बड़ी घटनाएँ घटती रहती हैं । जो तार्किक हैं वे उनकी व्याख्या तर्कों द्वारा करते हैं । जो भक्त हैं, प्रभु के चरणों में पड़े हैं वे उन घटनाओं को प्रभु की कृपा मानते हैं । अपनी-अपनी जगह दोनों ठीक हैं । अपने साथ घटने वाली घटनाओं को मैं 'माँ की कृपा ही मानता हूँ – उन्हें संयोग नहीं कहता । इसी आधार पर एक स्व-अनुभूत घटना का वर्णन कर रहा हूं ।

मैं मीरजापुर का रहने वाला हूँ और 30-32 वर्ष पूर्व जबसे 'माँ' का दर्शन किया है तभी से विन्ध्याचल आश्रम से जुड़ा हूँ । इसीलिये प्रायः आना-जाना लगा रहता है । एक दिन तपन जी महाराज ने पूछा—"अब कब आना होगा ?" मैंने कहा—"महाराज ! हार्निया का आपरेशन कराना है । अतः अब एकाध महीने बाद ही आ पाऊँगा ।" उन्होंने पूछा – "किससे आपरेशन करायेंगे ?" मैंने एक स्थानीय सर्जन का नाम बता दिया । वे बोले—"अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सर्जन डॉ. एन. एन. खन्ना 'माता आनन्दमयी अस्पताल' वाराणसी में बैठते हैं । उनसे क्यों नहीं कराते ?" औरों के लिये यह वार्तालाप मात्र संयोग हो सकता है लेकिन मेरे लिये यह माँ की कृपा सिद्ध हुयी ।

मैने पूज्य पानू दा जी महाराज से बात की । वे बोले—"कल डॉ. खन्ना का ओ. पी. डी. का टर्न है । आप 11 बजे तक आ जायँ । मैं समय से पहुँच गया । पानू दा ने डॉ. साहब के पास एक स्लिप के साथ भेज दिया कि मैं माँ का पुराना भक्त हूँ और मीरजापुर से आया हूँ । डॉ. साहब ने देखा और आपरेशन के लिये समय दे दिया । डॉ. खन्ना साहब की जितनी भी तारीफ की जाय कम है । वे एक दैवी पुरुष हैं । उनसे आपरेशन कराना भी कोई संयोग नहीं था । वह भी माँ की कृपा थी ।

एक रोग होता है जिसे फाइमोसिस कहते है । इस रोग में जनेन्द्रिय खुलती नहीं । मूत्र त्याग करने भर के लिये छिद्र खुलता है । बहुतों के केस में तो वह भी बन्द हो जाता है । फर तो मूत्र त्याग न होने से बड़ी तकलीफ होती है । मेरी जनेन्द्रिय बीसों वर्ष से खुलती नहीं थी । इलाज किया था लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ । मैंने डॉ. साहब से कहा कि हार्निया के साथ-साथ इसका भी आपरेशन कर दें । मैं इसे बहुत साधरण आपरेशन समझता था । मुझे कोई तकलीफ भी नहीं । अतः पता ही नहीं चला कि इसके भीतर क्या हो रहा है । यदि समय से आपरेशन न हुआ होता तो वह कैंसर हो जाता । डॉ. खन्ना कैंसर के भी सर्जन हैं । वे हाथ न लगाये होते तो पता नहीं क्या होता ? इसीलिये मैं इसे माँ की कृपा ही मानता हूँ ।

श्री पानू दा ने कहा–"आप प्राइवेट वार्ड के कमरे देख लें । जो अच्छा लगे वह ले लें ।" मैंने एक कमरा पसन्द किया और उसे ले लिया । बाद में पता चला कि उस कमरे की नींव महान संत मुरारी बापू ने रखी थी । मुझे तो कुछ भी पता नहीं था । इसे भी क्या मैं संयोग मान लूँ ? थोड़ी देर में पानू दा ने अपने टिफिन कैरियर में माँ का 'प्रसाद' भेज दिया । माँ के भक्त माँ के प्रसाद के महत्त्व को जानते हैं । बैठे बैठाये अन-अपेक्षित रूप से उसे पा जाना क्या माँ की कृपा नहीं है ?

आपरेशन के समय तपन जी महाराज वाराणसी में ही थे । जिस दिन आपरेशन होना था उस दिन वे मेरे परिवार वालों के साथ 'जप' पर बैठ गये । आपरेशन छोटा था कि बड़ा था–इसका महत्त्व नहीं है । महत्त्व है भावना का । महत्त्व है माँ की कृपा का ! मैं एक साधारण सा व्यक्ति और यह सब व्यवस्था । क्या यह उसकी कृपा के बिना सम्भव था ?

आपरेशन के पहले मैंने डॉ. साहब से दो निवेदन किया था । एक तो यही कि आपरेशन के बाद मुझे केथीटर लगा दें क्योंकि पिछली बार हार्निया के आपरेशन के समय पेशाब रूक जाने से बड़ी तकलीफ हुयी थी । दूसरी बात यह कही थी कि हम लोग हिन्दू हैं अतः फाइमोसिस को दूर करने के लिये पेनिस के कैप पर एक चीरा लगा दें – उसे सर्कमसाइज (मुसलमानी) न करें । उन्होंने कहा– "देखूँगा ।"

हार्निया के बारे में जो डॉ. साहब का अनुमान था वैसा ही निकला लेकिन जब फाइमोसिस के लिये चीरा लगाया तो उन्हें पेनिस के ग्लास पर घाव दिखायी पड़ा । वह कितने साल पुराना घाव था यह तो मैं भी नहीं जानता था । डॉ. साहब आपरेशन थिएटर के बाहर आये और मेरे एक मित्र से कहा कि घाव है अतः पूरा कर्मसाइज करना पड़ेगा । मुझे कोई जानकारी नहीं ।

हफ्ते भर बाद टाँका कटा और डॉ. साहब ने मुझे छोड़ दिया । हार्निया का घाव तो एकदम सूख गया था लेकिन पेनिस पर घाव था । उनका अनुमान था कि हफ्ते-दस दिन में वह घाव भी सूख जायेगा । खाने और लगाने की दवा बता दी । मैं घर चला आया ।

मैं घर आकर ड्रेसिंग कराने लगा । घाव सूखने के बजाय बढ़ने लगा । उसमें से रेशे-रेशे निकलने लगे । कम्पाउण्डर भी घबराया । मैं भी घबराया । डॉ. साहब से फोन पर बात किया । उन्होंने देखने के लिये बुलाया । मैं गया । उन्होंने कुछ दवाएँ बदल दीं । महीने भर बाद फिर बुलाया । इस बीच घाव थोड़ा थोड़ा सूखने लगा । फिर भी घाव था । मैं महीने भर बाद गया । उन्होंने देखा । महीने भर बाद फिर बुलाया । मैंने घबरा कर पूछा–"क्या अभी महीने भर और लगेगा सूखने में ?" वे बोले – "देखूँगा कैंसर तो नहीं है ।"

मैं बहुत घबराया । ऐसे रोगों के बारे मैं सुनना और बात है लेकिन सम्भावित रोग की कल्पना करना एकदम दूसरी बात है । मैं भीतर से बहुत घबराया । इसकी चर्चा करके घर के लोगों को चिन्तित करना नहीं चाहता था । मानसिक यातना को अकेले ही झेल रहा था । बीच-बीच में माँ से प्रार्थना करता था कि दुख काटों, मन को शांति दो ।

इस घाव को सूखने में 75 दिन लगे । वे दिन कैसे बीते यह एक भुक्त भोगी ही जान सकता है । मानसिक यातना के साथ ही साथ शारीरिक यातना भी भोगनी पड़ती थी । डॉ. का कहना था

कि घाव को दवा लगा कर खुला छोड़ दिया जाय जिससे कि वह जल्दी सूख जाय । लेकिन घाव के खुला रखने पर धोती वगैरह से जरा भी छू जाने पर प्राण निकल जाता था । सोते समय छू जाय तो नींद टूट जाती थी । इतने लम्बे समय तक ऐसे कष्ट का अनुभव मैंने पहली बार किया था ।

यदि आपरेशन मैंनें मीरजापुर में कराया होता और हफ्ते भर में सूख जाने वाला घाव ढाई महीना खींच ले जाता तो मैं यहाँ के डाक्टरों को दोष देता कि वे उन्होंने ठीक से आपरेशन नहीं किया । लेकिन डॉ. खन्ना जैसे सर्जन के विषय में ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता ।

माँ की कृपा से मैं पूर्णरूपेण स्वस्थ हूँ । मैं अपने आप से पूछता हूँ कि तपन जी का मुझसे यह पूछना कि मैं कब आऊँगा क्या अनायास था ? डॉ. खन्ना की चर्चा करना क्या केवल संयोग मात्र था ? संत शिरोमणि मुरारी बापू के कमरे का चुनाव क्या 'बार्ड चान्स' था ? मेरा मन बार-बार कहता है कि नहीं वह सब माँ की कृपा का फल था ।

माँ का एक आश्वासन प्रायः याद आता है – "इस शरीर पर विश्वास रखो। तुम्हारा अटूट विश्वास ही तुम्हारी आँखे खोल देगा ।" लेकिन हम सांसारिक लोगों के लिये क्या ऐसा विश्वास करना सम्भव है ? क्या उसकी कृपा के बिना ऐसा विश्वास हो सकता है ? इसीलिये प्रार्थना करता हूँ कि हे माँ दया करो, कृपा करो, रक्षा करो, ज्ञान दो, भक्ति दो, वैराग्य दो, अपने चरणों में अटूट निष्ठा दो, मेरे हृदय में वास करो । हम सब तुम्हारी अबोध संतान हैं माँ ! हमारी त्रुटियों को क्षमा करो ।

जय माँ !



वाङ्माधुरी

– संकलन "कृपाल"

१६ मई, १९७३ स्थान, उत्तरकाशी

माँ – जो इतना सुन्दर भाषण सुन रहा – सुनते क्या ?

जगतपाल – आर्त निवारण के लिये ।

माँ – बाबा के पास सुना तो - हाँ करो, ना ना करो । जानी हुई बात - सुनी हुई बात, तुम प्रोफेसर हो, बोलने का अभ्यास है ।

योगेश ब्रह्मचारी – आर्त के लिये शरणागति का अत्यन्त प्रयोजन ।

अनिल गांगुली – बहुतों के मन में एक ही प्रार्थना है अगर जप करे, लोगों की शक्ति कम ....

माँ – अपने अपने गुरु जो रास्ता बतायें ।

अनिल गांगुली – हर एक में एक प्रार्थना ।

माँ – एक बात है । साफ बात- अपना अपना गुरू जो तरीका बताये शिष्य ही उसी तरीके से करे ।

अनिल गांगुली – सभी की एक ही प्रार्थना है ।

माँ – यह जो जप, जिसके करने से लक्ष्य पूरा होता है । यह हुआ साकार सगुण, निश्काम नहीं ।

अनिल गांगुली – निश्काम कृष्ण प्रीति ।

माँ – इस लक्ष्य में कृष्ण स्मरण जो ले लिया । श्री कृष्ण जिस तरीके से अपने में तृप्त हों । अन्दर से जिस तरीके से करायें वही करियो । जिस लक्ष्य से जप की प्रेरणा स्वयं श्री कृष्ण ने ही दिया । उनकी प्रीति के लिये जिसके मन में जैसा तरीका, जिस तरीके से भगवान् का प्रकाश हो । जिस तरीके से तुम तृप्त होगे उसी तरीके से भगवान् स्वयं करा रहे हैं ।

यही भावना स्थित नहीं रह सकती है । धरा-बान्ध का बात । जो प्रश्न - यह बात टिकती नहीं । हर समय जिसके लिये जप उसमें मन टिकता नहीं । इसी कारण से प्रश्न आया । उसमें स्थित न रह सके – अपना संकल्प करो । संकल्प रखा गया । जो कार्य करेंगे कार्य सम्पूर्ण हो जाय । मन्त्र संकल्प । सामग्री देना संकल्प । और मन संकल्प ।

इतना समय जप करूँगा इतना Time देना है । एक ही आसन में बैठ कर जप पूर्ण करूँगा । इतना जप । संख्या जप एक ही आसन में नियमित रूप से जप करने की कोशिश । कोई बोलचाल नहीं । हर वक्त बोलते चलते हर समय मन में जप रक्षा करना । यह एक मन संकल्प । हर वक्त कोशिश करूँगा यदि हो ना सके तो संकल्प भंग । हमारी जितनी शक्ति हम करते रहेंगे–उसी तरीके से करो । कुर्सी पर बैठ कर करो हर समय जैसे अनुकूल । उसके बीच जरूरी बात (करती हो तो)

बात करके जप । व्यवहार समुदाय के साथ तुम्हें जैसे अनुकूल होय - वैसा संकल्प ले लो । इस ढंग से करो ।'

पहिली बात जो टिक नहीं सकता । घर में कोई चिट्ठी आयी मन की स्थिति में जलन - कैसी खबर । अच्छी खबर आये तो मन प्रफुल्लित । मन को उसी स्थिति में रहना है । आसन में बैठ कर जो संख्या जप वहीं करना है । भला-बुरा खबर आये । जप पूरा करना है । और एक - मन को उस तरफ लगाना ही नहीं कोई खबर अखबार का बात लेना ही नहीं । चालू करो । मन संयोग हो ना हो । करते-करते आदत पड़ जायेगा । अभ्यास यदि ठीक-ठीक हो जाय आदत से खैंच लेगा - जैसे भूख लग रही है । भूख के समय पर भूख लगती है । ऐसे ही निद्रा, निद्रा का समय बँधा हुआ है । यह जैसी दुनिया की जाग्रत् आदत-क्रिया बनी रही इन क्रियाओं के सम्बन्ध में कोई दुनिया दारी की चिन्ता या निद्रा आती नहीं ।

मन में निष्ठा पूर्वक जप करते-करते एक ऐसा सुन्दर तरीका प्रकाश होता है । इच्छा करें ना करे स्थिति अनुसार मन लगे न लगे ज्यादा टाईम लेकर करना । इतने दिन की जो गति है - क्या गति चालू रहा प्रकाश हो जायगा । वही जो चल रहा उसी स्थिति का प्रकाश । तुम देखोगे - तुम्हारे नस-नस मे रहेगा । तुम को खींच के ले जायेगा ।

अभ्यास के साथ नित्य योग रास्ता खुल सकता है । अभ्यास योग के लिये रास्ता खुलेगा । एक रास्ता नहीं अनन्त रास्ता । मन तो सबेरे से लेकर रात तक जीव जगत में बन्दी हो रहा है । कहते हैं जीव स्वभाव हर समय क्रिया शील । क्रियाशील गति है । जीव और जगत् । २४ घन्टा परिवर्तन हो रहा । इतने से बच्चे थे बूढ़ा कैसे होता है । परिवर्तन युवक बूढ़ा होता है । हर समय क्रिया परिवर्तन । इसलिये अनन्त रख दिया । कौन गति से एक-एक में अनन्त गति । घिसते-घिसते कौन सी स्थिति में आग जलेगी कह नहीं सकते । कौन सा ऐसा Point आ जाये वहाँ स्थिति में आने से पत्थर से टकरा कर आग लग गयी । जप ध्यान करते-करते नेति-नेति विचार । जिस में जो चले ऐसा है । वहाँ स्थिति में आने से जलने वाला जल जायेगा गलने वाला गल जायेगा । अभ्यास योग तुम्हारे बीच युक्त रहा - तुम जो चाहते हो लक्ष्य में स्थित रह सकता है तो अभ्यास योग में परिणत होने का पक्का रास्ता खुल जाता है । कच्चा नहीं पक्का जप, ध्यान, स्मरण और ग्रन्थ पढ़ना, पूजा करना जो कार्य करो क्रिया के अन्दर, क्रिया के अतीत जाने के लिये बदलता क्यों - परिवर्तन क्यों - यह टिकता नहीं - नित्य नहीं - जो अविनाशी है । शाश्वत है वह प्रकाश के लिये, अपने को अपना पाने के लिये । अपने को जानने के लिये । चाहे चलते फिरते करो - मुख से करे - अन्द से करो - नित्य जप तुम्हारा हो रहा । वृक्ष से बीज, जब तक माटी न होयेगा [मिट्टी उपजाऊ होगी] माँ के साथ युक्त होने से, माँ का स्वभाव खिला के स्वस्थ रखना, कल्याण करना ।

माटी में (बीज) सुरक्षित रखते हैं । खा पीकर शरीर सुरक्षित रखना । शरीर जो शोर (ह जाये । देहो देहो मिट जाये ।

वासना कामना रख कर जाये तो रिटर्न टिकट फिर पूर्ण करने के लिये जन्म लेना ही पड़ेगा। अमृत का सन्तान - अमृत का जब तक प्रकाश न होवे। इसलिये कहा जाता है - जिनको पाने के लिये कृपा के अन्तर्गत चल रहा।

सृष्टि स्थिति लय। जहाँ सृष्टि वहाँ ही स्थिति लय। जहाँ लय वहाँ भी सृष्टि स्थिति। प्रधान रूप में सृष्टि। प्रधान रूप में स्थिति। प्रधान रूप में लय। जो नित्य है नित्य ही है – एक प्रधान होकर रूप भी है गुण भी है तुम्हारे अन्दर जो क्रिया पढ़ा रहा है। अनन्त क्रिया पढ़ा रहा।

एक एक बात में एक एक अक्षर में अनन्त। तुमने जो लक्ष्य रखा है। जिस गति में जिस क्रिया में चलने से प्रकाश करे वही गति वही अभ्यास - आदत। आदत अभ्यास रह गया तुम्हारे अन्दर, वह नित्य है।

जो नित्य तत्त्व है। क्रिया का सवाल ही नहीं। तुम्हारे अन्दर ऋषितत्त्व, जोगी तत्त्व माँ तत्त्व तुम्हारे अन्दर में है। पुरुषतत्त्व क्रिया तुम्हारे बीच में है। भगवान् कहाँ नहीं। भगवान् जहाँ सर्वत्र है। वही है एक मात्र बीच का सवाल नहीं।

●

भगवान बुद्ध के समकालीन धर्माचार्य

—डॉ. प्रेमनारायण सोमानी

भगवान बुद्ध के समकालीन छः अन्य लोक विश्रुत धर्माचार्य थे, जो बहुजन पूज्य थे, गणी थे, गणाधिपति थे और अपने-अपने सम्प्रदाय के संस्थापक-तीर्थंकर थे । आज के भारत की आम जनता के लिए उनमें से पांच के तो नाम तक कालप्रवाह में बहकर विलुप्त प्रायः हो चुके है । पुरातन बाङ्मय में कहीं-कहीं उनके नाम का और उनकी शिक्षा का बहुत संक्षेप में वर्णन मिलता है ।

छठें निगन्ढ नाथपुत्र महावीर स्वामी ही केवल एक ऐसे बचे है, जो कि भारत के जनमानस के लिए श्रद्धा-पात्र के रूप में अब तक कायम रह सके है । क्योंकि, वे कर्म और कर्मानुकूल कर्मफल के नैसर्गिक धर्म सिद्धान्त के पोषक थे और चातुर्याम के रूप में शील-सदाचार की धर्मशिक्षा को महत्व देते थे । वे कामभोग संबन्धी भ्रष्टाचार के रंचमात्र भी पोषक नहीं थे ।

बाकी पांच धर्माचार्यो में से एक था - संजय वेलट्टिपुत्र । वह बहुत अस्थिर मान्यता का आचार्य था । जब कोई उससे पूछता कि क्या अच्छे-बूरे कर्म का अच्छा-बुरा फल मिलता है? तो वह किसी मत पर स्थिर न रहते हुए उत्तर देता कि मैं तो यह भी नहीं कहता कि अच्छे-बुरे कर्म का अच्छा-बुरा फल नहीं मिलता । फिर भी वह उन्मुक्त दुराचरण का स्पष्ट हिमायती नहीं लगता । महाराज अजात शत्रु के अनुसार जितने गुरू उन्हें मिले उन सबमें सबसे मूर्ख यही थे । वे विक्षेपवादी थे । वे किसी भी प्रश्न का निश्चयात्मक उत्तर नहीं देते थे । दूसरा धर्माचार्य था-पूर्ण कश्यप । वह कर्म और तदनुकूल कर्मफल के नैसर्गिक सिद्धान्त का प्रबल विरोधी था । वह दावं के साथ यह कहता था कि दुराचरण में न कोई पाप है, न दोष है और न ही किसी दुराचरण का कोई दुष्फल भोगना पड़ता है । इसी प्रकार सदाचरण में न कोई पुण्य है न अच्छाई और न ही किसी सदाचरण का कोई सत्फल मिलता है । वह प्रक्रियावादी था ।

अपना स्वार्थ साधने के लिए न झूठ बोलने में पाप है, न चोरी करने में, न डाका डालने में, न गाँव लूटने में, न ही अपनी कामवासना पूरी करने के लिए व्यभिचार करने में कोई पाप है तथा न ही प्राणियों की हत्या का, उनकी बोटी-बोटी मांस का बड़ा ढेर खड़ा कर देने में ही कोई पाप है । इसी प्रकार न सच बोलने में, न यम-नियम-संयम में और न दान देने में ही कोई पुण्य लाभ है ।

तीसरा धर्माचार्य था—मक्खलि गोशल वह अचेतक या नग्न साधू था । वह कट्टर भाग्यवादी था और यह शिक्षा देता था कि प्राणियों के सुख-दुख का कोई कारण नहीं होता, न सत्कर्म के कारण सुख आता है और दुष्कर्म के कारण दुख । सुख-दुःख की मात्रा प्रारब्ध के अनुसार पूर्व निश्चित होती है । उसमें कोई घट बढ़ नहीं हो सकती । भाग्य द्वारा नियंत्रित प्राणी परवश है, पराधीन है, अबल है, असहाय है । किसी भी शील, व्रत संयम, ब्रह्मचर्य अथवा पुरूषार्थ द्वारा उसके सुख-दुख में

परिवर्तन नहीं किया जा सकता । उसने आजीवक पंथ चलाया था । उसका "संसार-विसुद्ध मार्ग लोकप्रिय था । वह जड़ नियति वादी था ।

चौथा धर्माचार्य था–अजित केश कंबल । वह भी कर्म-सिद्धान्त का घोर विरोधी था । उसकी भी यही मान्यता थी कि न किसी पापकर्म का बुरा फल होता है और न किसी पुण्यकर्म का अच्छा फल । मनुष्य पाँच महाभूतों से बना है । मरणोपरान्त चिता पर जलाये जान के बाद उसकी केवल राख ही बचती है और कुछ नहीं । वह पूर्ण रूप से भौतिकवादी था । परलोक या मानवो परिशक्तियों पे उसका विश्वास नहीं था ।

पाँचवा धर्माचार्य था प्रक्रुद्ध कात्यायन । उसके अनुसार किसी तीक्ष्ण हथियार से एक व्यक्ति का सिर काट दिया तो भी वह हत्या नहीं है, क्योंकि जीव तो अजर है, अमर है, ध्रुव है, शाश्वत है । कूटस्थ है । अतः न कोई मारक है न मृत । न कोई हत्यारा है न हत । न कोई मारने वाला है, न मरने वाला । यानी अपने स्वार्थ-साधन के लिए असंख्य हत्याएँ कर दी जावे तो भी कोई दोष नहीं । वे शाश्वतवादी इसी को अच्छेदवाद भी कहते हैं ।

तत्कालीन भारतीय समाज के शील-सदाचार के स्थान पर उन्मुक्त दुराचरण को बढ़ावा देने वाले इस तथाकथित वामपंथी धर्माचार्यो के भी उन दिनों अनेक अनुयायी और प्रशंसक थे । बहुत लोकों द्वारा यह साधु माने जाते थे । आश्चर्य है कि दुराचार के पोषक होते हुए भी वे इतने लोकप्रिय और यशस्वी कैसे हो गये! और इतनीं बड़ी संख्या में उनके अनुयायी कैसे हो गये !! अवश्य ही वे सब अत्यन्त आकर्षण भव्य व्यक्तित्व के धनी रहे होंगे और लच्छेदार भाषा में लोगों को अध्यात्म और ध्यान की ऊँची-ऊँची बातें कहने में चार चाक (चार्वाक) रहे होंगे । "यावद जीवेत् सुखं जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत् भस्मीभूतस्य देहस्य पुनर्जन्म न विद्यते" जैसे आकर्षणों के बल पर इतनी बड़ी संख्या में लोगों को ठगने में सफल रहे होंगे । भारत में दुर्भाग्य से समय-समय पर, जहाँ एक ओर ऐसे वाक्पटु चार्वाक् उत्पन्न होते रहे हैं ।, वहीं सौभाग्य से शील सदाचार सम्पन्न संत, श्रमण और ब्राह्मण उत्पन्न होते रहे हैं, जो धूर्त आचार्यो के चंगुल में फँसे लोगों को कल्याणकारी विशुद्ध धर्म के मार्ग पर चलाने का प्रयास करते रहे हैं ।



जीवन-दर्शन

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरों को पीड़ा न पहुँचाना ही तपस्या का स्वरूप है ।

—तिरुवल्लुवर

* * *

बुद्ध के ऊपर एक आदमी थूक गया, तो बुद्ध ने अपनी चादर से थूक पोंछ लिया । तो बुद्ध से उनके शिष्य आनन्द ने पूछा-आज तो यह बात सीमा के बाहर हो गई सहिष्णुता की यह सीमा तो ठीक नहीं । इससे तो लोगों को प्रोत्साहन मिलेगा हमारे हृदय में आग जल रही है । हम आपका अपमान सहन नहीं कर सकते ।

बुद्ध ने कहा – तुम व्यर्थ में उत्तेजित मत होओ । यह तुम्हारा उत्तेजित होना तुम्हारी कर्म श्रृंखला बन जायगी । मैंने इसे कभी दु-ख दिया था, वह निबटारा हो गया, मैने कभी इसका अपमान किया था, तो आज लेना-देना चुक गया, इस आदमी के लिये ही मैं इस गाँव में आया था । यह न थूकता तो मेरी मुसीबत थी । अब सुलझाव हो गया, इससे मेरा खाता बन्द हो गया । अब मैं मुक्त हो गया । यह आदमी मुझे मुक्त कर गया है, मेरे ही किसी कृत्य से इसलिए मैं धन्यवाद करता हूँ । इसके पहले कि मैं अनन्त में पूरी तरह लीन हो जाऊँ, व्यक्तियों से वस्तुओं से, सम्बन्धों से, क्रोध में, अपमान में घृणा में, मोह में, लोभ में, जो भी नाते रिश्ते बने हैं, उन सबकी निर्जरा होनी जरूरी है । उसको ही परममुक्त पुरुष कहते हैं, जिसके सारे कर्मो को निर्जरा हो गई हो ।

इस प्रकार बुद्ध का उपदेश था कि जो काम व्यक्ति करता है, उसके फल को यदि वह शांति से भोग ले और उसके भोगने में अशान्ति को खड़ा न करे, तो उसके अतीत की निर्जरा हो जायेगी ।

* * *

वैभव का सबसे छोटा मार्ग अंतरात्मा द्वारा निर्धारित मार्ग पर चलना ही है ।

—श्री रामकृष्ण परमहंस

* * *

श्री रामकृष्ण परमहंस देव के पास एक दिन केशवचन्द्र सेन आये । केशव प्रकाण्ड विद्वान् व बुद्धिवादी थे । केशव चन्द्र ने बड़े तर्क दिये कि परमात्मा नहीं हैं । परमहंस देव सुनते रहे और बड़े प्रफुल्लित हुए, बड़े आनन्दित हुए । केशवचन्द्र को छाती से लगा लिया और कहा कि बड़ी कृपा की जो तुम आये । मैं तो ग्राम का ग्रामीण हूँ, मैंने बुद्धि का ऐसा वैभव कभी नहीं देखा । तुम्हें देखकर सिद्ध हो गया कि परमात्मा है क्योंकि बिना उसके क्या तुम्हारे जैसा फूल किल सकता है? केशवचन्द्र लौटे हारे हुए । रात को उन्होंने अपनी डायरी में लिखा कि वह आदमी जीत गया । उसे हराना मुश्किल है । वास्तव में किसी भी आत्मज्ञान - संपन्न महापुरुष को हराना मुश्किल है ।

क्योंकि तर्क तोड़े जा सकते हैं । तर्क तोड़ने के लिये कुछ और अधिक तार्किक होने की जरूरत होती है । थोड़ी और कुशलता चाहिये । पर आत्मज्ञानी पुरुष तर्क देता ही नहीं । वह राह नहीं देता जिससे उस पर हमला किया जा सके । वह कहता है मेरी श्रद्धा है परमात्मा, मेरा निष्कर्ष नहीं । मेरा भाव परमात्मा, मेरा तर्क नहीं, अतः ऐसा व्यक्ति परमात्मा के संबन्ध में मौन रहता हैं उसके पाने के विधान के बारे में, ध्यान के बारे में अवश्य बोलता है, पर उतना ही और उससे ही, जो सार जिज्ञासु होता है ।

[दैनिक भास्कर से साभार]

●

चिन्तन कौ प्रकार है कि–

– बोले तौ प्रेम के ताँईं ।

– सुनै तौ प्रेम् के ताँईं ।

– देखै तौ प्रेम के ताँईं ।

– विचारै तौ प्रेम के ताँईं ।

–गोलोकवासी- पं. श्री गयाप्रसाद जी

विज्ञानों का विज्ञान

आज का भौतिक विज्ञान जिन जिज्ञासाओं से कोसों दूर है उन्हीं का सहज समाधान हमारे पूर्वज उपनिषदों के मन्त्रों के माध्यम देते हैं ।

महर्षि पिप्पलाद के पास जिज्ञासाओं के समाधान के लिये आये छः ऋषियों में से गार्ग्य मुनि अपनी जिज्ञासाओं को इस प्रकार रखते हैं ।

१. गाढ़ निद्रा के समय इस मनुष्य-शरीर में रहने वाले देवताओं में से कोन-कौन सोते हैं?
२. कौन-कौन जागते हैं?
३. स्वप्न अवस्था में इनमें से कौन देवता स्वप्न की घटनाओं को देखता रहता है ।
४. निद्रा अवस्था में सुख का अनुभव किसको होता है?
५. ये सब के सब देवता सर्वभाव से किसमें स्थित है?

महर्षि बड़े ही स्नेह पूर्ण ढंग से समाधान देते हैं ।

"गार्ग्य! जब सूर्य अस्त होता है, उस समय उसकी सब ओर फैली हुई सम्पूर्ण किरणें जिस प्रकार उस तेजः पुञ्ज में मिलकर एक हो जाती है ठीक उसी प्रकार गाढ़ निद्रा के समय तुम्हारे पूछे हुए सब देवता अर्थात् सबकी सब इन्द्रियाँ उन सबसे श्रेष्ठ जो मनरूप देव हैं, उसमें विलीन होकर तद्रूप हो जाती है । इसलिए उस समय जीवात्मा न तो सुनता है, न देखता है, न सूँघता है, न स्वाद लेता है, न स्पर्श करता, न बोलता है, न ग्रहण करता है, न चलता है, न मल-मूत्र का त्याग करता है और मैथुन का सुख ही भोगता है । भाव यह है कि उस समय दसों इन्द्रियों का कार्य सर्वथा बंद रहता है । केवल लोग कहते है कि इस समय वह पुरुष सो रहा है । उसके जागने पर पुनः वे सब इन्द्रियाँ मन से पृथक् होकर अपना-अपना कार्य करने लगती है - ठीक वैसे ही जिस प्रकार सूर्य के उदय होने पर उसकी किरणें पुनः सब ओर फैल जाती हैं ।

प्रश्न-२ उस समय इस मनुष्य शरीर रूप नगर में पाँच प्राणरूप अग्नियाँ ही जागती रहती हैं । यह गार्ग्य द्वारा पूछे गये दूसरे प्रश्न का समाधान है ।

यहाँ निद्रा को यज्ञ का रूप देने के लिए पाँचों प्राणों को अग्निरूप बतलाया है । यज्ञ मेंअग्नि की प्रधानता होती है, इसलिए यहाँ संक्षेपतः प्राणमात्र को अग्नि के नाम से कह दिया । यह जो मुख्य प्राण का श्वास-प्रश्वास के रूप में शरीर के बाहर निकलना और भीतर लौट जाना है, वही मानों इस यज्ञ में आहुतियाँ पड़ती है । इन आहुतियों द्वारा शरीर के पोषक-तत्व शरीर में प्रवेश कराये जाते हैं, वे ही हवि हैं । उस हवि को समस्त शरीर में आवश्यकतानुसार समभाव से पहुँचाने का कार्य समान वायु का है, इसलिये उसे

समान कहते हैं। वही इस रूपक में मानों 'होता' अर्थात् वहन करने वाला ऋत्विक् है। अग्निरूप होने पर भी आहुतियों को पहुँचाने का कार्य करने के कारण इसे 'होता' कहा गया है। पहले बताया हुआ मन ही मानो यजमान है, और उदान वायु ही मानो उस यजमान का अभीष्ट फल है; क्योंकि जिस प्रकार यह अग्निहोत्र करने वाले यजमान को उसका अभीष्ट फल उसे अपनी ओर आकर्षित करके कर्मफल का भुगताने के लिए कर्मानुसार स्वर्गादि लोकों में ले जाता है, उसी प्रकार यह उदान वायु मन को प्रतिदिन निद्रा के समय उसके कर्मफल के भोग स्वरूप ब्रह्म लोक मे परमात्मा के निवास स्थान रूप हृदय गुहा में ले जाता है। वहाँ इस मन के द्वारा जीवात्मा निद्राजनित विश्रामरूप सुख का अनुभव करता है; क्योंकि जीवत्मा का निवास स्थान भी वही है। यहाँ यह स्पष्ट होना चाहिए कि निद्राजनित सुख ब्रह्म प्राप्ति के सुख की किसी भी अंश में समानता नहीं कर सकता है क्योंकि यह तो तामस सुख है और परब्रह्म परमेश्वर की प्राप्ति का सुख तीनों गुणों से अतीत है।

प्रश्न–३ –कौन देवता स्वप्नों को देखता है ?

महर्षि पिप्पलाद समाधान देते हैं, इस स्वप्न अवस्था में जीवात्मा ही मन और सूक्ष्म इन्द्रियों द्वारा अपनी विभूति का अनुभव करता है। इसका पहले जहाँ-कही भी जो कुछ बार-बार देखा, सुना और अनुभव किया हुआ है, उसी को यह स्वप्न में बार-बार देखता, सुनता और अनुभव करता रहता है परन्तु यह नियम नहीं है कि जाग्रत् अवस्था में इसने जिस प्रकार, जिस ढंग से और जिस जगह जो घटना देखी, सुनी और अनुभव की है, उसी प्रकार यह स्वप्न में भी अनुभव करता है। अपितु स्वप्न में जाग्रत् की किसी घटना का कोई अंश किसी दूसरी घटना के किसी अंश के साथ मिलकर एक नये ही रूप में इसके अनुभव में आता है अतः कहा जाता है कि स्वप्न काल में यह देखे और न देखे हुए को भी देखता है सुने और न सुने हुए को भी सुनता है, अनुभव किये हुए और अनुभव न किये हुए को भी अनुभव करता है, जो वस्तु वास्तव में है, उसे और जो नहीं है, उसे भी स्वप्न में देख लेता है। इस प्रकार स्वप्न में यह विचित्र ढंग से सब घटनाओं का बार-बार अनुभव करता रहता है। और स्वयं ही सब कुछ बनकर देखता है। उस समय जीवात्मा के अतिरिक्त कोई दूसरी वस्तु नहीं रहती।

प्रश्न–४ "निद्रा में सुख का अनुभव किसे होता है?"

महर्षि का उत्तर – जब निद्रा के समय मन उदान वायु के अधीन हो जाता है अर्थात् जब उदान वायु इस मन को जीवात्मा के निवास स्थान हृदय में पहुँचा कर मोहित कर देता है, उस निद्रा अवस्था में यह जीवात्मा मन के द्वारा स्वप्न की घटनाओं को नहीं देखता। उस समय निद्रा जनित सुख का अनुभव जीवात्मा को ही होता है।

प्रश्न–५ ये मन बुद्धि, इन्द्रियाँ और प्राण किसमें स्थित है ? किसके आश्रित हैं?

महर्षि इस प्रकार उत्तर देते हैं – "प्यारे गार्ग्य ! आकाश में उड़ने वाले पक्षिगण जिस प्रकार सायंकाल लौटकर अपने निवासभृत वृक्ष पर आराम से बसेरा लेते हैं, ठीक उसी प्रकार पृथ्वी से प्राण तक जितने तत्त्व है वे सब के सब परब्रह्म पुरुषोत्तम में, जो कि सबके आत्मा हैं, आश्रय लेते हैं, क्योंकि वे ही इन सबके परम आश्रय है ।

संकलन–"ईशादि नौ उपनिषद्"
"व्याख्याता 'हेरिकृष्णदासगोयन्दका'
"गीता प्रेस" गोरखपुर से साभार

●

गंगा-तट आए श्रीराम ।

तहाँ पषाव-रूप पग परसे, गौतम रिषि की बाम ।
गई अकास देव-तन धरि कै, अति सुन्दर अभिराम
"सूरदास" प्रभु पतित-उधारन-बिरद, कितौ यह काम ।

(सूर-रामचरितावली ८)

वाराणसी माहात्म्य

—दण्डीस्वीमी शिवानन्द सरस्वती

अनेकता में एकता की अनुभूति कराने वाली धनधान्य शोभा सौभाग्य श्री तथा जीवन के मधुरतम सुखों की प्राप्तिकारिणी समस्त प्राणियों क समस्त दुःखों का अपहरण कर लेने वाली परम पावन तथा पाप के वज्राघात से त्राण करने वाली सामान्य जनों की तो बात ही क्या देवादिदेव महादेव तक को भी आनन्द प्रदान करने वाली अहर्निश कृपा करने वाली मोक्षदायिनी वाराणसी पुरी की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है? अपनी कृपा कटाक्ष के फलस्वरूप भक्तों को लौकिक भोग प्रदान करने वाली परमसुख देने वाली सर्वसामर्थ्यशालिनी, शान्तचित्त वृत्तिवाले संत सन्यासियों द्वारा पूजित चरण कमल वाली, भक्तों के दुःखों का हरण करने वाली, जीवन पर्यन्त भुक्ति तथा जीवनोपरान्त मुक्ति प्रदान करने वाली वाराणसी इस कलियुग से सदा सर्वदा रक्षा करने वाली है। जीवन की व्याकुल भावतरंग समूहों को समाहित करने वाली इस घोर कलि-काल में वाराणसी और महादेव के पूजन-सेवन के अतिरिक्त अन्य कोई द्वितीय सुगम मार्ग नहीं है। जिसका पवित्र स्थल सज्जनों द्वारा अधिवसित वायुतरंगो से प्रवाहित पतित पावनी भागीरथी के जलकणों से सिञ्चित तथा अत्यन्त कौतूहल से युक्त देव समूह जिसकी गुणराशी का वर्णन करते हैं अथवा अपना कण्ठ उठा-उठा कर उच्चस्वर से एक दो ही नहीं अपितु देवताओं के समूह के समूह जिसके अनेक गुणों का वर्णन करते हैं ऐसी महिमामयी वाराणसी के दिव्य भाव में विभोर भक्त का हृदय बारम्बार परागपायी मधुप की भाँति उसके चरण कमलों पर न्योछावर होता रहता है। अतुल महिमाशालिनी वाराणसी के विषय में महाभारत के वन पर्व में लिखा है–

अविमुक्त समासाद्य तीर्थसेवी कुरुद्वह। दर्शनाद्देवदेवस्य मुच्यते ब्रह्महत्यया।
ततो वाराणसी गत्वा देवमर्च्य वृषध्वजम। कपिला ह्रदमुपस्पृश्य राजसूयफलं लभेत्॥

महाभारत के ही अनुशासन पर्व में युधिष्ठिर को समझाते हुए भीष्म पितामह कहते हैं–

इदं कलियुगं घोरं सम्प्राप्तं पाण्डुनन्दन।
गतिमन्यां न पश्यामि मुक्त्वा वाराणसीपुरीम्॥

हे पाण्डुनन्दन, अब घ़ोर कलिकाल आ गया है। कलियुग में वाराणसी को छोड़ कर और कहीं मुक्ति मिलना असम्भव है।

यजुर्वेदीय जाबाल उपनिषद में वाराणसी के विषय में महत्वपूर्ण उल्लेख है अव्यक्त तथा अनन्त परमात्मा के सम्बन्ध में विचार विमर्श करते हुए महर्षि अत्रि ने महर्षि याज्ञवल्क्य से पूछा कि उस अव्यक्त और अनन्त परमात्मा को हम किस प्रकार से जान सकते हैं। 'सोऽविमुक्ते उपास्यः' उस आत्मा की उपासना अविमुक्त रूप में करनी चाहिए। 'सोऽविमुक्तः कास्मिन प्रतिष्ठितः इति अत्र

प्रपच्छ'–महर्षि अत्रि ने पूछा कि आप जिस अविमुक्त के विषय में कहते हैं वह कहाँ है ? "वरुणायामस्यां च मध्ये प्रतिष्ठितः"इत्युवाच याज्ञवल्क्यः । परम विद्वान् याज्ञवल्क्य ने कहा कि अविमुक्त क्षेत्र अस्सी और वरुणा के बीच में है । ऋषिवर्य अत्रि ने कहा कि–'का च वरुणा भवति का च अस्सि' - आप किसे वरुणा कहते है किसे अस्सी ?

सर्वानिन्द्रियकृतान दोषान वारयतीति 'वरुणा' भवति ।
सर्वानिन्द्रियकृतान पापान अस्यति तेन "अस्सी' इत्युवाच याज्ञवल्क्यः ।।

याज्ञवल्क्य ने अत्रि मुनि के पूछने पर कहा कि पाँच कर्मेन्द्रिय पांच ज्ञानेन्द्रिय और मन के द्वारा किये जाने वाले सभी दोषो को जो रोक दे अर्थात् इन इन्द्रियों को काम न करने दे उसका नाम वरुणा हैं । इन्द्रियों के द्वारा किये गये पापों को जो फैला दे अर्थात् जीव को उन पापों से मुक्त कर दे उसी का नाम अस्सी है । वरुणा तो जीव को नवीन पाप करने से रोकती है, और अस्सी उसके पूर्वकृत पापों को दूर कर देती है ।

कुछ विद्वान असी की जगह नाशी शब्द मानते हैं–'वरुणायां नाश्यां चमध्ये प्रतिष्ठित इति' । उनके अनुसार यह अर्थ होगा कि जो इन्द्रियों के द्वारा किये गए सब पापों का नाश करे अथवा इंद्रिय कृत सभी पापोां का नाश करने वाली नाशी हो । वह अविमुक्त क्षेत्र देवाताओं का देवस्थान और सभी प्राणियों का ब्रह्म सदन हैं । वहाँ ही प्राणियों के प्राण-प्रयाण के समय में भगवान रुद्र तारक मन्त्र का उपेदश देते हैं । जिसके प्रभाव से वह मोक्ष को प्राप्त करता है । अतएव प्राणियों को अविमुक्त वाराणसी में निवास करना चाहिए ।

जन्मान्तर सहस्त्रेषु सञ्चितैः पुण्यकर्मिभिः ।
प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रसादात् परमेश्वरात् ।। मत्स्यपुरांण ।।

हजारों जन्मों में मैंने अनेकों पुण्य कर्म किये । वे पुण्य धीरे धीरे सञ्चित होते गए । उन्हीं के फल से और भगवान की कृपा से अपने इष्टदेव के आशीर्वाद से परम मनोहर वाराणसी पुरी मिली ।।

वाराणसी करुणामय दिव्यमूर्तिदृत्सृज्य यत तु तनुं तनुमृत्सुखेन ।
विश्वेशरदङ्गमहसि यत्सहसा प्रविश्यरूपेण तां वितनुतां पदवीं दधातु ।।

इस संसार में वाराणसी साक्षात् करुणामयी अलौकिक मूर्ति है क्योंकि यहां प्राणिमात्र सुख पूर्वक देह त्याग कर उसी समय विश्वेशर के ज्ञान रूप ज्योति में प्रवेश कर तद्रूप कैवल्य पद को धारण कर लेतें हैं ।

यद्यपि पिछले एक हज़ार अथवा पन्द्रह सौ वर्षो से काशी क्षेत्र तथा वाराणसी क्षेत्र पर्यायवाची माने जाने लगे हैं । परन्तु इसके पूर्व इनको एकार्थवाची नहीं माना जाता था । काशी क्षेत्र का विस्तार वाराणसी क्षेत्र के विकास से कहीं अधिक था ।

जिस प्रकार वाराणसी नगरी काशी जनपद की राजधानी थी ठीक उसी प्रकार काशी क्षेत्र के अन्तर्गत उससे अधिक पुनीत वाराणसी क्षेत्र माना गया है । इतना ही नहीं जिस प्रकार काशी राज्य

की राजधानी को काशी पुरी या काशी नगर कहा जाने लगा उसी प्रकार जन साधारण काशी क्षेत्र तथा वाराणसी का समान अर्थ में प्रयोग करने लगे । बहुत दिनों तक इस प्रकार के लौकिक व्यवहार के कारण उनका भेद शिथिल होने लगा और उनकी विभिन्नता का ज्ञान भी क्षीण होने लगा । परन्तु यथार्थतः वाराणसी क्षेत्र काशी क्षेत्र के अन्तर्गत और उससे छोटा है । यह बात पौराणिक साहित्य से स्पष्ट है । इस वाराणसी क्षेत्र की सीमाओं के सम्बन्ध में कुछ पौराणिक प्रमाण नीचे दिये जा रहे हैं–

वरुणास्त्तयैवस्या मध्ये वाराणसीपुरी ।। कूर्म-पुरेण दक्षिणोन्तरयोर्नद्यो वरुणासिश्च पूर्वतः जाह्नवी पश्चिमे चापि पाशपाणिर्गणेश्वरः । द्वियोजनं तु पूर्व स्याद्योजनार्द्धतदन्यथा वरुणानदी चासी मध्ये वाराणसी तयोः ।। पद्मपु. पृ. १००

पद्मपुराण में काशी क्षेत्र को चार भागों में विभक्त किया जाता है जो क्रमशः एक दूसरे के अन्तर्गत है और जिनमें मरने से भिन्न-भिन्न प्रकार की मुक्तियां मिलती है । इनके नाम है–काशी क्षेत्र, वाराणसी क्षेत्र, अविमुक्त क्षेत्र तथा अन्तर्गृह क्षेत्र । सबसे बड़ा काशी क्षेत्र है और उसके भीतर उससे छोटा वाराणसी क्षेत्र है उसके भी भीतर उससे छोटा अविमुक्त क्षेत्रको सालोक्य वाराणसी क्षेत्र में सारुप्य मुक्ति अविमुक्त क्षेत्र में सायुज्य मुक्ति तथा अन्तर्गृहों में मरने से कैवल्य अर्थात् परम मुक्ति मिलती है परन्तु एक बात पर सभी पुराणों में बल दिया गया हैं कि काशी क्षेत्र में ऐसा सूई की नोक भर भी स्थान नहीं है जहां मरने वाले को मोक्ष न मिले–

सूच्याग्रमात्रमपि नास्तिममास्पदेऽस्मिन स्थानं सुरेश्वरिमृतस्य न यत्र मोक्षः भूमौ जले वियति वा सुचिमध्यतो वा सर्पाग्निदस्युप विभिर्निहतस्य जन्तोः ।।

वाराणसी में मरने वाला यमराज के नियन्त्रंण में नहीं होता । अतएव उसेक पापों का दण्ड देने का अधिकार भैरव को है । इसी कारण इस दण्ड के कष्ट को भैरवी यातना कहा जाता है और उसको जीव रुद्र पिशाच होकर भोगता हैं । यह भैरवी यातना नरक यातना से कहीं अधिक दारुण होती है परन्तू पापों का दण्ड भोगने के बाद काशी में मरने के माहात्म्य से जीव मुक्ति पाता ही है–

वाराणस्या स्थितौ यो वै पातकेषु रतः । योनि प्रविश्य पैशाची वर्षाणामयुतः त्रयम् ।
पुनरेव च तत्रैव ज्ञानमुत्पद्यते ततः । मोक्षं गमिष्यते सोऽपि गुह्यमेतत् खगाधिप ।।

(गरुड़ पुराण)

परमपावनी वाराणसी पुरी में निवास करने वाले मनुष्यों से भिन्न जंगम और स्थावर भूतों को काशी की प्राप्ति काशी में स्थिति और काशी में शरीर परित्याग करने के कारण बहुत अधिक पुण्यों का लाभ होता है । उसके प्रारब्ध शरीर से किये गये पुण्य-पाप फलदायक नहीं होता और उनके प्रारब्ध कर्मो का भोग से ही नाश हो जाता है । तदनन्तर प्राणों के निकलने के समय सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान सर्वान्तर्यामी परम कृपालु परमेश्वर जीव की अविद्या को दूर करके अपने स्वतः सिद्ध रूप को प्रकट कर देता है ।

●

श्री संतराम मंदिर

नडियाद

—ब्र. गुणीता

गुजरात का पूर्वी क्षेत्र बड़ौदा के बाद आणंद एवं आणंद के बाद नाडियाद एक छोटा सा स्टेशन। भोपाल–राजकोट ट्रेन से हम नडियाद पहुँचे। गाड़ी दो मिनट रूकती है।

नडियाद की एक अपनी विशेषता है। यह आम शहरों की भाँति साधारण शहर नहीं है यह "जय महाराज" का नगर है। आप किसी व्यक्ति से मिलते हैं वह आपका स्वागत "जय महाराज" इन शब्दों से करेंगे। ऑटो, बस, मोटर सभी पर "जय महाराज" यह शब्द लिखे मिलेंगे। बाजारों में दुकानों पर भी "जय महाराज" नाम का उल्लेख देखने में आता है। "जय महाराज" यह नडियाद का मंगलसूचक महामन्त्र है। हमलोगों को लेने के लिये श्री रोहित भाई "जय महाराज" इस मंगलमयमन्त्र चिन्हित गाड़ी लेकर आये थे।

नडियाद शहर के बीचों बीच "संतराम समाधि मंदिर" का विशाल परिसर है। मंदिर प्रांगण के बीचों बीच संगमर्मर का तीन मंजिल का भव्य मंदिर शोभायमान है जहाँ अगनित जनता "जय महाराज" का गुणगान करती हुई अपनी श्रद्धा अर्पण करने को एकत्रित होती है। यह प्रवाह अहो रात्र चलता ही रहा है। मंदिर परिसर के चारों ओर विशाल परकोटा है। एक एक खंड में विशाल आयोजन चलता रहता है। "अन्नपूर्णा" का विराट् भण्डार है जहाँ प्रातः से सायं अगणित जनता प्रसाद ग्रहण करती रहती है। एक ओर संत निवास है जहाँ पर अनगिनत महात्मा अपना आश्रय ग्रहण करते हैं। एक भवन में छोटे-छोटे बालकों का निवास है, एक ओर विद्याध्ययन की व्यवस्था है। कहीं तो अखण्ड रामधुन चल रही है तो कहीं सत्संग भवन में संतों के प्रवचन हो रहे हैं। बाहर से आये संत महात्मा गण अपना चातुर्मास्य भी यहाँ करते हैं। देश के सुविख्यात भागवतवक्ता भक्त शिरोमणि श्री डोंगरे महाराज ने अपने जीवन का अंतिम पर्याय इसी पुण्यक्षेत्र में पूरा किया। कहीं तो रोगियों की सेवा हो रही है तो किसी खंड में बालक फुटबॉल क्रिकेट आदि खेल रहे हैं, और कहीं विवाह का मण्डप सजाया जा रहा है। जन सेवा का यह अनुपम दुष्टान्त है। दीन दुःखीजनों का यह एक मात्र आसरा है, तभी तो यह सबका इतना प्यारा स्थान है। जन-जन के मन में "जय महाराज" की प्रतिध्वनि। केवल नडियाद ही नहीं आसपास के सभी गांव इसी 'जय महाराज' की जय ध्वनि से प्रतिध्वनित हैं। मंदिर में प्रतिदिन एक अमूल्यवाणी लिखी जाती है। उसके साथ रोग निवारक औषधि भी। यही वाणी पूरे नडियाद एवं आस-पास के गाँवों में भी लिखी जाती है। संतराम मंदिर को एक सम्पूर्ण साम्राज्य कहना अतिशयोक्ति न होगी।

आज से प्रायः डेढ़ सौ दो सौ वर्ष पूर्व जूनागढ़ स्थित गिरनार पर्वत से दो महात्मा इस क्षेत्र में पधारे थे। गिरनार पर्वत गुरुदत्तात्रेय की तपोभूमि है, संत महात्माओं का यह आवागमन का क्षेत्र

है । गर्मी के दिन थे । पुञ्ञा भाई पटेल का खेत था । वहाँ एक बावड़ी थी । थोड़ा सा जल था । खेत में पटेल का नौकर था । महात्माओं ने उससे बाल्टी लोटा व रस्सी माँगी । चूँकि यहाँ गिरनार से आने वाले महात्माओं का आना-जाना लगा ही रहता है, कभी कोई बाल्टी लोटा वापस करते हैं तो कभी नहीं । अतः नौकर ने उनकी अधिक परवाह न की और बाल्टी रस्सी नहीं दी । मस्त महात्मा थे । हाथों से दबाया जल ऊपर आ गया मस्ती से नहाते रहे । नौकर देखता रहा । अपनी करतूत को कोसने लगा । संतों के चरणों पर गिर पड़ा । संत कब किसके अपराध को गिनते हैं ? महात्मा की महिमा क्षण भर में फैल गयी । एक संत गोंडल की ओर बढ़ गये और एक यहीं रूक गये । स्थान का नाम डेहरी पड़ा । संत ने यहाँ डेरा डाला था । पुंञा भाई पटेल शहरी क्षेत्र में रहते थे डेहरी दूर पड़ती थी । पटेल ने महाराज से निवेदन किया आपके पास आकर रहने को । संत ने कृपा की और आपके विशाल परिसर में आये । संत ने देखा यह तो बहुत ही पुण्यस्थली है, ऋषिमुनियों की तपस्थली, है स्थान महिमामण्डित है । अब तक महात्मा "योगीराज संतराम महाराज" के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे । गोंडल की ओर पधारने वाले योगिराज स्वामी नारायण के रूप में परिचित हुये । आनेवाला एक बालक महाराज जी के प्रति अपने को न्योछावर कर चुका था । शिष्य की परीक्षा लेनी थी । अतः महाराज श्री अन्तर्हित हो गये । बालक अपने इष्टदेव प्रियतम महाराज के दर्शन बिना नहीं रह सकता था । वह महाराज की खोज में निकला । वर्षों के अन्तराल में संभवतः इसी स्थान पर गुरु शिष्य का मिलन हुआ । शिष्य का नाम था लक्ष्मण देव ।

गुरु ने योग समाधि का इंगित दिया । शिष्य व्याकुल हो गये । गुरु महाराज के विना जीवनधारण असम्भव था । गुरुदेव ने अपनी समाधि हेतु स्थान का चयन किया गड्ढा खुदवाया । शिष्य को निर्देश दिया दो दीपक तैयार रखने । साथ ही यह आश्वासन दिया उनके समाधि में प्रवेश करने के उपरान्त ये दीपक स्वतः प्रज्वलित हो जायेंगे तो यह स्पष्ट हो जायगा कि योग समाधि द्वारा इस पार्थिव शरीर का त्याग करके वे ज्योति स्वरूप में नित्य विराजमान रहेंगे । और यथार्थ में ऐसा ही हुआ, अनायास दीपक स्वतः ही प्रज्वलित हो उठे और "जय महाराज" की ध्वनि शिष्य के अन्तःकरण से स्वतः ही निःसृत हुई । तभी से आज पर्यन्त यह ज्योति प्रज्वलित है और 'जय महाराज' की परम्परा प्रचलित हुई ।

श्री लक्ष्मणदेव जी इस परम्परा के सर्वप्रथम महाराज है । लोगों की मान्यता है कि गुरु दत्तात्रेय ही योगीराज संत राम बाबा के रूप में प्रकट हुये थे तथा श्री लक्ष्मदेव जी पूर्व जन्म में राजा अलर्क थे । श्रीमद्भागवत में दत्तात्रेय एवं राजा अर्लक का संवाद आता है । श्री लक्ष्मण देव जी के अनन्तर गद्दी की सेवा करने वाले प्रमुख सेवक अपने को दास के रूप में मानते है । वर्तमान में महाराज श्री नारायणदास जी श्री संतराम मंदिर के प्रमुख सेवक हैं । आप आठवें महाराज हैं ।

प्रमुख मंदिर के भीतर दो बड़े-बड़े दीपक प्रज्वलित हैं । बीच में महाराज श्री की सफेद गद्दी है । इस गद्दी का श्रृंगार फूलों से इतनी सुन्दरता से किया जाता है जो शब्दों में बँध नहीं सकता है । साथ ही एक और गर्भ गृह है जहाँ पर भी दीपक प्रज्वलित है और गद्दी है यहाँ भी फूलों द्वारा अतिशय सुन्दर श्रृंगार किया जाता है यह महाराज श्री लक्ष्मदेव जी की समाधि है ।

मंदिर प्रातः साढ़े तीन बजे नगाड़ों की ध्वनि से जागृत होता है । मुख्य गर्भगृह की जाली नहीं खुलती है । विष्णु सहस्रनाम एवं मन्त्रादि पाठ प्रारम्भ हो जाता है । आश्चर्य तो यह है साधारण लोग जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकते वहीं ब्राह्म मुहूर्त चार बजे से ही नडियाद निवासी गृहस्थ भक्तजनों का आना प्ररम्भ हो जाता है तथा सभी आकर अपने-अपने निश्चित स्थान पर बैठकर सामूहिक पाठ में योगदान करते हैं । मंदिर के गर्भगृह में वर्तमान महाराज एवं साधु ब्रह्मचारियों के द्वारा श्रृंगार एवं पूजन आदि चलता रहता है । कपाट बन्द ही रहता है । भीतर से भावपूर्ण मन्त्र ध्वनि की झंकार शत-शत नर नारियों के सामूहिक पाठ के स्वर को भेदन करती हुई बीच-बीच में सुनायी पड़ती है । करीब साढ़े चार बजे दक्षिण का दरवाजा कुछ क्षण के लिये खुलता है "जय महाराज" का उद्घोष करते हुई भक्तजन अपने-अपने स्थानों पर स्थिर रहकर पादुका पूजन का दर्शन पाते हैं, तदनन्तर दरवाजा पुनः बन्द हो जाता है । केवल मात्र मंदिर के ब्रह्मचारी संत महात्मागण पूजन सामग्री आदि लेकर आना जाना करते हुए दिखाई पड़ते हैं ।

मंदिर एक विशाल प्रांगण में स्थित है । गर्भगृह के बाहर मंदिर के चारों ओर करीब १०-१२ फीट चौड़ा बरामदा है । चारों और नक्काशीदार संगमरमर के खंभे हैं । मुख्य गर्भ गृहों के सामने के भाग में बरामदे की छत पर ताजमहल की दीवाल पर की हुई विभिन्न रंग के पत्थरों द्वारा बनायी हुई फूल एवं पत्तों की बेल का अनुकरण किया गया है । सामने का खुला आंगन विशाल है जहाँ पत्थरों का फर्श है । आँगन के अन्तिम छोड़ पर खंभेदार विशाल बरामदा है । बरामदे की दीवाल पर प्राचीन ऋषि मुनि संत आदि के विराट् तैल चित्र शीशे में जड़े हुए हैं । बरामदे के दक्षिण-पश्चिम की ओर हॉल के समान वृहत् स्थान है जहाँ महाराज श्री की उपस्थिति में संकीर्तन आदि होता रहता है । यहाँ की दीवाल पर भी देवी देवताओं के आकर्षक चित्र रखे हुए है जो अनायास ही जनता को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं । बरामदे के एक ओर ऊपर छत पर जाने की सीढ़ी है । भीड़ अधिक रहने के कारण लोग छतपर चढ़कर मंदिर के गर्भ गृह एवं पूज्य महाराज श्री का दर्शन करते हैं ।

प्रातः ५ बजते-बजते मंदिर प्रांगण एवं प्रकोष्ठ अगणित नर-नारियों से भर जाता है । सभी के पास नित नेम की पुस्तिका रहती है सभी सामूहिक पाठ में योगदान करते हैं । सभी देवी-देवताओं की स्तुति एवं चालीसा आदि का पाठ होता रहता है ।

करीब साढ़े ५ बजे पूज्य महाराज जी मुख्य गर्भ गृह के जाली के कपाट स्वयं खोलते हैं । असंख्य जनता "जय महाराज" की मंगल ध्वनि का तुमुल उद्घोष करती है । वर्तमान पूज्य श्री महाराज जी के अस्वस्थ रहने के कारण वे दो ब्रह्मचारियों के कंधे का सहारा लेकर मंदिर के पट आदि खोलना एवं मुख्य सेवा का कार्य निभाते हैं । मंदिर के पट खोलने के अनन्तर पू. महाराज जी दक्षिण द्वार से बाहर आते हैं चलने में अशक्त होने के कारण महाराज जी के लिये एक पहियेदार कुर्सी की व्यवस्था है । पू. महाराज जी उस कुर्सी पर विराजते है काषाय तथा श्वेतवस्त्रधारी ब्रह्मचारी एवं संन्यासीजन आपके साथ रहते हैं । कुर्सी पर बैठ कर महाराज जी मंदिर परिक्रमा के लिये जाते हैं दोनों ओर की जनता स्थिर होकर बैठी रहती है पू. महाराज की

कृपा दृष्टि पाने के लिये । जैसे जैसे महाराज की कुर्सी आगे बढ़ती है भक्तजन "जय महाराज, जय महाराज" की ध्वनि करते हुये हाथ फैला कर आपकी कृपा दृष्टि पाने के लिये अन्तःकरण से व्याकुल हो उठते है । बालकों की तो बात ही दूसरी है । वे महाराज जी जिधर से गुजरते हैं उस दरवाजे के पास आकर "जय महाराज" की तुमुल ध्वनि करते हुये उनको स्पर्श करने का प्रयास करते हैं । पू. महाराज जी अपना हाथ उनकी ओर बढ़ा देते हैं, वे बड़ी ही आत्मीयता से पू. महाराज जी के हाथों का स्पर्श कर अत्यन्त आनन्दित होते हैं एवं महाराज जी के वहां से आगे बढ़ते ही यह बालकों का दल अपने अपने नित्य कार्य विद्यालय जाने आदि में व्यस्त हो जाता हैं । यह क्षण मानो उनके लिये अमृत स्पर्शी क्षण है दिन भर की स्फूर्ति मानो उन्हें पू. महाराज जी के इस प्यार भरे करुणामय स्पर्श में प्राप्त होती है ।

परिक्रमा करके पहले महाराज जी गर्भगृह के सामने बरामदे में थोड़े समय के लिये विराजते है । वहां पर मन्त्रोच्चारण सें निर्दिष्ट ब्रह्मचारी द्वारा चन्दन का तिलक किया जाता है । तदुपरान्त खुले प्रांगण में विराजमान वेदिकाओं का आप दर्शन एवं प्रणाम करते हुए आगे बढ़ते हैं । मंदिर प्रांगण में गर्भ गृह के सम्मुख एक त्रिशूल गड़ा हुआ है एक ओर तुलसी महारानी विराज मान हैं । एक बड़ी वेदि है जहाँ पर चरण पादुका बनी हुई है । एक मंदिर बरामदे से लगा हुआ बना हैं, जहाँ पर भी चरणापादुका बनी हुई है तथा दीपक प्रज्चलित रहता है । यह पू. महाराज श्री लक्ष्मण देव जी का समाधिस्थल है । एक ओर नाम की महिमा को दर्शाती हुई संगमरमर की गुम्बज नुमा वेदी है जिसकी संगमरमर की दीवाल पर संस्कृत के श्लोको व हिन्दी के दोहों में नाम महिमा का उल्लेख है । साथ ही महामन्त्र "हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे" अंकित किया गया है । मंदिर के प्रत्येक मंजिल पर बड़े बड़े अक्षरों से यही महामन्त्र लिखा हुआ भी है । पू. महाराज श्री की कुर्सी इन सभी का दर्शन व प्रणाम करती हुई आगे बढ़ती है । दोनों ओर जनता अपने वर्तमान महाराज में "बाबा संतराम" के दर्शन करती हुई अपने को धन्य समझती है । पूरे प्रांगण में जहाँ जहां पूर्व पूर्व महाराजों का समाधि स्थल व साधन स्थल हैं सभी का दर्शन करते हुए पू. महाराज जी पुनः गर्भगृह में अपनी सेवा प्रदान करने प्रवेश करते हैं । तदुपरान्त मन्दिर से प्रणाम करके पू. महाराज जी अपने विश्राम कक्ष में चले जाते हैं । करीब साढ़ छः बजे तक यह कार्यक्रम चलता है । यह प्रतिदिन का नियम है ।

सायंकाल भी संध्या के समय पू. महाराज जी स्वयं उपस्थित होते हैं । तथा जाली के पट वन्द करने का कार्य स्वयं निभाते हैं । उस समय भी अगनित जन समूह उपस्थित रहता है ।

—क्रमशः

●

मातृ-स्मृति

—कु. चित्रा घोष

१६ दिसम्बर १९५९, बुधवार

उत्कण्ठेश्वर अहमदाबाद से ३५ मील दूर पहाड़ी पर स्थित है । ऊंट की पीठ की तरह गोलाकार आकार में यहाँ महादेव की मूर्ति विराजमान है अतः इस स्थान का नाम उत्कण्ठेश्वर है । यह स्थान महर्षि जाबालि की तपोभूमि है । उत्कण्ठेश्वर के चारों ओर जो पहाड़ियाँ है उनके बारे में कहा जाता है कि यह मुनि के हवन की भस्म राशि है । यहां पर श्रीकान्ति भाई (मुन्शा) के प्रयास से एक योगाश्रम बनाया गया था । उनकी मत्यु के उपरान्त यह ट्रस्टियों के हाथ में है ।

हम लोग बस द्वारा उत्कण्ठेश्वर गये । दस-बारह मील तक तो पक्का रास्ता है, उसके बाद ही ऊबड़ खाबड़ मार्ग प्रारम्भ हो जाता है । दोनों ओर कांटे के पेड़ हैं, जहाँ मार्ग अत्यन्त संकीर्ण है बस की खिड़कियाँ छोटी है वहाँ बस में बैठे यात्री असावधानता वश इन काँटो की चपेट में आ जाते हैं । कहीं मार्ग है तो कहीं नहीं कहीं तो जुते हुए खेत पर से बस चली जा रही है । सामने एक छोटी सी सरिता है । बस उसके भीतर से त्रैर कर उस पार आयी । अभी उत्कण्ठेश्वर महादेव का मन्दिर दो मील की दूरी पर था, बस रुक गयी आगे जाने का रास्ता नहीं था । कमर तक पानी में चलते हुए सरिता को पार कर आखिर हम मरुतीर्थ उत्कण्ठेश्वर पहुँचे ।

मांताजी के लिये दूसरे रास्ते से यहाँ तक आने की व्यवस्था की गयी थी । यह ६५ मील अधिक था । पर इस मार्ग पर नदी पार नहीं करना पड़ता पर मार्ग संकीर्ण तथा कच्चा जरूर है ।

योगाश्रम में एक जैन साधु रहते थे । अभी उनका शरीर नहीं है । काफी बड़े परिसर में कुछ कुटिया बनी हुई है । थोड़ी दूर पहाड़ी पर उत्कण्ठेश्वर महादेव का मन्दिर दीख रहा है । कुटिया के नीचे बनी हुई गुफाये देखने लायक हैं । बड़ी सी गुफा, जो कि अनेक भागों में विभक्त हैं । यह स्थान अत्यन्त निर्जन तथा साधना का स्थल है । कुछ समय से माताजी के सिर में एक प्रकार की आवाज भीतर ही भीतर हो रही थी, बाहरी आवाज उनका शरीर ले नहीं पा रहा था । पर यहाँ इतनी दूर की यात्रा करके आने पर भी माताजी ने अपने सिर की आवाज में कमी बतायी । माताजी के इस कथन से स्थान के महत्त्व का प्रमाण मिलता है । स्व. कान्तिभाई मुन्शा जी के रहते माताजी यहां दो बार आ चुकी है ।

१७ दिसम्बर वृहस्पतिवार

यहाँ पर भी हमारे आश्रम के नियमानुसार सत्संग होता था । सत्संग में माताजी करीब ११ बजे पधारी । कान्तिभाई [भागवानन्दजी] श्रीमद्भागवत की व्याख्या कर रहे थे । यहाँ के स्वयम्ज्योति नामक साधु माताजी को उस पुस्तकागार में ले गये जहाँ जैन साधु की मूर्ति रखी हुई

है । यहाँ स्थानीय लोगों की भीड़ नहीं के बराबर है । माताजी का विश्राम अच्छा हो रहा है । गुरुप्रिया दीदी तथा बुनीदी शारीरिक अस्वस्थता के कारण अहमदाबाद में ही हैं । माताजी के साथ केवल दीदी माँ [नानीजी] हैं । शाम को श्री विष्णु आश्रम जी तथा स्वयम् ज्योतिजी के प्रवचव में माताजी पधारीं ।

१८ दिसम्बर, शुक्रवार

आज दोपहर को ब्राह्मण भोजन हो रहा था । माताजी पंक्तिबद्ध भोजन का परिदर्शन कर आयीं । शाम के समय अनेक बालक बालिकायें तता नर-नारी माताजी के दर्शनों के लिये आस-पास के गाँवों से आये थे । सन्ध्या से स्व. कान्तिभाई मुन्शाजी के आत्मीय स्वजन तता परिवार के लोग माताजी के कमरे में बैठे थे । माताजी अपने ही ख्याल से "गणेश जी की मातृ भक्ति" "नारदजी की माया" एवं कृष्ण बलराम की बाललीला की एक कथा सुना रही थीं । बाद में श्री विष्णु आश्रम जी के प्रवचन में पण्डाल में पधारीं ।

१९ दिसम्बर, शनिवार

आज हमलोगों की अहमदाबाद लौटने की बारी है । पास ही किसी सेठ के द्वारा अभी अभी बनाया हुआ एक वानप्रस्थ आश्रम है । स्वामी परमानन्दजी माताजी को वहाँ दिखाने के लिये ले गये ।

आज अपरान्ह तीन बजे माताजी यहाँ से रवाना हुईं । करीब छः बजे माताजी अहमदाबाद पधारीं । रात के आठ बजे माताजी अपने कक्ष के सामने लगे हुए छोटे से पण्डाल में विराजीं । श्रीमद्भागवत सप्ताह सम्पूर्ण हो चुका था अतः बड़ा पण्डाल खोल दिया गया था ।

मौन के उपरान्त मातृ सत्संग होता है । आज माताजी ने अपने से कुछ बातें कहीं ।

१. सर्वदा मुँह में मिश्री रखना – अर्थात् मुँह में हरिनाम रखना - नाम रसामृत ।
२. रोज प्रातः त्रिफला सेवन करना – त्रिफला अर्थात् हरिनाम कीर्तन, हरिनाम श्रवण, हरिनाम चिन्तन ।
३. "इस शरीर से एक बार पूछा गया था – "माताजी आप कहाँ रहती हैं ?"
शरीर के मुख से निकला – ब्रह्मनगर में दूसरा प्रश्न था – "आपके घर पर कौन-कौन हैं ?"
शरीर के मुख से आया – "आत्मानन्द" ।

माताजी ने आगे कहा, "तुमलोगों ने तो इस शरीर को पढ़ना-लिखना नहीं सिखाया । पढ़ना-लिखना सिखाओगे कैसे, ऐसा खेल-मजा होता था क्या कहूँ पिताजी । [विष्णु आश्रमजी से बोलते हुए] ऐसा ही माथा खराब था एक लाईन के बाद दूसरी लाईन पढ़ते समय पहले की लाईन बिलकुल गायब हो जाती थी । लाईन की बात ही छोड़ो एक-एक अक्षर जैसे ही पढ़ने जाती वह रोशनी से भर जाती "अक्षर ब्रह्म" पढ़ाई इतने तक ही ।

२० दिसम्बर रविवार

आज मुकुन्द भाई के घर पर माताजी को ले जाया गया । प्रातःकाल का सत्संग, माताजी का भोग, विश्राम, सब ही मुकुन्द भाई के घर पर ही होगा । यहाँ पर माताजी के लिये एक कमरा है । यही उनका ठाकुर घर है । माताजी ने स्वयं ही कहा था"– रात में भी ठाकुर घर में ही लेटी रहूँगी ।" शाम को माताजी को भक्तों के घरों पर ले जाया गया । ठाकुर भाई के राम कृष्ण मिल पर गयीं । वहाँ से उर्मिला (कान्ति भाई मुंन्शा की पुत्री) की ससुराल आयीं । उर्मिला तथा मधुकान्त के घर पर श्री विष्णु आश्रम जी के प्रवचन हुए । मौन के बाद माताजी ने थोड़ी देर तक "धरो लओ, धरो लओ" तथा "हरि बोल, हरिबोल" इन पदों का कीर्तन गाया ।

२१ दिसम्बर, सोमवार

आज कान्तिभाई की दूसरी बरसी है । प्रातः ५ बजे से घर के आँगन में माताजी के चित्र के सामने आश्रम की ब्रह्मचारिणियों ने उषा कीर्तन प्रारम्भ किया । बाद में "मा" "मा" नाम कीर्तन (हुआ) तदुपरान्त दिन भर 'हरे कृष्ण' एवं अन्यान्य नामों का अखण्ड कीर्तन हुआ । माताजी मुकुन्द भाई के घर से नौ बजे आयीं । तब सम्पूर्ण गीता का पाठ हो रहा था । दोपहर को १२ साधुओं को भोजन कराया गया । माताजी सामने उपस्थित थीं । शाम को ५ बजे कीर्तन समाप्ति के समय पर भी माताजी अपने से आयीं । स्वामी माधव तीर्थ ने मीराबाई की सम्पूर्ण जीवन चरित को रंगीन चित्रों पर अंकित किया था । उसी को उन्होंने coloured Slide के माध्यम रात को दिखाया । साथ ही एक अन्य महात्मा मीरा के भजन गा रहे थे तथा विषयवस्तु को गुजराती में समझा रहे थे । बाद में प्रतिदिन के जैसे विष्णु आश्रम जी के भाषण हुए ।

२२ दिसम्बर, मंगलवार

आज माताजी का अहमदाबाद छोड़ने का दिन है । प्रातःकाल कुन्दनबेन ने माताजी की आरती उतारी तथा आश्रम के सबको वस्त्र दिये । दोपहर के दो बजे माताजी मोटर से बड़ौदा की ओर रवाना हुईं । पहले दीदी मा - दीदी तथा बुनिदी की यहीं पर रहने की बात हुई थी । माताजी के रवाना होने के समय दीदी माँ की तबियत खराब है सुनकर माताजी बारबार पूछने लगीं –" माँ आप क्या जायेंगी ?" दीदी माँ ने स्पष्ट रूप से हाँ या नहीं कहा । माताजी ने दीदी माँ के पैरों पर सिर टेक कर प्रणाम किया । लौकिक व्यवहार में माताजी की कोई भूल त्रुटि नहीं होती । चाहे कितनी भी भीड़ या व्यस्तता क्यों न हो । हर वक्त माताजी ऐसा ही करती हैं ऐसी बात नहीं है । जब जो हो जाय । मोटर पर चढ़ते समय माताजी ने दीदी माँ से कहा, "चलो माँ, भीमपुरा जाओगी तो उठो ।" तुरन्त दीदी माँ चल पड़ीं । आजकल विशेषरूप से देख रही हूँ कि दीदी माँ माताजी को छोड़कर अधिक समय तक रहने का भरोसा नहीं कर पाती हैं । उम्र भी हुई है । कभी-कभी तबियत अधिक खराब हो जाती है । अतः माताजी के साथ-साथ रहना ही श्रेयस्कर सोचती है ।

आज रात को माताजी बड़ौदा में तारकेश्वर मन्दिर के पास एक विद्यालय भवन में रहेंगीं । महात्मा विष्णु आश्रम जी भी माताजी के साथ आये हैं । माताजी के आगमन की प्रतीक्षा में काफी संख्या में नर-नारी विद्यालय भवन के सामने उपस्थित थे । थोड़ी देर तक माताजी विद्यालय भवन में बैठीं, एवं अपने विश्राम कक्ष में चली गयीं । माताजी के जाते ही सब लोग अपने-अपने स्थानों को चले गये । माताजी आकर सामने के बरामदे में बैठीं । नीचे खड़े लोगों ने माताजी के दर्शन किये । रात को तारकेश्रवर मन्दिर के प्रांगण में सत्संग की व्यवस्था की गयी थी । माताजी करीब आठ बजे सत्संग में पधारीं । विष्णु आश्रम का भाषण हुआ । मौन के बाद स्थानीय लोगों ने माताजी को भजन सुनाया ।

[नोटः– "मातृ स्मृतिः" का गत अंक में पुनरावृत्ति हो जाने के कारण हमें खेद हैं ।]

आगामी उत्सव - सूची

१.	गुरु -पूर्णिमा	–	२४ जुलाई
२.	श्री श्री स्वामी मुक्तानन्द गिरि जी की तिरोधान·तिथि	–	१५ अगस्त
३.	श्री स्वामी मौनानन्द पर्वत (भाई जी) की तिरोधान तिथि	–	१९ अगस्त
४.	झूलन पूर्णिमा	–	२२ अगस्त
५.	जन्माष्टमी उत्सव	–	३0 अगस्त
६.	श्रद्धेया गुरुप्रिया दीदी की तिरोधान तिथि	–	१३ सितम्बर
७.	वाराणसी आश्रम में भागवत जयन्ती उत्सव	–	१३-२२ सितम्बर
८.	श्री स्वामी अखण्डानन्द गिरि जी की तिरोधान तिथि	–	२८ सितम्बर

*

आश्रम संवाद

कनखल :–

३ मई (१९ वैशाख) वर्ष भर का प्रतीक्षित श्री श्री माँ का जन्मोत्सव प्रारम्भ हुआ । ब्राह्म मुहूर्त की मंगलमयी वेला में श्री श्री माँ के ज्योतिपीठम् के भावपूर्ण भक्तिमय परिवेश में श्री श्री माँ का पूजन सम्पन्न हुआ । २९ मई कृष्ण चतुर्थी तक श्री श्री माँ के जन्मोत्सव का कार्यक्रम चलता रहा । विभिन्न प्रान्तों से भक्तों का समागम होता रहा । २३ मई से विशेष कार्यक्रम प्रारम्भ हुए । जिसके अन्तर्गत आचार्य स्वामी श्री हरगोविन्द जी की रासलीला भी थी । २६ मई वैशाखी पूर्णिमा को प्रतिवर्ष की भाँति १०८ कुमारियों का भोजन सम्पन्न हुआ । २९ मई रात्रि को तिथि पूजा की महत्वपूर्ण घड़ी थी । आनन्द ज्योति पीठम् का प्रांगण ठसाठस भरा था । रात्रि के अन्तिम प्रहर में श्री श्री माँ का महापूजन प्रारम्भ हुआ । इसी पूजा में एक कुमारी का विशेष पूजन माँ की पूजा के साथ ही किया जाता है । इस वर्ष भोपाल की कु. पद्मा शुक्ला की ओर से उक्त कुमारी पूजन का आयोजन किया गया था ।

प्रतिवर्ष की भाँति महात्माओं का प्रवचन एवं भण्डारा हुआ । पूजनोपरान्त भक्तजनों को गर्भ गृह में प्रवेश कर वेदिका का स्पर्श कर प्रणाम करने दिया जाता है । प्रणाम के बाद वेदिका का महाभिषेक व पूजन होता है । दोपहर के बारह बज जाते हैं ।

३० मई को अखण्ड नामयज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसकी समाप्ति १ जून सन्ध्या को हुई ।

*　　　　*　　　　*

माँ आनन्दमयी चैरिटेबल डिस्पेन्सरी, कनखल –

५ अप्रैल २००२ को इस डिस्पेन्सरी में ३१०६ लोगों को हेपाटाईटिस-बी टीकाकरण शिविर द्वारा टीका लगाया गया । इस अवसर पर डॉ. जे. एस. पाठक, डॉ. सञ्जय शाह, डॉ. समर चौधरी, डॉ. पी. के. दास, डॉ. सुधीर अग्रवाल, डॉ. के. एस. गम्भीर, डॉ. नीलू घोष एवं डॉ. सत्पाल तोमर के तत्त्वावधान में यह शिविर आयोजित किया गया था । पुनः ६ मई को इस शिविर का आयोजन किया गया था । ६ अक्टूबर को पुनः उक्त शिविर का आयोजन किया जायेगा ।

*　　　　*　　　　*

माता आनन्दमयी चिकित्सालय, वाराणसी –

२३ जून २००२ को वाराणसी रोटरी व लायन्स क्लब के सहयोग से माता आनन्दमयी चिकित्सालय की ओर से सेवा का एक अनूठा तरीका अपनाया गया । वह है **"श्री श्री माँ आनन्दमयी गंगा एम्बुलेंस सेवा "** । स्थल मार्ग पर तो मोबाईल एम्बुलेन्स जन सेवा में तत्पर रहते हैं । यह जल मार्ग पर घाट किनारे पड़े हुए मुमुर्षु रोगियों की सेवा का पहला अवसर है । एक वजरे

पर चिकित्सकों का समूह सभी चिकित्सा सामग्री लेकर उपस्थित था । तथा गंगा किनारे आवश्यक चिकित्सा रोगियों को प्रदान की । बजरे के साथ मोटर बोट भी थी । चूँकि यह प्रारम्भ है अत: फिलहाल प्रतिमाह निश्चित दिनांक पर यह सेवा प्रदान की जायगी ।

माता आनन्दमयी घाट से माँ आनन्दमयी कन्यापीठ की ब्रह्मचारिणियों के वेदपाठ एवं शंख ध्वनि के माध्यम यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया ।

चिकित्सक दिवस १ जुलाई २००२ को रोटरी क्लब की ओर से अस्पताल में विशिष्ट चिकित्सकों का सम्मान का आयोजन किया गया था । वाराणसी सेन्ट्रल रोटरी क्लब की अध्यक्षता संभालने के प्रथम दिवस नवयुवक नव अध्यक्ष श्री विपुल शंकर पण्ड्या ने श्री श्री माँ के श्री चरणों में अपनी श्रद्धा सुमन अर्पण करने हेतु पहला कार्यक्रम यहीं से प्रारम्भ किया । इस अवसर पर रोटरी के गर्वनर श्री गुजराती जी भी उपस्थित थे ।

वाराणसी के जाने माने विद्वान् डॉ. भानुशंकर मेहता ने १ जुलाई को चिकित्सक दिवस के रूप में क्यों मनाया जाता है इस पर बिशेष प्रकाश डालते हुए चिकित्सा क्षेत्र के आदर्श चिकित्सक डॉ. विधान चन्द्र राय के महान् जीवन पर आलोकपात किया जिन्होने चिकित्सक होते हुए पश्चिम बंगाल के मुख्य मन्त्री का पद संभाला था पर अपनी रोगी सेवा रूपी कार्य को न छोड़ा था । १ जुलाई इस महान् चिकित्सक का जन्मदिन एवं स्वर्गवास दोनों का ही दिन है । अत: यह दिन भारत सरकार की सूची में चिकित्सक दिवस के रूप में जाना जाता है ।

* * *

वाराणसी स्थित रत्ना प्रेस ऑफसेट्स लिमिटेड के शतवर्ष पूर्णता के अवसर पर ७ जुलाई को वाराणसी के प्रमुख संस्थान, महाबोधि सोसाइटी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, पूर्वांचल विश्वविद्यालय सहित माँ आनन्दमयी आश्रम को भी विशेष सम्मान से सम्मानित किया गया । इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डॉ. श्री विष्णुकान्त शास्त्री जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।



शोक संवाद

श्री फिरोज कामा :–

पूना के पुराने भक्त श्री फिरोज कामा यद्यपि पारसी थे । पर आप में श्री श्री माँ के प्रति एक अपूर्व वात्सल्य भाव था । पति-पत्नी दोनों ही माँ को शिशु रूप में देखते थे । आपका माँ के प्रति अगाध प्रेम देखते ही बनता था । माँ के पूना पधारते ही अपनी गाड़ी में माँ के लिये दूध लाना आपका विशेष कार्य था साथ ही शाम को माँ को आस-पास विविध स्थानों पर घुमाना उनका मुख्य कार्य था ।

श्री कामा जी डिफेन्स विभाग के उच्चपदस्थ अधिकारी थे । आप एक दृढ़ चरित्र, अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व के धनी थे । सन् १९६१ से फाल्गुन पूर्णिमा होली के दिन आपने पूना आश्रम में नाम संकीर्तन करवाना प्रारम्भ किया था । आपने आश्रम के सचिव के रूप में अनेक वर्ष सेवा की है । श्रीमती कामा का निधन १९८५ में ही हो गयी था । धन्य है श्री कामा परिवार जिन्होंने श्री श्री माँ के चरणों में अपने को न्योछावर कर दिया था ।

८ दिसम्बर, २००१ को श्री कामाजी ने माँ के श्री चरणों में सदा के लिये विश्राम ग्रहण किया ।

श्री उमा शंकर श्रीवास्तव :–

प्रायः सत्तर के दशक से वाराणसी स्थित अन्नपूर्णा मन्दिर में एक वयो वृद्ध सज्जन प्रतिदिन शीत ग्रीष्म, वर्षा की परवाह न करते हुए प्रातः नौ बजे प्रणाम करने आते थे । एक दो वर्षों के उपरान्त एक नन्ही सी बालिका को भी साथ लाते थे । जो कि आपकी दौहित्री ती । आप अलीगढ़ कालेज के प्रधानाचार्य थे । आपका व्यक्तित्व निरभिमान एवं गम्भीर था । बाहरी आडम्बर आपको छू भी नहीं गया था । हमारे आश्रम के संन्यासी स्वामी भागवतानन्दगिरि जी के पास आप सत्संग करने आते थे ।

आपके इस दृढ़ निष्ठ व्यक्तित्व से आश्रम के लोग प्रभावित हुये एवं आपको वाराणसी आश्रम का सचिव पद सौंपा । आपकी आश्रम सेवा मूक रूप से होती थी । आपने दीर्घ २५ वर्षों तक आश्रम सेवा को निभाया ।

आप काफी दिनों से अस्वस्थ थे । १६ मई, २००२ प्रातः ५ बजे माता आनन्दमयी अस्पताल में आपने सदा के लिये बाबा विश्वनाथ के चरणों में आश्रय ग्रहण किया ।

श्री श्री माँ के श्री चरणों में आपकी पारलौकिक आत्मा की चिरशान्ति के लिये प्रार्थना करते हैं ।



प्रकाशन-सूची

श्री श्री आनन्दमयी संघ द्वारा प्रकाशित श्री श्री माँ से सम्बन्धित हिन्दी भाषा में कुछ अमूल्य प्रकाशन संघ के प्रायः सभी शाखा आश्रमों में उपलब्ध हैं ।

१. आनन्दज्योति (शताब्दी स्मारिका)– यह एक उच्च कोटि का संस्करण है, जिसमें विभिन्न भाषाओं – संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में श्री श्री माँ की पवित्र जीवनानुक्रमणिका (१८९६ से १९८२), १०० अमूल्य वाणियों एवं श्री श्री माँ के विभिन्न आश्रम एवं संस्थाओं का इतिहास, साथ ही स्वनामधन्य विद्वानों के लेख, श्रद्धाञ्जलि सहित श्री श्री माँ के कतिपय मूल्यवान चित्रों का संकलन है । अति उत्तम कागज पर छपा है । मूल्य रु. १००/- केवल हिन्दी खंड – मूल्य रु. ३०/-

२. श्री श्री माँ आनन्दमयी– परम श्रद्धेया दीदी गुरुप्रिया द्वारा लिखित श्री श्री माँ की अपूर्व लीला कहानी । २० भागों में सम्पूर्ण । प्रथम भाग पुनर्मुद्रित । पेपर बैक, मूल्य रु. ४०/-

३. मातृ दर्शन– श्रद्धेय ज्योतिष चन्द्र राय (भाईजी) द्वारा मूल बंगला में लिखित श्री श्री माँ के ऊपर अतुलनीय पुस्तक । हिन्दी संस्करण, पेपर बैक, मूल्य रु. २५/-

४. माँ आनन्दमयी– डॉ. पन्नालाल, आई. सी.एस. (रिटायर्ड) द्वारा लिखित श्री श्री माँ का अपूर्व जीवन चरित । पेपर बैक, मूल्य रु. ३०/-

५. सद्वाणी– हिन्दी में अनूदित श्री श्री माँ की मूल्यवान वाणियों का संग्रह । श्री ज्योतिषचन्द्र राय द्वारा संकलित । पेपर बैक, मूल्य रु. १५ ।

६. माँ आनन्दमयी दिव्यालोक वार्ता– ब्र. गुणीता द्वारा लिखित श्री श्री माँ की जीवन-कथा का संक्षिप्त चित्रण तथा शतवाणी । पेपर बैक, मूल्य १०/-



● जयजयमाँ ॐमाँ जयजयमाँ ●

"हरि कथा ही कथा और सब बृथा व्यथा।"

—श्री श्री माँ



श्री श्री माँ के श्री चरणों में गुप्ता परिवार
की तरफ से शत शत नमन।

श्रीचन्दभान गुप्ता
श्रीमती शकुन्तला गुप्ता

श्री भारत भूषण गुप्ता
श्रीमती साधना गुप्ता
श्री चेतन गुप्ता
श्री हर्ष गुप्ता

श्री राजेश गुप्ता
श्रीमती अनिता गुप्ता
श्री नितिन गुप्ता
श्री कार्तिक गुप्ता

125 विवेकानन्दपुरी, सरायरोहिला, दिल्ली-110007

Res. 011-3623348, Res. 011-3541814
Off . 011-7281330, Off. 011-5631628

❈ Branch Ashrams ❈

15. NEW DELHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kalkaji, New Delhi-110019 (Tel : 011-6826813)

16. PUNE : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Ganesh Khind Road, Pune-411007, (Tel : 020-5537835)

17. PURI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram.
Swargadwar, Puri-752001, Orissa.

18. RAJGIR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Rajgir, Nalanda-803116, Bihar (Tel : 06112-55362)

19. RANCHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Main Road,
P.O. Ranchi-834001, Bihar (Tel : 0651-312082)

20. TARAPEETH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Chandipur-Tarapeeth, Birbhum-731233, W.B.

21. UTTARKASHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kali Mandir, P.O. Uttarkashi-249193.

22. VARANASI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram.
Bhadaini, Varanasi-221001, U.P.
(Tel : 0542-310054+311794)

23. VINDHYACHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ashtabhuja Hill,
P.O. Vindhyachal, Mirzapur-231307, (Tel : 05442-42343)

24. VRINDAVAN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Vrindavan, Mathura-281121 U.P. (Tel: 0565-442024)

IN BANGLADESH :

1. DHAKA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
14, Siddheshwari Lane, Dhaka-17 (Tel : 405266)

2. KHEORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Kheora, Via-Kasba, Brahmanbaria.



REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97



रत्ना ऑफसेट्स लिमिटेड कमच्छा, वाराणसी, फोन–३९२८२०

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता



VOL.-6 OCTOBER, 2002 NO. 4

SHREE SHREE ANANDAMAYEE SANGHA

❄ Branch Ashrams ❄

1. AGARPARA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram. P. O. Kamarhaiti Calcutta-700058 (Tel : 5531208)
2. AGARTALA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Palace Compound P.O. Agartala-799001. West Tripura (Tel : 0381-208618)
3. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Patal Devi, P.O. Almora-263602, (Tel : 05962-33120)
4. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Dhaul-China, Almora-263881, (Tel : 05962-62013)
5. BHIMPURA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhimpura, P.O. Chandod, Baroda-391105, (Tel : 02663-33208)
6. BHOPAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Bairagarh, Bhopal-462030, M.P. (Tel : 0755-521227)
7. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kishenpur, P.O. Rajpur, Dehradun-248009 (Phone : 0135-734271) U.P. (Phone: 684271)
8. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalyanvan, 176, Rajpur Road, P.O. Rajpur, Dehradun-248009, (Phone : 0135-734471)
9. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram. P.O. Raipur Ordnance Factory, Dehradun-248010
10. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, 47/A Jakhan, P.O. Rajpur, Dehradun,
11. JAMSHEDPUR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Bhatia Park, Kadma, Jamshedpur-831005, Bihar
12. KANKHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O.Kankhal, Hardwar-249408, (Tel : 0133-426575)
13. KEDARNATH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Himlok, P.O. Kedarnath, Chamoli-246445,
14. NAIMISHARANYA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Puran Mandir, P.O. Naimisharanya, Sitapur-261402, U.P. (Tel : 05865-51369)

माँ आनन्दमयी

अमृतवार्ता

श्रीश्री माँ आनन्दमयी के दिव्यजीवन
तथा
दिव्यवाणी की वाहिका त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष–६ अक्टूबर २००२ सं.–४





वार्षिक चंदा (डाकव्यय सहित)
भारत में – ६० रुपये
विदेशों में – १२ डॉलर/या ४५० रुपये
एक प्रति – २०/- रुपये

साधारण नियम

यह त्रैमासिक पत्रिका चार पृथक भाषा–हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी में जनवरी अप्रैल जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होती है। वर्ष का प्रारम्भ जनवरी से होता है।

पत्रिका में मुख्यतया श्री श्री माँ पर आधारित लेखों को ही प्रधानता दी जाती है। इनके अतिरिक्त आध्यात्म पर आधारित हृदयस्पर्शी लेख, किसी भी देश तथा किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के महापुरुषों की उपदेशात्मक शिक्षावलियों का भी पत्रिका में स्वागत है।

जो भक्तगण माँ के सम्पर्क में आये हैं वे एकान्त व्यक्तिगत अनुभवों को छोड़कर ऐसे अनुभवों को आकलित कर सकते है जो कि श्री श्री माँ के लौकिक व्यवहार के प्रति आलोकपात करने वाले हों।

सभी लेख फुलस्केप कागज के एक पृष्ठ पर टंकित या स्पष्ट लिखित होने चाहिये। लेखों की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। मनोनीत न होने पर लेखों को वापस भेजना कार्यालय के लिए असुविधाजनक है। सभी लेख सम्पादक के नाम भेजें।

अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम के "Shree Shree Anandamayee Sangha—Publication A/C".नाम पर भेजें।

पत्रिका सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्रादि व्यवहार तथा वार्षिक चंदा भेजने का पता :

कार्यकारी सम्पादक, "माँ आनन्दमयी - अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी -२२१००१

पत्रिका में विज्ञापन देने का नियम :–

सम्पूर्ण पृष्ठ – २०००/- पूरे वर्ष के लिये
आधा पृष्ठ – १०००/- पूरे वर्ष के लिये

अग्रिम शुल्क के साथ विज्ञापन का विषय (Matter) उपर लिखित पते पर भेजें।

स्वामी श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री पानु ब्रह्मचारी द्वारा श्री श्री आनन्दमयी संघ, भदैनी, वाराणसी–२२१००१ (उ. प्र.) से प्रकाशित तथा रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी. २१/४२ कमच्छा, वाराणसी-१० (उ. प्र.) से मुद्रित। सम्पादक–श्री पानु ब्रह्मचारी।

विषय-सूची

●

आवश्यक सूचना

सभी ग्राहकों को सूचित किया जा रहा है कि वर्तमान संख्या ही २००२ सन् की अन्तिम संख्या इसलिये जनवरी, २००३ की संख्या छपाई के पूर्व ही वर्ष २००३ की वार्षिक चन्दा अवश्य भेजने का कष्ट करें।

धन्यवाद !

— श्री पानु ब्रह्मचारी
कार्यकरी सम्पादक

विशेष सूचना

सभी भक्तों को व पाठकों को सूचित किया जाता है कि जनवरी २००३ अमृतवार्ता का अंक श्री श्री आनन्दमयी संघ के प्रधान सचिव स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी के प्रति विशेष श्रद्धाञ्जलि का अंक के रूप में प्रकाशित करने का विचार है ।

अतः सभी से निवेदन है कि वे पूज्य स्वामीजी के साथ अपने अनुभव, संस्मरण एवं चित्रादि अवश्य भेजने का कष्ट करें। स्वामीजी की जीवन की घटनाओं का भी सादर आमन्त्रण है।

नवम्बर महीने के अन्तिम सप्ताह पर्यन्त यह "अमृतवार्ता" कार्यालय में अवश्य प्रेषित करें। हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती किसी भी भाषा में भेजा जा सकता।

१ अक्टूबर, २००२

श्री पानु ब्रह्मचारी
कार्यकारी सम्पादक, "अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी–२२१००१



मातृ-वाणी

मन त्राण होने के लिये, मन्त्र रूपी भगवान मिल गया। हर समय उनका संग करो। गुरु ने अक्षर रूपी भगवान् दे दिया। उनका संग करो।

* * *

चौबीस घंटे लगे रहना, जप, ध्यान, पाठ-कीर्तन, सब रस सूख जाये। खाने का, पहनने का, बोलने का, मरुभूमि हो जाय, फिर प्यासे की तरह पुकारना। फिर वर्षा, शान्ति, आँख से पानी, मन नरम हो जायगा, अभिमान चला जायगा।

* * *

भगवान् में सच्चा दिल लगे, अपने आप सारी सफाई हो जायगी। और हो ही जाता है।

* * *

तुम तुम तुम ही ब्रह्म हो ऐसा कह सको तो उनको प्रकट होना पड़ेगा। तुम रहे वह नहीं रहता। वह रहे तुम नहीं रहता। कुछ रहे वह नहीं रहते। कुछ ना रहे, वह रहते हैं।

* * *

भक्ति रूप, ज्ञान रूप वही हैं—भक्ति माने असली प्रेम-जैसे जल बर्फ, जल में क्या है बर्फ ही है। जहाँ श्रद्धा भक्ति रहेगी - वास्तविक ज्ञान से भक्ति। जहाँ पूर्ण ज्ञान वहाँ परम भक्ति- और जहाँ पूर्ण प्रेम भक्ति वहाँ पूर्ण अखण्ड ज्ञान।

* * *

यात्री उल्टा-पुल्टा रास्ते से चले तो भी मिल जायगा। भाई कहाँ जा रहे हो ? वे ही खुद रास्ता दिखा कर ले जाते हैं। असली उसी लक्ष्य से निकले।

* * *

भले रूप में तुम - बुरे रूप में तुम - जो बन्धन में है वही जीव, जो गति वही जगत और जहां गति और जगत की बात नहीं वहीं आत्मा। लक्ष्य माने वही। एक ब्रह्म द्वितीयो नास्ति।

* * *

प्रश्न – मौन की महिमा क्या है ?

माँ – मन ऐसा लगता है वहाँ छोड़ा नहीं जा सकता। मन से ही सुख दुख मानते हैं ना। अगर मौन ठीक-ठीक हो – ऐसा मौन रहता है। मन को अमन होने के लिये यह मौन, वाक् संयम, पूरा मौन। ऐसा मौन हो सके, इसके लिये कोशिश करना।

* * *

प्रश्न – गुरु कैसे ढूँढें और कहाँ ढूँढें ?

माँ – गुरु को ढूँढ़ना मन में आता है । गुरु को पाना । तुम को पास करना पड़ेगा एम. ए., बी. ए. । जो पढ़ेगा खुद ढूँढ़ लेता है । वह जो असली गुरु है – तुम्हारे अन्दर ही बैठा है । उन अन्तर गुरु के प्रकट होने के लिये बाहर के गुरु की चाह अन्दर से होती है । भगवान् तो रूप में भी वही हैं अरूप में भी हैं । वह रूप में प्रकट होकर आ जायगा । ध्रुव की कथा पढ़ो । पता लगेगा कैसे गुरु मिलेगा ।

* * *

सत्य कर्म का फल लेना चाहिये, जो क्रिया करे सत्य गुण, नित्य शुद्ध मुक्त तुम ही । वही तो स्वयं नित्य प्रकाश । कुछ करने से कुछ फल होता है । क्रिया बिना नहीं रह सकते हो तो सत्य क्रिया करो । मैं कौन हूँ -- इस रास्ते को खोलने के लिये – भगवत् कर्म जो है – स्वयं प्रकाश के लिये रास्ता खोलना होगा । यह रास्ता सबको लेना चाहिये अपने को पाने के लिये ।

* * *

किसी को चक्कर आया और वह देख रहा है कि सारी पृथ्वी घूम रही है । सारी दुनिया चक्कर खा रही है । अपनी बुद्धि घूमेगी चक्कर जरूर देखेगा । अपनी स्थिति ही जगत् । अपने में जो स्थिति है वही देखेगा ।

* * *

भगवान् अन्तर के प्राण को चाहते हैं, और कुछ चाहते नहीं । सहज पथ गुरु उपदेश पालन ।

* * *

●

श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग

—स्व. अमूल्य कुमार दत्त गुप्त

देहत्याग के बाद स्वामी अखण्डानन्दजी को मानसरोवर के तट पर क्यों देखा गया था

२५ भाद्र बुधवार, १०.९.५२

आज अखण्डानन्द स्वामीजी का तिरोधान उत्सव है। प्रातःकाल पाठ के बाद स्वामीजी को कौन सी गति प्राप्त हुई थी उस पर चर्चा छिड़ी। माताजी ने पहले जो घटना सुनायी थी उसकी पुनरावृत्ति करती हुई बोलीं "प्रश्न उठ सकता है कि स्वामीजी को इस शरीर ने कैलास में क्यों देखा ? उनको जो कैलास में देखा गया था उसका भी कारण है। जब हम सब कैलास गये थे उस समय मार्ग में स्वामीजी की हालत काफी खराब हुई थी। दुर्गम मार्ग के कारण उन्हें साँस की तकलीफ तो थी ही इसके अलावा हिचकियाँ भी आ रही थीं। मानसरोवर के निकट जब तम्बू लगाया गया था तब भी स्वामीजी को हिचकियाँ आ रही थीं। मानसरोवर से कैलास का थोड़ा सा अंश दिखता है। उस समय स्वामीजी का भाव जो लक्ष्य किया गया था वह इस प्रकार का था। कैलास तो आये ही हैं। अब यदि माँ की गोद में गणेश जी के जैसे होकर यदि शरीर छूट भी जाय तो उसमें हानि ही क्या है ? मानसरोवर के तट पर माँ की गोद में गणेश जी की तरह निश्चिन्त होकर देहत्याग की भावना उठी थी अतः उनकी मृत्यु के उपरान्त उनको मानसरोवर में गणेश की मूर्ति में देखा गया था। मनुष्य जो भी सोचता है उसी का फल रह जाता है।

१५ आश्विन, बुधवार, १.१०.५२

आज दून एक्सप्रेस से हरिबाबा और अवधूत जी के साथ माताजी कोलकाता रवाना हुईं। कोलकाता से जगन्नाथ पुरी होती हुई माताजी दक्षिण भ्रमण को जायेंगी। हरिबाबा के आग्रह से ही इस यात्रा का आयोजन किया गया था।

भादों की २७ तारीख अर्थात् १२.९.५२ को माताजी अवधूत जी के साथ विन्ध्याचल गयी थीं। वहाँ पर छः दिन रहकर पुनः वाराणसी लौट आयीं। काशी में प्रायः छः दिन रहकर माता जी इलाहाबाद चली गयीं। काशी आश्रम एवं कन्यापीठ के प्रायः सभी लोग माताजी के साथ इलाहाबाद गये थे। इलाहाबाद के भक्तों ने वहाँ दुर्गापूजा का आयोजन किया था, अतः माताजी एवं भक्तगणों को इसी उपलक्ष में वहाँ निमन्त्रित किया था। जगह-जगह से भक्तगण वहाँ उपस्थित हुए थे। सोलन के राजा साहब, टिहिरी की राजमाता, वृन्दावन से अपने भक्तों के साथ पूज्य हरिबाबा जी, कलकत्ते एवं अन्यान्य स्थानों से भक्तगण वहाँ गये थे। सुनने में आया इलाहाबाद के भक्तों की

सेवा से सभी विशेष आनन्दित हुए हैं । सेवक सेविकाओं में श्रीमान् सुबोध एवं बीथू की प्रशंसा ही विशेष रूप से सुनने में आयी ।

दादामहाशय का प्रकट होकर दुर्गापूजा के सम्बन्ध में निर्देश देना –

माताजी को उपलक्ष्य रखकर जब जहाँ दुर्गापूजा होती है साधारणतः काशी के विशुदादा (श्रीयुत विश्वेश्वर चक्रवर्ती) करते हैं । यह माताजी के निर्देशानुसार ही होता है । इलाहाबाद की दुर्गापूजा वृन्दावन के श्रीयुत योगेन्द्र काव्यतीर्थ महाशय ने किया है । विशुदादा ने केवल तन्त्रधार का कार्य किया । इस परिवर्तन का कारण आज माताजी ने प्रकट किया । माताजी ने कहा, "एकदिन देखा कि एक बड़ा उज्ज्वल बादल घनीभूत होकर तुमलोगों के दादामहाशय (माताजी के पिता) के आकार को धारण कर इस शरीर से बोला, "इस बार की दुर्गापूजा योगेन दादा करें ।" विशु से इसबार पूजा न कराकर योगेन दादा से पूजा करवाने का कारण बताने पर इस शरीर ने दीदी (गुरुप्रिया) से कहा, योगेन दादा से पत्र द्वारा पता करो उन्हें दुर्गापूजा करने का अभ्यास है या नहीं ? दीदी ने ऐसा ही किया । जवाब में योगेनबाबा ने कहा कि इस शरीर की उपस्थिति में उसने पूजा की है और हमने यह भी देखा है कि विशु एवं योगेनबाबा ने मिलकर भली भाँति पूजा की है । आज योगेनबाबा ने कहा, अभी तक उन्होंने इक्कीस दुर्गापूजा की है ।

मैं – माताजी आपने यदि अपने ख्याल से योगेनदादा को इस बार पूजा करने को कहती तो उसका मतलब हम एक तरह समझ लेते । पर ऐसा न करके आपने दादामहाशय को खड़ा कर दिया, जो आपके साथ सर्वतो रूपेण विलीन हो गये हैं ।

माताजी– (हँसकर) तुमलोगों के दादामहाशय ही कौन हैं ? वे ही तो ।

श्री श्री माँ की साधना की विचित्रता

माताजी की साधना के बारे में आज भी माताजी के साथ बातचीत हुई । इसके पहले भी उक्त सम्बन्ध में माताजी के साथ काफी चर्चा हुई थी । माताजी के विन्ध्याचल जाने से पहले डॉ. पन्नालाल ने एकदिन माताजी से पूछा था साधन अवस्था में माताजी क्या ध्यान करती थीं ? जवाब में माताजी ने कहा था उनकी साधन अवस्था और कुछ नहीं है, अपने को लेकर केवल मात्र एक खेल । इस जवाब से यद्यपि डॉ. पन्नालाल सन्तुष्ट हुए थे पर हमलोग सन्तुष्ट नहीं हो पाये थे । इसीलिए मैंने एक दिन माताजी से कहा, "माताजी, यदि यह मान भी लिया जाय कि आपके श्री शरीर में जो भी साधना के खेल हुए हैं, वह केवल आपके ख्याल के कारण ही हुए हैं, फिर भी यह प्रश्न रह जाता है कि उक्त साधना का खेल जब चल रहा था तब तो आप एक अज्ञान का आवरण लेकर साधना कर रही थीं । आपको तो ध्यान भी करना पड़ा होगा । आपने किसका ध्यान किया था इसी को डॉ. पन्नालाल ने आपसे पूछा था । इस प्रश्न पर माताजी ने कहा था, इस शरीर ने जो ध्यान किया है तुम सोचते हो, इस शरीर ने वही ध्यान किया है । इस शरीर ने किसी एक मात्र पथ को लेकर साधना नहीं की है अपितु इस शरीर का साधना का खेल सभी पथों पर

हुआ है । ऋषियों ने अब तक जितनी भी साधना की धाराओं का उल्लेख किया है उन सबको ही घूम फिर कर देखा गया है । शरीर में जैसे नाम साधना की धारा दिखाई पड़ी है, उसी प्रकार आसन हठयोग आदि धारा भी प्रकाशित हुई है । इस प्रकार भिन्न भिन्न मार्गों की साधनायें इस शरीर पर खेल कर गयी हैं । यह सभी साधना तथा किसी भी एक अवस्था को पाने में जहाँ लोगों को दो तीन जन्म लग सकते हैं, वहीं पर इस शरीर में वह क्षण भर में हो गया है । जब ऐसी अवस्था है तब कैसे कहा जाय कि साधन अवस्था में इस शरीर ने क्या ध्यान किया और क्या ध्यान नहीं किया । अतः तुमलोगों से कह रही थी कि इस शरीर ने जो ध्यान किया है तुमलोग सोचते हो इस शरीर ने वही ध्यान किया है । और इस शरीर का साधना का खेल जो हुआ है वह तो इस शरीर के लिये नहीं । यह तो तुमलोगों के ही प्रयोजन (जरूरत) के लिये हुआ है ।

यह सुनकर मैने प्रश्न किया था, "हमलोगों के प्रयोजन (जरूरत) पर आपका साधना का खेल कैसे हुआ ?" उक्त समय स्वामी परमानन्द उपस्थित थे । उन्होंने कहा था, "माताजी के श्री शरीर में यदि साधना की यह सब अवस्थायें प्रकाशित नहीं होतीं तो आपलोग माताजी की बातों पर कैसे आस्था स्थापन करते ?

माताजी ने भी कहा, "तुमलोग जब साधना की किसी भी अवस्था की चर्चा करते हो तो उसे सुनकर यह शरीर भी कहता है कि उक्त अवस्था इस शरीर के भीतर से होकर गुजरी है अतः यह शरीर समझ सकता है और कह सकता है कि यह सब क्या है । केवल इतना ही नहीं, साधना की किसी भी धारा के सम्बन्ध में यदि कुछ कहा जाता है तो उक्त धारा में कैसी अवस्था होती है वह भी यह शरीर विस्तार से कह सकता है । कह सकते हो–साधना तो अनन्त है, यह शरीर साधना की सभी धाराओं की बात कैसे कह सकता है । साधना अनन्त है तथा साधना की अनेक धारायें जो वर्तमान समय में लुप्त हो चुकी हैं यह भी सत्य है । पर साधना करते करते चरम लक्ष्य पर पहुँचा जाय तो वहां सभी कुछ मिल सकता है । जो था, है और होगा वह सब कुछ यहाँ नित्य वर्तमान है । यह तो हुई एक तरह की बात फिर चलते मार्ग पर भी साधना का अनन्तत्व प्रकाशित हो सकता है । रेलगाड़ी पर चलते-चलते किसी जंक्शन पर पहुँचने पर वहाँ से जिस प्रकार विभिन्न रेलमार्गों का परिचय मिलता है, उसी प्रकार साधनाराज्य में भी एक स्थिति है जिसके प्राप्त होने पर भिन्न भिन्न धाराओं का भी परिचय प्राप्त होता है । साधना में ऐसी अवस्था भी है जब एक ही पथ (रास्ता) पर चलते-चलते दूसरे-दूसरे पथ का परिचय मिलता है । कभी नहीं भी मिलता है । इसीलिए देखा जाता है कि एक पथ का साधक दूसरे पथ के साधक को पहचान नहीं सकता । साधन पथ पर चलते चलते विभिन्न धाम एवं लोक-लोकोत्तर के साथ परिचित हुआ जा सकता है । सभी का पथ (मार्ग) हीं तुम्हारा (मार्ग) है एवं तुम्हारा पथ ही सभी का पथ है यह प्रकाश होना ही साधना का चरम लक्ष्य है । जब तक यह नहीं होता, तब तक निर्द्वन्द्व अवस्था कहाँ ?

मैं – ऐसी साधना भी है जिसका अभ्यास करने पर दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है, जैसे तान्त्रिक साधना का वामाचार । अघोर पन्थियों की भी साधना है । जिसका प्रकाश आपमें होते नहीं देखा गया । इन सब साधनाओं की अभिज्ञता आपको कहाँ से मिली ?

माताजी– पहले जो कहा था, उसमें ही तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर है । इसके अलावा तुमने जिस साधना की बात कही वहाँ पुरुष शरीर में साधना करने पर स्त्री शरीर की आवश्यकता होती है, और स्त्री शरीर में साधना करने पर पुरुष शरीर की आवश्यकता होती है । प्रत्येक के भीतर स्त्री पुरुष यह दो भाव वर्तमान हैं । इसीलिये दक्षिण एवं वाम अंग को यथाक्रम से पुरुष एवं स्त्री कल्पना की जाती है । यह दो मिलकर ही एक है, और एक ही दो हैं । कुमारी को लेकर साधना की जो विधि ऋषि लोग दे गये हैं, वह जब ठीक-ठीक तरीके से होती है तब दोनों को ही परमस्थिति एक ही समय में मिलती है । साधारण स्त्री पुरुष का सम्बन्ध तो यहाँ नहीं है साथ ही जागतिक भाव में उस सम्बन्ध का फलाफल जो प्रकाशित होता है वह भी इस पथ में होने का नहीं है । जब एक में ही दो हैं, तब वामाचार साधना करने के लिये स्थूल भाव से दूसरों की सहायता लेनी ही पड़ेगी ऐसी भी कोई बात नहीं है । मांस मदिरा लेकर साधना की बात भी ऐसी ही है । तुमलोग तो देखते ही हो कि कोई कोई बकरे की बलि न चढ़ाकर कोहड़े (काशीपल) की बलि चढ़ाते हैं । बलि चढ़ाने का तात्पर्य यह है कि अपने भीतर के पशुत्व की बलि चढ़ाना । जब पशुत्व की बलि चढ़ जाती है तब ही वह पशुपति होता है । जो व्यक्ति बकरे की बलि को हिंसात्मक कार्य समझते हैं वे इस बकरे की बलि के विकल्प में कोहड़ा (काशीफल) अथवा औटाये गये दूध के मावे से बने हुए बकरे की बलि चढ़ाते हैं । अतः वीराचार साधना में जो मांस मदिरा की बात आती है उसका तात्पर्य दूसरे प्रकार का भी हो सकता है । एक के दूसरे के प्रति आसक्ति को देखते हुए यह शरीर अनेको बार कहता है, "तुम्हारी राक्षस वृत्ति क्यों है ? मांस के प्रति तुम्हारी लोलुपता क्यों है ?"

उक्त प्रसंग की चर्चा आज दोपहर को भी माताजी के साथ थोड़ी बहुत हुई थी । उस समय गोपी बाबू उपस्थित थे । दोपहर को गोपीबाबू के साथ मैंने भी आश्रम में प्रसाद पाया था । हमारी चर्चा प्रायः दोपहर के दो बजे तक चली, तीन बजे माताजी को रवाना होना है, अतः बाध्य होकर चर्चा बन्द करनी पड़ी । माताजी ने कहा, "सारी बात कही नहीं जा सकी । अत्यन्त संक्षेप में कुछ-कुछ कहा ।"

मैं – हमलोग इतना ही समझने का प्रयास करेंगे । बाद में आपके लौट आने पर इस बारे में और भी चर्चा होगी । अपराह्न के तीन बजे माताजी स्टेशन रवाना हो गयीं ।

(क्रमशः)

जगउद्धारकारिणी स्नेहमयी मातुआनन्दमयी

—सीतारानी 'मकड़ाई'

प्रणम हुँ ब्रह्ममयी मातु पद श्री पद रज़ तव पायी,
पंगु भी यह जनम अवधि के, सत चित पूजन धायी ।
भवतारिणी तव दया निरखत, नयनन सों निकसति धार
मूक भी जो अब करने चली, माँ वाणी के श्रृंगार ।
भववारिधि तारिणी । लभि शरण, रहूँ बिसरी तनु, धन धाम ।
निशि वासर मन-मधुप हे तुझपद, गुञ्जरि रहे अभिराम !



श्री गुरु (दीदी माँ) मुक्तानन्दगिरि ज़ी

कृष्ण उरधारिणी मातु जशोदे, शत शत तुम्हें प्रणाम,
मातृ श्री पद रहि सकूँ अकिंचन, निरवधि, निरभिमान ।।
पहाड़ी कज्जल मसीकरि, सिन्धुपात्र में घोल ।
कल्पवृक्ष की 'टहनी' 'लेखनी' कागज अवनी शौर ।
लिखे जो सर्वकाल शारदा, निगमागम भी मथी के,
तदपि तव गुण वरणि सकै नहिं, पार को पावै कहि के ।

२४/२५-७-२००२ ।



"श्री श्री माँ के द्वारा दीन का अन्न ग्रहण"

—स्वामी नारायणानन्द तीर्थ

श्री श्री माँ आज नारायण का प्रसाद ग्रहण करेंगी यह बात माँ के श्रीमुख से निकलते ही उदास और बुनि (माँ के पास रहने वाली कन्यायें - प्रथम कश्मीरी द्वितीय बंगाली दोनों ही अत्यन्त कम उम्र में माँ के पास आकर उनकी सेवा में समर्पित हैं । वर्तमान समय में प्रथम कन्या ने संन्यास ग्रहण किया एवं दूसरी ने माँ की उपस्थिति में कुछ वर्ष पूर्व वृन्दावन में शरीर त्याग दिया है ।) ने क्षणभर में आसन बिछा कर जमीन पर गंगाजल छिड़ककर माँ के लिए भोग की जगह कर दी है । गुरुप्रिया दीदी अपने हाथों से पवित्र गंगाजल से बना भोग ले आयीं । पल भर में माँ के सामने नाना प्रकार के व्यंजन आदि सजाये गये । माँ के आदेशानुसार मैंने नारायण के प्रसाद की थाली से थोड़ा सा प्रसाद लाकर माँ की चाँदी की थाली की एक ओर रखा । मुझे थोड़ा सा प्रसाद लाते देख माँ ने कहा "नारायण का इतना थोड़ा प्रसाद क्यों लाये ? थाली समेत पूरा प्रसाद ले आओ ।" मैंने अत्यन्त विनय से कहा "माँ" प्रसाद कितना लेते हैं ? देवता का प्रसाद तो कण मात्र ही लिया जाता है । इसे छोड़कर आपको प्रसाद लेने की क्या जरूरत । प्रसाद तो हमारी चित्त-शुद्धि के लिए है । आपका तो चित्त है नहीं जो उसकी शुद्धि करनी पड़ेगी । आपको प्रसाद की आवश्यकता नहीं है ।" सबके सामने उस प्रसाद को लाने में मेरा सिर लज्जा से कटा जा रहा था । मैंने मन ही मन प्रार्थना की हे धरित्री देवी आप द्विधा होइए मैं आप में प्रवेश कर जाऊँ । देवी धरित्री ने मेरी बात न सुनी । आखिर मुझे नारायण के प्रसाद की थाली माँ के सामने लानी ही पड़ी । इतना करके ही माँ नहीं रुकीं । उन्होंने मुझसे ही वह प्रसाद उनको खिला देने के लिए कहा । माँ काफी दिनों से अपने हाथों से भोजन नहीं करतीं एवं प्यास लगने पर एक गिलास पानी भी वे अपने हाथों से नहीं पीतीं । यह सब नियम माँ ने जानबूझ कर नहीं बनाये स्वतः ही अपने हाथों से खाने की क्रिया बन्द हो गई है । माँ का आदेश अलंघनीय है । वे मुख से जो निकालेंगी उसे पूरा कराये बिना नहीं छोड़ेंगी । थाली से जब मैं थोड़ा सा प्रसाद माँ के श्री मुख में देने जा रहा था माँ ने फिर से कहा "ठाकुर का प्रसाद इतना सा क्यों दे रहे हो ? बड़े बड़े कौर दो ।" आज माँ ने वही मोटे लाल चावल और भिण्डी की सब्जी का प्रसाद तृप्ति से ग्रहण किया । यदि मैं माँ को पूरा प्रसाद खिला देता तो माँ पूरा ही ग्रहण कर लेतीं । साधारणतः माँ बासमती चावल आदि द्वारा बनाया गया भोग थोड़ा सा ही ग्रहण करती हैं । लीलामयी माँ की इस करुणा से मेरी आँखें वाष्पाकुल हो गयीं । मैं माँ को और खिला नहीं सका । मैं उठ पड़ा और दरवाजे के पीछे खड़े होकर आँसू बहाने लगा । मुझे उठा देख गुरुप्रिया दीदी अपने बनाये हुए भोग से माँ को खिलाने लगीं । दीदी के हाथों से दो चार कौर ग्रहण कर माँ उठ पड़ीं ।

सहृदय पाठक पाठिकाओं के लिए यहाँ भिण्डी की सब्जी का प्रसंग उल्लेख न करने से यह प्रसंग अधूरा ही रह जायेगा । जिस समय की यह घटना है उस समय वाराणसी में श्री श्री माँ के आश्रम में तीन वर्ष व्यापी सावित्री महायज्ञ एक करोड़ आहुति का संकल्प लेकर प्रारम्भ हुआ था । प्रत्यह प्रातः सात बजे यज्ञारम्भ होता था एवं यज्ञ समाप्त होते होते दोपहर के बारह बज जाते थे । मैं अपना नित्य कर्म समाप्त कर यज्ञ में प्रातः सात बजे जाकर बैठता । मेरे यज्ञ में बैठने पर ही यज्ञ प्रारम्भ होता । इसीलिए मैं यथासमय यज्ञ में उपस्थित होने की कोशिश करता । ज्यादातर कभी भी विलम्ब न करने की ही कोशिश करता । माँ के काशी आश्रम में एक वृद्ध सज्जन रहते थे । आश्रम के सभी बाल वृद्ध युवा उन्हें "यज्ञेश्वर दा" कहकर पुकारते थे । उनका पूरा नाम था श्री यज्ञ भूषण मौलिक । वे एक परोपकारी सदाचारी निष्ठावान ब्राह्मण थे एवं अतिशय भले मानुष थे । आश्रम के सभी लोगों के लिए बाजार आदि से सामान लाने की सेवा वे बड़े आनन्द से करते थे । उनसे किसी प्रकार के काम की बात कहने में हमें संकोच नहीं होता था । वे एक सरकारी पेंशन प्राप्त व्यक्ति थे एवं कन्यापीठ के विशेष हितैषी थे । मैं यज्ञ में बैठने से पहले उनको कह देता था कि मेरे लिए क्या क्या लाना पड़ेगा । जिस दिन की घटना है उस दिन मेरे पूजा से उतरने के पहले ही यज्ञेश्वर दा किसी विशेष कारण से शीघ्र बाजार चले गये थे । इसीलिए मैं उनसे कह नहीं सका था कि मेरे लिए भिण्डी लाइयेगा । जब जो होने को होता है उसका संयोग इसी तरह होता है ।

इधर मेरे भण्डार में माँ भवानी बैठी थीं । लाल मोटा चावल और सेंधा नमक छोड़कर और कुछ भी नहीं था । यज्ञ करने जाते समय मन ही मन सोचा नारायण आज तुम्हारा भोग इसी से होगा । चावल और नमक छोड़ कुछ भी तो नहीं है । यज्ञ करके इस भरी दोपहरी में तो मैं सब्जी खरीदने नहीं जा सकूँगा । ठाकुर तुम आज यज्ञेश्वर दा को थोड़ी देर से बाजार नहीं भेज सके । ऐसा होने पर तो मैं उनको भिण्डी लाने के लिए कह सकता था । तुमने जब ऐसा नहीं किया तो तुमको नमक और भात ही खाना पड़ेगा । जैसा सोचा था मैंने वही किया । यज्ञ समाप्त कर मैं तरकारी लाने नहीं गया । रसोई बनाकर जैसे ही चावल की हण्डिया नीचे उतारीं वैसे ही रास्ते के पास किसी ने आवाज लगाई "बाबू भिण्डी लोगे ।" मैंने अपने दो मंजिल के कमरे के बाहर आकर पूछां "तुम्हारे पास और क्या है ?" उसने कहा "भिण्डी छोड़ और कुछ नहीं है ।" मैंने नीचे आकर देखा एक बुड्ढा आदमी डलिया में कुछ ताजी भिण्डी ले आया है । भिण्डियों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो अभी अभी पेड़ से तोड़कर लाया है । मैंने उस बुड्ढे से पूछा" इन भिण्डियों का क्या दाम लोगे ? उसने कहा "तीन पैसा" मैं और कुछ न कहकर तीन पैसा देकर भिण्डी खरीद लाया था । उसी भिण्डी से भिण्डी का साग बनाया था । यह है उस दिन के भिण्डी के साग की एक छोटी सी कहानी ।

यह घटना संसार में सभी के लिए अत्यन्त साधारण प्रतीत होगी कोई इसे काक तालीयवत् भी कह सकते हैं पर मेरे मानस-पट पर इस घटना की ऐसी अमिट छाप पडी है, जो किसी प्रकार से मिट नहीं सकती । माँ ने भी उस दिन दीन का सामान्य अन्न ग्रहण किया था । इस भरी दोपहरी में

कौन भिण्डी लेकर आया यह क्या सोचने का विषय नहीं है। एक अस्सी वर्ष का वृद्ध इतनी दूर से इस धूप में भिण्डी लेकर आ सकता है और मैं नारायण के लिए जाकर तरकारी न ला सका। इसे सेवापराध ही कहा जायगा। देव-सेवा में किसी प्रकार का आलस्य नहीं करना चाहिए।

मुझे लगाता है मुझे शिक्षा देने के निमित्त ही स्नेहमयी श्री श्री माँ की यह लीलावतारणा है। इस घटना के पहले या बाद में उन्होंने कभी कुछ मुझसे याचना करके नहीं खाया। यदि कृपा कर वे कभी इसका रहस्योद्घाटन करें तब ही इसका अर्थ समझ में आयेगा, अन्यथा यह रहस्य ही रह जायेगा।

इसी प्रकार की एक घटना सोलन में हुई थी। हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत सोलन नगर में बघाट नरेश श्री दुर्गा सिंह जी रहते थे। वे माँ के पुराने भक्त थे एवं अपनी इष्ट देवी के रूप में माँ की पूजा करते थे। माँ ने उनको योगीराज नाम दिया था। सभी मातृभक्त उन्हें योगी भाई के नाम से पुकारते थे। वर्तमान युग में उनके समान एक आस्तिक, स्वधर्मपरायण और निरभिमानी त्यागी राजा दिखाई नहीं पड़ते।

उन्होंने सोलन में एक बार श्री देवी भागवत का नवाह्न पारायण करवाया था। मूल संस्कृत पाठ करते थे काशी के वेदज्ञ पण्डित श्री अग्निष्वात्त शास्त्री एवं हिन्दी व्याख्या करते थे, शिमला सनातनधर्म कालेज के अध्यक्ष श्री दिवाकर शास्त्री एम. ए. महोदय। राजा दुर्गा सिंह जी के विशेष आग्रह से श्री श्री माँ इस अनुष्ठान के उपलक्ष में सोलन पधारी थीं। हम लोगों में से कई व्यक्तियों को माँ के साथ इस उपलक्ष में सोलन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। माँ प्रातः मूल पाठ एवं सायंकाल व्याख्या के सम्य उपस्थित रह कर सबका आनन्दवर्धन करती थीं। प्रत्यह श्रोताओं में से कोई न कोई श्री श्री माँ को एवं व्याख्याता को फल, फूल, माला और वस्त्रादि देता पर एक दिन देखा गया एक वृद्धा महिला ने माँ को प्रणाम कर एक पत्ते के दोने में थोड़ा सा जौ का सत्तू और एक डली गुड़ अत्यन्त श्रद्धा से माँ के चरणों में अर्पित किया। पहाड़ी अंचल में इस प्रकार के उपहार को भेंट कहते हैं। साधु संन्यासी या महात्माओं के पास अथवा पाठादि श्रवण करते समय खाली हाथ कोई नहीं जायेगा कुछ न कुछ अन्ततः एक फूल ही सही भेंट के रूप में जरूर ले जाते हैं। वृद्धा के सत्तू गुड़ देने के साथ ही साथ माँ ने उसे हटाकर रखने को कहा एवं उससे थोड़ा सा ग्रहण कर फिर दूसरी वस्तुओं को ग्रहण किया।

श्रीमद्भागवत में हम देखते हैं कि द्वारिकाधिपति भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने बाल सखा दरिद्र सुदामा ब्राह्मण के चावल जितने प्रेम से खाये थे उतने प्रेम से महालक्ष्मी स्वरूपिणी पटरानी रुक्मिणी के पक्वान्न नहीं खाये। विदुर पत्नी के केले के छिलकों को जिस आतुरता से ग्रहण किया था, सत्य भामा के मीठे फलों के प्रति वह आग्रह नहीं था। श्री भगवान का स्वभाव ही है, दीन का सामान्य अन्न अति अनुराग से स्वीकार करना। श्री श्री माँ ने अपना नाम बदला है, रूप बदला है, पर स्वभाव नहीं छोड़ा है! अतः बीच बीच में पकड़ में आ जाती हैं।

●

श्री श्री माँ आनन्दमयी-लीलाकथा

(अंग्रेजी से भाषान्तर–डॉ. कृष्णा बनर्जी)

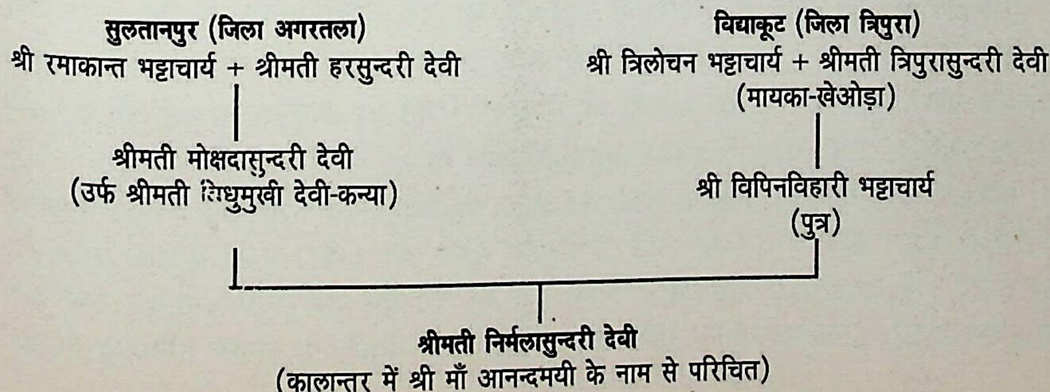
–डॉ. वीथिका मुखर्जी

श्री श्री माताजी की बाल्यलीला व उसकी पृष्ठभूमि

बीसवी सदी के अन्तिम चरण में पहुँचकर इस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों के प्रति जब मुड़ कर देखा, तो लगा कि उन दिनों अविभक्त बंगभूमि में तूफान आने के पहले की सी स्तब्धता थी, एक चुप्पी-सी थी । राजनीतिक उथलपुथल की भीषण आँधी जल्दी ही पूरे बंगदेश को झकझोर कर रख देने की प्रतीक्षा कर रही थी । उस आँधी के ताण्डव नर्तन के दौरान परम्परागत जीवन की जड़ें उखड़ गईं । सैनिक शासन के चलते नित नये आकस्मिक परिवर्तनों से साधारण जनता भयविह्वल, असुरक्षा की भावना से ग्रस्त, असहाय थी यह सब व और बहुत कुछ श्री श्री माँ के परिवारजनों ने एवं उनके भक्तों के परिवारजनों ने आगे चलके अपने जीवन में अनुभव किया । पर माँ के जन्म कालीन बंगाल के गाँवों कस्बों में सिर्फ शान्ति की सुषमा विराजती थी ।

बंगाल के गाँव उन दिनों प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण थे । खेतों में लहलहाती धान की सुनहली बालियाँ श्यामल शष्पशोभित चारणभूमि, यहाँ वहाँ विविध प्रकार के पुष्प, वृक्षों पर खिले नाना रंगों के सुगन्धित पुष्प, आम्रकुंज, कदलीकुंज एवं अन्य अनेक प्रकार के फलों के पेड़ अपनी-अपनी ऋतु में फलों का सम्भार वितरित करते थे । भूभाग को इतस्ततः चीरती हुई सर्पिल जल धाराएँ स्वच्छ आकाश की प्रगाढ़ नीलिमा को प्रतिबिम्बित करती थीं । दिगन्तविस्तृत मैदान, ऐश्वर्यशालिनी उदार प्रकृति व सहृदय पड़ोसी–वहाँ के लोग इन सब के आदी हो चुके थे ।

बंगाल के जिस भाग में श्री माँ का आविर्भाव हुआ व जहाँ उनका शैशव बीता, वह अब बांग्लादेश के अन्तर्गत है । अपने जन्मस्थान खेओड़ा ग्राम में मुख्यतः उनके प्रारम्भिक वर्ष बीते । इसके अलावा नानाजी के गाँव सुलतानपुर व पिता के आदिनिवास विद्याकूट में भी बीच-बीच में उनका अवस्थान हुआ । सुलतानपुर एवं विद्याकूट दोनों ही काफी बड़े, समृद्ध ग्राम थे । माँ के पितृकुल एवं मातृकुल का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया गया–



सुलतानपुर–श्री रमाकान्त भट्टाचार्य का निवास

उस जमाने में ब्राह्मण कुल में पैदा हुए प्रायः सभी भद्रजन त्यागमय, सात्त्विक जीवन के प्रति अपनी रुझान के कारण सब की श्रद्धा के पात्र हुआ करते थे। श्री रमाकान्त भट्टाचार्य महोदय, उनके भ्राता एवं पुत्रगण सुपण्डित व त्यागवैराग्यपूर्ण होने के कारण सब लोगों के श्रद्धा भक्ति के पात्र थे। उस परिवार के मुखियागण अगरतला के राजपरिवार के सभापण्डित के रूप में विख्यात थे। उनकी कुटिया जाति धर्म निर्विशेष रूप में सभी गाँववालों की मिलन स्थली थी।

घर का बाहरी कक्ष भिन्न-भिन्न कारणों से आये अतिथियों से प्रायः सदैव भरा रहता था। कोई किसी विषय में सलाह माँगने आता तो कोई धार्मिक अनुष्ठान आदि के बारे में पूछने आता; कोई अपनी समस्या का समाधान ढूँढ़ने आता, तो कुछ लोग केवल मित्रता के कारण कुशल पूछने चले आते।

कुटिया काफी बड़ी थी। उसके चारो तरफ बागबगीचे व झाड़िया थीं। बगीचों के उस पार दो पोखरे तथा फलों के बहुसंख्यक वृक्ष थे। खेतों की फसलें, बागों के फलफूल, जो कुछ संगृहीत होते, उन सबका अग्रभाग भगवान् की पूजा में समर्पित किया जाता था। गृहदेवता की नित्यपूजा का दैनिक जीवनचर्या नें सर्वप्रधान स्थान था। साल भर, बारहों महीने, तरह-तरह के धार्मिक कृत्य, पूजा इत्यादि, खूब धूमधाम के साथ अनुष्ठित होते थे। आश्विन महीने की दुर्गापूजा उनमें से सर्वाधिक गरिमासम्पन्न हुआ करती थी। यह पावन पर्व बंगालियों के मन में इस विश्वास को हर वर्ष फिर से उजागर करता है कि साल भर की प्रतीक्षा के अन्त में माँ दुर्गा अपने पतिगृह कैलास से तीन दिनों के लिये समतल की इस धरा पर उतर आती हैं। सम्पूर्ण बंगाल इस मधुमय त्यौहार की पूर्व प्रस्तुति में जुट जाता है–फलफूल, धूपदीप, संगीतवाद्य, तरह-तरह के पकवान आदि का सम्भार सजाता हुआ, अपने अपने सामर्थ्य के अनुसार।

सुलतानपुर में श्री श्री शारदीया दुर्गापूजा की प्रस्तुति काफी पहले शुरू हो जाती थी। शस्यों का भरपूर भंडारण होता था। महिलायें नारियल-चीनी की तरह तरह की मिठाइयाँ बनाने लगतीं थीं। धूप की सुगन्धभरी पवन-हिलोरें व "आगमनी" गानों के मधुर सुर जता देते थे कि माँ दुर्गा के आगमन में अब विलम्ब नहीं है।

दुर्गापूजा के तीन दिन श्री रमाकान्त भट्टाचार्य का गृह समूचे पड़ोस के लिये सार्वजनिक पूजास्थल बन जाता था। पर्याप्त मात्रा में भोग प्रसाद उपलब्ध हुआ करता था एवं सभी अभ्यागत जनों को सादर खिलाया जाता था। किसी को निमन्त्रण भेजने की आवश्यकता नहीं थी; उत्सव में सम्मिलित होने व प्रसाद ग्रहण में सबका समान अधिकार था।

परिवार के बच्चे नूतन वस्त्रों से सुसज्जित होकर खुशियाँ मनाते। जो थोड़े बड़े थे, वे बगीचों से विविध प्रकार के फूल चुन कर लाते और माला गूँथने लग जाते। सफेद व लाल चन्दन घिस कर तैयार रखा जाता था। ओसकणों से भीगी दूबों को चुन चुन कर गुच्छा बना कर रखा जाता था। इस प्रकार आबालवृद्धवनिता सभी मातृ-आराधना की तैयारी में सानन्द सम्मिलित हो जाते

थे । बचपन में माँ जब-जब त्योहारों पर अपने ननिहाल जाती थीं, यह सब कुछ उन्हें देखने को मिलता था । यूँ तो भारत के सभी पर्व-त्योहार धर्म के साथ जुड़े होते हैं, फिर भी किसी-किसी स्थान पर इन उत्सवों का आध्यात्मिक केन्द्र बिन्दु कुछ खास गम्भीरता के साथ स्पन्दित होता हुआ दिखता है । श्री श्री माँ कहा करती थीं कि उनके नानाजी के घर दुर्गापूजा पर एक अलौकिक वातावरण उत्पन्न होता था, लगता था कि भक्तों की पुकार माँ दुर्गा ने सचमुच सुन ली है ।

केवल दुर्गापूजा ही नहीं, बल्कि और सभी महत्त्वपूर्ण धार्मिक पर्व, यथायोग्य मर्यादा के साथ मनाये जाते थे जैसे महाशिवरात्रि, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, सरस्वती पूजा, लक्ष्मीपूजा, कालीपूजा, श्री रामनवमी आदि । इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस तरह की धार्मिक जीवनचर्या केवल बंगाल में ही सीमित नहीं थी । इस प्राचीन देश के अन्य प्रान्तों में भी ऐसे बहुतेरे जनपद अवश्य रहे होंगे जहाँ का वातावरण प्राचीन भारत के तपोवनों की याद दिलाते थे, जहाँ मनुष्य अपने प्रतिदिन के जीवन में सुनियंत्रित, परिचालित होते थे उपनिषद् की इस वाणी के द्वारा–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।

"ब्रह्माण्ड में जो कुछ अनित्य वस्तुएँ हैं, वे सभी परमेश्वर के द्वारा आवरणीय हैं । उत्तम रूप से त्याग के द्वारा (आत्मा का) पालन करो । किसी के धन के प्रति लोभ मत करो । अथवा (धनकी) आकाङ्क्षा मत करो । (कारण) धन आखिर किसका है ?" (स्वामी गम्भीरानन्द कृत अनुवाद)

●

वाराणसी-माहात्म्य

–दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती

[पूर्वानुवृत्ति]

भगवान शंकर कहते हैं कि सृष्टि के आरम्भ काल से लेकर जीव के जितने जन्म होते हैं उनमें मेरा भजन करने से थोड़ा थोड़ा पुण्य इकट्ठा हो जाता है । यदि कोई काशी में आकर बस गया और उसका शरीर यहीं छूटे तो समझना चाहिए कि यह सब मेरे भजन के द्वारा उत्पन्न होने वाले पुण्य का ही फल है । साधारण पुण्य से वाराणसी का निवास और वाराणसी में मरण प्राप्त नहीं हो सकता । इसके लिए उन्हें सदाशिव की शरण में जाना चाहिए उन्हीं के प्रसाद से काशी में मरने का सौभाग्य प्राप्त होता है ।

तीर्थानि सर्वाण्यपि मोक्षदानि श्रुतानिसर्वेष्वखिलेषु राजन् ।
वाराणसी प्राप्तिफलानि शीघ्रं कालेन चातो व्यवधानवन्ति ॥

हे राजन सब शास्त्रों में जितने मोक्ष देने वाले तीर्थ कहे गये हैं वे सब साक्षात् मोक्ष नहीं देते किन्तु उसे दूसरे जन्म में काशी पहुंचा देते हैं और वहां पहुंचकर जीव शरीर का परित्याग करता और मुक्त हो जाता है । अयोध्या, मथुरा आदि तीर्थो में मरने से मोक्ष मिलने में एक जन्म का व्यवधान पड़ता है । परन्तु काशी में मरते ही मुक्ति मिल जाती है । जन्म जन्मान्तर के सञ्चित पुण्य पुञ्ज की मूर्ति वाराणसी पाप विनाशिनी देवगणों को भी दुर्लभ सतत गंगा संगता संसार पाश्च्छेदिनी शिव पार्वती से युक्त त्रिभुवन से अतीत मोक्षजननी एवं सदा सर्वदा मुक्त पुरुष गणों से सेवित है । जिसको अन्यत्र निवास की प्रवृत्ति नहीं होती वही मनुष्य समस्त जन्तुओं की सहायभूंता सुकृतैक राशि वाराणसी से बाहर जाने का प्रयत्न नहीं करता और जो कोई इस वाराणसी का परित्याग नहीं करता वही संसार रोग से मुक्ति लाभ करता है । दूसरे नहीं । देवविहित कर्मों के आचरण अथवा योगाभ्यास किंवा दान और उग्र तपस्या आदि से भी वाराणसी धाम की प्राप्ति नहीं होती । केवल ब्राह्मण गण के आशीर्वाद अथवा विश्वनाथ के प्रसादमात्र से वह सुलभ हो सकता है । किसी स्थान में प्रचुर धन व्यय करके धर्मलाभ होता है और कहीं पर बहुतेरे दान भोगों के द्वारा अर्थ और काम की प्राप्ति भी हो सकती है । चाहे किसी स्थान में ये सब एक साथ हो जायँ परन्तु मोक्षपद की प्राप्ति जैसे वाराणसी पुरी में सुलभ है वैसी अन्यत्र कही भी सम्भव नहीं है

वाराणसी निविशतेन वसुन्धरायां तत्र स्थितिर्मखभुजां भुवने निवासः ।
तत्तीर्थयुक्तवपुषात्तएव मुक्तिः स्वर्गात् परं पदगुढेतु मुदेतु कीदृक ॥

"वाराणसी में निवास करने से पृथ्वी पर वहां उसकी स्थिति होती है जहां यज्ञकर्ता निवास करता है । यदि वाराणसी में शरीर छूट गया तो स्वर्ग से भी श्रेष्ठ मोक्षपद प्राप्त होता है ।" श्रुति-स्मृति पुराणादि के अनुशासनानुसार इस वाराणसी पुरी के समान पवित्र स्थान दूसरा नहीं है । अतएव इसी के शरणागत होना यही परम पुरुषार्थ है ।

जगत प्रसिद्ध जाबालि ऋषि ने कहा है हे आरुवे असी नदी इड़ा नाड़ी और वरुणा नदी पिंगला नाड़ी कही गयी है । इन्हीं दोनों के मध्य में वह अविमुक्त क्षेत्र काशी है । यही काशी सुषुम्ना नाड़ी है । इन्हीं तीनों नाड़ियों की यह वाराणसी है । इसी वाराणसी में समस्त जीवों के प्राण प्रयाण के समय भगवान विश्वेश्वर कान में तारक ब्रह्म का उपदेश देते हैं उसी से जीवगण ब्रह्मस्वरूप हो जाते हैं । ऐसा यह एक श्लोक है जिसे वेदवादी गण कहते है" ।

स होवाचेति जाबालिरारुणोऽसिरिडामता वरुणापिङ्गलनाड़ीतदन्तस्व विमुक्तक ।
सा सुषुम्ना परा नाड़ी त्रयं वाराणसी त्वसौ तदत्रोत्क्रमणे सर्वजन्तूनां हि श्रुतौ हरः ॥*

इस काशिका क्षेत्र में भगवान भूतभावन अन्तकाल में तारकमन्त्र का उपदेश देकर अविमुक्त क्षेत्र में स्थित जन्तुओं को मुक्ति देते हैं, इसमें सन्देह नहीं है । जो प्राणी वाराणसी में देहत्याग करता है अथवा अन्त में तारकब्रह्म के मन्त्र को पढ़ता है उसे एक जन्म में

वाराणस्यां मृतोवापि इदं वा ब्रह्‌ यः पठेत ।
एकैन जन्मना जन्तुर्मोक्षं च प्राप्नुयादिति ।

वाराणसी में मुक्तिमिल जाती है शिव जी कहते हैं कि गर्भवास जन्म जरा और मृत्युरूपी संसारसागर से मैं भक्तों को तार देता हूँ इसलिए मेरा नाम तारकेश्वर भी कहा गया है ।

गर्भ जन्म जरा मृत्यु संसार भव सागरात् ।
तारयामि यतो भक्तं तस्मात्तारोऽहमीरितः

वाराणसी क्षेत्र में सदाचार पालन अन्नदान और फिर क्षेत्र संन्यास द्वारा अपनी परमपद प्राप्ति की अभिलाषा पूर्ण करना विशेष प्रयोजनीय है । वाराणसी में वास करना और वहां सदनुष्ठान, भोजनदान यज्ञादि द्वारा अधिकाधिक परमार्थलाभ अनन्तकोटि गुणित फल प्रदान करता है । कलि में भगवान विश्वनाथ, वाराणसी पुरी, भागीरथी गंगा और दान विशेष रूप से उत्कर्षाधायक है ये कलि के पाप को समूल नष्ट करने वाले हैं । काशी रहस्य में वर्णन है कि नारद जी ने नरनारायण से प्रश्न किया कि कलिकाल में सर्वत्र भोग, राग, द्वेष, काम, क्रोध, शोक और मोह इनमें पड़े हुए मनुष्यों के उद्वार का क्या उपाय है ? नरनारायण बोले कि यद्यपि जो कुछ कहने जा रहा हूँ वह सब अति गोपनीय है फिर भी जगत कल्याणार्थ योग्य अधिकारी आपको कहा जाता है । इसलिए आपसे कहता हूँ वाराणसी नगरी सम्पूर्ण देवगण ब्रह्मा विष्णु महेश गणेश और सम्पूर्ण मुनि गण से

*. का. खं. ५-२५-२६ ।

सेवित है । सभी परमानन्द के अभिलाषी साधु इस पुरी में आते हैं । यह अपने प्रभाव से ही आनन्दवन नाम से विख्यात है इसे ही नारायणवास रुद्रावास और ब्रह्मावास नाम दिया गया है ।

वाराणसी से अन्यान्य तीर्थ, विष्णु भक्ति आदि केवल अन्तःकरण की शुद्धि करती है इसमें सन्देह नहीं है । परन्तु हे नारदजी वाराणसी तारक ब्रह्म के उपदेश से मुक्ति पद को प्रदान करती है ।

तीर्थान्तराणि क्षेत्राणि विष्णुभक्तिश्च नारद । अन्तःकरण संशुद्धिं जनयन्ति न संशयः ॥
वाराणस्यापि देवर्षे तादृश्येव परन्तु सा । प्रकाशयति ब्रह्मैक्यं तारकस्योपदेशतः ॥

जो जीव जन्तु परम पवित्र पुण्य उत्पन्न करने वाली वाराणसीं पुरी में निवास करते हैं उन्हें दयानिधि विश्वनाथ भगवान रुद्र तारक ब्रह्म का उपदेश देते हैं । उपदेश पाते ही उन्हें ब्रह्म ज्ञान होता है । ज्ञान होते ही तत्क्षण मुक्त हो जाते हैं ।

वाराणसी पुरी पुण्यां येऽधितिष्ठन्ति जन्तवः । व्याचष्टे तारकं ब्रह्म रुद्रस्तेषां दयानिधिः ॥

सभी जानते हैं कि मोक्ष कितना दुर्लभ है और संसार कितना भयंकर है इसलिए मनुष्य को चाहिए कि अपने पैरों पर पत्थर पटक कर उसे तोड़ डाले और वाराणसी पुरी में निवास करे । अर्थात किसी भी दशा में काशी के बाहर पैर न रखे क्योंकि काल के आने का समय कोई नहीं जानता । काशी के बाहर मरने से हाथ में आयी हुई मुक्ति निकल जायेगी ।

मोक्षं सुदुर्लभं मत्वा संसारं चाति भीषणम्, अस्मना चरणौ हत्वा वाराणस्यां वसन्नरः

जो मनुष्य न तो जप कर सकते हैं और न परमेश्वर का ध्यान ही करते हैं, ज्ञान और विज्ञान से रहित हैं, तप करने के लिए जिनके हृदय में लेशमात्र भी उत्साह नहीं ऐसे मनुष्यों की गति वाराणसी में ही हो सकती है ।

जपध्यानविहीनानां ज्ञान विज्ञानवर्जिताम् । तपस्युत्साहहीनानां गतिर्वाराणसी नृणाम् ॥



वाङ् माधुरी

माँ–"भगवान् कहाँ नहीं हैं । भगवान् जहाँ सर्वत्र हैं, वही है एक मात्र, बीच का सवाल नहीं । यह प्रकाश होने के लिये गुरु जो कहे । गुरु शक्तिपात हो जाय । गुरु शक्ति पार कर देती है । मन की स्थिति के अनुसार–और जो चञ्चल मन, चञ्चल भी नहीं, विक्षेप जनित चञ्चल हो, ऐसा चञ्चल होना भी अच्छा है । मैं कौन हूँ इसको नहीं जानने तक मेरे से रहा नहीं जाता, भगवत् प्राप्ति के बिना हमारे दिन नहीं कटते । यह चञ्चलता अगर जाग्रत हो यह तो नाशवान् चीज है । (इसका बोध हो जाय) ।

मन्त्र-मन त्राण - जो अविनाशी जिसका क्षय नहीं होता है । वह जो अक्षर रूपी विग्रह जिस विग्रह का दर्शन करते हैं । वह मन्त्र मन त्राण होने के लिये । वह मन्त्र हमारा हर समय जप हो । ऐसी कोशिश होनी चाहिये । मन में रखना - हे भगवान् - अक्षर रूप में पा लिया । गुरु से सुना - भगवान् अक्षर रूप जो तुम हो - तुम्हारा संग नहीं छोड़ूंगा । संग करूँगा । रंग देंगे – भगवान् स्थिति दिये बिना रह नहीं सकते ।

हर समय जप ध्यान में मस्त रहे । अनुकूल क्रिया-अनुकूल क्रिया देखेंगे । अनुकूल क्रिया सुनेंगे । अगर असली सुनना हो जाय तो सुनना न सुनना का पार हो जायगा ।

अक्षर रूप भगवान् जो मिल गया । चलते-फिरते जब तक न मिले, क्षण-क्षण चला जा रहा है हमारा और टाईम ऐसा नहीं बिताना ।

खाते भी रहे, गप भी करते रहे, और नाना बात से क्रिया से मस्त रहे । थोड़ा सा जप कर लिया और माँ से कह दिया फल नहीं हुआ । करना कहाँ होता है । करने से रहा नहीं जाता है ।

जैसे वर्षा बरस रही है उसी तरह कृपा हर समय बरस रही है । पात्र सीधा रखने की कोशिश करे । उल्टा रखने से बह जाता है । मन त्राण होने के लिये मन्त्र रूपी भगवान् मिल गया - हर समय उनका संग करो । गुरु ने अक्षर रूपी भगवान् दे दिया । उनका संग करो । पहले बैठना शुरू करो । अपने आसन पर बैठने की कोशिश । हे भगवान् तुम्हारा जप कैसे होने से तुम्हारी प्रीति होगी । हे भगवान् तुम उसी तरीके से भगवत् प्रीति के लिये प्रार्थना कराओ । निष्काम के अन्तर्गत – मैं तुम्हारा हूँ - तुम मेरे आसरा हो । कृपा करो, कृपा करो, कृपा करो – यह प्रार्थना हर समय ।

प्रश्न–संसार में काम करते हुए साधन कैसे रह सकता है?

माँ– (महिला से) माँ तुम सदा ख्याल करो, भगवान् तुमसे इसी रूप में दासी से सेवा ले रहे हैं । शरीर तुमने दिया यह शरीर तुम्हारे हाथ का यन्त्र तुम सेवा ले रहे ।"

एक बार प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी श्रीमद्भागवत् में वर्णित मुक्ति के दस उपाय के बारे में कह रहे थे । इनमें से कोई भी एक मोक्ष का साधन है । ब्रह्मचर्य, तपस्या, स्वाध्याय जप, समाधि - इत्यादि के सम्बन्ध में चर्चा हो रही थी । इस सम्बन्ध में माताजी ने बाद में कहा,"ब्रह्मचर्य के प्रति शंकराचार्य के अत्यन्त कठिन नियम थे । उनके शिष्यों के प्रति यह निर्देश था कि किसी स्त्री की छाया भी उन पर न पड़े ।

विजय कृष्ण गोस्वामी के गुरु के एक शिष्य को आश्रम से हटना पड़ा था केवल मात्र एक महिला से वार्तालाप करने के कारण । ब्रह्मा, विष्णु, महेश-जब विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण किया था भगवान् शंकर मोहित हो रहे थे । इसका यह अर्थ नहीं कि भगवान् शंकर पतित या भ्रष्ट हैं । कारण वह तो मनोराज्य के अतीत हैं, पर जहाँ पर मनोराज्य है वहाँ ऐसा होने से पतित या भ्रष्ट (कहा जाता है) ।

चौबीस घंटे लगे रहना - जप ध्यान, पाठ, कीर्तन । सब रस सूख जाय । खाने का, पहनने का, बोलने का मरु भूमि हो जाय । फिर प्यासे की तरह पुकारना । फिर वर्षा - शान्ति - आँख से पानी, मन नरम हो जायगा । अभिमान चला जायगा । अहंकार पढ़ाई का अहंकार । भगवान् को पुकारना । नहीं मिलने से यह नहीं कि कहीं और से आनन्द रस लेना - लेकर पड़े रहना ।

प्रश्नकर्ता– होता नहीं ।

माँ– जन्म जन्म का संस्कार । चार किस्म की सिद्धि होती है । साधन करते-करते स्थिति आती है, विभूति आती है, फिर स्थिति फिर साधन सिद्धि होने से विभूति और एक स्थान पर सब कुछ ही विभूति । एक होता है शास्त्र का पढ़ा । एक होता है निज (अपने) से निज को देना ।

प्रश्नकर्त्ता–किसी का कुछ हुआ नहीं ।

माँ– तुम किसी को देखना नहीं । तुम करते रहो करते रहो । जो देखा नहीं । उसको कहना नहीं, कहना नहीं कहना नहीं ।

ब्रह्मचारिणियों के लिये माँ के निर्देश–

१. गुरुजनों के बात करते समय उस सम्बन्ध में कोई बात करनी नहीं चाहिये । जिज्ञासा करने पर अपना मत देना । गुरुजन की बात सुनकर अगर अपने मन में कुछ आ जाय तब गुरु जन से एकान्त में शान्त भाव से पूछना कि उस समय यह बात हमारे मन में आयी थी ।
२. गुरुजन किसी से बात करें उस समय अपनी कोई बात बोल कर बीच में बाधा नहीं देना चाहिये । विशेष बात होने पर बड़ों की बात खतम होने पर बोलना चाहिये ।
३. संगी साथी किसी का विषय लेकर हँसी तमाशा नहीं करना चाहिये ।
४. मन के भीतर विरोध भाव को छुपा कर निन्दा या प्रशंसा में किसी की समालोचना नहीं करनी चाहिये !

५. अच्छा बुरा विचार करके संगी साथी के साथ वार्तालाप नहीं करना चाहिये ।
६. कोई कुछ अन्याय की बात करे उस समय मन में कहना "हे ठाकुर तुम ही इस रूप में आघात देकर शिक्षा दे रहे हो—तुम हमारे ऊपर प्रसन्न होवो । जो आघात देता है उससे भी घृणा नहीं करना ।
७. अप्रिय भाव भाषा का प्रकाश किसी के प्रति नहीं होना चाहिये ।
८. भाव व्यवहार में सत्यनिष्ठ रहना ।
९. स्वल्प भाषा, प्रयोजनीय बात करना ।
१०. सदा प्रसन्न रहो ।
११. शान्त भाव धीर स्थिर गम्भीर रहना ।
१२. सब के साथ धीर स्थिर शान्त भाव से समता से व्यवहार करना ।
१३. पारमार्थिक बात लेकर आनन्दित रहना ।
१४. सौम्य आदर्श जनित व्यवहार करना ।
१५. विचार और वाणी में एक रूप से बात करना ।
१६. सत्य अनुष्ठान सब समय होना चाहिये ।
१७. सत्य असत्य विचार जप ध्यान पूजा पाठ कीर्तन जिसमें जिसकी प्रधान रुचि उस धारा को लेकर जब परमार्थ की तरफ का भाव गहरा होता है, तब चिन्तन लेकर रहना ।

दुर्बोध, दुर्बुद्धि दुर्गति दुर्भाग दूर होने लगता है । भगवत् लाभ ही मनुष्य का कर्तव्य होना चाहिये । क्योंकि मनुष्य को ही भगवत् प्राप्ति होती है ।

●

विज्ञानों का विज्ञान

ओंकार उपासना

प्रश्नोपनिषद्

– श्री हरिकृष्ण दास गोयन्दका

ओंकार की उपासना का क्या महत्त्व है, इसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण क्या है, इनके प्रश्नोत्तरों से स्पष्ट होता है ।

ऋषि सत्यकाम ने महर्षि पिप्पलाद से पूछा जो मनुष्य आजीवन सदा ओंकार की भलीभाँति उपासना करता है, उसे उस उपासना के द्वारा कौन-से लोक की प्राप्ति होती है, अर्थात् उसका क्या फल मिलता है ?

महर्षि पिप्पलाद ने कहा-सत्यकाम ! यह जो "ऊँ" है, वह अपने लक्ष्यभूत परब्रह्म परमेश्वर से भिन्न नहीं है । इसलिये यही परब्रह्म है और यही उन परब्रह्म से प्रकट हुआ उनका विराट्-स्वरूप-अपर ब्रह्म भी है । केवल इसी एक ओंकार का जप, स्मरण और चिन्तन करके उसके द्वारा अपने इष्ट को चाहने वाला विज्ञान सम्पन्न मनुष्य उसे पा लेता है । भाव यह है कि जो मनुष्य परमेश्वर के विराट्-स्वरूप इस जगत् के ऐश्वर्यमय किसी भी अङ्ग को प्राप्त करने की इच्छा से ओंकार की उपासना करता है, वह अपनी भावना के अनुसार विराट् स्वरूप परमेश्वर के किसी एक अङ्ग को प्राप्त करता है और जो इसके अन्तर्यामी आत्मा पूर्ण ब्रह्म पुरुषोत्तम को लक्ष्य बनाकर उनको पाने के लिए निष्काम भाव से इसकी उपासना करता है, वह परब्रह्म पुरुषोत्तम को पा लेता है ।

उस विराट् के भूः, भुवः, और स्वः यह तीन रूप हैं । महर्षि कहते हैं - ऊँकार की पहली मात्रा ऋग्वेद स्वरूपा है, उसका पृथ्वी लोक से सम्बन्ध है, अतः उसके चिन्तन से साधक को ऋग्वेद की ऋचाएँ पुनः मनुष्य शरीर में प्रविष्ट करा देती हैं । वह उस नवीन मनुष्य-जन्म में तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा से सम्पन्न उत्तम आचरणोंवाला श्रेष्ठ मनुष्य बनकर अतिशय ऐश्वर्य का उपभोग करता है ।

ओंकार की दूसरी मात्रा भुवः अर्थात् स्वर्ग लोक है । जो व्यक्ति उस परब्रह्म के अङ्ग स्वरूप ओंकार के भूः अर्थात् मनुष्य लोक भुवः अर्थात् स्वर्गलोक इन दोनों के ऐश्वर्य की अभिलाषा से इन्हीं को लक्ष्य बना कर ओंकार की उपासना करता है तो वह मनोमय चन्द्रलोक को प्राप्त होता है; उसको यजुर्वेद के मन्त्र अन्तरिक्ष में ऊपर की ओर चन्द्रलोक में पहुँचा देते हैं । ऋषि कहते हैं सत्यकाम, उस विनाशशील स्वर्गलोक में नाना प्रकार के ऐश्वर्य का उपभोग करके अपनी उपासना

के पुण्य का क्षय हो जाने पर पुनः मृत्युलोक में आ जाता है, वहीं उसे अपनें कर्मानुसार मनुष्य-शरीर या अन्य कोई नीची योनि मिल जाती है ।

उपर्युक्त उपासना करने वाले साधकों से विलक्षण तीन मात्रा युक्त ओंकार के उपासक का वर्णन करते हुए कहते हैं ।

"यः पुनरेतं त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवाक्षरेण परं पुरुषमभिध्यायीत स तेजसि सूर्ये सम्पन्नः । यथा पादोदरस्त्वचा विनिर्मुच्यत एवं ह वै स पाप्मना विनिर्मुक्तः स सामभिरुन्नीयते ब्रह्मलोकं स एतस्माज्जीवघनात् परात्परं पुरिशयं पुरुषमीक्षते तदेतौ श्लोकौ भवतः ।" ॥ ५ ॥

उस परमेश्वर का नाम ओंकार है और उसके द्वारा उसकी उपासना की जाती है । जो कोई साधक इन तीन मात्राओं वाले ओंकार स्वरूप अक्षर द्वारा परब्रह्म परमेश्वर की उपासना करता है, वह जैसे सर्प केंचुली से अलग हो जाता है- उसी प्रकार सब प्रकार के कर्म बन्धनों से छूटकर सर्वथा निर्विकार हो जाता है । उसे सामवेद के मन्त्र तेजोमय सूर्य मण्डल में से ले जाकर सर्वोपरि ब्रह्मलोक में पहुँचा देते हैं । वहाँ वह जीव-समुदाय रूप चेतनतत्त्व से अत्यन्त श्रेष्ठ उन परब्रह्म पुरुषोत्तम को प्राप्त हो जाता है, जो सम्पूर्ण जगत् को अपनी शक्ति के किसी एक अंश में धारण किये हुए हैं और सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हैं तथा जो अन्तर्यामी रूप से सबके हृदय में विराजमान हैं ।

तिस्रो मात्रा मृत्युमत्यः प्रयुक्ता
अन्योन्यसक्ता अनविप्रयुक्ताः ।
क्रियासु बाह्याभ्यन्तर मध्यमासु
सम्यक्प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः ॥ ६ ॥

महर्षि बड़े ही प्यार से कहते हैं - सत्यकाम, जो कुछ देखने सुनने और समझने में आता है, यह उस परमेश्वर के जगत् रूप विराट् स्वरूप का अविनाशी स्वरूप नहीं है यह परिवर्तनशील है, अतः इसमें रहने वाला जीव अमर नहीं होता । वह चाहे ऊँची से ऊँची योनि को प्राप्त कर ले, परन्तु जन्म मृत्यु के चक्र से नहीं छूटता । इसके एक अङ्ग पृथ्वीलोक की या पृथ्वी और अन्तरिक्ष इन दोनों लोकों की अथवा तीनों लोकों को मिलाकर सम्पूर्ण जगत् की अभिलाषा रखते हुए जो उपासना करता है, जिसका इस जगत् के आत्मरूप परब्रह्म पुरुषोत्तम की ओर लक्ष्य नहीं है, वरं जो जगत् के बाह्य स्वरूप में आसक्त हो रहा है, वह उन्हें नहीं पाता, अतः बार-बार जन्मता मरता रहता है ।

महर्षि की दृष्टि से उन्हें वही साधक पा सकता है, जो अपने शरीर के बाहर, भीतर और मध्यस्थान-हृदय देश में होने वाली बाहरी, भीतरी और बीच की समस्त क्रियाओं में सर्वत्र ओंकार के वाच्यार्थरूप एकमात्र परब्रह्म पुरुषोत्तम को व्याप्त समझता है और ओंकार के द्वारा उनकी उपासना करता है उन्हें पाने की अभिलाषा से ओंकार का जप, स्मरण और चिन्तन करता है, वह ज्ञानी परमात्मा को पाकर फिर कभी अपनी स्थिति से विचलित नहीं होता ।

मन्त्रों के माध्यम से ऋषि की वाणी गूंजती है–

"ऋग्भिरेतं यजुर्भिरन्तरिक्षं
सामभिर्यत् तत्कवयो वेदयन्ते ।
तमोङ्कारेणैवायतेन नान्वेति विद्वान्
यत्तच्छान्तमजरममृतमभयं परं चेति ॥ ७ ॥

महर्षि पिप्पलाद पुनः पुनः समझाते हैं एक मात्रा अर्थात् एक अङ्ग को लक्ष्य बनाकर उपासना करने वाले साधक को ऋग्वेद की ऋचाएँ मनुष्य लोक में पहुँचा देती हैं । दो मात्रा की उपासना करने वाले को अर्थात् जगत् के ऊँचे से ऊँचे स्वर्गीय ऐश्वर्य को लक्ष्य बनाकर ओंकार की उपासना करने वालों को यजुर्वेद के मन्त्र चन्द्र लोक में ले जाते हैं और जो इन सबमें परिपूर्ण इनके आत्मरूप परमेश्वर की ओंकार के द्वारा उपासना करता है, उसको सामवेद के मन्त्र उस ब्रह्मलोक में पहुँचा देते हैं, जिसे ज्ञानीजन जानते हैं ।

सम्पूर्ण रहस्य को समझने वाले बुद्धिमान् मनुष्य बाह्यजगत् में आसक्त न होकर ओंकार की उपासना द्वारा समस्त जगत् के आत्मरूप उन परब्रह्म परमात्मा को पा लेते हैं, जो परम शान्त, सब प्रकार के विकारों से रहित है, जहाँ न बुढ़ापा है, न मृत्यु है, न भय है, जो अजर, अमर, निर्भय एवं सर्वश्रेष्ठ परम पुरुषोत्तम हैं ।

इस प्रकार उक्त पाँचवें प्रश्न में उस परमरहस्यमय परमात्मा के विराट् स्वरूप का विशद स्पष्टीकरण किया गया है जिसे जान लेने पर सृष्टि-रहस्य हस्तामलकवत् सामने आ जाता है । इसी सृष्टिरहस्य को जानने के लिये भौतिक विज्ञान तरह-तरह की सफलताओं को छू लेने पर भी अपनी जिज्ञासाओं को शान्त नहीं कर पा रहा है । इस रहस्योद्घाटन में पूर्णतया रहस्यों से ही घिरा अपने को पाता है और वहीं प्राच्य विद्वान् स्पष्ट मन्त्रों में उसका जयगान करते हैं ।

"तमोङ्कारणैवायतनेनान्वेति, यत्तच्छान्तमजरममृतमभयं परं चेति" ॥



कामाग्नि में जलता भ्रमित राजकुमार जयसेन

–डॉ. प्रेमनारायण सोमानी

महाराज विम्बसार के एक पुत्र का नाम जयसेन था । उसके मामा का नाम भूमिज था । उसके पिता महाराज विम्बसार एवं मामा भूमिज भगवान की शिक्षा से अत्यन्त लाभान्वित हुए और मामा तो भिक्षु संघ से प्रव्रजित भी हो गया था । परन्तु राजकुमार जयसेन भगवान बुद्ध के इतने समीप होकर उनसे मिला भी नहीं, न ही वह उनकी शिक्षा से लाभान्वित हुआ ।

राजकुमार जयसेन के मामा भिक्षु भूमिज के मन में उसके प्रति करुणा जागी । जिस ध्यान का रस उन्होंने चखा था उसे उनका भांजा भी चखे । उसे चखने के लिए गृहस्थ जीवन त्याग कर प्रव्रजित न हो तो भी जैसे अन्य अनेक गृहस्थ अपनी गृही जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी व्यभिचार को सदा के लिए त्यागकर अन्तरमुखी होने के अभ्यास करते हैं और लाभान्वित होते हैं, वैसे ही राजकुमार जयसेन भी लाभान्वित हों । इसी उद्देश्य से वे भिक्षाटन के लिए राजकुमार जयसेन के घर गये । राजकुमार जयसेन उनसे मिलने अन्तःपुर से बाहर आया । कुशलक्षेम की व्यवहारिक बातें करके उन्हें ससम्मान एक आसन पर बैठाया और स्वयं एक ओर बैठ गया ।

लगता है कि राजकुमार जयसेन किसी ऐसे धर्माचार्य से प्रभावित था । जो किसी भी सत्कर्म या सत्फल या दुष्फल प्रकट होना नहीं मानते थे । वे यम, नियम, संयम और सदाचार से अच्छा नहीं मानते थे और न ही शीलमग्न जीवन को बुरा मानते थे । इसी को लक्ष्य कर राजकुमार जयसेन ने भिक्षु भूमिज से पूछा श्रमण ब्राहमण इस मत के हैं कि किसी भी उद्देश्य से ब्रह्मचर्यवास किया जाय उसका कोई भी फल नहीं होता । ब्रह्मचर्यवास या धर्माचरण सदा निरर्थक, निष्फल होता है ।

उत्तर देते हुए भिक्षु भूमिज ने कहा– कि कोई व्यक्ति किसी भी उद्देश्य से ब्रह्मचार्य वास करे, परन्तु सफल वह तभी होता है जब उसका ब्रह्मचर्यवास "योनिसो" होता है । यदि वह "अयोनिसो" हो तो ब्रह्मचर्यवास का कोई लाभ नहीं मिलता । उसने बात वहीं समाप्त कर दी और अपने मामा से योनिशः और अयोनिशः का अर्थ तक नहीं पूँछा ।

भगवान् बुद्ध की शिक्षा के अनुसार कार्य-कारण के नैसर्गिक नियमों को आधार मानकर जो ब्रह्मचर्यवास किया जाता है वही योनिशः होता है । नैसर्गिक नियम यह है कि तृष्णा जन्य विकारों से अपना चित विकृत कर ले तो परिणाम स्वरूप दुख भोगता है और विकारों से मुक्त हो जाये तो दुख विमुक्त हो जाता हैं । इस नैसर्गिक नियम पर आधारित हो तभी दर्शन सम्यक माने में सहीं होता है । अतः योनिशः होता है । अन्यथा मिथ्या होता है, अयोनिशः होता है । भगवान बुद्ध ने समझाया है कि जो इस प्रकार योनिशः ब्रह्मचरण का जीवन जीता है उसे मनोवांछित फल वैसे ही प्राप्त होता है जैसे तेल चाहने वाले को तिलहन को पेरने से तेल, दूध चाहने वाले को दुधारू गाय का थन दुहने से दूध नवनीत चाहने वाले को दधि मन्थन से नवनीत, अग्नि चाहने वाले को दो

सूखी लकड़ियों के रगड़ने से अग्नि प्राप्त होती है । जो अयोनिशः ब्रह्मचरणा का जीवन जीता है उसे वैसे ही मनोवांछित फल प्राप्त नहीं होता जैसे कि तेल चाहने वाले को पानी मथने से, अग्नि चाहने वाले को दो गीली लकड़ियों से रगड़ने से कोई फल प्राप्त नहीं होता ।

राजकुमार जयसेन बहुत भटक गया था । शुद्ध धर्मगंगा के इतने समीप रहते हुए वह लाभान्वित नहीं हो सका । भिक्षा के लिए अपने घर आए हुए भिक्षु भूमिज को उसने भोजन तो अवश्य परोसा पर धर्म से दूर रहकर अपने सभी मंगल-कल्याण से वंचित ही रहा ।

इसी प्रकार वह स्वयं बुद्ध से न मिल कर एक दिन टहलता हुआ भ्रमणोद्देश अचिरवत से मिलने के लिए नगर के समीप उस अरण्य में चला गया, जहाँ कि वह एक कुटिया में निवास करता था । अचिरवत को श्रागणेर हुए थोड़े ही दिन हुए थे, शायद इसीलिए उसे अचिरवत कहा गया है । राजकुमार जयसेन श्रामणोर से कुशल क्षेम पूंछ कर उसके समीप एक ओर बैठ गया । और उसने उससे पूछा– 'कोई भिक्षु, प्रसाद रहित, संयम का जीवन जीता हुआ प्रयत्नशील हो तो क्या वह निर्वितर्क, निर्विचार, चित्त की एकाग्रता प्राप्त कर सकता है ?"

श्रामणेर अचिरवत ने उत्तर दिया – "हाँ यदि वह शील, समाधि एवं प्रज्ञा का जीवन जीता है ।" उन दिनों की भाषा से शील, समाधि एवं प्रज्ञा के जीवन जीने को ही धर्माचरण का ब्रह्माचरण कहते है । उन दिनों ऐसे भी आचार्य थे जो यह मानते थे कि चित्त की एकाग्रता की नितांत निर्वितर्क, निर्विचार अवस्था किसी भी हालत में उपलब्ध नहीं की जा सकती । संभवतः उन्हीं आचार्यो के प्रभाव में या अपने चारित्र शिथिलता के कारण उसने श्रामणेर से कहा यह असंभव है, असंभव है, किसी प्रकार भी निर्विचार अवस्था नहीं प्राप्त की जा सकती ।

इसी प्रसंग में भगवान बुद्ध ने राजकुमार जयसेन के विषय में कहा था कि वह अत्यंत कामलोलुप है । वह कामार्त राजकुमार, काम भोगों के बीच निवास करता हुआ, काम भोग का आस्वादन करता हुआ, कामाग्नि द्वारा दग्ध किया जाता हुआ, काम वितर्कों द्वारा भक्षण किया जाता हुआ, नित्य नये कामभोग की खोज में उत्सुक और निमग्न रहता हुआ दूषित जीवन बिताता है । सचमुच यह असंभव है कि कोई व्यक्ति कीचड़ पे लोट-पलोट लगाता रहे और अपने आप को स्वच्छ भी रख सके । कोई व्यक्ति काम की ज्वाला में सतत जलता रहे और आंतरिक सच्चाई के साक्षात्कार का शांन्ति लाभ भी ले सके । कामभोग के विकारों से विमुक्त हुए बिना, अन्यान्य मनोविकारों से विमुक्त हो सकना असंभव है ।

शील सदाचार धर्ममय जीवन का आधार है । यही धर्म की बुनियाद है । कोई वाकचातुर्य द्वारा शील-सदाचार की बुनियाद के बिना समाधि एवं प्रज्ञा की लाख मनंमोहिनी बातें करके लोगों को आकर्षित कर ले, परन्तु इससे कोई कल्याणकारी उपलब्धि नहीं हो सकती । शील सदाचार पर आधारित धर्म ही शुद्ध धर्म है । उसे ही धारण करने में सही मायने में कल्याण है, सही मायने में मंगल है ।

●

जीवन दर्शन

"अंहकार ही पराजय का द्वार है"

–शतपथ ब्राह्मण

ईसा एक गाँव से गुजर रहे थे । उन्होंने एक व्यक्ति को वेश्या के पीछे भागते हुए देखा, तो रुक गये और उसे निंदनीय कार्य से बचने की बात समझाने लगे । ईसा ने उसका चेहरा गौर से देखा, तो उन्हें वह व्यक्ति ऐसा लगा जैसे उसका उनसे पहले भी परिचय हो चुका है । स्मरण करने पर उन्हें पुरानी घटना याद हो आयी । उन्होंने फिर कहा–'अरे तू तो वही है जिसने दो वर्ष पूर्व अंधेपन से छुटकारा पाने की याचना की थी और मैंने प्रभु से याचना करके तुझे ज्योति-प्रकाश दिलाया था । उस व्यक्ति ने ईसा को पहचान लिया और बोला–आप जो कहते हैं वह एकदम सही है । इस पर ईसा ने उससे कहा–"मैंने प्रभु से याचना करके तुझे दृष्टि क्या इसलिए दिलाई थी कि तू उसको माध्यम बनाकर ऐसे घिनौने काम करें ?

ईसा की फटकार पर वह व्यक्ति कुछ देर चुप रहा और फिर अपनी भूल और घिनौने कृत्य पर आँसू बहाता रहा, फिरआगे पैर बढ़ाते हुए महाप्रभु के चरण चूमते हुए उसने दबी जुबान में कहा–'आप में नेत्र दृष्टि दिलाने की सामर्थ्य थी, यदि विवेक दृष्टि भी आपने उस समय मुझे दिलाई होती तो मुझसे अज्ञानतावश यह घृणित कृत्य नहीं होता और मैं सदाचार का आचरण करते हुए हमेशा परोपकारी कार्यों में लगा रहता । उस व्यक्ति की इस बात से उस दिन ईसा को एक नवीन बोध हुआ, तब से वे लोगों को सुविधा दिलाने की अपेक्षा उनकी समझ सुधारने की बात को प्राथमिकता देने लगे ।

"बड़े से बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से मिलता है"

–प्रेमचंद

यूनान में अरस्तू नाम के एक प्रसिद्ध दार्शनिक हुए हैं । एक दिन वे समुद्र किनारे विचारों में निमग्न होकर टहल रहे थे । विचारों में खोए हुए थे । उन्होंने एक आदमी को देखा जो गड्ढा खोदकर चम्मच से सागर का पानी गड्ढे में डाल रहा था । जिज्ञासा जगी, उन्हें लगा-क्या अजीब सी बात है । उन्होंने पूछा–भाई यह क्या करते हो । उस आदमी ने उत्तर दिया–तुम्हारी तो आँखें हैं, क्या दिखता नहीं मैं क्या कर रहा हूँ । इसमें पूछना क्या ? सागर को खाली करने का इरादा है । उसे इस गड्ढे में भरकर रहूँगा । अरस्तू हँसा और बोला–पागल हो गये हो क्या ? होश में तो हो ? क्या सागर को चम्मच से तौला जा सकता है ? क्या चम्मचों से गड्ढा भर जायगा ? क्यों अपना जीवन बर्बाद कर रहे हो । वह आदमी खिलखिलाकर हँसा । उसने कहा–मैं सोचता था कि

पागल तो तुम हो, क्योंकि तुम तो एक महासागर को विचार की चम्मच से भरने का जतन कर रहे हो । अरस्तू को एक झटका लगा । यह क्या कह रहा है । इतने में वह व्यक्ति गायब हो गया ।

कहते हैं–अरस्तू ने उसे खोजने की बहुत कोशिश की लेकिन पता न चल सका कि वह कहाँ गया । बात तो उसने ठीक ही कही थी । विचार कितना छोटा होता है और वह परमात्मा कितना बड़ा है । उस विराट् ब्रह्म को हम विचार से तौल-तौल कर कहाँ ले जायेंगे । विचार तो एक छोटी चम्मच है, जिससे मानव सागर को नापने की कोशिश करता है । पर आत्मज्ञानी जन बताते हैं, परमात्मा को जानना हो तो उसके ध्यान में डूब जाना पड़ता है ।

●

आगामी उत्सव तालिका

1.	श्री शारदीय नवरात्र	–	११ से १५ अक्टूबर
2.	शरद् पूर्णिमा (लक्ष्मी पूजा)	–	२० अक्टूबर
3.	दीपावली (काली पूजा)	–	४ नवम्बर
4.	अन्नकूट	–	५ नवम्बर
5.	संयम महाव्रत	–	१२ से १८ नवम्बर
6.	कार्तिक पूर्णिमा (रास पूर्णिमा)	–	१९ नवम्बर
7	श्रीमद्भवद्गीता जयन्ती	–	१५ दिसम्बर
8.	मकर संक्रान्ति	–	१४ जनवरी
9.	वसन्त पञ्चमी (सरस्वती पूजा)	–	६ फरवरी

●

श्री संतराम मंदिर

नडियाद

—ब्र. गुणीता

संतराम मन्दिर नडियाद में मातृभक्त श्री रमेशभाई पटेल की स्मृति में ११ जून से १९ जून तक श्रीमद्भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया था। कथावाचक थे श्रीवृन्दावन धाम के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी। इस पुण्यमय कार्य में स्व. श्री रमेश भाई पटेल के परिवारजनों ने कन्यापीठ की कन्याओं को निमन्त्रण दिया था।

कथा प्रातः साढ़े आठ बजे से मध्यान्ह के साढ़े ग्यारह बजे तक होती थी तथा सायंकाल साढ़े-तीन बजे से पुनः छ बजे तक कथा चलती थी। सायं छ बजे के उपरान्त शारदाबेन इन्दु भाई इफ्कोवाला ट्रस्ट की ओर से श्री रमेशभाई पटेल के कनिष्ठ पुत्र श्री देवांग पटेल की देख रेख में सभी आमन्त्रित अतिथियों को स्थानीय दर्शनीय स्थानों के दर्शनार्थ ले जाया जाता था।

उक्त ट्रस्ट की ओर से नडियाद शहर के बाहरी हिस्से में नर्मदेश्वर महादेव का एक विशाल मंदिर का निर्माण अभी ही दो वर्ष पूर्व हुआ है। यहाँ केवल मंदिर ही नहीं अपितु विद्यार्थियों को रहने एवं अध्ययन की विशाल व्यवस्था है। यहाँ कर्मकाण्ड एवं वेदपाठ की शिक्षा दी जाती है। करीब सौ विद्यार्थी रहते हैं, जो प्रातः एवं सायम् मन्दिर में वेदमन्त्र एवं स्तोत्रादि का सामूहिक पाठ करते हैं। विशाल परिसर में स्वच्छ प्राकृतिक परिवेश में बसा हुआ यह गुरुकुल प्राचीन आश्रमों की याद को ताजा करता हैं।

१६ जून को कथा में श्रीकृष्णजन्म के प्रसंग पर गुजरात की परम्परा के अनुसार नन्दोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री पटेल परिवार की महिलाओं ने पारम्परिक प्रथानुसार गरबा नृत्य भी किया। १७ जून को गोवर्धन लीला के प्रसंग में एक सौ छप्पन प्रकार की भोग सामग्री सहित पूजन की व्यवस्था की गई थी। गोवर्धन प्रसंग के साथ ही आज की सायंकालीन कथा का समापन हुआ। १८ जून को कथा की समाप्ति हुई। कथा-समापन पर परिवार की ओर से व्यास गद्दी पर आसीन पूज्य स्वामीजी को एवं आपके साथ आये हुए संगीतकारों एवं मूलभागवत के पाठक जी को यथायोग्य भेंट अर्पित की गयी। तदनन्तर श्रीमद्भागवत को कीर्तनादि करते हुए मंदिर में ले जाया गया।

१८ जून को रात्रि के नौ बजे पूज्य महाराज श्री नारायण दास जी की उपस्थिति में संतराम मंदिर के सामने बरामदे में माँ के आश्रम के परम्परा अनुसार संन्यासिनी भजनानन्द जी (पुष्पादीदी) ने माँ नाम का कीर्तन किया। प्रायः दो घन्टे तक माँ नाम की ध्वनि से सम्पूर्ण परिवेश भाव विह्वल हो उठा। अस्वस्थ रहने पर भी पूज्य महाराज श्री उपस्थित रहे। श्री श्री माँ की असीम स्नेह का

स्मरण करते हुए पूज्य महाराज की आँखें छलछला आयीं । पचहत्तर वर्ष की अवस्था में भी भजनानन्दजी के माँ नाम पूरित कण्ठस्वर ने सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया ।

१९ जून को प्रातः भरत भवन के प्रांगण में कथा समापन के उपलक्ष में हवन आदि हुए । दोपहर को प्रसाद ग्रहण के उपरान्त, अपरान्ह के करीब ढाई बजे डाकोर दर्शन की व्यवस्था की गयी थी । डाकोर मात्र ३५ या ४० किलोमीटर की दूरी पर है ।

पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज भी आश्रमवासियों के साथ दर्शन हेतु चले । यद्यपि ग्रीष्म का प्रताप प्रचण्ड था पर रणछोड़ राय जी के दर्शनों की लालसा प्रकृति के इस ताप को शमन करने में पर्याप्त थी । डेढ़ घण्टे में हम डाकोर पहुँचे । बस मन्दिर से काफी दूर पर रोक दी गयी ।

दोनों ओर विविध वस्तुओं की दूकाने लगी हुई हैं, चिलचिलाती धूप में मंदिर का मार्ग पूछते हुए आखिर हम विराट् के मंदिर के विशाल दरवाजे के सामने पहुँच ही गये ।

सीढ़ियों से चढ़कर हम मंदिर प्रांगण में पहुँचे । प्राचीन मंदिर की परम्परा अक्षुण्ण है । चप्पलें उतार कर हाथ धोकर, पत्र पुष्प आदि लेकर हम नाटमण्डप में गये । यहाँ ठाकुर जी को पुष्प आदि सीधे अर्पित नहीं किये जाते । पूजन सामग्री चढ़ाने की पृथक् व्यवस्था है । यथा स्थान पुष्पादि अर्पित कर हम मन्दिर के सामने आये । पट अभी खुले नहीं थे । थोड़ी ही देर में पट खुले भगवान् की मोहनी मूरति के दर्शन हुए । रणछोड़ रायजी की मधुर मुस्कान भक्तो पर अपनी मोहनी डोर डालने में सदैव तत्पर रहती है । कुछ देर ठाकुरजी के दर्शन करने के उपरान्त हम लोग प्रसाद लेकर पुनः दर्शनों की अभिलाषा को मन में सँजो कर प्रवेश द्वार पर मस्तक टेक कर रणछोड़ की मधुर मुस्कान का पाथेय लेकर बस में आकर बैठे । मन्दिर से लौटते हुए हमने मार्ग में थोड़ी खरीददारी की । यहाँ लोहे का सामान बहुत अच्छा मिलता है । साथ ही भजन कीर्तन के साज मञ्जीरा आदि भी मिलते हैं जिनकी अपनी ही विशेषता होती है ।

अभी हमारा गन्तव्य है उमरेट । यहाँ पर भी संतराम मंदिर की भव्य शाखा है । हम उमरेट पहुँचे चारों ओर खुले खेत हैं । हमें एक साईन बोर्ड दिखा जिस पर लिखा था श्री संतराम मंदिर गोशाला । हम बस से उतरे । हमारी दाहिने तरफ संतराम मंदिर की उमरेट शाखा का भव्य भवन था । हम सीढ़ियों से चढ़कर भीतर गये ।

विशाल परिसर के मध्य नडियाद मुख्य संतराम मन्दिर के अनुकरण में मंदिर बना है, चारों ओर स्वच्छ हरियाली है । पैरों को गुदगुदाती नरम नरम घास का गलीचा । एक ओर कतारबद्ध अतिथियों के लिये बने हुए कक्ष वाला दो मंजिला भवन । एक ओर चिकित्सा भवन । एक ओर गोशाला । बहुत ही सुन्दर व्यवस्था है । थोड़ी देर घास पर बैठकर हम चारों ओर की सुव्यवस्था की मन ही मन सराहना करने लगे । यहाँ के महाराज श्री गणेश दासजी बड़े ही सौम्य स्वभाव के हैं । कुछ समय तक आपने स्वामी प्रणवानन्दजी महाराज जी से सत्संग किया । तत्पश्चात् सभी को ग्रीष्मकाल के अनुकूल आइसक्रीम प्रसाद रूप में दी गई । कुछ देर उमरेट का आनन्द लेकर हम रवाना हुए । चलते समय आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी ने दो टूक शब्दों में कहा "नन्द के आनन्द

भयो" अर्थात् तात्पर्य यह है कि हमने डाकोर में ठाकुर जी के दर्शन किये और यहाँ आनन्द मनाया।

संतराम मन्दिर की आत्मीयता पूर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में कुछ भी कहने के लिये शब्द नहीं हैं। श्री श्री माँ के आश्रम की ब्रह्मचारिणियों को एक विराट् खण्ड में ठहराया गया था। जहाँ पर उनके भोजन आदि की स्वतन्त्र व्यवस्था थी। उक्त खण्ड के बाहर के हिस्से में इफ्कोवाला ट्रस्ट की ओर से कथा में भाग लेने आये हुए अतिथियों के भोजन आदि की पूरी व्यवस्था थी। जहाँ प्रातः जलपान से प्रारम्भ कर रात्रि भोजन पर्यन्त विविध प्रकार की समयोचित सामग्रियाँ तैयार की जाती थीं। सायंकाल जलपान की भी पूरी व्यवस्था थी। इस कार्य में भागलेने वाले सभी कर्मचारी रसोई बनाने वाले महाराज से लेकर बरतन माँजने वाली एवं सफाई करने वाले सभी लोग अत्यन्त विनम्रता से सदैव सेवा में तत्पर रहते थे।

२० जून को हमलोग द्वारका सोमनाथ दर्शन हेतु जाने वाले थे। श्री श्री माँ के आश्रम की ब्रह्मचारिणियाँ बाजार की बनी हुई कोई चीज खाती नहीं हैं यह बात यहाँ सबको मालूम थी। अतः यहाँ के भण्डार के व्यवस्थापक श्री वेणुभाई आदि ने हमारे दो दिन की यात्रा के लिये फलाहार का इतना बड़ा आयोजन किया जिसे देख कर हम दंग रह गये।

२० जून करीब आठ बजे हम बस द्वारा द्वारकाधीश के दर्शनों के लिये रवाना हुये। बस में आश्रम की ब्रह्मचारिणियों के अलावा और भी मातृभक्त थे। संतराम मंदिर की ओर से श्री हरीश भाई एवं उनकी धर्म पत्नी यात्रा निर्देशक के रूप में हमारे साथ थे। द्वारकाधीश की जय जयकार के साथ प्रायः साढ़े आठ बजे सन्तराम मंदिर से हमारी बस रवाना हुई।

ग्रीष्मताप काफी था। गुजरात के शहर एवं गाँवों से होकर हमारी बस आगे बढ़ रही थी। ब्रह्मचारिणी गीतार्जी भगवन्नाम संकीर्तन से यात्रियों को सजग रख रही थीं। सात आठ घण्टे का सफर कर एक स्थान पर बस रुकी। बस से उतरकर खुली हवा में सबने थोड़ी राहत महसूस की। हम अभी सौराष्ट्र में थे। यहाँ पर छिटपुट बारिश होने के कारण मौसम खुशनुमा था।

करीब रातके दस बजे के आस पास हम द्वारका पहुँचे। स्वामी नारायण मन्दिर में हमारी ठहरने की व्यवस्था थी। हमारे पहुँचते ही मंन्दिर के व्यवस्थापकों ने हमारे निमित्त निर्दिष्ट कमरे खुलवा दिये। हमारे लिये दूध आदि की व्यवस्था कर दी। सारा दिन बस में बैठ कर सब शान्त हो चुके थे अतः सामान्य जलपान कर सब सो गये।

प्रभात होते ही स्वामी नारायण मन्दिर की घण्टी बज उठी। यह पश्चिम भाग होने के कारण यहाँ ६ बजे भी आसमान पूरा साफ नहीं था। हम लोग स्नानादि कर स्वामी नारायण मंदिर की मंगल आरती में पहुँचे। रात्रि में हमें कुछ दिखाई नहीं पड़ा था। अभी हमें मंदिर की पृष्ठभूमि से अठखेलियाँ लेती हुई बड़ी-बड़ी तरंगें दिखाई पड़ीं। हमने पीछे जाकर देखा तो आर-पार रहित विराट् सागर की लहरें न जाने किस आनन्द में झूम रही थीं। हम उत्तर भारत के वासियों के लिये सागर का किनारा बड़ा ही आकर्षक होता है।

हम शीघ्र ही द्वारकानाथ के दर्शनों के लिये रवाना हुए । बाजार के भीतर से पैदल चल कर ही हम मन्दिर के द्वार पर पहुंचे । अभी मन्दिर के पट खुले नहीं थे । अतः बाहर ही सभी दर्शनार्थियों को रोक दिया गया । कड़ी सुरक्षा व्यवस्था थी । मंदिर का आकाशचुम्बी शिखर सहस्राब्दियों की अमर गाथाओं का प्रतीक था । शिखर दर्शन से रोमाञ्चित पुलकित होना स्वाभाविक था । प्रवेश द्वार खुलने पर सबने भीतर प्रवेश किया । भीतर बहुत बड़ा प्रांगण हैं । थोड़ी ही देर में हम गर्भगृह के सामने थे । काफी भीड़ हो गयी । मंगल आरती का समय था । मंगल आरती होने के उपरान्त द्वारकानाथ की मोहनमूरति का दर्शन करते हुए मन्दिर की परिक्रमा कर प्रसाद लेकर बेट द्वारका दर्शन के लिये सब रवाना हुए ।

बेट द्वारका दर्शन कर सब बारह बजे लौटे । हमें उसी दिन रवाना होना था । निर्जला एकादशी थी । अतः इस पुण्यमय तिथिको द्वारकाधीश के दर्शनों से सब्र अत्यन्त प्रसन्न थे । हमारा अगला पड़ाव माधोपुर था । करीब दो बजे हम द्वारका से रवाना हुए । करीब पाँच बजे हम पोरबन्दर पहुँचे, जहाँ सबने महात्मागाँधी की पुण्य स्मृति कीर्तिमन्दिरका दर्शन किया । इसके पहले हमने पोरबन्दर स्थित भारत माता मन्दिर का दर्शन किया । यह मन्दिर गुजरात के स्वनामधन्य सेठ स्व. श्री काली प्रसाद मेहता द्वारा बनाया गया है । सन् १९५६ में इसकी स्थापना हुई थी । यहाँ पर भारत माता का विशाल मानचित्र है । दीवालों पर भारत की महान् विभूतियों के तथा मुख्य एवं रमणीक स्थलों के बहुत ही सुन्दर तैल चित्र लगे हुए हैं । साथ ही अनमोल वचन भी बड़े-बड़े अक्षरों में झलमला रहे हैं । भारत की उक्त गरिमा का दर्शन कर कोई भी भारत की सन्तान अपनी भारतीयता पर गर्व करने से नहीं चूकता ।

कीर्तिमन्दिर का परिदर्शन कर हम अपने गन्तव्य की ओर रवाना हुए । पोरबन्दर में मातृभक्त श्री नंदुभाई हमलोगों के आने की सूचना पाते ही तुरन्त दूकान बन्द कर हमसे मिलने आये । हम पोरबन्दर से आगे बढ़े । प्रायः एक डेढ़ घण्टे बाद हम बिलकुल समुद्र किनारे हाई वे पर थे । बड़ी-बड़ी लहरों को पास खड़े होकर देखने के लिये सब उतावले हो उठे । अतः थोड़ी देर के लिये बस रोक दी गयी । सबने उन्मुक्त आकाश के नीचे रेतीली तटभूमि पर तरंगों के उद्दाम नृत्य का आनन्द लिया । सूर्यास्त का समय होने वाला था । हमारा गन्तव्य माधोपुर अभी करीब चालीस मील की दूरी पर था ।

हम करीब रात्रि के साढ़े सात आठ बजे माधोपुर पहुँचे । नारियल के पेड़ों के झुरमुटों के बीच "राम दुलारे आश्रम" है । यहीं आज हमारा पड़ाव है ।

रात्रि के आठ बजने पर भी अँधेरा पूरी तरह छाया नहीं था । यह आश्रम संतराम मन्दिर के अन्तर्गत है । यहाँ के स्वामीजी चैतन्यदासजी नाडियाद जाकर यह कार्यक्रम निश्चित कर आये थे ।

हम लोगों के विश्राम के लिये आश्रम के दो मंजिल का हॉल खोल दिया गया । हॉल के चारों ओर खुला बरामदा था । गर्मी काफी थी हल्की सी बारिश की फुहार से थोड़ी राहत मिली । यहाँ के आश्रमवासियों की आतिथेयता स्मरणीय रहेगी । आज एकादशी थी अतः फलाहार तैयार करके हमें भेजा गया एवं विश्राम हेतु नयी चटाई आदि की व्यवस्था की गयी थी । बस मे लगातार ६-७

घंटे बैठ कर सभी थकावट महसूस कर रहे थे अतः शीघ्र ही सो गये । दूसरे दिन हमें सोमनाथ दर्शन करना था ।

प्रातः काल उठकर हम स्नानादि से निवृत्त हो गये थे । धीरे-धीरे आसमान साफ़ हो रहा था । नारियल के बड़े-बड़े पत्तों पर रात्रि व्यतीत कर पक्षी अपने परों को फड़फड़कर अंगड़ाई ले रहे थे और चहचहाते हुए अपनी दिनचर्या में तत्पर हो रहे थे ।

आस पास केवल हरियाली ही नजर आ रही थी । बीच में मंदिर का शिखर दीख रहा था । सन्ध्यावन्दन से निवृत्त होकर हम सब नीचे आये । आश्रम के स्वामीजी ने सूचना भेजी थी कि दिन के नौ बजे मंदिर प्रांगण में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है । वहाँ पर हम लोगों की उपस्थिति आवश्यक है । इसके पूर्व हमारे यात्राव्यवस्थापक श्री हरीश भाई हम लोगों को स्थानीय मन्दिरों का दर्शन करवाने ले जायेंगे । इसी के अनुसार सब लोग स्थानीय मन्दिरों के दर्शनों के लिये गये । आठ बज चुके थे ।

आश्रम काफी बड़े परिसर में है । हमने सुना गुजरात की स्वनामधन्य विमला ताई जी अपने आश्रम की कन्याओं को लेकर यहाँ आती हैं । यहाँ गीता शिविर का भी आयोजन उनकी उपस्थिति में हुआ था । यहाँ पर ५०० से अधिक व्यक्तियों के रहने की व्यवस्था अनायास सम्भव हो जाती है । गीता शिविर में इससे भी अधिक लोग थे । सब मिलाकर यह एक आदर्श तपःस्थली है । हमारे आश्रम के स्वामी भास्करानन्द जी इस वर्ष अपना चातुर्मास्य यहीं व्यतीत करेंगे ऐसा हमने सुना है ।

करीब साढ़े नौ बजे आश्रम के मन्दिर प्रांगण में सत्संग प्रारम्भ हुआ । कन्यापीठ की कन्याओं ने वेद पाठ एवं स्तव भजन आदि किया । उपस्थित महात्माओं के प्रवचनादि हुए । नाडियाद से कृष्णदास महाराज जी यहाँ आये हुए थे । कार्यक्रम के समापन पर माँ के आश्रम के साधु, ब्रह्मचारिणियों का चादर आदि देकर सम्मान किया गया । हमारे साथ राँची आश्रम के वर्तमान व्यवस्थापक स्वामी अच्युतानन्द जी, कनखल के ब्रह्मचारी सर्वानन्द जी एवं पुणे के योगेन भाई एवं माँ के अन्यान्य कुछ भक्तगण थे ।

करीब ग्यारह बजे हम वहाँ से विदा होकर सोमनाथ के लिये रवाना हुए ।

(क्रमशः)

•

आश्रम-संवाद

१) कनखल :–

इस बार २४ जुलाई को गुरुपूर्णिमा का शुभ उत्सव श्री श्री माँ की महासमाधि पर तथा श्री १०८ गिरिजी के मंदिर में विधिवत् मनाई गई । १५ अगस्त को स्वामी मुक्तानन्द गिरिजी का तिरोधान की पूजा एवं साधुभंडारा आदि यथावत् पालन किये गये । १९ अगस्त झूलन द्वादशी के दिन श्री श्री भाई जी की षोडशोपचार पूजा हुई । ३० अगस्त को श्री कृष्णजन्माष्टमी की पूजा अनुष्ठित हुई ।

३० सितम्बर को श्री श्री आनन्दमयी संघ के प्रधानसचिव स्वामी स्वरूपानन्दजी के तिरोधान के उपलक्ष मे षोडशी भंडारा आदि अनुष्ठित हुए, इस अवसर पर विभिन्न आश्रमों से साधु, ब्रह्मचारी एवं भक्तगण उपस्थित हुए ।

आगामी ११ अक्टूबर से १५ अक्टूबर तक श्री श्री शारदीया दुर्गापूजा अनुष्ठित होगी । २० अक्टूबर को श्री श्री लक्ष्मी पूजा एवं ४ नवम्बर को श्री श्री काली पूजा अनुष्ठित होगी ।

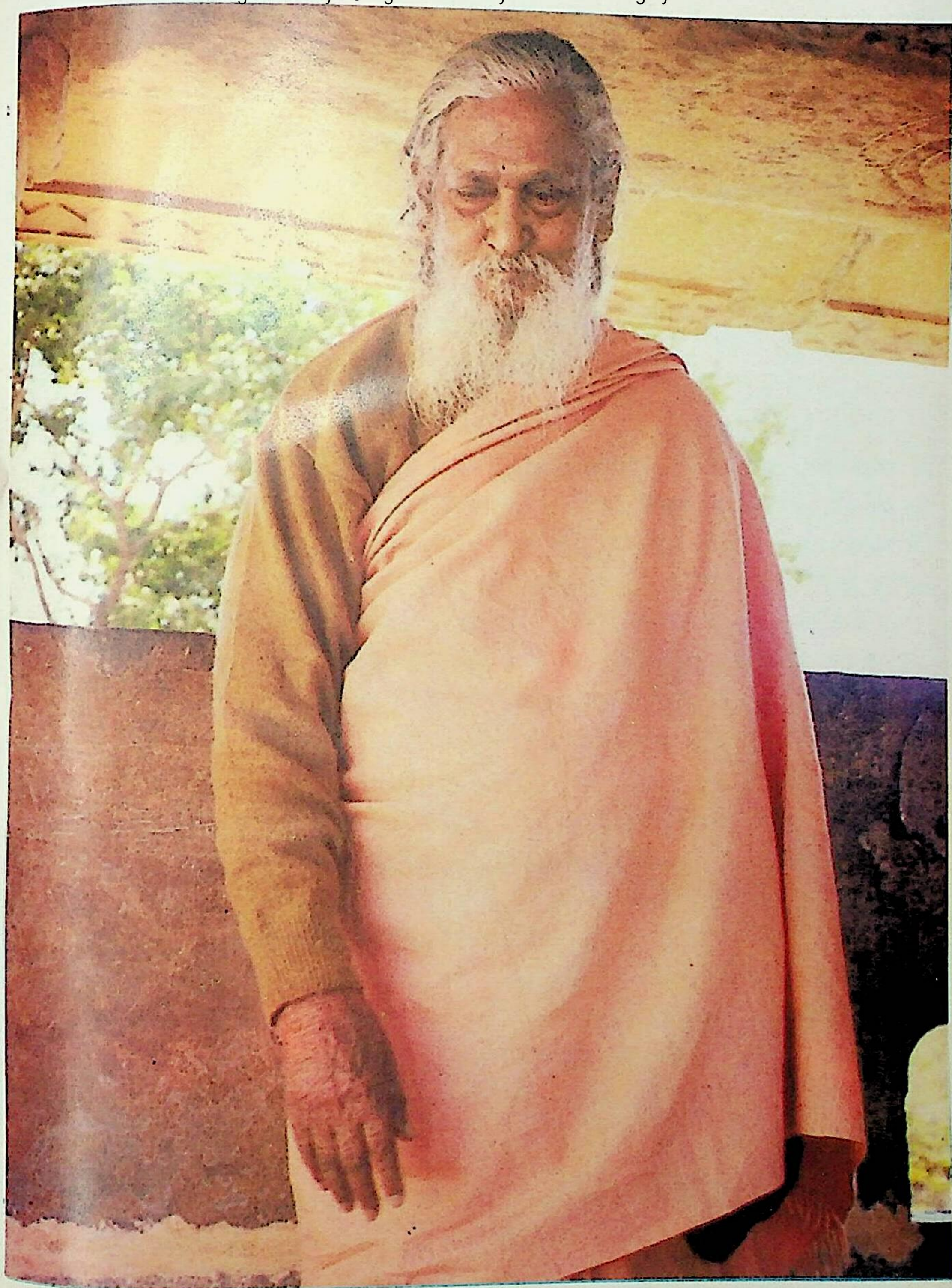
२) वाराणसी :–

वाराणसी आश्रम में विगत २४ जुलाई को गुरूपूर्णिमा के दिन श्री श्री गुरूपूजा एवं श्री श्री माँ की पूजा सुन्दर ढंग से सुसंपन्न हुई साधु भंडारा भी हुआ १५ अगस्त को श्री १०८ स्वामी मुक्तानन्द गिरिजी की तिरोधान तिथि में गिरिजी की षोडशोपचार पूजा हुई । १९ अगस्त झुलन द्वादशी के दिन श्री श्री भाईजी की षोडशोचार पूजा एवं साधुभंडारा संपन्न हुआ ।

१८ अगस्त से २२ अगस्त तक झूलनोत्सव के अवसर पर प्रतिदिन सांयकाल गोपाल जी को झूले पर झूलाया जाता था तथा इस अवसर पर कीर्तन आदि भी हुए । २२ अगस्त को राखी पूर्णिमा के दिन गोपाल जी की षोडशोपचार पूजा तथा १२ बजे रात को श्री श्री माँकी स्वयंदीक्षा के उपलक्ष पर ध्यान तथा कीर्तन हुआ ।

३० अगस्त को जन्माष्टमी के दिन रात १२ बजे श्री श्री गोपालजी का महाअभिषेक श्रृंगार एवं धूमधाम से पूजन सुसंपन्न हुआ । दूसरे दिन नन्दोत्सव मनाया गया ।

१३ सितम्बर स २० सितम्बर तक भागवत जयन्ती पर भागवत सप्ताह अनुष्ठित हुआ । प्रख्यात प्रवक्ता मातृभक्त महाराष्ट्र के श्री अशोक भाई कुलकर्णी थे । भागवत की सरस व्याख्या के साथ-साथ नन्दोत्सव, गोपालकालालीला (महाराष्ट्र की प्रथा के अनुसार), गोवर्धन धारण । रुक्मिणी विवाह आदि लीला भी परिदर्शित की गई । व्याख्याकार श्री अशोकभाई ने बार-बार मूलभागवत अध्ययन के लिए सबको प्रेरणा दी ।



Swami Swarupananda Giriji
1919–2002

१३ सितम्बर को श्री गुरुप्रिया दीदी की तिरोधान तिथि पर षोडशोपचार पूजन तथा साधुभंडारा अनुष्ठित हुआ ।

आगामी ११ अक्टूबर से १५ अक्टूबर तक शारदीय नवरात्र पर सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी को श्री श्री माँ के मंदिर में श्री श्री माँ की षोडशोपचार पूजा होगी २० अक्टूबर को श्री श्री लक्ष्मीपूजा ४ नवम्बर श्री श्री काली पूजा एवं ५ नवम्बर को अन्नकूट अनुष्ठित होगा ।

श्री श्री माँ आनन्दमयी कन्यापीठ :–

श्री श्री माँ आनन्दमयी कन्यापीठ में विगत १५ अगस्त को ध्वजारोहण समारोह के अवसर पर कन्याओं ने देशगीत के द्वारा भारतमाता के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की

श्री गोपीनाथ कविराज जयन्ती तथा संस्कृत दिवस :–

विगत ८ सितम्बर को श्री गोपीनाथ कविराज ११६तम जयन्ती महोत्सव आनन्दज्योतिर्मदिर में अनुष्ठित हुआ । इस अवसर पर सारनाथ के तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान' के निदेशक माननीय श्री नवाङ्ग सामतेन मुख्य अतिथि के रूप में पधारे । किसी बौद्ध लामा का श्री श्री माँ के आश्रम के कार्यक्रम में आने का यह पहला अवसर था। अध्यक्ष के पद पर समासीन थे, संस्कृत विश्व-विद्यालय के कुलाधिपति श्री राजेन्द्र मिश्र जी । श्री सीताराम कविराज जी विशिष्ट अतिथि थे ।

श्री गोपीनाथ कविराज जी के जन्म दिवस को ही कन्यापीठ की ओर से संस्कृत दिवस के रूप में मनाया गया । इस अवसर पर कन्यापीठ की कन्याओं द्वारा 'श्रद्धा कुसुमाञ्जलि' शीर्षक एक संस्कृत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । इसके अन्तर्गत वैदिक मंगलाचरण, कविराजस्तुति, 'बुद्ध शरण गच्छामि' भगवान् बुद्ध के उपदेश, 'गुरुभक्त एकलव्य' नामक संस्कृत एकांकी तथा दशमहाविद्या स्तोत्र गायन के साथ-साथ देवी के दशविध रूपों का भी दर्शन हुआ ।

काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा सम्मानित अतिथियों के द्वारा कविराज जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई । कार्यक्रम के उपरान्त १७ कुमारियों का पूजन तथा भोजन सुसंपन्न हुआ ।

आश्रम के प्रांगण में श्री नवांग सामतेन तथा श्री सीताराम कविराजजी के हाथों से ५१ गरीब कुमारियों को वस्त्र (फ्राक) वितरित की गई । कार्यक्रम के प्रारंभ में श्रद्धेय लामाजी एवं कुलाधिपतिजी को श्री श्री माँ की पुस्तक, एवं उत्तरीय प्रदान कर सम्मानित किया गया । रोटरी क्लाब वाराणसी सेन्ट्रल के अध्यक्ष श्री विपुलशंकर पांडया तथा गवर्नर श्री गुजराती ने श्री माँ के अस्पताल को ११ हजार रूपये का चेक प्रदान किया ।

माता आनन्दमयी अस्पताल :–

विगत १५ अगस्त को माननीय सांसद श्री शंकर प्रसाद जायसवाल के द्वारा अस्पताल के प्रांगण में ध्वजारोहण किया गया । इस अवसर पर कन्यापीठ की कन्याओं की देशगीत तथा राष्ट्रगान, तथा विशिष्ट अतिथियों का भाषण हुआ । इसी अवसर पर श्री श्री माँ के विशिष्ट भक्त व प्रख्यात देश सेवक श्री कालाचांद ब्रह्मचारी की स्मृति में ५१ गरीबों को ऊनी चद्दर व भोजन दिया गया ।

३) वृन्दावन :–

विगत ११ अगस्त २००२ रविवार से दि. २२ अगस्त तक श्री राधाकृष्ण छलियाजी के झूलनोत्सव तथा दि. ३० अगस्त २००२ शुक्रवार, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन किया गया ।

इस अवसर पर २१ अगस्त से बुधवार तक प्रख्यात रासमण्डलियों के द्वारा रासलीला अनुष्ठित हुई । १८ अगस्त श्री श्री राधाकृष्ण की पूजा, १९ अगस्त भाईजी की तिरोधान तिथि की पूजा तथा २२ अगस्त को प्रातः वेदपाठ विष्णु सहस्त्रनाम पाठ भजन कीर्तन श्री राधाकृष्ण छलिया जी की तथा श्री श्री माँ की विशेष पूजा, एवं दोपहर को भोगारति के पश्चात साधुभंडारा सुसंपन्न हुआ ।

उसी दिन रात को अखंड हरिनाम संकीर्तन भी हुआ । ३० अगस्त को रात के बारह बजे श्री श्री छलिया जी का विशेष पूजन, तता १४ सितम्बर को श्री जी का षोडशोपचार पूजन हुआ ।

४) पूना :–

श्री श्री माँ के पूना आश्रम में दिनांक १८ अगस्त से २२ अगस्त तक श्री राधाकृष्ण जी का झूलनोत्सव तथा ३० अगस्त को श्रीकृष्णजन्माष्टमी महोत्सव तथा ३१ अगस्त को नन्दोत्सव का आयोजन किया गया था ।

५) राँची:–

श्री श्री माँ के राँची आश्रम में प्रति वार की तरह इस बार भी श्री श्री शारदीया दुर्गापूजा अनुष्ठित होगी । २० अक्टूबर को श्री श्री लक्ष्मी पूजा एवं ४ नवम्बर को श्री श्री कालीपूजा भी संपन्न होगी ।

६) भीमपुरा :–

भीमपुरा आश्रम में इस वर्ष आगामी १० अक्टूबर से १५ अक्टूबर तक श्री श्री शारदीया दुर्गापूजा एवं २० अक्टूबर को श्री श्री लक्ष्मी पूजा अनुष्ठित होगी ।



श्रद्धाञ्जलि

[स्वामी स्वरूपानन्द गिरिजी, प्रधान सचिव, श्री श्री आनन्दमयी संघ]

श्री श्री आनन्दमयी संघ के प्रमुख स्तम्भ के रूप में परिचित संघ के प्रधान सचिव (जनरल सेक्रेटरी) स्वामी स्वरूपानन्द गिरिजी आज हमारे बीच में न रहकर सदा के लिए इस कार्यभार से मुक्त होकर चिरविश्राम के लिए श्री श्री माँ के चिन्मयधाम में ब्रह्मलीन हो गए ।

करीब करीब संघ की स्थापना के बाद से लेकर आज तक आपने श्री श्री माँ के ख्याल से ही देशभर में फैली हुई संघ की विविध शाखाओं की केवल देख-रेख ही नहीं अपितु उन्हें सजाकर सँवारकर एक नया रूप प्रदान किया । इन शृंखलाओं में श्री श्री माँ के वृन्दावन, दिल्ली, कलकत्ता आदि आश्रम मुख्य हैं । 'श्री श्री आनंदमयी संघ' के मुख्यालय कनखल आश्रम की रूपरेखा के चित्रकार आप ही थे । विशेषतः श्री श्री माँ की महासमाधि "आनन्दज्योतिपीठम्" के निर्माण में आपका दृढ़ संकल्प ही प्रधान था । अभी हाल में ही कनखल में "आनन्दज्योतिपीठम्" के सामने श्री श्री माँ के नवनिर्मित निवास भवन को "श्री श्री मातृ स्मृति संग्रहालय" का अत्याधुनिक रूप प्रदान कर सम्पूर्ण उत्तराञ्चल क्षेत्र में एक अनुपम संग्रहशाला निर्माण का श्रेय भी आपको ही जाता है और शायद इसी के साथ ही आपके कर्ममय जीवन की श्रृंखला का अवसान होता है । श्री श्री माँ के चरणों में समर्पित आपकी कर्मभूमि का यह एक ऐसा सुवासित पुष्प है जो युग-युग तक यहाँ आने वालों को श्री श्री माँ की मधुर स्मृतियों के उपवन में "बंदउ गुरुपद पदुम परागा । सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ।।" मानस की इन पंक्तियों को चरितार्थ करने को बाध्य करेंगी ।

सन् २००१, दिनांक २६ नवम्बर का महीना, उत्तराञ्चल के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री भगत सिंह कोश्यारी के विशिष्ट आतिथ्य एवं कैलास आश्रम ऋषिकेश के पीठाधीश्वर महामण्डलेश्वर श्री १००८ आचार्य स्वामी श्री विद्यानन्दगिरिजी की अध्यक्षता में नवनिर्मित स्मृति मंदिर उद्घाटन होने वाला था । देश के विभिन्न भागों से भक्तगण उपस्थित हुए थे । स्वामी स्वरूपानन्द महाराज बालकवत् उत्फुल्ल थे । अवस्था प्रायः बयासी वर्ष की थी ।

युवावस्था का प्रथम सोपान तीस वर्ष की अवस्था के आस-पास अपने मित्र के साथ वाराणसी में श्री श्री माँ के दर्शनों को आये थे और माँ के ही होकर रह गये ।

आज पचास वर्ष हो चुके हैं । श्री श्री माँ की मधुर स्मृतियों की यादों में आप खोये हुए थे । अतः बालकवत् सरलता आप में प्रकाशित हो रही थी । कल ही आपकी दीर्घकालीन मंशा फलवती होने वाली है । आनन्दित होना स्वाभाविक था । पर माँ के चरणों में एक बार आश्रय ग्रहण करने वालों की जीवन डोर या लगाम तो माँ के हाथों में सदा के लिए आ जाती है, वरना कहीं यह भौतिक अभिमान अपने प्रिय पात्रों पर अधिकार न कर बैठे, अतः माँ ने डोर खींची । स्वामीजी उद्घाटन की पूर्व संध्या पर अस्वस्थ हो गये एवं तुरन्त उन्हें कनखल स्थित रामकृष्ण मिशन अस्पताल के एमरजन्सी कक्ष में भर्ती कराना पड़ा । उत्सव यथा समय यथोचित रूप से सम्पन्न हो गया । स्वामीजी की कार्यप्रणाली की सबने जय जयकार की ।

यहीं से पूज्य स्वामीजी की शारीरिक अस्वस्थता में अधिक उतार चढ़ाव प्रारम्भ हुआ कभी दिल्ली तो कभी कलकत्ता के विशेष नर्सिंग होम में आपकी चिकित्सा होने लगी । भक्तगण अपने प्रिय स्वामीजी को स्वस्थ देखना चाहते थे । अतः सेवा में त्रुटि न रही ।

संघ के महत्वपूर्ण प्रधान सचिव के पद पर स्वामीजी ही आसीन रहे । बीच-बीच में जब भी स्वस्थ रहते कनखल आकर सहयोगियों की सहायता से अपना कार्यभार संभालते थे ।

सम्प्रति दो एक महीने से आप की शारीरिक अस्वस्थता ने जोर पकड़ा । श्री श्री माँ के कलकत्ते के भक्त श्री नन्दकिशोर गोयनकाजी के भतीजे दिल्ली, फरीदाबाद निवासी श्री विनय गोयनका सपरिवार स्वामीजी के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु हैं । आपने स्वेच्छा से स्वामीजी की सेवा का भार अपने ऊपर लिया ।

स्वामी जी कुछ दिन आपके फरीदाबाद स्थित निवास में जहाँ स्वामीजी के अनुकूल पृथक् बंगला बनवाया था वहाँ पर रहे । इन दिनों आपका स्वास्थ्य झटके के साथ बिगड़ने लगा । आपको श्रीनिवास पुरी (दिल्ली) स्थित अस्पताल डा. विद्यासागर इन्स्टीटयूट ऑफ मेंटल एण्ड हेल्थ सेंटर, जो संक्षेप में 'विमहंस' कहलाता है वहाँ पर ले जाया गया । अस्पतालके चिकित्सक डॉ. ए. के बनर्जी स्वामी जी को अत्यन्त श्रद्धा करते थे । स्वामीजी आपके चिकित्साधीन थे । अस्पताल के अन्य चिकित्सक डा. सिन्हा आदि भी स्वामीजी के प्रति श्रद्धावनत थे । अतः सश्रद्ध भाव से उनकी चिकित्सा चलने लगी । आपके गले में कैन्सर का प्रकोप दिखाई दिया । दिल्ली के सुप्रसिद्ध चिकित्सक एवं श्री श्री आनन्दमयी संघ के चिकित्सा सलाहकार तथा माँ के अनन्य भक्त सर्व परिचित डा. दुर्गादास सेनगुप्त के परामर्शानुसार ही स्वामीजी की चिकित्सा व्यवस्था चल रही थी ।

डेढ़ महीना अस्पताल में रहने के उपरान्त स्वामीज़ी की इच्छा के अनुसार उन्हें फरीदाबाद गोयनका निवास ले जाया गया। वहाँ दो दिन रहने के उपरान्त स्वामीजी की हालत अचानक खराब हुई। १० सितम्बर को स्वामीज़ी को पुनः अस्पताल ले आया गया। श्री एवं श्रीमती गोयनका बहुत ही लगन से स्वामीजी की सेवा कर रहे थे। यह अस्पताल अत्याधुनिक सुविधा से युक्त उत्कृष्ट अस्पतालों में से एक है। स्वच्छता एवं हरियाली इसकी विशेषता है। स्वामीजी के चारों ओर यद्यपि नलियाँ लगी थीं पर उनके चेहरे पर प्रशान्ति परिलक्षित हो रही थी। चिकित्सक द्वारा यथासाध्य चिकित्सा चल रही थी। गोयनका परिवार अपना सब छोड़कर पूज्य स्वामीजी को जरा भी कष्ट न हो इसके प्रति सदैव तत्पर था। रात्रि में श्री विनय गोयनका स्वयं रहते थे, दिन में उनकी धर्मपत्नी रहती थीं।

१४ सितम्बर को डा. दुर्गादासजी स्वामीजी से मिलने गए। वे करीब आधे घण्टे तक स्वामीजी के पास रहे। स्वामीजी को उठाकर थोड़ी देर बैठाया गया। डा. दुर्गादास जी स्वामीजी को देखकर लौटते हुए दिल्ली आश्रम आये और उन्होंने वहाँ से संघ अध्यक्ष श्री गोविन्द नारायण जी को एवं कनखल आश्रम में स्वामीजी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी दी। प्रायः सायं छः बजे का समय था। राधाष्टमी तिथि थी। रात्रि प्रायः सवा नौ बजे दुर्गादासजी ने पुनः सूचना दी कि स्वामीजी माँ के चरणों में पहुँच गए हैं। स्वामीजी को किसी प्रकार का विशेष कष्ट नहीं हुआ।

यह संवाद क्षण भर में चारों ओर फैल गया। संवाद पाते ही दिल्ली आश्रम से माला, भस्म, समयोचित सामग्री लेकर आश्रमवासी अस्पताल पहुँचे। इससे पूर्व से ही अन्यान्य गण्यमान्य व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे।

स्वामी जी को वातानुकूल एम्बुलेंस में कनखल लाया गया। साथ में गोयनका परिवार तथा उपस्थित दिल्ली के भक्तगण आये। कनखल में पूर्ण व्यवस्था रखी गयी थी। स्वामी जी के पार्थिव शरीर को पहले 'आनन्दज्योतिपीठम्' के प्रांगण में रखा गया। निर्वाणी अखाड़े के महन्त श्री १०८ श्री गिरधरनारायण पुरीजी ने विधिवत् सभी उपस्थित क्रियायें अपने हाथों से की। तदुपरान्त स्वामीजी को उनके कमरे के सामने अन्तिम दर्शनों के लिए रखा गया, जहाँ पर कनखल के प्रायः सभी अखाड़ो के महन्त एवं महात्माओं ने आप पर फूल मालायें चढ़ाई। आश्रम के सत्संग हॉल में 'सत्यं ज्ञानम् अनन्तम' के समयानुकूल पदों का तथा माँ के नाम का कीर्तन हो रहा था। वर्षों से यही स्वामीजी की कर्मभूमि रही। यहीं पर बैठ कर वे संघ का सञ्चालन करते थे। सबकी कुशलक्षेम पूछते थे। आज कनखल का माहौल साधारण लोगों के लिए गमगीन था। यद्यपि पाठ, कीर्तन आदि चल रहे थे।

डेढ़ बजे के करीब स्वामीजी के पार्थिव देह को संन्यासोचित विधि जलप्रवाह के लिए ले जाने की तैयारी की गयी। अन्तिम यात्रा के लिए रवाना होने के पूर्व पुनः श्री श्री माँ की महासमाधि के प्रांगण में ले जाया गया। जहाँ ब्रह्मचारिणी चन्दनदी ने माँ की प्रसादी माला आदि देकर संघ के प्रधान सचिव को अन्तिम विदाई दी। स्वामी ज्योतिर्मयानन्दजी ने अन्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से सम्पूर्ण व्यवस्था को संभाला। साधु महात्माओं की एक शोभा यात्रा के साथ नीलधारा, की ओर पुष्पमालाओं से सुसज्जित स्वामी जी के पार्थिव देह को रवाना किया गया।

करीब तीन बजे यह शोभायात्रा नीलधारा पहुँची। जहाँ पर सुन्दर ढंग से काष्ठ के बने पीठासन पर स्वामीजी के पार्थिव देह को विधिवत् रखा गया। थोड़ी ही देर में "हर हर गंगे" की तुमुल जय ध्वनि के साथ पंचतत्त्व के इस नश्वरदेह को जलमय तत्त्व में विलीन होने के लिए प्रवाहित कर दिया गया। श्री श्री माँ के चरणों में समर्पित एक कर्ममय जीवन का भौतिक अवसान तो हुआ पर उनकी कीर्तिपताका माँ के श्रीचरणों की महिमा के साथ सदा अमर रहेगी।

३० सितम्बर को संन्यासविधि के अनुसार षोडशी भण्डारे की व्यवस्था की गई। जिसमें आश्रम के विविध स्थानों से सभी वरिष्ठ साधु ब्रह्मचारी एवं भक्तगणों की उपस्थिति रही।

इन्हीं शब्दों के साथ स्वामी श्री स्वरूपानन्दजी के प्रति सश्रद्ध भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित है।



शोक-संवाद

१. श्रीमती सनकेसरी देवी :—

स्व. श्री गंगा प्रसाद तिवारी की धर्मपत्नी एवं मातृभक्त श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी जी की माता श्रीमती सनकेसरी देवी गत २३ मई, २००२ को श्री श्री माँ के श्रीचरणों में सदा के लिये लीन हो गयीं। अपनी पूजनीया माता के शोक संदेश में श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी द्वारा जो विवरण भेजा गया है उसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

"मेरी परमपूज्या जननी श्रीमती सनकेसरी देवी, धर्मपत्नी स्व. श्री गंगाप्रसाद तिवारी का देहावसान गत वैशाख शुक्ल द्वादशी, गुरुवार तदनुसार दिनांक २३ मई २००२ को मेरे गृह जनपद बलिया मं हो गया। इस प्रकार वे मातृचरण कमलों में सदा के लिये लीन हो गयी!

श्री श्री माँ के सान्निध्य में मेरी माता जी वर्ष १९७७ के जनवरी माह में आयी थीं। यही उनका प्रथम दर्शन था। स्थान था वाराणसी, भदैनी पर गंगा तट पर स्थित माँ का आश्रम। श्री श्री माँ के प्रथम दर्शन से ही उन्हें श्री श्री माँ का विशेष स्नेह व आशीष प्राप्त हुआ था। सन् १९७७ के बाद भी अनेकों बार श्री श्री माँ के दर्शन प्राप्त हुए एवं निरन्तर आशीष मिलता रहा। श्री श्री माँ के प्रति अटूट श्रद्धा तथा विश्वास ही उनको धार्मिक कृत्यों एवं अनुष्ठानों में उत्प्रेरित करता रहा। लगभग गत पच्चीस वर्षों से श्री श्री माँ के भदैनी स्थित आश्रम में अन्नपूर्णा मन्दिर के साथ स्मृति मन्दिर में शारदीय एवं चैत्र नवरात्रों पर अत्यन्त पवित्र सप्तशतीपाठ का आयोजन अपनी जननी माँ की प्रेरणा से ही होता आ रहा है। इसकी व्यवस्था आश्रम के वरिष्ठ ब्रह्मचारी आदरणीय श्री पानुदा प्रतिवर्ष करवाते हैं।

मेरी जननी स्वभाव से अत्यन्त सत्यवती, स्नेहमयी, ममतामयी तथा निष्ठावान् महिला थीं। श्रीमद्भागवत् श्रवण में उनकी विशेष निष्ठा रहती थी। जबतक उनका स्वास्थ्य ठीक था (लगभग चार वर्ष पहले तक) श्री गोपाल मंदिर (काशी आश्रम) में आयोजित भागवत सप्ताहों में वाराणसी आकर श्रीमद्भावगत का चिन्तापूर्वक श्रवण किया करती थीं। कन्यापीठ की कन्याओं के लिये उनके मन में विशेष स्नेह लक्षित होता था। श्री श्री माँ की विशेष अनुकम्पा से मेरी जननी माँ को प्रारब्ध का विशेष भोग नहीं भोगना पड़ा। उन्होंने अपनी ८५ वर्ष का दीर्घ जीवन अत्यन्त पवित्रता से व्यतीत किया जिसमें ५३ वर्ष उनका वैधव्य जीवन रहा। मेरी जननी में स्वभाववश एवं संस्कार वश दान पुण्य करने का विशेष उत्साह था। वे अपने दरवाजे से किसी पण्डित, ब्राह्मण या याचक को खाली हाथ नहीं जाने देती थीं। कभी किसी के प्रति दुर्भाव भी उनके मन में नहीं रहता था।

श्री श्री माँ के चरणों में उनको चिर शान्ति प्राप्त हो एवं उनकी आत्मा को उत्तम गति मिले, यही प्रार्थना है।

२) श्री हरियोगेन्द्र प्रसाद वाजपेयी :–

इटावा के प्रसिद्ध वाजपेयी परिवार के सदस्य एवं श्री श्री माँ के अन्यतम भक्त श्री हरियोगेन्द्र प्रसाद वाजपेयी (एडवोकेट) का निधन दिनांक २४ जून, २००२ पूर्णमासी तिथि सोमवार को लगभग दो बजे हुआ। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा वाजपेयी का पहले ही स्वर्गवास हो चुका था।

उत्तर प्रदेश इटावा के वाजपेयी परिवार की मातृभक्ति ही केवल नहीं अपितु मातृभक्तों की आतिथेयता की गाथा ने आज भी माँ के साथ वहाँ उपस्थित रहे भक्तों के मन में अमिट छाप छोड़ी हैं। गुरुप्रिया दीदी रचित "माँ आनन्दमयी" दैनन्दिनी में इटावा में माँ की उपस्थिति एवं वहाँ की आवभगत का विस्तृत विवरण मिलता है। माँ के भक्तों के लिये इटावा और वाजपेयी परिवार का चोली दामन का सम्बन्ध है।

उक्त परिवार के वर्तमान सदस्य मुनीन्द्र प्रसाद वाजपेयी, मुकुन्द प्रसाद वाजपेयी एवं करुणानन्द वाजपेयी की माँ के प्रति अंतर्मन में भरी हुई श्रद्धा आपलोगों के द्वारा अपने पिता के निधन संवाद के साथ लिखी हुई इन पंक्तियों से मिलता है – "श्री श्री माँ के चरणों में विनय पत्र लिख कर साथ में भेज रहे हैं। कृपया अर्पण कर दीजियेगा।"

श्री श्री माँ के चरणों में प्रार्थना है कि दिवगंत आत्मा को श्री श्री माँ के त्रितापहारी चरणों में चिर शांति प्राप्त हो एवं शोक सन्तप्त परिवार को श्री श्री माँ के चरणों में अगाध भक्ति एवं अक्षुण्ण निष्ठा प्राप्त हो।

३. कुमारी मुक्ति बसु :–

विगत ३ अगस्त, २००२ शनिवार को कुमारी मुक्ति बसु मातृ चरणों में लीन हो गईं। एक विशिष्ट मातृभक्त परिवार में उनका जन्म हुआ था। श्री श्री माँ की कृपापात्र कलकत्ता 'निऊ आलीपुर' निवासी स्वर्गीय शान्ति घोष एवं पटने की श्रीमती नीलिमा घोष की वे बहन थी'। श्री श्री मुक्तानन्द गिरिजी से उन्हें दीक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। शिक्षा जगत में भी अच्छी सुख्याति प्राप्त की थी। उनकी सराहणीय कार्यकुशलता को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया।

श्री श्री माँ के चरणों में हम उनकी शुद्ध आत्मा की शान्ति एवं शोकार्त परिवार के लिए धीरज की प्रार्थना करते हैं।

जय माँ।

●

प्रकाशन-सूची

श्री श्री आनन्दमयी संघ द्वारा प्रकाशित श्री श्री माँ से सम्बन्धित हिन्दी भाषा में कुछ अमूल्य प्रकाशन संघ के प्रायः सभी शाखा आश्रमों में उपलब्ध हैं ।

१. आनन्दज्योति (शताब्दी स्मारिका)– यह एक उच्च कोटि का संस्करण है, जिसमें विभिन्न भाषाओं – संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में श्री श्री माँ की पवित्र जीवनानुक्रमणिका (१८९६ से १९८२), १०० अमूल्य वाणियों एवं श्री श्री माँ के विभिन्न आश्रम एवं संस्थाओं का इतिहास, साथ ही स्वनामधन्य विद्वानों के लेख, श्रद्धाञ्जलि सहित श्री श्री माँ के कतिपय मूल्यवान चित्रों का संकलन है । अति उत्तम कागज पर छपा है । मूल्य रु. १००/- केवल हिन्दी खंड – मूल्य रु. ३०/-

२. श्री श्री माँ आनन्दमयी– परम श्रद्धेया दीदी गुरुप्रिया द्वारा लिखित श्री श्री माँ की अपूर्व लीला कहानी । २० भागों में सम्पूर्ण । प्रथम भाग पुनर्मुद्रित । पेपर बैक, मूल्य रु. ४०/-

३. मातृ दर्शन– श्रद्धेय ज्योतिष चन्द्र राय (भाईजी) द्वारा मूल बंगला में लिखित श्री श्री माँ के ऊपर अतुलनीय पुस्तक । हिन्दी संस्करण, पेपर बैक, मूल्य रु. २५/-

४. माँ आनन्दमयी– डॉ. पन्नालाल, आई. सी.एस. (रिटायर्ड) द्वारा लिखित श्री श्री माँ का अपूर्व जीवन चरित । पेपर बैक, मूल्य रु. ३०/-

५. सद्वाणी– हिन्दी में अनूदित श्री श्री माँ की मूल्यवान वाणियों का संग्रह । श्री ज्योतिषचन्द्र राय द्वारा संकलित । पेपर बैक, मूल्य रु. १५ ।

६. माँ आनन्दमयी दिव्यालोक वार्ता– ब्र. गुणीता द्वारा लिखित श्री श्री माँ की जीवन-कथा का संक्षिप्त चित्रण तथा शतवाणी । पेपर बैक, मूल्य १०/-



"हरि कथा ही कथा, और सब वृथा व्यथा"

—श्री श्री माँ आनन्दमयी

अमेरिका के पेन्सीलवेनिया राज्य में स्थायी रूप से पंजीकृत संस्था **माँ आनन्दमयी सेवा समिति (Mass, INC)** के स्वयं सेवकों की ओर से परमाराध्या श्री श्री माँ के सभी भक्तजनों को सप्रेम **"जय माँ"** ।

इस संस्था का उद्देश्य श्री श्री माँ की जीवन लीला रहस्य की सेवा, धार्मिक कार्य, सत्संग एवं जनसेवा सहित सनातन धर्म तथा श्रीमद् भागवत् धर्म युक्त प्रक्रिया है ।

अमेरिका सरकार द्वारा इस समिति के लिये सम्पूर्ण कर मुक्ति (Tax - exemption) प्राप्त है । जिसका नम्बर है 23-2967597 जो IRS Code 501 (C) (3) के अनुसार कार्यों के लिये है ।

अमेरिका एवं आस-पास के देशों में स्थायी रूप से निवास करने वाले मातृभक्तों से विनती है कि **"माँ आनन्दमयी अमृतवार्ता"** (त्रैमासिक पत्रिका) जो चार भाषाओं (हिन्दी, बगंला, गुजराती एवं अंग्रेजी) में श्री श्री माँ की दिव्य जीवन लीला सम्बन्धी गाथा एवं अमूल्य वाणी के संकलन के रूप में प्रकाशित होती है MASS, INC से प्राप्त कर सकते हैं । पत्रिका का वार्षिक चन्दा 12/- बाहर डॉलर मात्र है ।

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये निंम्नलिखित पते पर कृपया सम्पर्क कीजिये :–

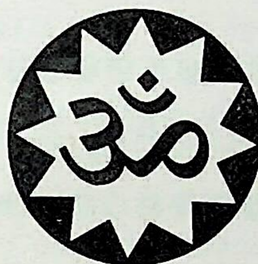
Mahadev R. Patel
President, Ma Anandamayee Seva Samiti, INC
212, Moore Road
Wallingford, PA 19086-6843
Tel : 610-876-6862 Fax : 610-876-1351
email : maha devpatel @ netscape. net.

जय माँ

● जयजयमाँ ॐ माँ जयजयमाँ ●

"हरि कथा ही कथा और सब बृथा व्यथा ।"

—श्री श्री माँ



श्री श्री माँ के श्री चरणों में गुप्ता परिवार
की तरफ से शत शत नमन ।

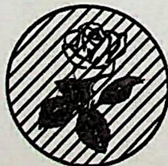
श्रीचन्दभान गुप्ता
श्रीमती शकुन्तला गुप्ता

श्री भारत भूषण गुप्ता
श्रीमती साधना गुप्ता
श्री चेतन गुप्ता
श्री हर्ष गुप्ता

श्री राजेश गुप्ता
श्रीमती अनिता गुप्ता
श्री नितिन गुप्ता
श्री कार्तिक गुप्ता

125 विवेकानन्दपुरी, सरायरोहिला, दिल्ली-110007

Res. 011-3623348, Res. 011-3541814
Off . 011-7281330, Off. 011-5631628



❄ Branch Ashrams ❄

15. NEW DELHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kalkaji, New Delhi-110019 (Tel : 011-6826813)

16. PUNE : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Ganesh Khind Road, Pune-411007, (Tel : 020-5537835)

17. PURI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram.
Swargadwar, Puri-752001, Orissa.

18. RAJGIR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Rajgir, Nalanda-803116, Bihar (Tel : 06112-55362)

19. RANCHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Main Road,
P.O. Ranchi-834001, Bihar (Tel : 0651-312082)

20. TARAPEETH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Chandipur-Tarapeeth, Birbhum-731233, W.B.

21. UTTARKASHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kali Mandir, P.O. Uttarkashi-249193,

22. VARANASI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram.
Bhadaini, Varanasi-221001, U.P.
(Tel : 0542-310054+311794)

23. VINDHYACHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ashtabhuja Hill,
P.O. Vindhyachal, Mirzapur-231307, (Tel : 05442-42343)

24. VRINDAVAN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Vrindavan, Mathura-281121 U.P. (Tel: 0565-442024)

IN BANGLADESH :

1. DHAKA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
14, Siddheshwari Lane, Dhaka-17 (Tel : 405266)

2. KHEORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Kheora, Via-Kasba, Brahmanbaria.



REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97



रत्ना ऑफसेटस लिमिटेड कमच्छा, वाराणसी, फोन [illegible]